वर्गीकृत

हिन्दी लोकोक्ति कोश

डॉ० शोभाराम शर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय,
बागेश्वर, अल्मोड़ा (कुमाऊं विश्वविद्यालय), नैनीताल

अनुक्रम

प्रस्तावना

लोकोक्तियों और मुहावरों की गंगा का उद्गम जन-मानस की पवित्र गंगोत्री में है। अभिव्यक्ति को सशक्त और सप्राण करने हेतु किसी भी भाषा में उनका प्रयोग आवश्यक होता है। वस्तुतः भाषा की सजीवता और सौन्दर्य बहुत कुछ उसके लोकोक्तियों और मुहावरों के भण्डार पर आश्रित होते हैं। एक सफल रचनाकार की भाषा में भावाभिव्यक्ति का वैशिष्ट्य मुहावरो और लोकोक्तियों के उपयोग पर भी निर्भर करता है। लोकोक्तियों और मुहावरों से विहीन भाषा निस्सन्देह दरिद्र होती है। वे किसी भी भाषा की यथार्थ निधि हैं, इसमें सदेह नही।

→

लोकोक्ति : अर्थ, लक्षण तथा परिभाषा

लोकोक्ति संस्कृत के दो शब्दों के योग से बना गुणसंधि पर आश्रित एक सामासिक पद है। लोक+उक्ति के अनुसार उसका सीधा-सादा अर्थ है—लोक अर्थात् जनता-जनार्दन की उक्ति। हिन्दी में इसका पर्यायवाची 'कहावत' शब्द है जो निश्चित रूप से 'कहना' क्रिया से सम्बन्धित है। लेकिन सभी प्रकार का जन-कथन लोकोक्ति या कहावत की श्रेणी में नही आता। जन-जन में प्रचलित वही उक्तियां लोकोक्तियां कहलाती है, जिनमे जीवन की कोई न कोई सत्यानुभूति गुम्फित रहती है। इन उक्तियो के पीछे कोई सत्य घटना अथवा व्यक्ति विशेष का सत्यानुभव छिपा रहता है। किसी विशेष घटना, मानसिक परिस्थिति अथवा प्रसंग आदि के संदर्भ में जब व्यक्ति के मुख से कोई विदग्धतापूर्ण वाक्य, उपवाक्य अथवा वाक्यांश निकलकर जन-जन की सम्पत्ति बन जाता है तो वही लोकोक्ति कहलाती है। वस्तुत: प्रत्येक लोकोक्ति की अपनी एक कहानी होती है लेकिन वह काल की सीमा को लांघकर समान घटना अथवा प्रसंग आदि को स्पष्ट करने हेतु लोक-मानस में इस तरह पैठ जाती है कि प्रयोक्ता उसे अपनी ही उक्ति मान बैठता है और उसे उस लोकोक्ति के प्रारम्भिक निर्माता का नाम भी स्मरण नही रहता।

अतः स्पष्ट है कि किसी उक्ति को लोकोक्ति की श्रेणी में आने के लिए उसमे जीवन की सत्यानुभूति और लोक-छाप का होना नितान्त आवश्यक है। जन-जन मे प्रचलन ही लोक-छाप है और यह विशेषता उक्ति की रमणीयता—लोक-रंजकता से उत्पन्न होती है। इनके अतिरिक्त यदि उक्ति लम्बी हो, शैली प्रभाव-शून्य हो और भाषा दुरूह हो तो जन-मानस मे उसकी पैठ कठिन हो जाती है। अतः लाघवत्व, शैली की प्रभावोत्पादकता और भाषा की सरलता भी लोकोक्ति के आवश्यक उपादान है। डा० श्यामसुन्दर दास के मतानुसार भी लोकोक्तियों मे (क) लाघवत्व, (ख) अनुभूति और निरीक्षण, (ग) सरल भाषा; (घ) प्रभावोत्पादक शैली और (ङ) लोक-रंजकता आदि आवश्यक हैं।

अनुभूतिशील मानव जीवन-सत्य के अपने निरीक्षण में कुछ ऐसे विदग्धतापूर्ण कथन कह जाते हैं कि वे जन-जन की वाणी के आभूषण बन जाते है, उदाहरणार्थ

कालिदास—कामार्ता हि प्रकृति कृपणाश्चेतनाचेतनेषु। (कामातुर प्रकृति से ही चेतन और अचेतन के प्रति अनभिज्ञ होते है।)

तुलसीदास—कोऊनृप होउ हमहुं का हानी। चेरी छौंड़ि न होअउँ रानी॥ अथवा का वर्षा जब कृषी सुखाने।

प्रसग विशेष में कितनी सटीक और सारगर्भित हैं। इन उक्तियो मे वे सभी उपादान सुरक्षित हैं जिनका विवरण ऊपर दिया जा चुका है। यहा पर यह स्मरण रखना आवश्यक है कि कालिदास या तुलसी जैसे विशिष्ट मनीषी ही लोकोक्ति

के एकमात्र स्रष्टा नहीं होते। वस्तुतः किसी भी भाषा की लोकोक्तियों का भण्डार जन-सामान्य के उर्वर मस्तिष्क का कार्य होता है। यह लोक साहित्य की महत्वपूर्ण निधि है और लोक-जीवन का अध्ययन उसकी लोकोक्तियों के बिना पूर्ण नहीं होता।

विभिन्न विद्वानों ने अपने ढंग से लोकोक्ति को परिभाषित करने का प्रयास किया है। उनमे से कुछ इस प्रकार है—

1. Proverbs are the daughter of daily experience. (लोकोक्तियां दैनिक अनुभव की दुहिताएँ है।)

2. एक व्यक्ति की विदग्धता और अनेक का ज्ञान—लार्ड रसल।

3. लोकोक्तियां मानव के अनुभव और ज्ञान के चोखे और चुभते सूत्र है—डा० हरिदत्त भट्ट शैलेश।

4. डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल के अनुसार लोकोक्ति मात्र उक्ति नही है बल्कि लोक की उक्ति है इसलिए उसे लोकोक्ति कहते हैं।

5. डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के कथनानुसार लोकोक्तियों मे गागर मे सागर भरने की प्रवृत्ति काम करती है। इनमें जीवन का सत्य बडी खूबी से प्रकट होता है।

6. डा० कैलाशनाथ अग्रवाल ने पूर्ण परिभाषा देने का प्रयास इन शब्दों में किया है—'कहावत वह अनुभवयुक्त वाक्य है जो संक्षिप्त, सारगर्भित एवं हृदय-स्पर्शी होने के साथ-साथ लोकप्रिय किंवा लोक-प्रचलित हो तथा जिसमें किसी अप्रस्तुत कथन का सहारा लेकर प्रस्तुत अर्थ को प्रकट करने की क्षमता हो।'

अन्तिम परिभाषा में लेखक ने लोकोक्तियों के कार्य और प्रयोजन को भी समाहित कर लिया है। किसी समस्यामूलक बात, तथ्य अथवा शंका का समाधान जब तर्क-वितर्क या किसी अन्य युक्ति से नही हो पाता तो वहां पर सटीक लोकोक्ति ही काम देती है। काव्यकार जिस प्रकार उपमा-ध्वनि अप्रस्तुत-प्रशंसा और व्याज-स्तुति आदि अलंकारों से अपने भाव को स्पष्ट करता है, वही कार्य भाषा में लोकोक्तियों से लिया जाता है। उनमें अप्रस्तुत कथन द्वारा प्रस्तुत अर्थ को अभिव्यक्त करने की शक्ति होती है और यह कार्य उनमे प्रयुक्त शब्द-समूह की संयुक्त व्यंजना शक्ति से निष्पन्न होता है। अतः स्पष्ट है कि अभिव्यक्ति को सप्राण, सशक्त और सुन्दर बनाने के लिए लोकोक्तियों का प्रयोग होता है। उपर्युक्त विवरण और विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओ के आधार पर यदि लोकोक्ति की पूर्ण परिभाषा देने का प्रयास करना हो तो वह लगभग इस प्रकार होगी—"लोकोक्ति जन-जन मे प्रचलित सत्यानुभूति से सम्पन्न वह सूत्रबद्ध और विदग्धता से पूर्ण कथन है जो अभिव्यक्ति को सजीवता और सशक्तता प्रदान करते हुए भाषा के अर्थ-गौरव में वृद्धि करती है।"

आभाणक (न्याय) और लोकोक्तियां

संस्कृत में न्याय के नाम से कुछ ऐसे आभाणक प्रचलित हैं जिनका प्रयोग वर्ण्य विषय के स्पष्टीकरण हेतु दृष्टान्त रूप में किया जाता है। निस्सन्देह इनका प्रयोग लोकोक्तियो के समान होता है लेकिन गठन मे लोक-छाप का अभाव होने के कारण इन्हे आधुनिक अर्थ मे लोकोक्तियां या कहावत कहना कठिन है। इनका स्रोत जन-मानस का सहज बोध नही, विद्वत् समाज का विवेक ज्ञात होता है। ये ऐसे सूत्रबद्ध वाक्यांश हैं जिनमे सत्यानुभूति गुम्फित लगती है लेकिन प्रयास-पूर्वक। विद्वान ही प्राय. इनका प्रयोग अपने कथन और रचनाओं मे करते हैं। वाक्यांश होने के कारण ये मुहावरे जैसे भी लगते हैं लेकिन प्रयोग की दृष्टि से लोकोक्ति का कार्य करते है। सस्कृत वाङ्मय में इनकी संख्या बहुत अधिक नही है। इनमें से कुछ हिन्दी मुहावरो और कहावतों के मूल-स्रोत हैं—कुछ आभाणक इस प्रकार है—

1. अजातपुत्रनामोत्कीर्तन न्याय 2. अन्ध-गज न्याय 3. अन्ध-चटक न्याय 4. अन्ध-दर्पण न्याय 5. अन्ध-परम्परा न्याय 6. अरण्यरोदन न्याय 7. आशामोदकतृप्त न्याय 8. ऊपर वृष्टि न्याय 9. कूपमण्डूक न्याय और 10. घुणाक्षर न्याय आदि।

लोकोक्ति और सूक्तियां

सूक्ति (सु+उक्ति) का अर्थ है—सुन्दर कथन। इसे सुभाषित भी कहा जाता है। लोकोक्तियो की भांति सूक्तियों का प्रयोग भी भाषा और भाव को सुन्दरता प्रदान करने के लिए होता है। इनमे महापुरुषों के जीवन के बहुमूल्य अनुभव और सिद्धान्त होते हैं और ये प्राय: पद्य के माध्यम से कही जाती हैं। इनके प्रयोग से भी भाषा अधिक आकर्षक और प्रभावोत्पादक हो जाती है।

भाषा और भाव को सौन्दर्य प्रदान करने का एक सा कार्य करने पर भी सूक्तियां और लोकोक्तिया एक नहीं हैं। लोकोक्तियो का स्रोत लोक-जीवन होता है और वे अधिकांशत: लोक-भाषा मे ही कही जाती है। सूक्तियों का स्रोत प्राय: विद्वानों का कथन या साहित्य होता है। दूसरा अन्तर यह है कि लोकोक्ति का अर्थ अधिक व्यापक होता है। इसका प्रयोग सदा किसी बात का समर्थन करने के लिए किया जाता है और इसमे व्यजना प्रधान होती है, शाब्दिक अर्थ प्रधान नही होता। सूक्तियो के द्वारा स्वतंत्र विचार भी प्रकट किए जाते हैं। अधिकांश सूक्तियों मे शाब्दिक अर्थ ही प्रधान होता है। यदि सूक्ति व्यजना प्रधान होती है तो जन-जन में प्रचलित होकर लोकोक्ति बन जाती है।

हिन्दी मे अनेक सन्तों और कवियों की उक्तियां सूक्तियों के रूप में प्रचलित हैं यथा—

1. सठ सुधरहिं सत संगति पाई—दुष्ट भी सत्संग पाकर सुधर जाते हैं।

2. जिन ढूंढ़ा तिन पाईयाँ, गहरे पानी पैठि—प्रयास करने पर निश्चित सफलता मिलती है।

3. समरथ को नहिं दोष गुसाईं—समर्थ को लोग दोष नही देते।

4. परहित सरिस धरम नहिं भाई—परोपकार के समान दूसरा धर्म नही है।

5. सूरदास खल कारीकामरि पर चढ़ै न दूजो रंग—दुष्टो पर उपदेश का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

6. जब नीके दिन आइ हैं, बनत न लगि है देर—अनुकूल समय आने पर सब कुछ ठीक हो जाता है।

7. धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी। आपतिकाल परखिए चारी—धैर्य, धर्म, मित्र और पत्नी की परीक्षा आपतिकाल में ही होती है।

8. अब पछिताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत—अवसर निकल जाने पर पश्चाताप व्यर्थ है।

9. भूखे भजन न होहिं गुपाला—ईश्वर-भक्ति भी पेट भरा होने पर ही सूझती है।

10. जाके पाँव न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई—स्वानुभव के बिना दूसरे के कष्ट का अनुमान नही होता।

11 दुविधा में दोनों गये, माया मिली न राम—दुविधा में पड़ा रहने वाला व्यक्ति सफलता प्राप्त नही कर सकता। .

12. पर उपदेश कुशल बहुतेरे—दूसरों को उपदेश देना सरल होता है।

· व्यंजना प्रधान होने के कारण इन सूक्तियो को लोकोक्तियों मे भी स्थान दे दिया जाता है।

कुछ संस्कृत के सुभाषित भी हिन्दी मे सूक्तियो के रूप में प्रचलित है,यथा—

1. दैवो दुर्बल घातकः—ईश्वर भी कमजोर को ही मारता है।

2. शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्— धर्म-पालन मे शारीरिक स्वास्थ्य पहला साधन है।

3. शठे शाठ्यं समाचरेत्—दुष्ट के साथ दुष्टता का ही व्यवहार करना चाहिए।

4. श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्—श्रद्धालु व्यक्ति ही ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

5. अति सर्व वर्जयेत्—किसी भी चीज की अति करना हानिकारक है।

लोकोक्तियों का वर्गीकरण

लोकोक्तियों मे मानव के दैनिक अनुभवो के ऐसे निष्कर्ष होते हैं जिनसे मानव जीवन से सम्बन्धित कोई-न-कोई सत्य अभिव्यक्त होता है। जीवन की ये सत्यानु-

मूतियां जीवन के विभिन्न क्षेत्रों मे प्राप्त अनुभवों से प्रसूत होनेके कारण विभिन्न रूप-रंगो की होती हैं। उन्हें विभिन्न कोटियों मे रखा जा सकता है, किन्तु किस तरह— यह एक टेढ़ा प्रश्न है।

यह सच है कि किसी व्यक्ति विशेष की विदग्धता ही लोकोक्ति को जन्म देती है किन्तु कालान्तर मे वह उक्ति सार्वजनिक सम्पत्ति बन जाती है और हम उसके आदि-निर्माता का नाम भी नही जानते। हिन्दी हो या अन्य कोई भाषा, उनमे ऐसी बहुत कम लोकोक्तियां हैं जिनके आदि निर्माता का हमें स्पष्ट ज्ञान है। और यहां भी यह सन्देह उत्पन्न होता है कि क्या सचमुच वही रचनाकार उस उक्ति का सृष्टा है। यह भी तो संभव है कि उस तरह का कोई कथन पहले से ही जन-जीवन मे प्रचलित रहा हो और उसने उसे ज्यो का त्यो या दूसरे शब्दों मे सामने रख दिया हो। अत. व्यक्ति-विशेष के नाम से लोकोक्तियों का वर्गीकरण करना कोई सुरक्षित आधार नही है। यह इसलिए भी कि किसी भाषा की लोकोक्तियों के भण्डार में से उन लोकोक्तियो की सख्या अत्यल्प होती है, जिनके आदि निर्माता का हमे तथाकथित ज्ञान होता है।

लोकोक्तियो का एक आधार वे कहानिया, घटनाएँ और परिस्थितियाँ भी है जिनके सम्बन्ध मे विश्वास किया जाता है कि वे ही उनके आविर्भाव के मूल कारण है और उसी प्रकार की समान घटना, परिस्थिति या प्रसंगादि के स्पष्टीकरण हेतु उनका प्रयोग होता है। इस तथ्य में यथेष्ट बल है किन्तु इस आधार पर वर्गीकरण करने मे भी लोकोक्तियों का बहुत बड़ा भाग अवर्गीकृत रह जाएगा। क्योकि अधिकाश लोकोक्तिया सामान्य सत्यानुभूति से सम्बद्ध रहती हैं। उनके पीछे किसी घटना अथवा परिस्थिति विशेष की कल्पना करना उचित नही लगता। कुछ लोकोक्तियां ऐसी हैं जिनकी आधारभूत कहानी, घटना अथवा परिस्थिति विशेष का अब पता लगाना सभव नही है। फिर जिनके सम्बन्ध मे ऐसा ज्ञान है भी, वह भी दो टूक नही है। कही कुछ कहा जाता है तो कही कुछ।

यदि अर्थ को वर्गीकरण का आधार बनाया जाए तो उसमे सबसे बडी कठिनाई यह उपस्थित होती है कि अनेक ऐसी कहावतें हैं जिनका एक ही सत्यानुभूति से सम्बन्ध होता है अर्थात् उनका एक ही अर्थ होता है और जीवन के विभिन्न क्षेत्रो से प्राप्त अनुभवों को इस आधार पर एक ही वर्ग में रखना पड़ेगा। उदाहरणार्थ—

(1) एक अनार सौ बीमार। (2)एक नीम सब घर सितलहा। (3)एक नीम सौ कोढी। (4) एक पेड़ हरे सगरे गाँव खाँसी आदि कहावतो का जो अर्थ है, वही (1) एक हुरदसिया, सबरा गाँव रसिया। (2) एक सुहागन सौ लोडे और (3) सहस्सर गोपी एक कन्हैया आदि का भी है। प्रथम वर्ग मे जहाँ

वनस्पति-जगत् से संबंधित ज्ञान मुख्य आधार है, वहां दूसरे वर्ग में नर-नारी सम्बन्ध और तत्सम्बन्धी रसिकता मुख्य आधार है। निष्कर्ष एक है किन्तु आधार जीवन के भिन्न अनुभव है। लोकोक्ति में जीवनानुभव ही उसका प्राण होता है। अतः उसी जीवनानुभव को लोकोक्ति की कोटि निर्धारित करने का आधार होना चाहिए।

सामान्यतः लोकोक्ति एक ऐसा अप्रस्तुत कथन है जिसके सहारे प्रस्तुत अर्थ प्रकट होता है। लोक में जो अनुभव प्राप्त होता है उसके आधार पर जीवन-सत्य की अभिव्यक्ति ही उसका उद्देश्य होता है। अतः लोकोक्तियो के वर्गीकरण में विशिष्ट जीवन-सत्य का एक वर्ग बनाकर और उसे अभिव्यक्ति प्रदान करने वाले जीवनानुभवों को उनके विशिष्ट क्षेत्र के अनुरूप उपवर्गो मे वर्गीकृत करना ही श्रेयस्कर है। इस प्रकार मानव-जीवन को केन्द्रबिन्दु मानकर उसके चारो ओर फैले लोक अर्थात् मानव के अनुभव-क्षेत्र को एक साथ ध्यान में रखना होगा। इसके लिए सर्वप्रथम जीवन-सत्यों के वर्ग बनाने होंगे और पुनः उनकी अभिव्यक्ति करने वाली लोकोक्तियो को अनुभव-क्षेत्र के अनुरूप उपवर्गों मे वर्गीकृत करना होगा।

मुहावरों के समान कुछ लोकोक्तियां समान अर्थ रखती हैं तो कुछ एक-दूसरे के विलोम भी होती हैं। कुछ का अपने अभिधेयार्थ से विपरीत अर्थ भी निकलता है तो किसी का मूलाधार कोई विशिष्ट मुहावरा भी होता है। स्रोत का आधार लेकर भी उनका वर्गीकरण किया जा सकता है। हिन्दी में कुछ लोकोक्तियों का आधार सस्कृत आदि की प्राचीन सूक्तियाँ हैं तो कुछ उसके अपने रचनाकारों की देन हैं। कुछ विशिष्ट ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित हैं तो कुछ पौराणिक दन्त-कथाओ आदि पर। इनके अतिरिक्त फारसी-अरबी आदि विदेशी स्रोतों से भी अनेक लोकोक्तिया ग्रहण की गई हैं। कुछ का आधार हिन्दी की उपबोलियाँ हैं जिनमे आज तक भी बोली के उसी स्वरूप को सुरक्षित रखने का प्रयास किया जाता है। ये सारे आधार हैं जिन पर लोकोक्तियों को वर्गीकृत किया जा सकता है किन्तु इस प्रकार के वर्गीकरण से कोई विशेष लाभ नहीं है।

मेरे विचार से लोकोक्तियों का वही वर्गीकरण उपयोगी होगा जिससे यह स्पष्ट हो सके कि किसी समाज ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों मे किस तरह के अनुभव प्राप्त किए और उन अनुभवों के बल पर वह किस निष्कर्ष पर पहुँचा और जीवन तथा लोक के सम्बन्ध में वह युग-युगों से किस प्रकार का चिन्तन-मनन करता रहा है। वर्गीकरण से समाज के सांस्कृतिक मान-दण्डों को प्रत्यक्ष होना चाहिए। यदि समाज के सांस्कृतिक पक्ष को वह उजागर न कर सके तो फिर सारा प्रयास ही व्यर्थ है।

प्रस्तुत वर्गीकरण मे उपर्युक्त दृष्टिकोण को ही प्रधानता दी गई है। जीवन

और लोक के सम्बन्ध मे हिन्दी भाषा-भाषी समाज के जो अनुभव रहे हैं और उसकी लोकोक्तियो मे वे जिस रूप में अभिव्यक्त होते हैं, उन्हे अनुभव-क्षेत्र के अनुरूप अलग-अलग करने का प्रयास किया गया है। मैं सम्पूर्ण समाज को एक मानकर चला हूँ। एस० डब्ल्यू० फैलन आदि ने हिन्दू और मुस्लिम समाजों के अन्तर को भी ध्यान मे रखा है। यह ठीक है कि इन दोनों समाजों मे अन्तर था और आज भी किसी न किसी रूप मे वह अन्तर जीवित है, लेकिन जिस तरह हिन्दू पानी और मुसलमान पानी की बात हास्यास्पद लगती है, उसी तरह हिन्दू लोकोक्ति और मुस्लिम लोकोक्ति की बात भी गले नही उतरती। व्यवहार मे यह कभी नही होता कि जो कहावत मुस्लिम समाज मे प्रचलित हो उसका उपयोग हिन्दू न करता हो। होता तो यह है कि वक्ता अपनी बात के स्पष्टीकरण में हर उस कहावत को उपयोग में लाता है जो उस कार्य मे सहायक हो, भले ही वह कहावत उसके अपने धर्म या विशिष्ट सांस्कृतिक भावधारा की परिधि से बाहर की हो। यदि इसी अन्तर को तूल दिया जाए तो हिन्दू और मुसलमानों के भीतर भी अनेक वर्ग और उपवर्ग हैं। तब तो हमें हिन्दू कहावतों को सवर्ण और असवर्ण की कोटियो मे रखने के लिए भी बाध्य होना पड़ेगा। साहित्य जैसे पावन क्षेत्र में इस तरह के अलगाव और छुआछूत के लिए स्थान नही होना चाहिए।

मनुष्य जीवन जीता है लोक मे और जीने के लिए उसे जो कुछ भी करना पड़ता है, उसी के मध्य उसे कुछ ऐसी अनुभूतियाँ होती है जो यदि शब्द पा लेती हैं तो अपनी काल-सीमा से बहुत दूर युग-युगो तक लोगो की जबान पर चढ जाती हैं और इसी प्रकार की उक्तियाँ लोकोक्ति या कहावत कहलाती हैं। इनमें जीवन और लोक के विभिन्न क्षेत्रों मे प्राप्त अनुभवों का सत्य गुम्फित होता है। स्थूल रूप में इन्हें जीवन और जीवन के प्रति दृष्टिकोण तथा लोक और लोक-व्यवहार से सम्बन्धित दो वर्गों मे विभाजित किया जा सकता है। जीवन के अन्तर्गत शरीर और आत्मा से सम्बन्धित ज्ञान अनुभव और तत्सम्बन्धी चिन्तन-मनन को अभिव्यक्ति देने वाली लोकोक्तियां रखी जा सकती हैं। इसमे मानव-स्वभाव, मानव-मन, उसकी प्रवृत्तिया, आकाक्षाएँ, शारीरिक सुख-दुख, आत्मिक हर्ष-विषाद और जीवन के प्रति समग्र दृष्टिकोण को प्रकट करने वाली लोकोक्तियां आ जाती हैं। यदि लोक और लोक-व्यवहार से सम्बन्धित कहावतें भी उपर्युक्त तथ्यों पर प्रकाश डालती है तो उन्हें भी इसी वर्ग में स्थान दिया जा सकता है।

लोक से सामान्यतः मानव-जीवन के चतुर्दिक प्रसरित प्रकृति का अर्थ लिया जाता है। स्थूल रूप मे जिन्हे पंचतत्त्व कहते हैं उनके सम्पर्क से मनुष्य को जो सत्यानुभूति होती है उसे अभिव्यक्त करने वाली कहावतों का अपना अलग वर्ग है। दैनिक जीवन मे तुच्छ से तुच्छ और बड़ी से बड़ी वस्तुओ के व्यवहार में भी मनुष्य को विशिष्ट अनुभव प्राप्त होते हैं। वनस्पति जगत् और मानवेतर प्राणि-

जगत् के अपने निरीक्षण में मनुष्य जिन निष्कर्षों पर पहुँचता है, उन्हे अभि-
व्यक्ति प्रदान करने वाली लोकोक्तियों को भी अलग उपवर्गों मे स्थान दिया जा
सकता है।

धर्म, संस्कृति, समाज-व्यवस्था आदि भी मानव-जीवन के चारों ओर बुने हुए वे जाले हैं जो मनुष्य के अपने ही प्रयासों का फल है। इसकी विद्रूपता भी अनेक कहावतो का आधार है। आम आदमी ने अपनी रुचि-अरुचि के अनुसार इस सम्बन्ध में जो कुछ प्रतिक्रिया प्रकट की है उसे इस वर्गीकरण में अलग स्थान दिया गया है।

प्रायः सभी सामाजिक व्यवस्थाओं में नारी-जीवन की अपनी विशेष स्थिति और समस्यायें रही हैं। कुछ लोकोक्तियां ऐसी भी मिलती है जो इन्ही विशिष्टताओ के आधार पर बनी हैं और नारी-जीवन के सन्दर्भ मे ही कही-सुनी जाती हैं। इनको भी भिन्न स्वरूप के कारण प्रस्तुत वर्गीकरण में अलग से संग्रहीत किया गया है।

प्रयास यह किया गया है कि जीवन और लोक के जिस क्षेत्र विशेष का ज्ञान अथवा अनुभव लोकोक्ति के निर्माण में सहायक हुआ हो, उसे उसी क्षेत्र विशेष के लिए निर्धारित उपवर्ग में स्थान मिले। लेकिन कुछ लोकोक्तियों मे इस प्रकार के ज्ञान अथवा अनुभव का मिश्रण भी प्राप्त होता है। ऐसी लोकोक्तियों में उस मिश्रित ज्ञान अथवा अनुभव मे से अधिक महत्वपूर्ण अंश को ध्यान मे रखने का प्रयास किया गया है। हो सकता है कि यहाँ पर मेरे दृष्टिकोण से विद्वान् पाठक सहमत न हों और वे उस लोकोक्ति को दूसरे वर्ग मे स्थान देना चाहें।

आम आदमी की खोज

आजकल साहित्य मे आम आदमी की चर्चा जोरों पर है। लेकिन युगों से मुलम्मे पर मुलम्मों के जो स्तर चढते रहे हैं, उनके नीचे 'नंगे मादरजाद' की खोज करना सरल नही है। आम आदमी की खोज करने वाले प्रायः वर्तमान के घेरे में या विशिष्ट आदर्शों की चकाचौंध में चुंधिया जाते हैं और उनके हाथ जो कुछ भी लगता है, वह आम आदमी नहीं, उसकी कृत्रिम छाया-मात्र होती है। कालजयी आम आदमी को अगर ढूंढना है, उसके रूप-रंग, स्वभाव, सुख-दुःख, आशा-निराशा, आकांक्षा, बेबसी, प्रतिक्रिया और चिन्तन-मनन का अगर पता लगाना है तो इसका सबसे सुरक्षित आधार उसकी अपनी वे उक्तियां हैं जो लोक मे लोकोक्ति या कहावत कहलाती हैं। साहित्य में भी आम आदमी का वर्णन होता है किन्तु उसमे लेखक के अपने आदर्श, पूर्वाग्रह और दृष्टिकोण प्रमुख हो जाते हैं। आम आदमी वहाँ या तो राम के रूप में या रावण के रूप मे उभरकर सामने आता है जबकि आम आदमी इन दोनों अतियों के मध्य कही और स्थित होता

है। लोकोक्तिया उसकी अपनी उक्तियाँ हैं। किसी घटना, किसी परिस्थिति विशेष अथवा किसी अन्य प्रसग मे मनुष्य के स्वभाव तथा आचरण के दुरंगेपन से किसी विदग्ध के हृदय में जो कचोट उत्पन्न होती है, वही कचोट यदि किसी जीवन-सत्य को लेकर अभिव्यक्त होती है तो लोकोक्ति बन जाती है। आम आदमी के ऊबड़-खाबड़ जीवन की तरह न तो उनमे भाषा का कृत्रिम संस्कार होता है और न किन्ही आदर्शो की आड़ मे अपने मौलिक स्वरूप को छिपाने का प्रयास। मनुष्य की अपनी दुर्बलताएँ अपने प्रकृत रूप में लोकोक्तियों में ही प्रकट होती हैं। वे ऐसी फबतियाँ-व्यग्योक्तियाँ हैं जो आम आदमी के द्वारा अपने ही स्वभाव और आचरण के दुरंगेपन पर कही गई हैं। इन व्यंग्योक्तियों से यह भी पता चलता है कि आम आदमी अपनी दुर्बलताओ के कीचड़ में रेंगना पसन्द नही करता। उसका उद्देश्य सदा उनसे ऊपर उठने का रहा है। अधिकांश लोकोक्तियां मनुष्य की दुर्बलताओ से सम्बन्ध रखती है और प्रतिक्रिया-स्वरूप उनमे आम आदमी का असन्तोष ही मुखर हुआ लगता है। जिन कथनों में उसकी बेबसी, दीनता और अदृष्ट के सम्मुख हथियार डालने की भावना ध्वनित होती है, उनमें भी प्रकारान्तर से वही असन्तोष बोलता सुनाई पड़ता है। आम आदमी की इस मन.स्थिति के दर्शन लोकोक्तियों में स्पष्टतः होते हैं। प्रस्तुत वर्गीकरण मे आम आदमी के इसी स्वरूप को उभारने का प्रयास किया गया है।

—शोभाराम शर्मा

शरीर तथा शरीरांगों पर आधारित लोकोक्तियां

अंधा क्या जाने वसन्त की बहार ?
मूर्ख वसन्त के गुण क्या जाने ? (मूर्ख श्रेष्ठ वस्तु की पहचान नहीं कर पाता)

अंधा क्या जाने लाल की बहार ?
जिसने जो वस्तु देखी ही नहीं वह उसकी विशेपता क्या जाने ?

अंधा गाए, बहरा बजाए
समान मूर्खों के इकट्ठा होने पर कहा जाता है। (एक से मूर्ख)

अंधा गुरु, बहरा चेला; दोनों नरक में ठेलमठेला
अन्धानुगमन सर्वनाश का कारण है।

अंधा गुरु, बहरा चेला; मांगे हड़, दे बहेड़ा
एक दूसरे से विपरीत होना या मिलकर काम न करना।

अंधा बेईमान, बहरा बहिश्ती
अंधा धूर्त होता है और बहरा भलामानुप क्योंकि वह किसी की बुराई नहीं सुन,सकता।

अंधा लकड़ी एक बार खोता है
होशियार से एक ही बार चूक होती है।

अंधा सिपाही, कानी घोड़ी; विधना ने आन मिलाई जोड़ी
निकम्मे या बेतुके आदमी के साजबाज या संगी-साथियों का भी बेतुका होना।

अंधा देखे तब पतियाय
काम होने पर ही विश्वास होता है।

अंधे की दाद न फरियाद, अंधा मार बैठेगा
शिकायत किससे करें ? चिढ़े हुए को और चिढ़ाने के लिए कहा जाता है।

अंधी मां निज पूतों का मुंह कभी न देखे
दुर्भाग्यवश अपनी वस्तु का लाभ न उठा पाना।

अंधा क्या चाहे ? दो आंखें

जिसे जिस वस्तु की आवश्यकता होती है वह उसी की चिन्ता करता है। (वांछित वस्तु के प्राप्त होने की आशा पर भी कहा जाता है।)

अंधे आगे रोवे, अपना दीदा खोवे

मूर्खों से बात करने का कोई लाभ नहीं।

अंधे के हिसाब दिन-रात बराबर

क्योंकि उसे कुछ दिखाई नहीं देता। (जो जिस वस्तु का उपयोग नहीं कर सकता उसके किस काम की।)

अंधे को अंधा कहने से बुरा मानता है

अप्रिय सत्य नहीं कहना चाहिए।

अंधे को भगना क्या जरूर है ?

जो जिस काम को नहीं कर सकता, वह उसे करे ही क्यो ?

अंधे को सब अंधे ही दिखते हैं

मूर्ख को सब अपने ही जैसे लगते हैं।

अंधे को अंधेरे में बड़ी दूर की सूझी

मूर्ख द्वारा लम्बी-चौड़ी हांकने पर कहा जाता है।

अंधे ने चोर पकड़ा, दौड़ियो मियां लंगड़े

शक्ति से बाहर काम पर चिपके रहने वाले से कहा जाता है।

अंधेर रसिया ऐना पर मरे

कोई हास्यजनक इच्छा प्रकट करने पर कहा जाता है।

अंधों ने गांव लूटा, दौड़ियो वे लंगड़े

अंधे ने चोर पकड़ा, दौड़ियो मियां लंगड़े।

अंधों में काना राजा

मूर्खों में कम जानकार की इज्जत होती है।

अन्दर से काले बाहर से गोरे

भीतर से बुरे, देखने में अच्छे।

अपना टेंटर देखे नहीं, दूसरों की फुल्ली निहारे

अपने बड़े दोष न देखकर दूसरो के छोटे-छोटे दोष देखना।

अपना नैना मुझे दे तू घूम फिर के देख

तू हवा खा।

अपनी दाढ़ी सब बुझाते हैं

सब अपनी चिन्ता पहले करते हैं।

अपनी नाक कटे तो कटे, दूसरों का सगुन तो बिगड़े

दूसरो को हानि पहुँचाने के लिए अपनी हानि कर लेना।

शरीर तथा शरीरांगों पर आधारित लोकोक्तियां

अपने नैन गँवाय के दर-दर मांगे भीख
जो अपनी चीज की रक्षा नहीं कर पाता, वह कष्ट उठाता है।
अपने लगे तो देह में, और के लगे तो भीत में
दूसरे के कष्ट की परवाह न करना।
अफसोस ! दिल गड्ढे में
मनचाही न कर पाने पर कहा जाता है।
अभी तो दूध के दांत भी नहीं टूटे हैं
बढ़चढ़कर बात करने पर कहा जाता है।
अभी तो होठों पर दूध भी नहीं सूखा है
बच्चे हो, बूढ़ों की तरह बात मत करो।
आंख एकौ नाहीं, कजरौटी दस ठाईं
झूठा आडम्बर।
आंख ओझल, पहाड़ ओझल
किसी को तभी तक हमारा ध्यान रहता है, जब तक उसकी नजर के सामने रहो।
आंख का अंधा गांठ का पूरा
ऐसा मूर्ख धनी जिसका माल आसानी से उड़ाया जा सके।
आंख का अंधा नाम नयन सुख
नाम के विपरीत गुण।
आंख की बदी भौंह के सामने
बुरी नीयत छिपती नहीं है, चेहरे पर प्रकट हो जाती है।
आंख के आगे नाक, सूझे क्या खाक ?
आँख पर परदा पड़ा है, दिखाई क्या दे ? (बेहया के प्रति कहते हैं।)
आंख चौपट अंधेरे नफरत
झूठी विशेषता बताकर शान बघारने पर कहा जाता है।
आंख न दीदा, काढ़ें कसीदा
काम करने का शऊर नहीं, फिर भी काम करने की चाह।
आंख नहीं पर काजर पारे
झूठा आडम्बर।
आंख में मैल और इसमें मैल नहीं
स्वच्छ अथवा सच्चरित्र।
आंख में खोर, दांत निपोर
सिलबिला आदमी।

आंखों का नूर, दिल की ठंडक
प्रिय जन ।
आंखो की सुइयां निकालना बाकी है
बस थोडा सा काम बाकी है ।
आंखो पर पलकों का बोझ नहीं होता
अपने घर का आदमी भारी मालूम नही होता अथवा बडों को छोटों का भरण-पोषण करना ही पडता है ।
आंख फूटेगी तो क्या भौंह से देखेंगे ?
जिस पर सब कुछ निर्भर है या जो मुख्य वस्तु है वही नही रहेगी तो काम कैसे चलेगा ?
आंख और कान में चार अंगुल का फर्क होता है
देखने और सुनने मे बडा अन्तर होता है ।
आंख हैं या भैंस के चूतड़
जिसे सामने की वस्तु दिखाई न दे उसके लिए कहा जाता है ।
आंख फूटी, पीर गई
अच्छी वस्तु कष्टदायक हो तो उसका जाना ही अच्छा ।
आंखो देखा भट पड़े, मैंने कानो सुना था
आंखों देखी बात पर विश्वास न करने वाले से कहा जाता है ।
आंखों वालो, आंखें बड़ी नियामत है
अंधे भिखारियों की टेर ।
आंखों से सुखी, नाम हाफिज जी
गलत नाम ।
आंत भारी तो माथ भारी
पेट ठीक न रहने से सिर भारी रहता है ।
आंधर कूटे, बहरा कूटे, चावल से काम
काम होने से मतलब है ।
आंसू एक नहीं, कलेजा टूक-टूक
झूठी सहानुभूति दिखाना ।
अपना हाथ जगन्नाथ
अपने हाथ का काम सबसे अच्छा होता है ।
आदमी की पेशानी दिल का आईना है
भाव चेहरे पर दिखाई पडते हैं ।
आ बला, गले लग
स्वयं कोई मुसीबत मोल लेने पर कहा जाता है ।

शरीर तथा शरीरांगों पर आधारित लोकोक्तियां

आरसी में मुंह देखो
तुम इस योग्य नहीं। डींग हांकने वाले या अनुचित मांग करने वाले से कहा जाता है।
इतनी सी जान, गज भर की जबान
वाचालपन पर कहा जाता है।
इस हाथ दे, उस हाथ ले
नकद सौदा। कर्म का फल शीघ्र मिलता है। व्यवहार में सावधानी बरतना।
उठते ही टांग टूटी
कार्यारम्भ करते ही विघ्न।
उठती जवानी, मांझा ढीला
निकम्मे या आलसी के लिए कहा जाता है।
उतरा घाटी, हुआ माटी
मृत शरीर या गले के नीचे गया अन्न।
उलटी खोपड़ी, औंधा ज्ञान
मूर्ख। कहा जाय कुछ, समझे कुछ।
उलटी टांगें गले पड़ीं
उलटे विपत्ति में फंसे।
उसी की जूती उसी का सिर
उसी के साधन से उसी की हानि।
ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की सांस नीचे
सन्न रह जाना। कुछ न कर पाना।
ऊपर का घड़ भाई, नीचे का अल खुदाई
ऊपर से अच्छा भीतर से बुरा।
एक आंख फूटती है तो दूसरी पर हाथ रखते हैं
एक हानि पर दूसरी से बचने का प्रयास करते हैं।
एक आंख मटर का बिया, वह भी आंख भवानी लिया
हानि पर हानि।
एक आंख से रोवे, एक से हंसे
रोने का झूठा स्वांग।
एक दम में हजार दम
एक सांस बाकी है तो जीने की आशा है या एक से हजार की गुजर-बसर होती है।
एक दम हजार उम्मेद
अन्तिम सांस तक जीवित रहने की आशा होती है या जान के पीछे हजार

आशाएँ लगी रहती हैं।

एक आंख में लहर-बहर, एक आंख में खुदा का कहर
काना या धूर्त।

एक कान सुनी, दूसरे कान उड़ाई
किसी की बात पर ध्यान न देना।

एक कान बहरा करो, एक कान गूंगा
कोई तुम्हारी बुराई करे तो उस पर ध्यान मत दो।

एक मुंह दो बात
बात कहकर बदलना।

एत तो कानी थी ही, दूसरे पड़ गया फुनक
विपत्ति मे विपत्ति।

एक हाथ से ताली नहीं बजती
झगड़ा दोनो ओर से होता है।

एक सिर, हजार सौदा
एक आदमी के सिर बहुत से काम

ओखली में सिर दिया तो मूसल का क्या डर ?
जब कोई कार्य उठा लिया तो बाधाओं का क्या डर ?

औंधे मुंह, उल्टी मत
मूर्ख के लिए कहा जाता है।

औंधे मुंह दूध पीते हैं
बच्चे हैं। अनजान या व्यंग्य मे मूर्ख को भी कहते हैं।

एक जान, हजार अरमान
इच्छाओं का अन्त नही है।

एक तन्दुरुस्ती, हजार न्यामत
तन्दुरुस्ती बड़ी चीज है।

कल्ला चलै सतर बला टलै
आदमी के लिए भोजन बड़ी चीज है।

कलेजा टूक-टूक, आंसू एक भी नहीं
झूठी सहानुभूति का प्रदर्शन।

कहीं नाखून भी गोश्त से जुदा होता है ?
घर का घर का ही रहता है।

काटो तो खून नहीं
सन्न रहने या त्रस्त होने पर कहा जाता है।

कानी को कौन सराहे, कानी की मां (मियां)
अपनी वस्तु सभी सराहते है।
काने की एक रग सिवा होती है
काने प्रायः कुटिल होते हैं।
काला मुंह करील के दांत
काला और बदशक्ल आदमी।
काले सिर का बेढब होता है
मनुष्य एक बेढब प्राणी है।
किसी का मुंह चले, किसी का हाथ
मार बैठने वाले की सफाई।
किसी को तवे में दिखाई देता है किसी को आरसी में
अपनी-अपनी दृष्टि है—व्यंग्य।
कोई आंख का अन्धा, कोई हिये का अन्धा
कोई आँख का अंधा होता है तो ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जो आँखों के रहते हुए भी नहीं देखते।
कोढ़ी डरावे थूक से
नीच तंग करने के लिए घृणित उपाय करता है।
कोढ़ी मरे, संगाती चाहे
बुरा अपने साथ दूसरे की भी हानि चाहता है।
कोता गरदन, तंग पेशानी; हरामजादे की यही निशानी
छोटी गर्दन और कम चौड़े माथे वाला दुष्ट होता है।
कोता गर्दन, दुम दराज
धूर्त के लिए कहा जाता है।
क्या मुंह और क्या मसाला ?
बनावटी या योग्यता से बाहर बात करने पर कहते है।
क्या मुंह पर फिटकार बरसती है ?
तुम्हें धिक्कार है। (तुम्हें शर्म नही आती जो ऐसा बुरा काम किया ?)
क्या मुंह में घुनघुनिया है ?
संकोचवश अपनी बात न कहने वाले से कहा जाता है।
क्या मुंह में पंजीरी भरी है ?
(जो बोल नहीं पाते) सकोच करने वाले से कहा जाता है।
खलक का हलक किसने बन्द किया
दुनिया के मुंह को कौन बन्द कर सकता है ? लोग तो कहते ही रहेंगे।

खाली हाथ मुंह तक नहीं जाता
आदमी को उदार होना चाहिए।
खिचड़ी खाते पहुँचा उतर गया
सुकुमारता पर व्यंग्य।
खुदा गंजे को नाखून न दे
ओछा ऊँचे पद पर पहुँचकर अंधेर मचाता है।
खून वह जो सिर चढ़ के बोले
खून छिपता नहीं।
गंजा मरा, खुजाते-खुजाते
अपने कर्मों का फल भोगना पडता है।
गंजी पनहारी, सिर पर कांटों की कुंडरी
मुसीबत पर मुसीबत।
खाली दिमाग शैतान का घर
जिसे कोई काम नहीं उसे शैतानी सूझती है।
गई जवानी फिर न बहुरे, चाहे लाख मलीदा खाओ
जवानी फिर नहीं लौटती, चाहे कितना माल-मसाला खाओ।
गले पडा ढोल बजाना ही पड़ता है
बेबसी के लिए कहा जाता है।
गले पड़ी, बजाए सिद्ध
विवश होकर कोई काम करने पर कहा जाता है।
गूंगे का गुड, खट्टा न मीठा
असलियत का पता न लगना या समझ मे न आना।
गूंगे ने सपना देखा, मन ही मन पछताय
उसे दुःख होता है कि वह अपना सपना किसी को सुना नहीं सकता। (व्यक्त न कर पाने की विवशता)
गोद में बैठकर आंख में उंगली
उपकार के बदले अपकार।
घुटने नवेंगे तो पेट को ही
अपनों का पक्ष सभी लेते हैं।
चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय
महा कंजूस जो थोड़ी हानि के लिए बड़ी हानि उठाता है।
चिकने मुंह को सब ताकते हैं
बड़े आदमियों की सब खुशामद करते हैं। (चिकने मुंह को सब चूमते हैं।)

चांद में मैल नहीं
खोपड़ी साफ या गंजा है ।
छाती पै बाल नहीं, भालू से लड़ाई
सामर्थ्य न होते हुए भी बड़े काम का बीड़ा उठाना ।
छोटा मुंह बड़ा निवाला
सामर्थ्य से बाहर काम ।
छोटे मुंह बड़ी बात
धृष्टता या बढ़-चढ़कर बात करना ।
जब तक सांस, तब तक आस
(1) जब तक सांस चलती है, मरणासन्न के जीने की आशा रहती है (2) आशा अन्त तक मनुष्य का साथ नहीं छोड़ती (3) अन्त तक आशा रखो ।
जबां शीरीं, मुल्कगीरी
मधुरभाषी के लिए कौन पराया है ?
जबान जने एक बार, मां जने बार-बार
जबान से निकली बात पलटनी नहीं चाहिए ।
जबान ही हलाल है, जबान ही मुरदार है
जीभ ही न्याय करती है और जीभ ही अन्याय ।
जबान ही हाथी चढ़ाए, जबान ही सिर कटवाए
बातों हाथी पाइए, बातों हाथी पांव ।
जरा सा मुंह बड़ा सा पेट
बहुत खाऊ या द्वेष रखने वाले लड़के के लिए कहते हैं ।
जरा सा मुंह, बड़ी बातें
लड़के लिए कहा जाता है । (बातूनी लड़का)
जहां तुम्हारा पसीना गिरे, वहां हम खून गिरायें
तुम्हारा अच्छी तरह साथ देंगे ।
जाके पैर न फटे बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई ?
भुक्तभोगी ही दूसरे की पीड़ा समझता है ।
जिसकी गोद में बैठे, उसकी दाढ़ी नोंचे
कृतघ्न के लिए कहा जाता है ।
जितने मुंह, उतनी बातें
अफवाह फैलाना या एक बात अनेक प्रकार से कही जा सकती है ।
जी का बैरी जी
जीव जीव का भक्षक है या मनुष्य स्वयं अपना शत्रु है ।

जी के बदले जी

जान के बदले जान (गिरवी रखते समय कहा जाता है ।)

जी जाय घी न जाय

चमडी जाय पर दमडी न जाय ।

जी बहुत चलता है पर टट्टू नहीं चलता

बुढापे की अशक्तता पर कहा जाता है ।

जीभ जली, न स्वाद आया

थोड़ा खाने को मिलने पर या कष्टदायक काम का अच्छा परिणाम न निकलने पर कहा जाता है ।

जीभ रोगों की जड़ है

कुपथ्य से ही अनेक रोग होते है ।

जैसा मुंह, वैसी चपेड़

पात्रानुसार फल ।

जैसा मुंह, वैसा बीड़ा

पात्रानुसार फल ।

जैसे ऊधो, वैसे यान; न उनके चोटी, न उनके कान

दोनों एक से निकम्मे ।

जो तिल हद से ज्यादा हुआ मस्सा हुआ

हद से बाहर कोई चीज अच्छी नही लगती ।

झूठ के पांव नहीं होते

झूठ परीक्षा मे नही ठहरता या कलई खुल जाती है ।

ठोंगे मार किया सिर गंजा, कहे, 'मेरे हैं हाथ न पंजा'

हानि पहुंचाकर निर्दोष बनना ।

तन ताजा तो कलन्दर राजा

पेट भरा हो तो कलन्दर भी राजा है ।

तलवों की सी कहूं या जीभ की सी

दोनों ओर से घूस खाने पर धर्म-सकट की स्थिति के लिए कहा जाता है ।

तलवों में लगी, सिर से निकल गई

क्रोध भडकने पर कहा जाता है ।

तले का दम तले रह गया, ऊपर का ऊपर

बुरी खबर सुन कर स्तब्ध रह जाना ।

तले के दांत तले रह गए

आश्चर्य चकित रह जाना ।

तुम्हारे मुंह में कै दांत हैं, यह तो कोई पूछता ही नहीं
आप हैं कौन ? यह कोई पूछता ही नहीं।
ते-ते पांव पसारिये जेती लाम्बी सौर
सामर्थ्य के भीतर काम करो।
तेरे मेरे सदके में उसकी जोरू पेट से
किसी नपुंसक की स्त्री का गर्भ रह जाए तो मजाक मे कहा जाता है।
दम का क्या भरोसा है आया न आया
जिन्दगी का क्या ठिकाना ?
दम का दमामा है
जिन्दगी का सारा खेल है।
दम गनीमत है
जब तक आदमी जिन्दा है तभी तक गनीमत है।
दमदमे में दम नहीं, खैर मांगो जान की
निराश अवस्था मे कहा जाता है।
दम बना रहे, फूंक निकल जाय
ऊपर से भला चाहने और भीतर से हानि पहुंचाने पर कहा जाता है।
दस नकटों में एक नाक वाला नक्कू
जैसा समाज वैसी चाल चले।
दिए लोभ चसमा चखनु, लघु पुनि बडो लखाय
लोभ के कारण छोटा भी बडा दिखाई देता है।
दिल का दिल आईना है
एक के हृदय की बात दूसरे से छिपी नही रहती।
दिल का मालिक खुदा है
वह जिससे भी जैसा काम करवा ले।
दीवारबाजी और मौला राजी
शोहदो का कथन।
दीवार के भी कान होते हैं
गुप्त बात सतर्कता से करें।
दोनों हाथों से ताली बजती है
झगड़े मे दोनो पक्ष दोषी होते हैं।
धूप में बाल सफेद नहीं किए हैं
दुनिया देखी है। बहुत अनुभव है।
नंगा खड़ा उजाड़ में, है कोई कपड़े ले
जिसके पास कुछ नही उसकी कोई क्या हानि करेगा ?

नंगा खुदा से बड़ा
नंगे को किसी बात का भय नहीं।
नंगा नाचे फाटे क्या ?
जिसके कपड़े ही नहीं, उसका फटेगा क्या ? (जिसके पास कुछ न हो, उसकी हानि क्या ?)
नकटे की नाक कटी सवा गज और बढ़ी
बेशर्म के लिए कहा जाता है।
नकटा जीवे, बुरे हवाल
सब उसकी ओर उंगली उठाते हैं।
नल का मारा नलवा टूटे
साधारण कारण से कभी भारी हानि हो जाती है।
नाक दे या नहरनी दे
असमंजस में डालना।
निकली हलक से चढ़ी खलक से
बात मुंह से निकलते ही दुनिया में फैल जाती है।
निकली होंठों, चढ़ी कोठों
बात मुंह से निकलते ही दुनिया में फैल जाती है।
नैना देत बताय सब हिय को हेत अहेत
प्रेम और बैर आँखों से स्पष्ट झलक जाता है।
नौ महीने मां के पेट में कैसे रहा होगा ?
चंचल या शरारती के लिए कहा जाता है।
पराई बदशगुनी के लिए अपनी नाक कटाई
दूसरों की हानि के लिए अपनी हानि कर लेना।
पराया सिर, कद्दू बराबर
दूसरे के माल की परवाह न करना।
पराया सिर पसेरी बराबर
पराया सिर कद्दू बराबर।
पाँचों अँगुलियाँ बराबर नहीं होतीं
सब एक से नहीं होते।
पाँचों अँगुलियाँ घी में, छठा सिर कढ़ाई में
पौ बारह होना या जिसकी खूब दाल गल रही हो उसके लिए कहते है।
पेट कुई, मुंह सुई
बहुत खाने वाले के लिए कहते हैं।

पेट चले, मन बस्तों को

दस्त लग रहे हैं और दाल खाने का मन हो रहा है। विपद्ग्रस्त जब ऐसा काम करने की इच्छा करे जिससे उसकी विपत्ति और बढ़ जाए तब कहते हैं।

पेट में आंत, न मुंह में दांत

वृद्ध का कथन।

पेट में घुसे तो भेद मिले

किसी के मन की बात जानना कठिन है अथवा यह घनिष्ठ संपर्क से ही संभव है।

फूटी सही, आंजी न सही

कीमती चीज की रक्षा के लिए थोड़ा सा खर्च न करने पर कहा जाता है।

पहले चुम्मे, गाल काटा

पहला काम ही चौपट कर दिया।

बंधी मुट्ठी, लाख बराबर

गुप्त दान का अन्दाज कठिन होता है अथवा साधारण आदमी की आर्थिक स्थिति का जब तक पता न लगे वह धनवान समझा जाता है।

बड़े बोल का मुंह नीचा

अहंकारी को नीचा देखना पड़ता है।

बड़ों का बड़ा ही मुंह

बड़ों की मांग भी बड़ी होती है।

बदन में दम नहीं, नाम जोरावर खां

नाम तो बड़ा पर काम कुछ नहीं।

बांह गहे की लाज

सहारा देने पर अन्त तक निभाना चाहिए।

बू गई, बूदार गई, रही खाल की खाल

शरीर की नश्वरता पर कहा जाता है।

बूढ़े मुंह मुंहासे, लोग आए तमाशे

बूढ़े के जवानों जैसा आचरण करने पर कहा जाता है।

भेजा खाए, और जेर सहलाए

खुशामद भी करे और खोपड़ी भी खाए—फ़ालतू आदमी से कहा जाता है।

भौं का गिला आंख के सामने

सम्बन्धियों से शिकायत करना या शिकायत का व्यर्थ जाना।

मन भर का सिर हिलाते हैं पैसे भर की जबान नहीं हिलाते

मुंह से उत्तर न दिए जाने पर कहा जाता है।

मुंड़े सिर पानी पड़ा, ढल गया
बेशर्म।
मन-मन भावे, मुड़िया हिलावे
ना में भी हाँ। इच्छा रहते हुए भी अस्वीकार सा करना।
माँ टेनी, बाप कुलंग; बच्चे निकले रंग-बिरंग
निकम्मे माँ-बाप की निकम्मी संतान।
मुंह का निवाला तो नहीं है
अपने हाथ का काम नहीं है।
मुंह काला, बख्त उजाला
दुष्ट भाग्यवान के लिए कहा जाता है।
मुंह के आगे खंदक नहीं
खाने या बात करने की एक सीमा होती है।
मुंह खाय, आँख लजाय
जिसका खाए उसका ऐहसानमन्द होना ही पड़ता है।
मुंह गैल तमाचे हैं
आदमी को देखकर उसका सम्मान होता है।
मुंह हाले सत्तर बला टाले
रोगी के प्रसग मे कहा जाता है।
मुई लोलो आंडों पर
कमजोर अपना गुस्सा वेकसूर या और दुर्बल पर उतारता है।
मुंह देखे की मुहब्बत है
दिखावटी प्रेम सब करते हैं।
मुंह पर कहे सो मूंछ का बाल, पीछे कहे सो झांट का बाल
पीठ पीछे किसी की निन्दा ठीक नही।
मुंह में दांत न पेट में आंत
बहुत बूढा मनुष्य।
मुंह रहते नाक से पानी पिए
असगत काम करने वाले मूर्ख से कहा जाता है।
मुंह सुई, पेट कुई
जो थोड़ा-थोड़ा करके बहुत खा जाए या जो देखने में तो भला पर वास्तव मे बहुत शरारती हो।
मूत का चुल्लू हाथ में
गन्दगी उछालने वाला।

मैं की गर्दन (गले) पर छुरी
अहंकारी को नीचा देखना पड़ता है।
यह दाढ़ी धोखे की टट्टी है
दाढ़ी देखकर इसे भला आदमी न समझो—धूर्त के लिए कहा जाता है।
यह मुंह और मसूर की दाल (खाना)
योग्यता से अधिक चाहने पर कहा जाता है।
यही मुंह यही मसाला
क्या इसी मुंह से यह मसाला खायेंगे ? पहले योग्यता तो उत्पन्न करो।
राम मिलाई जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी
दो एक से दुष्ट आदमियों के मिलने पर कहते हैं।
रिजाले के नाखून हुए
दुष्ट को सताने का साधन मिल गया।
रीता हाथ मुंह तक नहीं जाता
खाली हाथ काम नहीं चलता।
रोते क्यों हो ? कहा, 'शक्ल ही ऐसी है'
मनहूस या मुंहफुल्ले आदमी के लिए कहते हैं।
लंगड़े ने चोर पकड़ा, दौड़ियो मियां अंधे
बेतुकी बात के लिए कहा जाता है।
लंगड़े लूले गये बारात, दो-दो जूते दो-दो लात
निकम्मों की हर जगह बुरी गत होती है।
लड़के के पांव पालने में पहचाने जाते हैं
होनहार लड़का बचपन से ही पहचान लिया जाता है।
लड़के को मुंह लगाओ तो दाढ़ी खसोटे, कुत्ते को मुंह लगाओ तो मुंह चाटे
नादान या ओछे को मुंह नहीं लगाना चाहिए।
लड़ाके के चार कान
झगड़ने के लिए दूसरे की बात बहुत जल्दी सुनता है।
लाज की आंख जहाज से भारी
शर्म के मारे आंख न उठने पर या संकोचवश इंकार न किए जा सकने पर कहते हैं अथवा शर्मदार की बात टाली नहीं जा सकती।
वाह मियां नाक वाले !
आप तो बड़ी इज्जत वाले हैं—व्यंग्य में कहा जाता है।
शाहजहां बूढ़े, बगल में छड़ी, खाते-पीते विपत पड़ी
बुढ़ापे में कष्ट होता है।

सांसा भला न सांस का, यान भला न फांस का

कांस की रस्सी अच्छी नहीं होती तो उसी तरह एक सांस के लिए भी भय करना अच्छा नहीं।

सियाही बालों की गई, दिल की आरज़ू न गई

बूढ़े लम्पट के प्रति कहा जाता है।

सिर का बाल घर की खेती है

कटवाने पर फिर बढ़ जाता है।

सिर गाला, मुंह बाला

बूढ़े होकर भी लड़कों जैसी बात करना।

सिर गैल सिरबाहा है

जैसा सिर वैसी पगड़ी अथवा अगुआ के बिना काम नहीं चलता।

सिर झाड़, मुंह पहाड़

बहुत भद्दी शक्ल का आदमी।

सिर दिया ओखली में तो मूसलों से क्या डरना ?

जब जोखिम उठा ही लिया तो कठिनाइयों से नहीं डरना चाहिए।

सिर बड़ा सरदार का, पैर बड़ा पलेवार (गंवार) का

स्पष्ट है।

सिर सलामत तो पगड़ी पचास

मूल रहेगा तो ब्याज भी मिलेगा। लड़का होगा तो बहू भी होगी। पेड़ होगा तो फल भी होगा।

सिर सिर अक्कल, गुर गुर विद्या

सबकी बुद्धि अलग-अलग और सबको सिखाना भी अलग-अलग होता है।

सिर से उतरे बाल, गू में जाओ या मूत में

जिसे त्याग दिया, त्याग दिया।

सूरत न शक्ल, भाड़ में से निकल

काला-कलूटा बदशक्ल।

सूरत में ऐसे, सीरत में ऐसे

न देखने में अच्छे न करनी के अच्छे—सब तरह से बुरे।

सौ नकटों में एक नाक वाला नक्कू

सौ बुरों में एक भला निभ नहीं सकता।

सौ में फूला, हजार में काना, सवालाख में ऐंचाताना

एक के मुकाबले दूसरा बुरा।

ऐंचाताना कहे पुकार कंजे से रहियो होशियार

एक के मुकाबले दूसरा बुरा।

सुख में आए करमचन्द, लगे मुड़ावन गंज
बैठे-ठाले मुसीबत मोल लेना।
सिर से लाया भारी
असंगत काम या बेडौल चीज।
सीस काटे, बालों की रक्षा
सिर काटकर बालों की रक्षा असंभव है। आधार की रक्षा की जानी चाहिए।
सीधी उंगलियों से घी नहीं निकलता
दुर्जन कड़ाई से ही वश में आते है।
सूरदास जन्म के नहीं आंधर
सूरदास जन्म के अँधे नही थे। अमुक व्यक्ति बिल्कुल मूर्ख है नहीं, उसने दुनिया देखी है—ऐसा भाव प्रकट करने के लिए कहा जाता है।
सूरा सो पूरा
अँधा बहुत होशियार होता है या जो वीर है वह कुछ भी कर सकता है।
हग न सके, पेट को पीटे
स्वयं न कर पाने पर दूसरों को दोष देना।
हजार आफतें हैं एक दिल लगाने में
प्रेम करना एक मुसीबत है।
हजार नियामत और एक तन्दुरुस्ती
तन्दुरुस्ती हजार नियामतों के बराबर है।
हमने भी तुम्हारी आंखें देखी हैं
हम भी तुम्हारी तरह हैं, धौंस मत दिखाओ।
हथिया चले न पैंया, दे गुसैंया
आलसी के प्रति कहा जाता है।
हलक का न तालू का, यह माल मियाँ लालू का
बुरी चीज, अन्याय से उपार्जित धन या कंजूस की चीज।
हलक न तालू, खाये मियाँ लालू
फालतू आदमी का मजाक उड़ाने के लिए कहा जाता है।
हलक से निकली खलक में पड़ी
बात मुँह से निकली और फैली।
हलुवा खाने को मुँह चाहिए
अच्छी वस्तु के लिए योग्यता चाहिए। हर आदमी के वश की बात नहीं।
हाड़ होंगे तो मांस बहुतेरा हो रहेगा
बीमार के प्रति कहा जाता है।

हाथ को हाथ पहचाने

जिससे ली है उसी को देंगे—ऐसा भाव व्यक्त करने के लिए कहा जाता है ।

हाथ को हाथ नहीं सूझता

घना अँधेरा ।

हाथ-पांव का आलकसी, मुंह में मूंछें जाय

बेहद आलसी ।

हाथ-पांव के लंगड़े, नाम सलामत खाँ

निकम्मा आदमी या गुण-विरुद्ध नाम ।

हाथ-पांव दियासलाई, बात करने को फजल इलाही

कमजोर बातूनी,जो कुछ काम न करे ।

हाथ-पांव बचाइए, मूंजों को टरकाइए

दुष्ट को दूर से ही प्रणाम करे ।

हाथ मुंह तक नहीं जाता

आदमी को उदार होना चाहिए ।

हाथों से आग लगे

निहत्थे हो जाओ या तुम्हारा कोई काम न बने (एक गाली) ।

हीजड़े के घर बेटा हुआ

असम्भव कार्य करने का दावा करने पर कहा जाता है ।

होंठ चाटने से प्यास नहीं बुझती

थोड़े से काम नहीं चलता ।

होठों निकली, कोठों चढ़ी

हलक से निकली खलक में पड़ी ।

होठों से अभी दूध की बू नहीं गई

अभी निरे बच्चे हो ।

प्राणि-जगत् पर आधारित लोकोक्तियां

अंडिया बैल जी का जवाल
स्वतन्त्र और उच्छृंखल व्यक्ति कष्ट ही देता है।
अंडा सिखावे बच्चे को कि चीं-ची न कर
बच्चा बूढे को या अनुभवी को शिक्षा दे। (छोटे मुँह बडी बात)
अंडे होंगे तो बच्चे भी बहुतेरे हो जाएंगे
मूल की सुरक्षा पर ही वृद्धि संभव है।
अंधा चूहा, थोथे धान
योग्यतानुसार वस्तु मिलती है या वह उसी मे सतुष्ट हो जाता है।
अंधा बगुला, कीचड़ खाय
अभागा दुख ही भोगता है।
अंधेरे घर में सांप ही सांप
मन की भयभीत अवस्था के प्रसंग मे कहा जाता है।
अक्ल बड़ी कि भैंस (बहस)?
बुद्धिबल ही सबसे बडा बल है।
अघाना बगुला पोठिया तीत
पेट भरा होने पर कोई वस्तु अच्छी नही लगती।
अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम।
दास मलूका कहि गए, सबके दाता राम।
निठल्ले को भी भगवान खाने को देता है।
अजगर के दाता राम
ईश्वर सभी को देता है।
अपना उल्लू कहीं नहीं गया
अपना मतलब निकाल ही लेंगे। किसी न किसी को बेवकूफ बना ही लेंगे।
अपना कुत्ता बरजो, हम भीख से बाज आए
सहायता के स्थान पर किसी मुसीबत में फंसने पर कहते हैं।

अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है
पेट तो हर प्राणी भर लेता है।
अपना बैल कुल्हाड़ी नाथब
अपनी वस्तु का उपयोग हम चाहे जैसा करें।
अपनी गरज को गधा चराते हैं
अपने स्वार्थ के लिए नीच कर्म भी करना पडता है।
अपनी गरज को गधे को बाप बनाते हैं
अपने स्वार्थ के लिए नीच की भी सेवा करनी पड़ती है।
अपनी गली में कुत्ता शेर
अपने घर मे सब जोर बताते है।
अपने बच्चे के दांत दूर से सूझते हैं
अपनी चीज या घर के आदमी की असलियत सब जानते हैं।
अपने बछड़े के दांत कोसों से मालूम देते हैं
अपने बच्चे के दांत दूर से सूझते है।
असील की मुर्गी टके-टके
अच्छी चीज की कद्र नही होती।
आंख तो रह गई और मर गई बकरी
किसी घटना का अप्रत्याशित रूप मे होना।
आंख फेरे तोता की सी और बात करे मैना की सी
बात करने मे मीठा पर बेमुरौवत।
आंधर कूकर बतास भूकै
अंधा कुत्ता हवा की आहट पाकर भी भयभीत हो जाता है।
आगे नाथ न पीछे पगहा, सबसे भला कुम्हार का गदहा
स्वतन्त्र, निश्चिन्त अथवा अनाथ व्यक्ति।
आटा निबूड़ा बूचा सटका
स्वार्थी और मुफ्तखोर।
आठों गांठ कुमैत (कुम्मेत)
बहुत चालाक और बदमाश।
आटे का चिराग घर रखूं तो चूहे खांय, बाहर रखूं तो कौवे ले जांय
सकट ही संकट।
अनोखे गांव ऊंट आया, लोगों ने जाना परमेसुर आया
मूर्ख बिना देखे ही नाना प्रकार की कल्पनाएँ करते हैं।
आते-जाते मैना ना फँसी, तू क्यों फँसा रे कौवे ?
सयाना अधिक धोखा खाता है।

आता है हाथी के मुंह, जाता है च्यूंटी के मुंह
रोग आता बहुत जल्दी है, पर जाता मुश्किल से है।
आदमी अनाज का कीड़ा है
आदमी अनाज पर ही जीवित रहता है।
आदमी अशरफ-उल-मखलूकात है
मनुष्य सब प्राणियों में श्रेष्ठ है।
आदमी-आदमी अन्तर, कोई हीरा कोई कंकर
सभी आदमी समान नहीं होते।
आदमी इन्सान ही तो है
त्रुटियां सभी से होती हैं।
आदमी का शैतान आदमी है
मनुष्य-मनुष्य को बिगाड़ता है।
आदमी की कद्र मरे पर होती है
गुण मरने पर याद आते हैं।
आदमी की दवा आदमी है
मनुष्य को मनुष्य सुधारता है।
आदमी को ढाई गज जमीन (कफन) काफी है
बेकार जरूरतें बढ़ाने से क्या लाभ ? अथवा कोई चीज साथ नहीं जाती।
आदमी न आदमी की दुम
बेशऊर आदमी।
आदमी पानी का बुलबुला है
मनुष्य नश्वर है।
आदमी पेट का कुत्ता है
आदमी पेट का गुलाम है।
आदमी चने का मारा मरता है
जीवन क्षणभंगुर है।
आदमी सा पखेरू कोई नहीं
मनुष्य सब जीवों में अद्भुत है।
आदमी है या घनचक्कर
मूर्ख या फालतू व्यक्ति के लिए कहा है।
आदमी है या बिजली
बहुत फुर्तीले के लिए कहते हैं।
आदमी हो या बेदाम के बूवम
आदमी हो या उल्लू ? उपेक्षा प्रकट करने के लिए कहा जाता है।

आदमी हो या सगे बेनून

आदमी हो या कुत्ते ? घृणा प्रकट करने के लिए कहा जाता है।

आधा तीतर आधा बटेर, आधी मुर्गी आधा बटेर

अविश्वसनीय या बेमेल खिचड़ी।

आ बैल, मुझे मार

जानबूझकर विपत्ति मोल लेना (आ बला, गले लग)।

आदमी ने आखिर कच्चा क्षीर पिया है

मनुष्य के लिए भूल स्वाभाविक है।

इधर काटा, उधर उलट गया

दगाबाज।

इराकी पर जोर न चला तो गधी के कान उमेठे

जबर पर जोर न चला तो कमजोर पर गुस्सा।

आसमान की चील, जमीन की असील

आसमान में उड़ती चील अच्छे वंश की ही मानी जाएगी, गुण-दोष का पता तो बरतने पर लगता है।

ईतर के घर तीतर, बाहर बांधू कि भीतर

घर आई नयी वस्तु को दिखाते फिरना। प्रदर्शन की इच्छा।

इनके घाटे रूख नहीं जमते

बहुत ही धूर्त हैं।

इन्सान पानी का बुलबुला है

आदमी पानी का बुलबुला है।

इन्सान में क्या रखा है

मर जाने पर कोई नहीं पूछता। आसानी से चल बसता है।

इन्सान ही तो है

भूल होना स्वाभाविक है।

उड़ भंभीरी सावन आया

जिस अवसर की प्रतीक्षा थी वह आ गया अब आनन्द मनाओ।

ऊँट का पाद, न जमीन का न आसमान का

निकम्मा आदमी या व्यर्थ की वस्तु।

आजकल रोजगार उनका है

आजकल रोजगार नाममात्र का है।

इन्शाअल्ला ताला, बिल्ली का मुँह काला

मुँह से भोंडी या हास्यजनक बात निकालने पर कहा जाता है।

ऊँट की बरसात में कमबख्ती
कीचड़ मे चल नहीं पाता ।
ऊँट की पकड़, कुत्ते की झपट, खुदा इनसे बचाए
दोनो खतरनाक ।
ऊँट की चोरी सिर पर खेलना
कोई बडी चोरी छिपती नहीं ।
ऊँट की चोरी और झुके-झुके
बड़े काम चुपचाप नही होते ।
ऊँट के विवाह में गधे गवैये
जैसे के तैसे साथी ।
ऊँट के गले बकरी(बिल्ली)
दो बेजोड़ व्यक्तियों या चीजो का मेल ।
ऊँट के मुंह में जीरा
अधिक खाने वाले को थोड़ा-थोड़ा परोसना ।
ऊँट को किसने छप्पर छाये
गरीबों की सुध भगवान लेते है ।
ऊँट घोड़े बहे जांय, गधा कहे 'कितना पानी'?
बडो के न कर सकने पर जब छोटे साहस करें तब कहा जाता है ।
ऊँट चढ़के बूंद मांगे
ऊँचे स्थान पर बैठकर जोर दिखाता है या वस्तु की मांग करता है ।
ऊँट चढ़े, कुत्ता काटे
दुर्भाग्य से पीछा छुड़ाना कठिन है ।
ऊँट जब तक पहाड़ के नीचे नहीं जाता, अपने ही को ऊँचा समझता है
घमंडी को जब तक उससे योग्य नही मिलता, उसका गर्व चूर नहीं होता ।
ऊँट जब भागे तब पच्छम को
मूर्ख और दुराग्रही को कहा जाता है ।
ऊँट डूबे, मेंढकी(खच्चर) थाह मांगे
ऊँट, घोड़े बहे जांय, गधा कहे, 'कितना पानी' ?
ऊँट तो कूदे, बोरे भी कूदे
बड़े के साथ छोटों का भी वही आचरण करना ।
ऊँट बड़बड़ाता ही लदता है
ऐसा व्यक्ति जो काम करते समय बडबडाता ही रहता है ।
ऊँट बलबलाने से लड़ता है
व्यर्थ बड़बड़ाने वाले से कहते है ।

ऊँट बिलाई ले गई, हाँ जी, हाँ जी कीजै
बड़े आदमियों की हाँ-में-हाँ मिलानी ही ठीक है।

ऊँट बुड्ढा हुआ पर मूतना न आया
बडी उम्र होने पर भी शऊर न होना।

ऊँट मक्के को ही भागता है
मूर्ख और दुराग्रही के लिए कहते है।

ऊँट मक्खी को भी हाँकता है
क्षुद्र जीव से भी अपनी रक्षा करता है।

ऊँट रे ऊँट ! तेरी कौन कल सीधी ?
नश-नश में शरारत वाले या बेडोल आदमी से कहते है।

ऊँट तो दगते ही थे, मकड़ी (मेंढकी) ने भी टाँग फैला दी
बड़ों की देखा-देखी काम करने पर कहते हैं।

ऊँट सा कद तो बढ़ा लिया पर शऊर जरा भी नहीं
ऊँट बुड्ढा हुआ पर मूतना न आया।

इक नागिन अरुपंख लगाई
एक तो करेला कड़ुवा, दूजै नीम चढा।

एक अण्डा वह भी गन्दा
एक चीज वह भी बेकार अथवा निकम्मी अकेली सन्तान।

एक कूकर तू दूबरकाही, दस घर की आवाजाही
पेट की चिन्ता बुरी चीज है।

एक तो भालू, दूसरे काँधे कुदाल
और भी भयकर।

एक तो शेर, दूसरे बख्तर पहने
अत्याचारी के हाथ मे और शक्ति आ जाने पर कहा जाता है।

एक बोटी, सौ कुत्ते
वस्तु एक और चाहने वाले अनेक।

एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है
एक बुरा सारे समाज को कलकित कर देता है।

एक मुर्गी नौ जगह हलाल नहीं होती
एक आदमी एक साथ कई काम नही कर सकता।

एक शेर मारता है, सौ लोमड़ियाँ खाती हैं
एक बड़े की कमाई मे अनेक छोटे लाभ उठाते है।

ऐसे गए जैसे गधे के सिर से सींग
चुपचाप खिसक जाना।

ऐरे-गैरे पंचकल्यान
फालतू आदमी।
ऐसे बूढ़े बैल को कौन बांधे भुस देय ?
वृत्तिहीन बूढ़े को कौन भोजन दे ?
औरत और घोड़ा रान तले का
इन्हें नियन्त्रण में रखना आवश्यक है।
औरे रंग का गिलहरा
रंग-ढंग या पोशाक-पहिनावे मे अचानक परिवर्तन होने पर कहा जाता है।
औरत न औरत की दुम
बेशऊर औरत।
कद्र उल्लू की उल्लू जानता है।
हुमा को कब चुगद पहचानता है।
गुणहीन गुणी की कद्र नही जानता।
कनखजूरे के कै पांव टूटेंगे ?
किसी सम्पन्न व्यक्ति को कितनी हानि होगी ?
कनवा बैल, बयारे सनके
आंधर कूकर बतास भूकै।
कनौड़ी (द्रवी) बिल्ली चूहों से कान कटावे
कमजोरी में दबना पडता है।
कव्वा (कागा) बोले, पड़ गए रौले
सूर्योदय होते ही कौवे बोलने लगते है और दुनिया जग जाती है अथवा दुष्टो के बोलते ही झगड़े शुरू हो जाते है।
कहां राम-राम, कहां टें-टें
श्रेष्ठ के साथ निकृष्ट की तुलना ठीक नही।
काटा और उलट गया
हानि पहुँचाकर मुकर गया। सांप की तरह दुष्ट के लिए कहा जाता है।
काठ की बिल्ली तो बनाई, म्याऊँ कौन करे ?
गुणार्जन करना कठिन है।
काना कुत्ता पोच ही से आसूदा
अयोग्य या निकम्मा व्यक्ति थोड़ा पाकर ही प्रसन्न हो जाता है।
कानी गाय के अलगे बथान
सबसे अलग निराला काम करना चाहने पर कहा जाता है।
काबुल में क्या गधे नहीं होते ?
मूर्खों की कहीं कमी नही।

काम का न काज का, दुश्मन अनाज का
 निठल्ला आदमी।
काम का न काज का सेर भर अनाज का
 निठल्ला आदमी।
काला हिरन न मारियो सत्तर हो जाएँगी रॉड
 जिसके आश्रित बहुत हो, उसका घात नहीं करना चाहिए।
काले का काटा पानी नहीं माँगता
 धूर्त से कोई बच नही सकता।
काले के काटे का जंतर न मंतर
 धूर्त से कोई बच नही सकता।
काला अक्षर, भैंस बराबर
 निरक्षर भट्टाचार्य।
कुत्ता अपनी ही दुम के चक्कर लगाता फिरे
 नीच अपना ही स्वार्थ देखता फिरता है।
कुत्ता और खाल की रखवाली
 मूर्खतापूर्ण कार्य। कुत्ता खाल को क्यों छोड़ेगा ?
कुत्ते का मगज खाया है
 बहुत बकवास करने वाले को कहा जाता है।
कुत्ता घास खाय तो सभी पाल लें
 शौक मे अगर खर्च न हो तो सभी कर लें।
कुत्ता कुत्ते का बैरी है
 समान पेशेवालों में नही बनती।
कुत्ता न देखेगा न भौंकेगा
 यदि कोई वस्तु देखने मे न आये तो पाने की इच्छा भी न होगी।
कुत्ता चौक चढ़ाए, चपनी चाटन जाए
 आदत नही छूटती।
कुत्ता पाए तो मन भर खाए, नहीं तो दीया ही चाटकर रह जाए
 संतोषी व्यक्ति के लिए कहा जाता है।
कुत्ता मरे अपनी पीर, मियाँ माँगे शिकार
 दूसरो की सुविधा का ध्यान न रखकर अपना ही स्वार्थ देखना।
कुत्ता मुँह लगाने से सिर चढ़े
 ओछे को मुँह नही लगाना चाहिए।
कुत्ता भौंके, काफिला सिधारे
 समझदार अपना काम करते हैं, यह नही देखते कि दूसरे क्या कह रहे हैं।

कुत्ता भी बैठता है तो दुम हिलाकर बैठता है
सफाई जानवरों को भी पसन्द है।
कुत्ते की दुम कभी सीधी नहीं होती
दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता।
कुत्ते की दुम बारह बरस नलवे में रखो, तो भी टेढ़ी की टेढ़ी
दुष्ट के प्रति घृणा प्रकट करने पर कहा जाता है। (आदत नहीं छूटती।)
कुत्ते की मौत आवे तो मस्जिद में मूत आवे
विनाशकाले विपरीत बुद्धिः।
कुत्ते के आटा होय तो, लिट्टी लगा के खाए
आदमी विवश होकर ही दूसरे का आश्रय लेता है।
कुत्ते के पांव जा और बिल्ली के पांव आ
शीघ्र जाने और लौटने के लिए कहा जाता है।
कुत्ते को घी नहीं पचता
ओछे के पेट में बात नहीं रह पाती या वह सम्पत्ति पाने पर इतराता है।
कुत्ते को मस्जिद से क्या काम ?
बुरे आदमी से भले काम की आशा व्यर्थ है।
कुत्ते को दूं पर तुझे न दूं
घृणा प्रकट करने हेतु कहा जाता है।
कुत्ते को हड्डी भली लगती है
गन्दे को गन्दी चीज ही पसन्द आती है।
कुत्ते तेरा मुंह नहीं, तेरे सांई का मुंह है
तुच्छ व्यक्ति के किसी बड़े का सहारा पाकर उछलने-कूदने पर कहा जाता है।
कुत्तों के भौंकने से हाथी नहीं डरता
गम्भीर और समझदार व्यक्ति निकम्मों की परवाह नहीं करते।
कुरयाल में गुलेला लगा
अचानक विपत्ति आ टूटी।
कुलेल में गुलेल
रग में भग।
कूड़े घर की गाय फिर कूड़े घर में
दुर्भाग्य साथ नहीं छोड़ता।
कूद-कूद मछली, बगुलों को खाय
एक अनहोनी घटना (कमजोर सबल को दबाता है)
कोयल काले कौवे की जोरू
एक के साथ दूसरा भी बुरा।

कोयल आम न पाकर निमकौड़ियों पर नहीं मरती

श्रेष्ठ व्यक्ति प्रतिकूल स्थिति में भी नहीं गिरता।

केंचुए ने देखा सांप, तन-तनकर मर जाए आप

साधनहीन सम्पन्न की देखा-देखी करने पर नष्ट हो जाता है। (गढ़वाली)

कौआ चला हंस की चाल, अपनी चाल भी भूल गया

अपनी चाल छोड़कर बड़ों की नकल करने में सदा हानि होती है।

कौआ टरटराता ही है, धान सूखते ही हैं

फालतू आदमियों के विरोध करने से किसी का कोई काम नहीं रुकता।

कौआ कान ले गया

बिना सोचे समझे दूसरे की बात पर विश्वास कर लेना।

कौवों के कोसे ढोर नहीं मरते

किसी का बुरा ताकने से कुछ होता-जाता नहीं।

कौवे के दुम में अनार की कली

बदसूरत का बढ़िया पोशाक पहनना या निकृष्ट के साथ बढ़िया का मेल।

कौओं को अंगूरी बाग

अयोग्य को अच्छी वस्तु देना।

क्या घास में सांप नहीं चलता ?

क्या अच्छे स्थान में कोई बुराई नहीं हो सकती।

क्या पिद्दी (पिदड़ी) और क्या पिद्दी (पिदड़ी) का शोरबा ?

तुच्छ और उपेक्षणीय।

क्या मक्खी ने छींक दिया

क्या कोई अपशकुन हो गया ?

क्या सांप का पांव देखा है ?

असंभव बात कहने पर भर्त्सना के लिए कहा जाता है।

क्या सांप सूंघ गया ?

चुप क्यों हो ? जवाब क्यों नहीं देते ?

क्या विलायत में गधे नहीं होते ?

बुरे या मूर्ख नहीं होते ?

क्या हिजड़ों ने राह मारी है ?

किसी स्थान पर जाने के लिए व्यर्थ के बहाने बनाने पर कहा जाता है।

खग जाने खग ही की भाषा

चालाक ही चालाक की बात समझता है। जो जैसा है उसको वैसा ही समझ सकता है।

खाली अंडों में बच्चे नहीं होते
    खोखले आदमी से कोई काम नहीं निकल सकता।
खाने के दांत और, दिखाने के और
    ऊपर से प्रेम-भाव भीतर से कपट। कहना कुछ करना कुछ।
खाने को शेर, कमाने को बकरी
    निकम्मे पेटू के लिए कहा जाता है।
खारिश्ती कुतिया और मखमल की झूल
    असुन्दर वस्तु का श्रृंगार।
खावे बकरी की तरह, सूखे लकड़ी की तरह
    जो बहुत खाता फिरे फिर भी दुर्बल हो, उससे कहते हैं।
खाल ओढ़ाए सिंह की, स्यार न सिंह होय
    वेश बदलने से कोई अपने वास्तविक रूप को नहीं छिपा सकता।
खिसियानी बिल्ली खंभा नोंचे
    कमजोर की खीझ। सबल की जगह निर्बल पर जोर चलाना।
खुदा के वास्ते बिल्ली भी चूहा नहीं मारती
    ईश्वर के नाम पर कोई बुरा काम नहीं करता।
खूंटे के बल बछड़ा कूदे
    दूसरे के बल पर कूदना।
खेत खाए गदहा, मार खाए जुलहा
    दोष किसी का दण्ड किसी को।
खेदो गिल्लो अन्त को पेड़ तले ही आती है
    घूम फिर कर आदमी अन्त में घर ही जाता है।
ख्वाजे का गवाह मेंढक
    एक दूसरे की प्रशंसा करने पर कहा जाता है—अहो रूपम् अहो ध्वनि।
खोदा पहाड़ निकली चुहिया
    परिश्रम अधिक, लाभ थोड़ा।
गधा पीटने से घोड़ा नहीं बनता
    बुरा अच्छा नहीं बन सकता।
गधा खरसा में मोटा होता है
    यह समझ कर कि मैं सब चर गया, गधा गरमी में तन्दुरुस्त रहता है।
गधा पानी पिये घंघोल के
    गधा गन्दा पानी पीना पसन्द करता है।
गधा गिरे पहाड़ से मुर्गी के टूटे कान
    एक असम्बद्ध बात।

गधा बरसात में भूखा मरे

इसलिए कि वर्षा गधे के अनुकूल नही बैठती फिर कितनी ही घास क्यों न हो।

गधा गधा ही रहता है

मूर्ख समझदार नही हो सकता।

गधी भी जवानी में भली लगती है

जवानी मे असुन्दर भी सुन्दर लगती है।

गधे के खिलाए का पुन न पाप

नीच के साथ नेकी करने मे कोई लाभ नहीं।

गधे को गधा ही खुजाता है

ओछो के काम ओछे ही करते हैं या ओछों की ओछों से ही पटती है।

गधे को नोंन दिया, उसने कहा, 'मेरी आँख फोड़ी'

ओछा एहसान नही मानता अथवा मूर्ख उपकार को भी अपकार समझता है।

गधे का जीना थोड़े दिन भला

जिसे हमेशा परिश्रम करना पड़े, वह मरे के तुल्य है।

गाय का लबारा मर गया तो खलड़ा देख पनहाय

वियोग मे समान आकृति वाले को देखकर प्रेम उमड़ता है।

गाय को अपने सींग भारी नहीं होते

अपने परिवार के लोगो का बोझ नही लगता।

गाय जब दूब (घास) से सलूक करे खाए क्या ?

मेहनताना माँगने मे लिहाज किस बात का अथवा जो जिस वस्तु का व्यापार करता है अगर उसका मुनाफा न ले तो उसका खर्चा कैसे चले ?

गाय न हो तो बैल दुहा

कुछ-न-कुछ धन्धा करो।

गाय न आये, बछवे लाज

माँ को बेटे की शरम नही होती या माँ को लाज नही और बेटा लज्जित होता है।

गिरगिट की दौड़ बिटौरे तक

मुल्ला की दौड मस्जिद तक।

गिलहरी का पेड़ ठिकाना

जिसका जहाँ सुभीता है, वही रहता है।

गीदड़ की जब मौत आवे तो गाँव (बस्ती या शहर) की ओर भागे

जानबूझकर अपनी हानि करने पर कहा जाता है।

गीदड़ गिरा झिरे में, 'आज यहीं रहेंगे'
विपद् छिपाकर यह कहना कि मजे में हूँ।

गीदी गाय गुलेदा खाय, बेर-बेर महुवा तर जाय
जब कोई मनुष्य किसी चीज के लालच में बार-बार कहीं जाए तब कहते है।

गुरबा कुश्तन, रोजे अव्वल (बिल्ली को पहले ही दिन मारो)
प्रभाव जमाने के लिए पहले ही दिन से सख्ती बरतो।

गू का कीड़ा गू ही में खुश रहता है
बुरे को बुरी सोहबत ही पसन्द होती है या गन्दे को गन्दगी ही पसन्द होती है।

घर आये कुत्ते को भी नहीं निकालते
घर आए का तिरस्कार नही करते।

घर की बिल्ली और घर ही में शिकार (अहेरी बिलार घर ही में शिकार)
घर का ही आदमी जब धोखा दे, तब कहते है।

घर की मुर्गी दाल बराबर
घर या मुहल्ले के विद्वान की घर में प्रतिष्ठा नहीं होती अथवा घर की वस्तु का ठीक मूल्यांकन नही होता।

घर में बिलौटा बाघ
घर में सब शेर बन जाते हैं।

घोंघे में पकाया, सीपी में खाया
गरीबी की हालत में रहना।

घोड़ा घास से यारी करेगा तो खाएगा क्या ?
अपना पारिश्रमिक माँगने मे संकोच क्या ? (घोड़े घास की क्या यारी)

घोड़ा और फोड़ा जितना रोलो उतना ही बढ़े
फोड़े को सहलाना नही चाहिए।

घोड़े का गिरा संभलता है, नजरों का गिरा नहीं संभलता
प्रतिष्ठा गई तो गई।

घोड़े की दुम बढ़ेगी तो अपनी ही मक्खियाँ भगाएगा
किसी की उन्नति होती है तो अपना ही भला करेगा।

घोड़े की लात घोड़ा ही सह सकता है
बड़े की चोट बड़ा ही सह सकता है।

घोड़े को लात आदमी को बात
घोड़े को ऐड़ से काबू में किया जा सकता है और आदमी को बात से।

घोड़े की सवारी चलता जनाजा
घोड़े पर धीरे-धीरे चलना चाहिए अथवा घोड़े की सवारी खतरनाक है।

घोड़े की हँसी और बालक का दुःख जान नहीं पड़ते
क्योंकि वह बोल नहीं सकते।

घोड़ों को घर कितनी दूर ?
किम् दूरम् व्यवसायिनाम् ? अथवा अपना काम करने वालों को काम में देर नहीं लगती।

चटोरा कुत्ता, अलोनी सिल
चटोरे को जो मिल जाए वही बहुत है।

चमगादड़ों के घर मेहमान आए, हम भी लटकें तुम भी लटको
जैसा देश वैसा भेष। समाज जैसा करे वैसा ही करो।

चाम का चमोटा, कूकर रखवाल
असंगत कार्य।

चाम का घर कुत्ता लिए जाता है
जहां मुफ्त खाने को मिलता है, वहां सब इकट्ठे होते है या घर मजबूत बनाना चाहिए।

चार पांव का घोड़ा चौंकता है दो पांव का आदमी क्या चला है
मनुष्य से सब डरते है।

चाहने के नाम गधी ने भी खेत खाना छोड़ दिया था
प्रेम जो न कराये वही कम है।

चिड़ा मरत, गँवार हांसी
एक का नुकसान और दूसरा हँसे।

चिड़िया अपनी जान से गई, खाने वाले को स्वाद न आया
परिश्रम से किए गए कार्य की जब सराहना न की जाए तब कहा जाता है।

चिड़िया करे खोंचा, चिड़ा करे नोंचा
एक संयम करे दूसरा बेरहमी से खर्च करे।

चिड़िया की जान गई, लड़के का खिलौना
किसी के दुःख की परवाह न कर उलटे उस पर हँसना।

चिड़िया और दूध
असंभव व्यापार।

चिड़ीमार टोला, भांत-भांत का पंछी बोला
जहां किसी मजमे में हर व्यक्ति अपनी-अपनी अलग राय दें, वहां कहा जाता है।

चिल्लड़ चुनने से भगवा हल्का होवे ?
कोई दिखावटी काम करने से सिद्धि नहीं मिलती।

चिल्लड़ मारे कुत्ता खाए
छोटी चीज के बारे में अपने को पाक-साफ बताना और बड़ी चीज को हड़प जाना।

चींटी का बिल नहीं मिलता, कहाँ छिपूं ?
कहीं गुजारा नहीं ।
चींटी के घर नित मातम
साधारण आदमी को कोई न कोई कष्ट लगा ही रहता है ।
चींटी के पर निकले और मौत आई
छोटे आदमी के इतराकर चलने पर कहा जाता है ।
चींटी चाहे सागर थाह
सामर्थ्य के बाहर काम करने की धृष्टता ।
चींटी ससरने को जगह नहीं
बहुत संकीर्ण जगह ।
चील के घर मांस कहाँ
ऐसी वस्तु की आशा करना जो किसी के पास रहती ही नहीं ।
चील के घर मांस की धरोहर
मूर्खतापूर्ण कार्य ।
चील बैठे तो एक खड़ ले ही उड़े
चील जहाँ भी बैठती है वहाँ से एक तिनका ले ही उड़ती है । कार्यशीलता का उदाहरण ।
चील सा मंडराता और कबूतर सा बीदता फिरता है
हमेशा इस ताक में रहता है कि जो मिले वही उठा ले ।
चूका और मरा
जो चूकता है उसे हानि उठानी ही पड़ती है ।
चूहा बिल में समाता न था, कानों बाँधा छाज
अपनी देखभाल न कर सके और ऊपर से झंझट मोल ले ले ।
चूहा बजाए चपनी, जात बताए अपनी
काम से आदमी की जाति परख ली जाती है ।
चूहे का जाया बिल ही खोदेगा
पैतृक गुणों का समावेश आवश्यक है । जातिगत स्वभाव का अनुसरण करने पर कहा जाता है ।
चूहे का बच्चा बिल ही खोदता है
पैतृक गुणों का समावेश आवश्यक ही है ।
चोट्टी कुतिया, जलेबियों की रखवाली
रक्षक ही भक्षक अथवा मूर्खतापूर्ण कार्य ।
छह महीने मिमियानी तो एक बच्चा बियानी
शोरगुल बहुत पर काम थोड़ा ।

छछूँदर के सिर में चमेली का तेल

कुरूप व्यक्ति का शृंगार। जब कोई क्षुद्र व्यक्ति बढ़-चढकर बातें करे या अनुपयुक्त पात्र को सुन्दर वस्तु दी जाने पर कहा जाता है।

छूटा बैल भुसौरी में

किसी चीज को पाने की लालसा या ठौर न होने पर उसी जगह पहुँच जाना।

छोड़ो, बी बिल्ली, चूहा लँडूरा ही जाएगा

बस बहुत हो गया, अधिक ज्यादती न करो।

छोटी सी गौरैया बाघों से नज्जारा

छोटा जब बडो का मुकाबला करे तब कहते हैं।

छोटी सी बछिया, बड़ी सी हत्या

बुरा काम हर हालत में बुरा ही होगा।

जंगल में मोर नाचा, किसने जाना (देखा)

योग्यता का प्रदर्शन वहा जहां कोई कद्रदां न हो।

जल की मछली जल ही में भली

जहां का जीव हो, वहीं सुख पाता है।

जल में रहे मगर से बैर

जिसके आश्रय में रहना उसी से शत्रुता।

जल में मछली, नौ-नौ कुटिया बखरा

काम पूरा हुआ भी नही फिर भी हिस्सेदार अपना हिस्सा लगा रहे हैं।

जरूरत के वक्त गधे को भी बाप कहा जाता है

जरूरत पर नीच की भी सेवा करनी पड़ती है।

जवानी में गधे पर भी जोवन होता है

जवानी मे कुरूप भी सुन्दर लगता है।

जहां गाय, तहां बछड़ा

जहां मां, वहां बेटा।

जहां जिसके सींग समायें वहां निकल जाये

जहां जिसकी गुजर हो, वहां चला जाए—ऐसा भाव प्रकट करने पर कहा जाता है।

जहां मुर्गा नहीं होता, वहां क्या सवेरा नहीं होता ?

किसी के बिना कोई काम रुका नही रहता।

जहां गुड़ होगा, वहां मक्खियां आएँगी

जहां पैसा होगा, खाने-पीने वाले पहुँचेंगे।

जितना सांप लम्बा, उतनी ही गौह चौड़ी

एक से एक धूर्त अथवा दोनों एक से।

जिसका घोड़ा उसके बार

सम्बन्धित सामग्री भी उसी की।

जिस वन सुआ न सायरा, वहाँ कागा खांय कपूर

जहां कोई योग्य पुरुष नहीं होता वहां अयोग्यों की ही पूजा होती है।

जीती (जीवित) मक्खी नहीं निगली जाती

जान-बूझकर कोई गलत काम नहीं करता। स्वेच्छा से कोई विपत्ति में नहीं पड़ता। स्पष्ट सत्य को झुठलाया नहीं जा सकता।

जूं के डर से गुदड़ी नहीं फेंकी (छोड़ी) जाती

साधारण परेशानी से लाभ का काम छोड़ा नहीं जाता।

जेरों से शेर होते हैं

छोटे कमजोर बच्चे से ही ताकतवर आदमी बनता है।

जैसा ऊँट लम्बा, वैसा गधा खवास

एक-सी जोड़ी मिल जाना।

जैसे चिड़ियों में ढेल

क्रूर व्यक्ति।

जैसे नागनाथ, वैसे सांपनाथ

दोनों एक से।

जो गदहे जीतें संग्राम तो काहे को ताजी को खरचैं दाम

मूर्खों से यदि बड़े काम हो जाएं तो पढ़े-लिखों की जरूरत ही क्या?

ज्यों-ज्यों मुर्गी मोटी होय, त्यों-त्यों दुम सुकड़े

कंजूस धन की बढ़ोत्तरी होने पर और भी कंजूस हो जाता है।

टट्टू को कोड़ा और ताजी को इशारा

मूर्ख मुश्किल से समझता है, समझदार इशारे से समझ जाता है।

टुकड़ा दे दे बछड़ा पाला, सींग लगे तब मारन आया

कृतघ्न व्यक्ति।

टिड्डी का आना काल की निशानी

फसल चौपट हो जाती है।

टिड्डी के रोके आंधी नहीं रुकती

छोटे से बड़े काम नहीं हो सकते।

डरे लोमड़ी से, नाम दिलावरखां (नाहर)

कायर आदमी का प्रसिद्ध नाम।

ढड्ढो आई बात पुराने

गन्दी बेढंगी बोन्द।

ढोर मरे न कौआ खाय
व्यर्थ की आशा।
ताक पर बैठा उल्लू, माँगे भर-भर चुल्लू
नीच बड़े पद पर पहुँचकर बड़ों पर हुक्म चलाता है।
ताते दूध बिलार नाचे
परेशान होना।
ताल से तलैया गहरी, साँप से सँपोला जहरी
बाप से बेटा बढ़कर।
तीन टाँग की घोड़ी, नौ मन की लदनी
अयोग्य को बड़ा काम सौंपना।
तुई तो मुई, न तुई तो मुई
हर हालत मे खराबी।
तुरकी पीटे, ताजी काँपे
एक को दण्ड देने से दूसरा भी सतर्क हो जाता है।
तुम्हारी बराबरी वह करे, जो टाँग उठा कर मूते
डींग हांकने वाले से कहा जाता है।
तुम्हारे चाटे से तो रूख भी नहीं रहे हैं
धूर्त जिसके पीछे पड़ा उसे नष्ट कर देता है।
तुम्हारे बैल, हमारे भैंसा; तुम्हारा हमारा साथ कैसा?
असमान प्रकृति के व्यक्ति एक साथ नहीं रह सकते।
थका ऊँट सराय तकता है
परिश्रम के बाद सभी आराम चाहते है।
दबी बिल्ली चूहों से कान कटाये
अपनी कमजोरी के कारण दूसरों के सामने दबना पड़ता है।
दबे पर चींटी भी चोट करती है
सताने पर कमजोर भी बदला लेता है।
दमड़ी की हाँडी गई, कुत्ते की जात पहचानी गई
नुकसान हुआ तो हुआ आदमी के स्वभाव का पता तो लगा।
दरिया में रहना और मगरमच्छ से बैर
जिसके आश्रित रहे उससे बैर करना ठीक नहीं।
दाना न घास, खरहरा छह-छह बार
व्यर्थ की चीज देना या झूठी सेवा करना।
दाना न घास, घोड़े तेरी आस
रखरखाव मे खर्च न करना और मौके पर काम आने की आशा करना।

दाना न घास, हिन-हिन करे
    भूखा शोर मचाता है।
दाने को टापे, सवारी को पादे
    खाने को तैयार और काम से जी चुराना।
दिल लगा मेंढकी से तो पद्मिनी क्या चीज है ?
    प्रेम में रूप-कुरूप नहीं सूझता।
दिल लगा गधी से तो परी क्या चीज है ?
    प्रेम में रूप-कुरूप नहीं सूझता।
दीवानों के क्या सिर सींग होते हैं ?
    बेसिर-पैर की बातें करने पर कहा जाता है।
दुधारू गाय की लात भी भली
    जिससे कुछ मिलने की आशा हो उसके नाज-नखरे उठाने पड़ते हैं।
दुधैल गाय की दो लातें भी सही जाती हैं
    दुधारू गाय की लात भी भली।
दूध की मक्खी किसने चक्खी ?
    घृणित की परीक्षा किसने की ?
दूध की सी मक्खी निकालकर फेंक दो
    तिरस्कार पूर्वक अलग कर दिया या कोई सम्बन्ध नहीं रखा।
देखिये, ऊँट किस कल (करवट) बैठता है
    देखें, अन्त में क्या होता है।
देखती आँखों जीवित मक्खी नहीं निगली जाती
    जानबूझकर अवांछनीय कार्य नहीं किया जाता।
देसी गधा, मराठी चाल, देसी मुर्गी, विलायती बोली
    अपना रहन-सहन और भाषा-बोली छोड़कर जब कोई दूसरे का अनुकरण करे तब कहा जाता है।
नौ सौ (सत्तर,सौ) चूहे खाय के बिल्ली हज को चली
    पापी का धर्मात्मा बनने का ढोंग करना।
नाज खाना, मेंगनी करना
    पशु-जीवन बिताना।
नौ मन तेल खाए, फिर भी तिलेर का तिलेर
    अच्छा खाने को मिलने पर भी दुर्बल रहने वाले को कहा जाता है।
पत्थर को जोंक नहीं लगती
    निर्दयी के आगे रोना व्यर्थ या मूर्ख को शिक्षा देना व्यर्थ।

पराये धन पर झींगुर नाचे
दूसरे के धन पर ऐंठना।

पहाड़ी गधा, पूर्वी रेंक
देसी गधा, पंजाबी रेंक।

पानी में मछली नौ-नौ टुकड़ा हिस्सा
हाथ आने से पहले ही बाँटने की मूर्खता।

पास का कुत्ता, न दूर का भाई
वही अच्छा जो समय पर काम आए।

पिद्दी न पिद्दी का शोरवा
अत्यन्त तुच्छ, उपेक्षणीय।

पुरुष सा पखेरू कोई नहीं
मनुष्य जैसा जीव कोई नहीं।

पेट पालना कुत्ता भी जानता है
जो दूसरो को नही खिलाता, उस स्वार्थी को कहा जाता है। अथवा मनुष्य को पेट तक ही सीमित नही रहना चाहिए।

बन्दर का हाल मुछन्दर जाने
संगी-साथी ही सच्चा हाल जानते हैं।

बन्दर की आशनाई क्या?
धूर्त से मित्रता क्या?

बन्दर की आशनाई घर में आग लगाई
धूर्त से मित्रता करने में हानि उठानी पड़ती है।

बन्दर की दोस्ती जी का जिआन
नटखट की मित्रता आफत मोल लेना है।

बन्दर के गले में मोतियों की माला
मूर्ख गुणों की पहचान नही कर सकता।

बन्दर के हाथ आईना (नारियल)
मूर्ख गुणों की पहचान नही कर सकता।

बन्दर क्या जाने अदरख का स्वाद
मूर्ख गुणो की पहचान नही जानता।

बन्दर नाचे, ऊँट जल मरे
दूसरे की खुशी न देख पाना।

बकरी का सा मुँह चलता ही रहता है
दिन-रात खाता ही रहता है।

बकरी करे घास से यारी तो चरने कहाँ जाय
मेहनत-मजदूरी में लिहाज नही चलता।
बकरी के नसीबों छुरी है
बकरी के भाग्य मे मरना ही बदा है या अच्छे काम का फल न मिलना।
बकरी ने दूध दिया, मेंगनो भरा
रो-झीककर एहसान करने पर कहा जाता है।
बकरी जान से गई, खाने वाले को मजा न आया
उपकार न मानने वाले कृतघ्न से कहा जाता है।
बकरी मुटाय, तब लकड़ी खाय
लालची कर्मचारियों के लिए कहा जाता है।
बकरी से हल चलता तो बैल कौन रखता ?
जिसका जो काम है वह उसी से निकलता है।
बकरी की तीन ही टाँगें
अपनी ही बात पर अड़े रहने की मूर्खता।
बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी ?
अकारणीय या दैवी विपत्ति टल नहीं सकती।
बख्शो बी बिल्ली चूहा लंडूरा ही जिएगा
बस बहुत हो गया, अधिक ज्यादती न करो।
बगुला मारे, पंख हाथ
नुकसान भी पहुँचाया और कुछ लाभ भी न मिला।
बड़े-बड़े बहे जायें, गदहा पूछे, 'कितना पानी ?'
जिस काम को समर्थ न कर सके, उसे करने को जब असमर्थ आगे आए तब कहते हैं।
बन आई कुत्ते की जो पालकी बैठा जाय
नीच के सम्मान पाने पर कहा जाता है।
बाघ की मौसी बिलाई
बिल्ली बाघ से भी बढ़कर।
बातें करे मैना की सी, आँख फेरे तोता की सी
खतरनाक औरत—वेश्या।
बाप पर बेटा, तुखम पर घोड़ा
कुल का असर अवश्य पड़ता है।
बापै पूत, पिता पर घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा-थोड़ा
वश का प्रभाव अवश्य पड़ता है।

बान वाले की बान न जाय, कुत्ता मूते टांग उठाय
आदत नहीं छूटती है।

बावले कुत्ते ने काटा है
मूर्खतापूर्ण बात कहने या करने पर कहा जाता है।

बिल्ली और दूध की रखवाली
मूर्खता।

बिल्ली के ख्वाब में चूहे कूदे
जिस वस्तु की आवश्यकता होती है, स्वप्न मे भी वही दिखाई देती है।

बिल्ली के ख्वाब में छीछड़े
गन्दे को गन्दा ही काम सूझता है।

बिल्ली के भाग से छींका टूटा
अचानक लाभ या ऊँचा पद मिल जाना।

बिल्ली खाएगी नहीं पर फैला तो भी जाएगी
दुष्ट व्यर्थ की हानि करता है।

बिल्ली चूहा खुदा के वास्ते नहीं मारती
लोग दूसरो का भला भी अपने मतलब के लिए ही करते हैं।

बिल्ली भी दबकर हरबा करती है
दूसरों पर काबू पाने के लिए विनम्र होना पड़ता है।

बिल्ली भी मारती है चूहा पेट के लिए
मनुष्य जिन्दा रहने के लिए बुरे कर्म करता है।

बिल्ली भी लड़ती है तो मुँह पर पंजा रख लेती है
अपनी रक्षा सब करते है।

बिसुनो बिलार डबरी में डेरा
बिना बुलाए मेहमान के लिए कहा जाता है।

बीबी बकरी नाव में खाक उड़ाती हो
अपने मतलब के लिए बहाना बनाना और जबर्दस्ती दूसरों से लड़ना।

बुड्ढी बकरी और हुंडार से ठट्ठा
कमजोर का बलवान से छेड़खानी करना।

बुड्ढा हुआ ऊँट पर मूतना न आया
सयाने आदमी को काम का शऊर न होना।

बुड्ढी घोड़ी लाल लगाम
बेतुका काम।

बूढ़े तोते भी कहीं पढ़ते हैं
बड़ी उम्र मे कोई काम नए सिरे से सीखना कठिन है।

बेगाने खत्ते पर झींगुर नाचे
    दूसरे की वस्तु पर घमण्ड करना। बजाज की गठरी पर झींगुर राजा।
बैल का बैल गया नौ हाथ का पगहा गया।
    पूरी हानि हुई।
बैल न कूदो, कूदी गौन; यह तमाशा देखे कौन?
    बिना मतलब के बीच में बोल उठने पर कहा जाता है।
बैल सरकारी, यारों की टिटकारी
    मुफ्त की चीज का मजा लूटना।
बोलो तो बोलो, नहीं तो पिंजड़ा खाली करो
    अच्छी तरह रहो या चले जाओ।
बांडा बैल आप गए, चार हाथ की पगहिया भी लेते गए
    पूरी की पूरी हानि हो गई।
भई गति सांप-छछून्दर केरी
    असमंजस की स्थिति में पड़ जाना।
भरे समुन्दर घोंघा प्यासे
    सुख की जगह भी दुःख मिलना।
भरे समन्दर घोंघा हाथ
    लाभ की जगह कुछ न मिलना।
भात होगा तो कौवे बहुत आ रहेंगे
    खाना मिलने पर मुफ्तखोरे बहुत इकट्ठा हो जाते हैं।
भेड़ की लात घुटने तक
    कमजोर की चोट का अधिक असर नहीं होता या किसी छोटे लेन-देन में अधिक हानि नहीं होती।
भैंस का दूध, नली का गूदा
    भैंस का दूध बहुत ताकत देता है।
भैंस का गोबर भैंस के चूतड़ों में लग जाता है
    बड़ों का धन दूसरों के काम नहीं आता क्योंकि उनका अपना खर्च ही बहुत होता है।
भैंस के आगे बीन बजे, भैंस खड़ी पगुराय
    मूर्ख कला का सम्मान करना नहीं जानता या मूर्ख [illegible]।
भैंस को अपने सींग भारी नहीं होते
    अपने परिवार के लोगों का भरण-पोषण [illegible]।
भौंर न छोड़ै केतकी तीखे कंटक जान
    सच्चा प्रेमी आपत्ति में भी प्रेमास्पद [illegible]।

मेरी ही बिल्ली और मुझसे ही म्याऊँ
मेरा ही खाए और मुझे ही आंख दिखाए।

म्याऊँ का ठौर कौन पकड़ेगा ?
जोखिम का काम कौन करेगा ?

मुर्गी को तकुवे का घाव बस है
गरीब के लिए थोड़ी हानि भी असह्य है।

मुर्गा चुगे, अपना पेट भरे
जो भी करता है, अपने लिए ही करता है।

यह कुत्ता नहीं मानता
छिछोरे के लिए कहा जाता है।

यह कौआ फंसने की चाल है
जब कोई गहरी चालाकी करे तब कहते हैं।

यहां परिन्दा भी पर नहीं मार सकता
कोई पास नहीं फटक सकता।

या भैंसा भैंसों में या कसाई के खूंटे पर
कुसंग में पड़े ऐसे व्यक्ति को कहा जाता है जिसके कुछ निश्चित अड्डे हों।

या हंस मोती चुगे, या लंघन कर जाय
स्वाभिमानी के लिए कहा जाता है।

रह-रह बेंगना होने दे बिहान, तुझ पर साजेंगे तीर कमान
झूठी डींग मारने वाले के लिए कहा जाता है।

रहे महमूद के, अंडे देवे मसूद के
खाना किसी का, काम किसी का।

राजा नल पर विपदा पड़ी, भूनी मछली जल में तिरी
विपत्ति अकेले नहीं आती।

लंगड़ी कट्टो आसमान में घोंसला
किसी के दिमाग न मिलने पर कहा जाता है।

लंगड़ी घोड़ी, मसूर का दाना
अयोग्य पर खर्च करना या जो सम्मान योग्य न हो उसका सम्मान करना।

लंगूर के पहलू में अंगूर (पहलुवे लंगूर अंगूर)
जो जिस वस्तु के गुण न जानता हो उसके पास वह वस्तु होना।

लकड़ी (लाठी) के बल बन्दरिया नाचे
नीच को डराकर ही वश में रखा जाता है।

लगे तोते भी तो बोलने
बात फैल गई।

मंगनी के बैल (बछिया) के दांत नहीं देखे जाते

मंगनी की चीज मे मीन-मेख निकालना उचित नहीं ।

मक्खी छोड़ना, हाथी निगलना

धूर्तता । ऊँचा हाथ मारना ।

मक्खीमार बड़ा चमार

कंजूस के लिए कहा जाता है ।

मछली के बच्चों को तैरना कौन सिखाता है ?

पैतृक गुण या जातिगत स्वभाव सीखना नही पड़ता ।

मछली तो नहीं कि सड़ जाएगी

आखिर ऐसी जल्दी भी क्या ?

मन चलता है पर टट्टू नहीं चलता

शरीर साथ नही देता ।

मस्ताई बकरी, बोक का मुंह चूमती है

मस्ती चढने पर हिताहित का ज्ञान नही रहता ।

मुआ घोड़ा भी कहीं घास खाता है

बुढापे मे जब कोई जवानी का मजा लूटने का प्रयास करता है तब कहा जाता है अथवा श्राद्ध पर व्यंग्य ।

मुए बैल की बड़ी-बड़ी आँखें

मरने के बाद प्रशंसा करना ।

मुर्गा बांग न देगा तो क्या सुबह नहीं होगी ?

किसी एक के न होने से दुनिया के काम नही रुकते ।

मुर्गा पशम, भेड़ हजम

धूर्त के लिए कहा जाता है ।

मुर्गी अपनी जान से गई, खाने वाले को मजा न आया

कृतघ्न के लिए कहा जाता है ।

मुर्गी की अजान कौन सुनता है ?

गरीब की सुनवाई कौन करे अथवा स्त्री का विश्वास कौन करे ?

मुर्गी की बांग का क्या एतबार ?

छोटे आदमी की बात का क्या विश्वास ?

मुर्गी के ख्वाब में दाना ही दाना

जिस चीज की आवश्यकता होती है, दिमाग मे वही घूमती रहती है ।

मुर्गे की एक ही टांग होती है

सरासर झूठ और उसे सच बताने का यत्न । बकरी की तीन टांग ।

प्राणि-जगत् पर आधारित लोकोक्तियां

मेरी ही बिल्ली और मुझसे ही म्याऊँ
मेरा ही खाए और मुझे ही आँख दिखाए।

म्याऊँ का ठौर कौन पकड़ेगा ?
जोखिम का काम कौन करेगा ?

मुर्गी को तकुवे का घाव बस है
गरीब के लिए थोड़ी हानि भी असह्य है।

मुर्गा चुगे, अपना पेट भरे
जो भी करता है, अपने लिए ही करता है।

यह कुत्ता नहीं मानता
छिछोरे के लिए कहा जाता है।

यह कौआ फँसने की चाल है
जब कोई गहरी चालाकी करे तब कहते हैं।

यहाँ परिन्दा भी पर नहीं मार सकता
कोई पास नही फटक सकता।

या भैंसा भैंसों में या कसाई के खूँटे पर
कुसंग मे पड़े ऐसे व्यक्ति को कहा जाता है जिसके कुछ निश्चित अड्डे हो।

या हंस मोती चुगे, या लंघन कर जाय
स्वाभिमानी के लिए कहा जाता है।

रह-रह बेंगना होने दे बिहान, तुझ पर साजेंगे तीर कमान
झूठी डींग मारने वाले के लिए कहा जाता है।

रहे महमूद के, अंडे देवे मसूद के
खाना किसी का, काम किसी का।

राजा नल पर विपदा पड़ी, भूनी मछली जल में तिरी
विपत्ति अकेले नही आती।

लंगड़ी फद्‌दो आसमान में घोंसला
किसी के दिमाग न मिलने पर कहा जाता है।

लंगड़ी घोड़ी, मसूर का दाना
अयोग्य पर खर्च करना या जो सम्मान योग्य न हो उसका सम्मान करना।

लंगूर के पहलू में अंगूर (पहलुवे लंगूर अंगूर)
जो जिस वस्तु के गुण न जानता हो उसके पास वह वस्तु होना।

लकड़ी (लाठी) के बल बन्दरिया नाचे
नीच को डराकर ही वश मे रखा जाता है।

लगे तोते भी तो बोलने
बात फैल गई।

लटा हाथी बिटौरे बराबर

बड़ा आदमी बिगडने पर भी छोटो से बडा ही होता है।

लड़के को जब भेड़िया ले गया तब टट्टी बांधी

काम बिगडने पर सचेत होना।

लड़के को मुंह लगाओ तो दाढ़ी खसोटे—कुत्ते को मुंह लगाओ तो मुंह चाटे

नादान और ओछे को मुंह नही लगाना चाहिए।

लड़कों का खेल, चिड़िया का मरन

अपने सुख के लिए दूसरो के कष्ट की परवाह न करना।

वक्त पर गधे को बाप बनाते हैं

अपने मतलब के लिए छोटे की खुशामद करनी पडती है।

वलायत में क्या गधे नहीं होते ?

मूर्ख कहाँ नही रहते ?

वा नर से मत मिल रे मीता, जो कभी मिरग कभी हो चीता

जिसकी प्रकृति स्थिर नही होती वह खतरनाक होता है।

शहर भर में ऊँट बदनाम

बदनाम आदमी का हर काम मे नाम लिया जाता है। व्यर्थ की बदनामी पर कहा जाता है।

शेर का एक ही भला

लडका सपूत हो तो एक ही भला।

शेर का जूठा खाय गीदड़

आलसी या अकर्मण्य दूसरो पर निर्भर रहते हैं या बडो से छोटो के काम बनते है।

शेर के बुरके में छीछड़े खाते हैं

जो घृणित उपायो से जीवन-यापन करते है उन पर कहा जाता है।

शेर भूखा मरे पर घास न खाय

स्वाभिमानी के लिए कहा जाता है।

शेरो का मुंह किसने धोया ?

साफ-सुथरे न रहने वाले बच्चो से हंसी में कहते है।

शेरों के शेर होते हैं

यशस्वी पिता के लडके भी यशस्वी होते है।

सब के दांव अंडे-बच्चे, हमारे दांव कुड़क

सबको मिल रहा है स्वयं को नहीं।

सब शकल लंगूर की, बस एक, दुम की कसर है

सिलबिले लडके के लिए कहते हैं।

सयाना कौआ गू खाय

चालाक धोखा खाता है। सयाने के भूल करने पर कहा जाता है।

सराय का कुत्ता, हर मुसाफिर का यार

मुफ्तखोर के लिए कहते है।

सांप और चोर की धाक बड़ी होती है

दोनो से डर लगता है।

सांप का काटा पानी नहीं मांगता

धूर्त के चक्कर में पड़ने पर पनपना कठिन है। काले का काटा पानी नही मांगता।

सांप का काटा रस्सी से डरता है

धोखा खाने पर आदमी सतर्कता बरतता है। दूध का जला छाछ फूंक-फूंक कर पीता है।

सांप और चोर दबे पर चोट करते हैं

दोनो से डरना चाहिए अथवा वे अपने पर आक्रमण के भय से प्रत्याक्रमण कर बैठते हैं।

सांप का बच्चा संपोलिया

दुष्ट का बच्चा भी दुष्ट होता है।

सांप का सिर भी काम आता है

किसी चीज को निकम्मी समझकर फेंकना ठीक नही।

सांप का सिर ही कुचलते हैं

उसके फन मे ही जहर होता है। जो अंग खतरनाक हो उसी को मिटाते है।

सांप की सी केंचुली झाड़ दी

लंघनों के बाद रोगी के आराम होने पर कहा जाता है।

सांप निकल गया, लकीर पीटा करो

अवसर छोड देने पर कोई लाभ नहीं।

सांप की तो भाप भी बुरी

दुष्ट से दूर ही रहना चाहिए।

सांप मरे न लाठी टूटे

काम बन जाये और हानि भी न हो अथवा झगड़ा आसानी से हल हो जाय।

समय-समय की बात, बाज पर झपटे बगुला

कभी सबल को भी निर्बल के सामने दबना पड़ता है।

साठ गांव बकरी चर गई

कोई भारी नुकसान होने पर कहा जाता है।

सारस की जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी
दो समान बुरे आदमियों का साथ।
सारे शहर में ऊँट बदनाम
शहर भर में ऊँट बदनाम।
सिंह पराये देश में नित मारे नित खाय
चोर-डकैत दूर देश में उपद्रव मचाते हैं।
सिंह से सरबर करे सियार
छोटे का बड़े की बराबरी करना। अनहोनी बात।
सियार के मन्त्री कौआ, छोड़ दहले हाड़-चाम, खाइले मसवा
मक्खन स्वयं के लिए रखना और छाँछ दूसरों को छोड़ना।
सिरे ही की भेड़ कानी
आरम्भ ही में विघ्न या गलती।
सीख न दीजें बानरा, जो बए का घर जाय
उपदेश से मूर्ख का क्रोध शान्त नहीं होता।
सूधे का मुंह कुत्ता चाटे
असावधान को सभी ठगते हैं।
सूम के घर कुत्ता जाय न जाने दे
धनवान कृपण के नीच नौकर के लिए कहा जाता है।
सोते का कटड़ा, जागते की कटिया
सचेत मुनाफे मे रहता है।
सोते का मुंह कुत्ता चाटे
असावधान को सभी ठगते हैं।
सूना घर भिड़ों का राज
सूना घर नष्ट हो जाता है।
सौ कौओं में एक बगुला भी नरेश
धूर्तों में धूर्त।
हमारी बिल्ली और हमी से म्याऊँ
मेरी बिल्ली और मुझी से म्याऊँ।
हाथ का चूहा बिल में पैठा
हाथ आई चीज निकल गई या बना बनाया काम बिगड़ गया।
हाथी अपनी हथपाई पर आ जाय तो आदमी भुनगा है
सच्चा बली किसी को कष्ट नहीं पहुँचाता।
हाथी आवें घोड़े जायें, ऊँट बेचारे गोते खाँय
कठिन परिस्थिति उत्पन्न होने पर कहा जाता है।

हाथी का कन्धा खाली नहीं रहता
हमेशा कोई-न-कोई सवार रहता है क्योंकि उस पर बैठना बड़प्पन की निशानी है।
हाथी का दांत, घोड़े की लात, मूंजी का चंगुल
तीनों खतरनाक हैं। इनसे बचना चाहिए।
हाथी का दांत निकला जहां निकला
बात खुली तो खुली। एक बार कोई धृष्ट या निर्लज्ज बना तो बना।
हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और
करनी और कथनी में अन्तर होने पर कहा जाता है।
हाथी का बोझ हाथी ही उठाता है
बड़ों का भार बड़े ही उठाते हैं।
हाथी के पांव में सबका पांव
बड़ों के साथ बहुतों का गुजारा होता है।
हाथी चढ़े, कुत्ता काटे
होनी को कोई रोक नहीं सकता अथवा दुर्भाग्य कहीं पीछा नहीं छोड़ता।
हाथी निकल गया, दुम रह गई
काम का बड़ा हिस्सा पूरा हो जाने पर थोड़ा सा बच जाने या थोड़ा सा असमंजस रह जाने पर कहा जाता है।
हाथी फिरे गांव-गांव, जिसका हाथी उसका गांव
मूल्यवान वस्तु के मालिक का नाम छिपा नहीं रहता या बड़ा काम करने वाले का नाम छिपा नहीं रहता।
हाथी हजार लटा, तो भी सवा लाख टके का
बड़ा आदमी कितना भी गरीब हो जाय साधारण आदमी से उसकी स्थिति बेहतर रहती है।
हिमायती की घोड़ी इराकी को लातें मारे
साधारण व्यक्ति बड़े की शह पाकर बड़े से लड़े या साहब का नौकर रोब जमाये तब कहा जाता है।
हुंडार चीन्हें बामन का पूत
दुष्ट भलों को सतायें या अदालत के रिश्वतखोर जब किसी पर रियायत न करें तब कहा जाता है।
हो बिधना प्रतिकूल जबै, तब ऊंट चढ़े पर कूकर काटत
विधाता के रूठने पर सभी रूठ जाते हैं।

वनस्पति-जगत् पर आधारित लोकोक्तियाँ

अंगूर खट्टे हैं

अलभ्य वस्तु को बुरा कहना।

अड़सठ तीरथ कर आई तूमड़ी तऊन गई कड़ुआई

बुरा स्वभाव बदलना कठिन है।

अढ़ाई हाथ की ककड़ी, नौ हाथ का बीज

अनहोनी बात या दून की हाँकना।

अभी चने की दो दाल नहीं हुई

अभी मामला तय नही हुआ अथवा सब मिलकर रहते हैं, अलग नही हुए।

अभी एक घूंट की दो दाल नहीं हुई

अभी चने की दो दाल नही हुई।

आख थू ! खट्टे हैं

अंगूर खट्टे हैं।

आदमी क्या है ? आबनूस का कुन्दा है।

मूर्ख या काला-कलूटा।

आदमी क्या है सरांचे का बांस है

लम्बा और बेडौल।

आम के आम गुठली के दाम

दोनों ओर से या हर प्रकार मे लाभ।

आम खाने से मतलब या पेड़ गिनने से

सीधे काम की बात न करके व्यर्थ का प्रश्न करने पर कहा जाता है।

आम इमली का साथ है

एक से चालाक या बेमेल व्यक्तियों का साथ होना।

आम फले तो नव चले, अरंड फले इतराय

सज्जन ऊँचे पद पर विनम्र होते हैं, नीच इतराते हैं।

आम बोओ, आम खाओ, इमली बोओ, इमली खाओ
जैसा करोगे वैसा पाओगे।
इन तिलों में तेल नहीं
यहाँ से कुछ पाने की आशा मत रखो।
एक आम की दो फाँकें
दो सगे भाई या दो समान वस्तुएं।
एक अनार सौ बीमार, एक नीमसय घर सितराहा एक नीम सौ कोढ़ी,
एक पेड़ हरें, सगरे गाँव खाँसी
वस्तु एक और चाहने वाले अनेक। लोक-जीवन की विषमता।
एक तो करेला कड़ुआ, दूसरे नीम चढ़ा
कुसंग में पड़कर और भी बुरा होना।
ओछो भकड़ा करील को, बिन ब्यारे फराँय
बुरों की संगत में बैठने से भलों की इज्जत जाती है।
ओछो पेड़ अरंड का, रहे सीस पर तान
ओछा बहुत इतराता है।
कच्चे बाँस को जिधर से नवाओ नय जाय, पक्का कभी न टेढ़ा होय
बच्चों के स्वभाव को इच्छानुसार मोड़ा जा सकता है, बाद में नहीं।
कड़ाकड़ बाजे थोथे बाँस
निकम्मा आदमी बातूनी होता है।
कभी न कभी टेसू फूले
बुरा भी अप्रत्याशित रूप में कभी अपने स्वभाव के विरुद्ध भला काम कर देता है।
कहीं सूखे दरख्त भी हरे होते हैं ?
बिल्कुल बिगड़ी हालत नहीं सुधरती।
काटे पै कदली फटे-कोटि जतन कोऊ सींच, बिनय न मान खगेस सुनु डाँटेहि पै सब नीचु
नीच वृत्ति के लोग विनय पर ध्यान नहीं देते हैं, डाँटने पर ही झुकते हैं।
काँटा बुरा करील का, बदरी का घाम ! सौत बुरी हैं चून की, अरु साझे का काम
करील का काँटा, बदली की धूप, सौत और साझे के काम सुख नहीं देते।
काहे को गूलर का पेट फड़वाते हो ?
क्यों सच-सच सुनना चाहते हो, तुम्हें रुचेगा नहीं।
काबुल में मेवा भई, ब्रज में भई करील
जहाँ जो वस्तु होनी चाहिए उसका वहाँ न होना। प्रकृति का मनमौजीपन।

कद्दू पर छुरी-छुरी पर कद्दू
हर हालत मे वही कटेगा।
किस खेत की मूली है ? किस खेत का बथुआ है ? किस बाग की मूली है ?
वह है क्या चीज ? उपेक्षा में कहा जाता है।
किसी को बैंगन बाय, किसी को पत्थ
कोई वस्तु किसी को हानिकारक है तो किसी को लाभदायक।
कुछ तो खरबूजा मीठा, कुछ ऊपर से कन्द
अच्छाई मे और अच्छाई होना।
कुसुम का रंग तीन दिन, फिर बदरंग
किसी भी वस्तु का सौंदर्य स्थायी नही होता।
कोई दम में सरसों फूलती है
अभी नशे में गड़गप्प होता है।
कौन सा दरख्त है जिसे हवा नहीं लगी ?
सगति का प्रभाव सभी पर पड़ता है अथवा थोड़े बहुत कष्ट सभी को झेलने पड़ते हैं।
खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है या पकड़ता है
एक का प्रभाव दूसरे पर पड़ता है।
खाओ तो कद्दू से न खाओ तो कद्दू से
यहां तो बस यही है इसी से काम चलाना होगा अथवा तुम खाओ या न खाओ हमारी बला से।
खाक न धूल, बकाइन के फूल
फालतू आदमी या जो फालतू बात करे।
गाछ में कटहल, होठों तेल
समय से पहले ही किसी काम की तैयारी।
गाजर की पूंगी बजी तो बजी, नही तो तोड़ खाई
ऐसा काम जो हो जाए तो अच्छा और न हो तो भी अच्छा।
गेहूं की बाल नहीं देखी
अनाड़ी या भोलाभाला बनने वाले से व्यंग्य में कहा जाता है।
गैर का सिर कद्दू बराबर
दूसरे का माल खरचने में हिचक न होना।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग
सज्जन दुर्जनो का प्रभाव ग्रहण नही करते।
चढ मार गूलर पक्के
मौका है, बढ़कर हाथ मारो।

जहां गुल होगा वहां खार भी जरूर होगा
सुख के साथ दुःख लगा है।
जहां रूख नहीं, तहां अरंड रूख
जहां कोई विद्वान् या धनी नहीं होता वहां कम विद्या, गुण या धन वाला ही बड़ा माना जाता है।
जिन दिन देखे वे कुसुम गई सु बीति बहार
जो स्त्री अपना यौवन खो चुकी हो या जो मनुष्य अपना सर्वस्व खो चुका हो उस पर अन्योक्ति।
जिस टहनी पर बैठे, उसी को काटे
जिसके आश्रय में रहना उसी का अनिष्ट करना कृतघ्नता।
जिस दरख्त के साये में बैठे, उसी की जड़ काटे
जिस टहनी पर बैठे उसी को काटे।
जैसा पेड़ वैसा फल, जैसा बीज वैसा अंकुर
जैसा कार्य वैसा फल।
जैसे नीमनाथ तैसे बकायननाथ
दोनों समान रूप से कड़ुवे-बुरे।
जो तोकों कांटा बुवै, ताहि बोय तू फूल
अहित करने वालों का भी हित करना चाहिए।
ज्यों केरा के पात पात में पात, त्यों ज्ञानी की बात बात में बात
ज्ञानी पुरुष की बातों में गम्भीर अर्थ छिपे रहते हैं।
तुम डाल डाल, हम पात पात
हम तुमसे अधिक चतुर हैं।
थोथा चना बाजे घना
ओछा अपना बखान अधिक करता है या अकर्मण्य बातूनी होता है।
न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी
झगड़े की जड़ ही समाप्त कर देना।
नन्हें होकर रहिए, जैसी नन्हीं दूब
आदमी को विनम्र होना चाहिए।
नारियल में पानी, नहीं जानते खट्टा कि मीठा
संदेहजनक स्थिति के लिए कहा जाता है।
नीचे से जड़ काटना, ऊपर से पानी देना
ऊपर से भले बनकर भीतर ही भीतर हानि पहुंचाना।
पके आम के टपकने का डर है
न जाने कब चल बसे ?

पेड़ चढ़े यों ही दिखाई देता है
अगर तुम मेरी जगह होते तो वैसा ही करते।

फल खाना आसान नहीं
बिना परिश्रम के कोई काम नही होता।

फिर मुड़ली बेल तले
फिर जोखिम में पड़े।

फूल की डाल नीचे झुके
भला आदमी विनम्र होता है।

फूल झड़े तो फल लगे
फूल गिरता है तो फल लगता है या स्त्री ऋतुमती होगी तो बाल-बच्चा भी होगा।

फूल टहनी पर ही अच्छा लगता है
हर चीज अपने स्थान पर ही शोभा देती है।

फूल नहीं पंखुड़ी ही सही
बहुत नही तो थोडा ही सही। जो मिले वही बहुत।

बड़ों के कहे का और आंवलों के चखे का पीछे स्वाद आता है।
इनकी अच्छाई बाद मे प्रकट होती है।

वन में उपजे सब कोई खाय, घर में उपजे घर ही खाय या घर बह जाय
फूट।

बांस की जड़ में घमोए जामे हुए
अच्छे घर मे कपूत पैदा हुआ।

बादल मढ़े से नीम नहीं छिपता
बुरी आदत या बुरा काम छिपाये नही छिपता।

बांस बढ़े झुक जांय, अरंड बढ़े टूट जांय
सज्जन बढने पर नम्र होते हैं ओछे या खोटे इतराते हैं।

बेखार गुल नहीं
सुख के साथ दु.ख लगा है।

बेगाना सिर कद्दू बराबर
पराया सिर कद्दू बराबर। दूसरे का माल उड़ाने में हिचक न होना।

बेटी और ककड़ी की बेल बराबर होती है
दोनों जल्दी बढती हैं।

बेल के मारे बबूल तले, बबूल के मारे बेल तले
कही भी आश्रय या सुरक्षा नही। अभागा मनुष्य।

सात-पाँच पकुआ न एक गूलर
एक लड़का सपूत निकले तो वही बहुत।

सावन हरे न भादों सूखे
सदा एक ही हालत मे।

सूखा ढाक बढ़ई का बाप
कठोर लकडी के लिए कहा जाता है।

हड़ खायें, उगलें बहेड़ा
कहे कुछ करे कुछ।

हरे रूख पर सब परन्द बैठते हैं, ठूंठ पर कोई नहीं बैठता
धनी का सब आश्रय लेते हैं।

होनहार बिरवान के होत चीकने पात
जिसे जो कुछ होना होता है, उसके लक्षण पहले ही प्रकट होने लगते हैं।

दैनिक प्रयोग की वस्तुओं और लोक-व्यवहार पर आधारित लोकोक्तियां

अंधी नाइन आईने की तलाश
    अपात्र का कोई वस्तु चाहना।
अंधेरी रैन में जेवड़ी साँप
    मन की संदिग्ध अवस्था।
अक्ल की कोताही और सब कुछ
    उपहास में मूर्ख या कम समझने वाले से कहा जाता है।
अक्लमंद को इशारा, अहमक को फटकारा
    बुद्धिमान इशारे से समझ जाता है, मूर्ख फटकारने पर ही होश में आता है।
अक्लमंद को इशारा काफी है
    बुद्धिमान इशारे से समझ जाता है।
अक्लमंदों की दूर बला
    समझदारों को कष्ट नहीं भोगना पड़ता है।
अकेला पूत कमाई करे, घर को करे या कचहरी करे?
    अकेला आदमी क्या-क्या करे?
अकेला हँसता भला न रोता
    सुख-दुःख में साथ होना ही चाहिए।
अकेला हसन रोवे कि कब्र खोदे
    एक आदमी एक साथ दो काम नहीं कर सकता।
अकेली कहानी गुड़ से मीठी
    अकेली वस्तु श्रेष्ठ मानी जाती है, क्योंकि उसकी तुलना में दूसरी अच्छी
    वस्तु मौजूद नहीं।
अकेली लकड़ी कहाँ तक जले
    एक वस्तु या व्यक्ति से सामर्थ्य से बाहर आशा नहीं करनी चाहिए।

अकेली लकड़ी न जले न बरे, न उजेरा होय
अकेली लकडी कहाँ तक जले।

अगर्चे गन्दा मगर ईजाद-ए-बन्दा
बुरा है तो क्या बनाई तो हाथ से गई है।

अगले को घास न पिछले को पानी
स्वार्थी या कंजूस जो किसी को कुछ नहीं देता, उसके प्रति कहा जाता है।

अगर कोह टल्ले, न टल्ले फकीर
फकीर या हठी व्यक्ति अपनी इच्छा पूरी होने पर ही टलता है।

अगला लीपा गया सराहा, अब का लीपा आगे आया
पिछला काम अच्छा था लेकिन अब तो सब चौपट कर दिया।

अच्छे-बुरे में चार अंगुल का फर्क है
देखने-सुनने (आँख और कान मे) बहुत अंतर होता है। आशय यह है कि आँखों देखी पर ही विश्वास करना चाहिए।

अजीरन को अजीरन ही ठेले, नहीं तो सिर चौहट्टे खेले
जो जैसा है वैसा ही उसका मुकाबला कर सकता है।

अटकलपच्चू गैर मुकर्रर
एक अनिश्चित अथवा अनुमान पर आधारित बात।

अधजल (भर) गगरी छलकत जाय
क्षुद्र व्यक्ति को महत्व मिलने से वह इतराने लगता है। अल्पज्ञ अपने को बहुत समझता है।

अधेला न दे, अधेली दे
जहाँ कम व्यय पर काम हो सकता है वहाँ खर्च न करना और दूसरी जगह व्यर्थ में अधिक खर्च करना।

अटकेगा सो भटकेगा
संशय नाश का कारण है।

अड़ते से अड़ते जाइए, चलते से दूर
जो लड़ने पर उतारू हो उससे दो-दो हाथ निपट लेना चाहिए और जो अपने रास्ते जा रहा हो उसे नही छेड़ना चाहिए।

अनजान की मिट्टी खराब
अज्ञान कष्ट का कारण होता है अथवा अज्ञानी के काम नही बनते।

अनकर मीठ, पराया तीत
अपनी वस्तु की सब सराहना करते हैं।

अनकर खेती, अनकर गाय, वह पापी जो मारन जाय
हमे क्या मतलब जो भगाने जाँय।

अनहोत में औसार
    गरीबी में अधिक सन्तान अखरती है।
अपना-अपना ढंग है
    हर आदमी का काम करने का अपना तरीका होता है।
अपना-अपना सहनिया है
    अपना-अपना भाग्य है।
अपना गू भोजन बराबर
    अपनी बुरी वस्तु भी भली जान पड़ती है या अपने अवगुण भी गुण लगते हैं।
अपना-अपना खोलो, अपना-अपना सिओ
    स्वयं अपना प्रबन्ध करो या अपनी स्थिति स्वयं सीओ।
अपना-अपना दुखड़ा सब रोते हैं
    सबको अपनी ही पड़ी रहती है।
अपना-अपना खाना, अपना-अपना कमाना
    एक दूसरे पर निर्भर न रहना।
अपना घर, अपना बाहर
    घर-बाहर का सब हमारा (स्वार्थी का कथन)।
अपना घर दूर से सूझता है
    अपना मतलब सब देखते हैं या अपना घर समय पड़ने पर याद आता है।
अपना पूत, पराया ढटीगर
    अनकर मीठ, पराया तीत।
अपना निकास, मुझे डालने दे
    अपना ही स्वार्थ देखने पर कहा जाता है।
अपना तोसा अपना भरोसा
    अपनी जरूरत का सामान अपने पास रखना चाहिए।
अपना रत्न, पराया रत्न
    स्वार्थी की उक्ति।
अपना हारा और महरा का मारा कौन कहता है
    अपनी कमजोरी सब छिपाते है।
अपना वही जो काम आवे
    वक्त पर जो काम आता है, वही अपना है।
अपना माल छाती तले
    अपने माल की स्वयं रक्षा करनी चाहिए।
अपना लाल गँवाय के दर-दर माँगे भीख
    अपनी मूल्यवान वस्तु खोकर दूसरों का मोहताज बनना।

अपना के जुरे ना, अनका के दानी

स्वयं खाने को नहीं, दूसरे को दान करने को तैयार।

अपना घर सत्तू ना, अनका घर पेड़ा

मुफ्तखोरी करना।

अपना ठीक ना, अनकर नीक ना

जिसे न अपना काम पसंद आए और न दूसरे का अथवा जो न स्वयं काम करना जाने और न दूसरे के ही काम को पसंद करे।

अपना मरन जगत् को हँसी

दूसरों को विपत्ति में फँसा देखकर दुनिया हँसती है।

अपनी-अपनी सब गाते हैं

सब अपनी कहना चाहते है, दूसरे की नही सुनना चाहते।

अपनी अक्ल और पराई दौलत बड़ी मालूम होती है

हर आदमी अपने को दूसरों की अपेक्षा अधिक समझदार और दूसरों को अपनी अपेक्षा अधिक मालदार समझता है।

अपनी अक्ल के आगे किसी को समझता ही नहीं

बड़ा समझदार बना फिरता है।

अपनी-अपनी खाल में सब मस्त हैं

हर आदमी अपनी धुन में मस्त है या अपनी जगह सब मौज करते है।

अपनी-अपनी चाल-ढाल है

अपना-अपना तौर-तरीका है।

अपनी-अपनी समझ है

हर आदमी का सोचने का अपना तरीका होता है।

अपनी इज्जत अपने हाथ है

अपने मान-सम्मान का ध्यान हमें स्वयं ही रखना चाहिए।

अपनी ओर निबाहिए, बाकी की वह जाने

दूसरों के प्रति हमे अपने कर्त्तव्य-पालन मे नही चूकना चाहिए, दूसरे क्या करते हैं यह वे जानें।

अपनी करनी पार उतरनी

अपने कर्मों का फल हमें स्वयं भोगना पड़ता है। जैसा करेंगे वैसा पाएँगे।

अपनी गरज बावली

गरजमंद को अपने काम के सिवा कुछ नही सूझता।

अपनी गुड़िया सँवारी

अपना काम देखो, हमसे जितना हो सकता था कर दिया।

लोक-व्यवहार पर आधारित लोकोक्तियां

अपनी चिलम भरने को मेरा झोंपड़ा जलाते हो
अपने थोड़े लाभ के लिए दूसरे की करारी हानि करते हो।

अपनी छांछ को कोई खट्टा नहीं कहता, अपनी दही को कोई खट्टा नहीं कहता
अपनी चीज को कोई बुरा नहीं कहता।

अपनी जान सबको प्यारी है
कोई भी जानबूझकर मरना नहीं चाहता।

अपनी तो यह देह भी नहीं
यह शरीर भी अपना नहीं तब अन्य किसी वस्तु की तो बात ही क्या?

अपनी-अपनी चाल है
हर जगह का अपना रीति-रिवाज होता है।

अपनी नींद सोना, अपनी नींद उठना
पूर्ण स्वतंत्र होना। किसी बात की कोई चिंता न होना।

अपनी पगड़ी अपने हाथ
अपनी इज्जत अपने हाथ।

अपनी बेटी को ऐसा मारूं कि पतोहू त्रास कर जाए
किसी पर रोब जमाने के लिए किसी दूसरे पर गुस्सा उतारना।

अपनी बला और के लिए
अपनी विपत्ति दूसरे के सिर मढ़ना।

अपनी मसलहत हर शख्स खूब जानता है
हर आदमी अपनी कमजोरी या कठिनाई जानता है।

अपनी राधा को याद करो
अपनी विगडी खुद सम्भालो। हम कुछ नहीं जानते।

अपनी लिट्टी पर सब आग रखते हैं
अपना स्वार्थ सब साधते हैं।

अपनी हराई-मराई कोई नहीं भूलता
अपना भुगता कोई नहीं भूलता।

अपनी बेर को घोलमघाला, हमारी बेर को मूखमभाखा
स्वयं तो तरमाल उड़ाया और हमें भूखा रखा।

अपनो हाथ और पर गंवाई
ध्यान न देने वाले को अपना दुखड़ा सुनाया।

अपने-अपने कदेह को सब खैर मनाते हैं
अपना प्याला सब भरा रखना चाहते हैं, अर्थात् सब अपना स्वार्थ तकते हैं।

अपने-अपने ख्याल में सब मस्त हैं
हर आदमी अपने रंग में डूबा हुआ है।

अपने ऐब सब लीपते हैं

अपने दोष सब छिपाते हैं।

अपने किए का क्या इलाज ?

अपने कर्मों का फल स्वयं ही भुगतना पड़ता है। उसके लिए कोई क्या कर सकता है ?

अपने घर के सब बादशाह हैं

अपने घर से सब बड़े हैं, चाहे जो करें।

अपने घर में आता किसको बुरा लगता है

मुफ्त का माल आ जाए तो सब चाहते हैं।

अपने झोंपड़े की खैर मांगो।

पहले अपनी कुशल मनाओ, फिर दूसरे की फिक्र करना।

अपने ढिग पैसा तो पराया आसरा कैसा ?

अपने पास जब सुभीता है तो पराया आसरा क्यों तका जाए ?

अपने पूत कुंवारे फिरें, पड़ोसी के फेरे

अपना काम छोड़कर परोपकार करते फिरना।

अपने बच्चे को ऐसा मारूँ पड़ोसिन की छाती फटे

किसी पर रोब जमाने के लिए किसी दूसरे पर गुस्सा उतारना।

अपने बावलों रोइए, दूसरों के बावलों हँसिए

पराये दुःख को हम दुःख नही मानते।

अपने मियाँ दर-दरबार, अपने मियाँ चूल्हे द्वार

एक ही आदमी का सब तरह के छोटे-बड़े काम करना।

अपने मुंह धन्नाबाई, अपने मुंह मियाँ मिट्ठू, अपने मुंह शादी मुबारक

स्वयं अपनी प्रशंसा करना।

अपने से बचे तो और को दें

स्वार्थी के लिए कहते हैं, अथवा पहले हम अपनी जरूरत तो पूरी कर लें फिर दूसरों को दें।

अपनो की आड़ कोई नहीं उठाता -

अपने सगे-सम्बन्धियों का एहसान कोई नही लेना चाहता।

अब की अब के साथ, जब की जब के साथ

आगे जैसा होगा देखा जाएगा, इस समय तो परिस्थिति के अनुसार ही काम करना होगा

अब की छई की निराली बातें

वर्तमान पीढ़ी के छोकरों की बात समझ मे नही आती।

लोक-व्यवहार पर आधारित लोकोक्तियाँ

अब की बार बेड़ा पार
थोड़ी कसर बाकी है, हिम्मत करो, काम बन जाएगा।
अब तो पत्थर के नीचे हाथ दबा है
ऐसी संकटापन्न स्थिति के लिए कहा जाता है जिसमें कुछ न किया जा सके।
अब की बचे तो सब घर रचे
इस बार मुसीबत टल जाए तो बड़ी बात समझिए।
अब तो रुपये की जात है
अब तो रुपया ही सब कुछ है।
अब भी मेरा मुर्दा तेरे जिन्दा पर भारी है
बिगड़ी हुई हालत में भी मैं तुमसे हर बात में बढ़ा हूँ।
अब से आए, घर से आए
परदेश से आने वाले व्यक्ति का कथन जिसे वहाँ कोई कष्ट न हुआ हो।
अभी के दिन के रात
उस व्यक्ति के लिए, जो समझता है कि उसके दिन सदैव अच्छे ही रहेंगे।
अथवा जो नियमानुसार अधिकारी बनने से पहले ही अपना हक जताने लगे।
अभी तो तुम माँ का दूध पीते हो
अभी तुम बच्चे हो, क्या जानो ?
अभी दिल्ली दूर है
सफलता दूर है। (हनोज दिल्ली दूर अस्त—फारसी)।
अरहर की टट्टी गुजराती ताला
कम मूल्य की वस्तु के रखरखाव में अधिक व्यय करना।
अल खामोशी नीम रजा
मौनं स्वीकृति लक्षणम्।
अल्लाह रे ! मैं !
आप अपनी पीठ ठोंकना, अभिमान से फूलना।
अशरफ के लड़के बिगड़ते हैं तो भड़वे बनते हैं
भले आदमियों के लड़के कुसंग में पड़ते हैं तो किसी काम के नहीं रहते।
असल असल है नकल नकल है
नकली चीज असली की बराबरी नहीं कर सकती।
अलील की राय अलील
रोगी की राय मानने योग्य नहीं होती।
असल (हक) कहे सो बाड़ीजार
जो सच कहे सो बुरा।

अस्सी की आमद चौरासी का खर्च
आय से व्यय अधिक। अपव्यय।

अहमद की दाढ़ी बड़ी या मुहम्मद की
व्यर्थ की बात।

अहमद की पगड़ी मुहम्मद के सिर
बेतुका काम। एक की हानि करके दूसरे को लाभ पहुँचाना।

अहमक से पड़ी बात, काढ़ो ऐठा, तोड़ो दांत
मूर्ख को डंडे से ही समझाया जा सकता है।

आँधी के आगे बेने की बतास
आँधी में पंखा झलना व्यर्थ है।

आई, गई, पार पड़ी
जो होना था सो हुआ अब चिन्ता क्या?

आई तो रमाई, नहीं तो फकत चारपाई
मजा-मौज का साधन मिल गया तो ठीक, नहीं तो चिन्ता नहीं।

आई है जान के साथ, जायेगी जनाजे के साथ
आदत से मतलब है जो जिन्दगी भर छूटती नही।

आई माई को काजर नहीं, बिलाई को भर माँग
घरवालो को छोड़कर फालतू आदमियों का सत्कार करना।

आई बात का रखना, कुन्द जहन होन।
मन मे उठे विचार को प्रकट न करना मूर्खता है या सामने आई बात को निपटा लेना चाहिए।

आई न गई, कौन जाते बहिन?
जबर्दस्ती रिश्ता निकालने पर कहा जाता है।

आए की खुशी नहीं, गए का गम
संतोष ही सुख है।

आएगा सो जाएगा, राजा-रंक-फकीर
जिसने जन्म लिया, उसकी मृत्यु निश्चित है।

आओ-आओ घर तुम्हारा, खाना माँगो दुश्मन हमारा
झूठे सत्कार पर कहा जाता है।

आओ दुगाना चुटकी खेलें, बैठे से बेगार भली
व्यर्थ मे समय नष्ट करने वालो पर फबती।

आग कहते मुँह नहीं जलता
नाम से प्रभाव कम नही होता।

आग का जला आग से ही अच्छा होता है

जिस वस्तु से कष्ट, उसी से आराम भी होता है।

आग खाएगा तो अंगार हगेगा

बुरे काम का बुरा नतीजा।

आग मीर को दाई, सब सीखी सिखाई

सब सीखे सिखाए हैं। बड़े आदमियों के नौकरों के लिए कहते है।

आग बिन धूआं नहीं

कारण बिना कोई कार्य नही होता।

आग के आगे सब भस्म है

प्रबल के सामने सब भाग जाते हैं।

आग लगते झोंपड़ा, जो निकले सो लाभ

सब कुछ नष्ट होने पर जो बचे वही बहुत है।

आग लगे खोदे कुंआ

पहले से काम की व्यवस्था न की जाय तो काम कैसे हो ?

आग लगे तो घूर बतावे

धोखे मे रखना या रहना।

आग लगे मढ़े, वज्र पड़े बारात

भाड़ में जाए सब।

आकाश बांधे, पाताल बांधे, घर की टट्टी खुली

दुनिया का प्रबन्ध करे पर घर का न कर सके।

आगे आगरा पीछे लाहौर

जो चीज आगे आने वाली है, पहले उसी की चर्चा करनी चाहिए।

आगे कुंआ पीछे खाई

दोनों ओर विपत्ति।

आगे जाए घुटने टूटें, पीछे देखें आंखें फूटें

सांप छछूंदर जैसी गति होना।

आगे दौड़, पीछे चौड़

पीछे की खबर न रखना।

आज की आज, आज की बरस दिन में

आज की बात आज भी निपटाई जा सकती है और उसमें एक वर्ष भी लग सकता है। मामले को समय पर तै न करने पर कहते हैं।

आज किधर का चांद निकला है

आज आप किधर भूल पड़े ?

आज के थापे आज नहीं जलते

काम तुरन्त नही हो जाता या तुरन्त का सिखाया तुरन्त काम में योग्य नहीं हो जाता।

आज नहीं कल

टालमटोल करने पर कहा जाता है।

आज मेरी मँगनी, कल मेरा ब्याह; टूट गई टँगड़ी, रह गया ब्याह

आदमी मंसूबे बांधता है पर पूरे नही होते।

आज मुए कल दूसरा दिन

मरने के बाद सब भूल जायेंगे।

आज मैं कल तू

सबको जाना है या सब पर विपत्ति पड़ती है।

आज मैं हूं और वह है

आज मैं उससे निपटकर ही रहूँगा।

आज है सो कल नहीं

संसार परिवर्तनशील है।

आटा नहीं तो दलिया जब भी हो जाएगा

अधिक नही तो थोड़ा लाभ हो ही जाएगा।

आठों पहर काल का डंका सिर पर बजता है

मौत हर वक्त सिर पर सवार है।

आते का नाम सहजा, जाते का नाम मुक्ता

ससार में आने का मतलब है दु.ख सहन करने के लिए तैयार रहना। मुक्ति तो मरने पर ही मिलती है अथवा दुःख आने पर उसे धैर्यपूर्वक सहना चाहिए। जब वह जाए तभी समझो कि छुटकारा मिला।

आदत सिर के साथ जाती है

आदत मरने पर ही छूटती है।

आदमी कुछ खोकर ही सीखता है

हानि उठाने पर ही अक्ल आती है।

आदमी की कसौटी मुआमल

काम पडने पर ही आदमी की परीक्षा होती है।

आती बहू, जन्मता पूत

खुशहाली सबको अच्छी लगती है।

आध सेर के पात्र में कैसे सेर समाय ?

ओछे में अधिक योग्यता कहाँ से आ सकती है या ओछा थोड़ा पाकर इतराने लगता है।

आधा तजे पण्डित, सर्वस्व तजे गंवार

मूर्ख पूरा बचाने के लोभ में सब खो बैठता है।

आधी छोड़ सारी को धावे, आधी रहे न सारी पावे

अधिक लालच में थोड़ा भी नही मिलता।

आधी रात को जँभाई आय, शाम से मुँह फैलाय

किसी काम के लिए अनावश्यक रूप से बहुत पहले ही तैयारी करना।

आधे काजी कद्दू, आधे बाबा आदम

बड़े परिवार वालों का व्यंग्य।

आदमी ठोकर खाकर संभलता है

हानि होने पर ही होश आता है।

आन पड़ी सिर आपने, छोड़ पराई आस

विपत्ति में कोई सहायक नहीं होता।

आप काज महाकाज

अपना काम स्वयं करने मे ही ठीक होता है।

आपका पौवा यहां नहीं लगने का, आपकी टिक्की यहां नहीं लगने की,
आपकी दाल यहां नहीं गलने की, आपकी रोटी यहां नहीं सिकने की

आपका मतलब यहां नही पूरा होने का।

आपकी फजीहत गैर को नसीहत

बुरा काम करना और दूसरों को उपदेश देना। पर उपदेश कुशल बहुतेरे।

आप खाय, बिलाई बताय

स्वयं हड़पकर दूसरों का नाम बताना।

आपकी जिल्लत मेरे सिर आँखों पर

आपके लिए मैं शर्मिन्दा हूँ। आपने जो किया, उसे मैं भुगतूंगा।

आप खुरादो आप मुरादो

आप ही खाने वाले, आप ही अपनी मुराद पूरी करने वाले। स्वयं कुछ करना और दूसरों को न पूछना।

आप गए और आसपास

अपने साथ दूसरों को भी हानि पहुँचाई।

आप जिन्दा तो जहान जिन्दा

अपनी जिन्दगी से सब कुछ लगा है।

आप डूबा तो जग डूबा

हम नही हैं तो दुनिया भी नही।

आप डूबा सो डूबा और को भी ले डूबा

आप गए और आसपास।

आपत्ति काले मर्यादा नास्ति

विपत्ति के समय धर्म-अधर्म का विचार नहीं होता।

आप भला तो जग भला

भले को सब भले होते हैं या भले को सब भले दिखाई देते है।

आप मरे तो जग परले

हमारी हानि हुई तो दूसरों की भी होती फिरे—हमें क्या ?

आप रहें उत्तर, काम करें पच्छम

दाऊर से काम न करने वाले को कहते हैं।

आप राह-राह, दुम खेत-खेत

सिलबिला आदमी।

आप से भला खुदा से भला

जो अपनी निगाह में भला है वह खुदा की निगाह में भी भला है।

आप से आवे तो आने दे

अपने आप आ रही वस्तु के लिए मना नहीं करना चाहिए।

आप गया तो जहान गया

अपनी नजरों में गिरा तो दुनिया की नजरों में गिरा अथवा जो अपनी चिन्ता नहीं करता उसकी कोई चिन्ता नहीं करता।

आपकी ही जूतियों का सदका है

यह सब आपकी ही बदौलत है।

आप ही मियाँ मंगते, बाहर खड़े दरवेश

अपनी सहायता कर नहीं पाते. दूसरों की क्या करेंगे ?

आप हारे बहू को मारे

अपने अपराध पर सेवक को दण्ड देना या अपना गुस्सा दूसरों पर उतारना।

आ फँसे का मामला है

चक्कर मे पड गए या जो होगा सो भुगतेंगे।

आब-आब कर मर गये, सिरहाने रहा पानी

अकड़कर बोलने और हानि उठाने पर कहा जाता है।

आबरू जग में रहे तो जान जाना पश्म है

इज्जत के सामने जिन्दगी कुछ नहीं है।

आमदनी के सिर सेहरा

जिसके पास धन है, वही बडा आदमी है।

आया कुत्ता ले गया, तू बैठी ढोल बजा

अपनी धुन मे इतना मस्त होना कि दूसरी ओर क्या हो रहा है इसका पता ही न लगाना।

आया तो नोश, नहीं फारामोश
    मिल गया तो खा लिया नहीं तो परवाह नहीं।
आया बंदा, आई रोजी, गया बंदा, गई रोजी
    दुनिया में आदमी से ही सब काम लगा है।
आयो है जग के साथ, जाएगी जनाजे के साथ
    आदत अथवा कोई रोग मरने पर ही छूटता है।
आये की शादी, न गए का गम
    सदा प्रसन्न रहना।
आया राम, गया राम
    बे पेंदे का लोटा। सिद्धान्तहीन दलबदलू।
आशिक अन्धा होता है
    प्रेमी को भला-बुरा कुछ नहीं सूझता है।
आशिक को आवरू है गाली और मार खाना
    आशिक गाली खाने और पिटने के लिए ही बना है या वह पिटने और गाली खाने में ही इज्जत समझता है।
आशिक को मुदा जर दे, नहीं तो कर दे जमीं के परदे
    धन दे या मार डाले।
आशिकी न कीजिए तो घास खोदिए
    किसी मनचले आशिक का कथन कि इश्क के फन्दे में फँस गये तो क्या करें।
आसक्ती गिरा कुएं में, कहा, 'अभी कौन उठे'
    घोर आलसी के लिए कहते हैं।
आसक्ती गिरा कुएं में, कहा, 'यहां ही भले'
    घोर आलसी के लिये कहा जाता है।
आस बिरानी जो तके, सो जीवित ही मर जाय
    जो दूसरों का आसरा ताकता है, वह कभी सफल नहीं होता।
आसपास बरसे, दिल्ली पड़े तरसे
    जरूरतमन्द को न मिलने पर कहा जाता है।
आसमान का थूका मुंह पर
    बड़ों की निन्दा करने पर स्वयं की हानि होती है। (आसमान का थूका सिर पर ही गिरेगा)
आसमान के फटे को कहां तक थेगली लगे
    थोड़ा सा बिगड़ा काम सुधर सकता है पर बहुत बिगड़ा काम कहां तक संभले
आसमान ने डाला, धरती ने झेला
    निराश्रित व्यक्ति के प्रति कहा जाता है।

आसमान से गिरा खजूर में अटका
एक विपत्ति से निकलकर दूसरी में फँस जाने, किसी काम के पूरा होते-होते रह जाने या जो कुछ मिलता हो उसे दूसरे बीच ही में हड़प लें तब कहते हैं।

आव देखे न ताव
बिना सोचे-समझे, अचानक।

आला, दे निवाला
बचपन की पुरानी आदत नहीं छूटती।

इंचा खिंचा वह फिरे, जो पराये बीच में पड़े
दूसरों के झगड़े में पड़ने पर परेशानी उठानी पड़ती है।

इतनी राई तो होगी, जो रायते में पड़े
इतना साधन तो है, जिससे हमारा काम चल सके।

इतना भी अक्ल अजीरन होती है
तुम में थोड़ी भी सहज बुद्धि नहीं है।

इज्जत वाले की कमबख्ती है
क्योंकि उसे तरह-तरह के खर्चे और झंझटें लगी रहती हैं।

इत्तफाक में कुव्वत है
एकता में ही बल है।

इधर गिरूँ तो खाई उधर गिरूँ तो कुँआ
बचने की कोई सूरत नहीं। असमंजस स्थिति।

इधर जाय तो खाई उधर जाय तो खन्दक (कुँआ)
दोनों ओर कठिनाइयां (असमंजस की स्थिति)

इधर न उधर, यह बला किधर
एकाएक किसी विपत्ति के आने पर कहा जाता है।

इनका भी लिखो
जब किसी विषय में औरों की तरह कोई स्वयं भी मूर्खता प्रकट करे, तब कहते हैं।

इन बेचारों ने हींग कहाँ पाई, जो बगल में लगाई
बदमाशों के चक्कर में पड़कर जब कोई सीधा आदमी अपराध कर बैठे तब कहते हैं।

इब्तिदाये इश्क है रोता है क्या ? आगे-आगे देखिए होता है क्या ?
किसी काम को शुरू करके जब कोई उसकी कठिनाइयों को देखकर झींकने लगे तब कहा जाता है।

इल्म दर-सीना, न दर सफीना
ज्ञान मनुष्य के हृदय में होता है, किताबों में नहीं।

इल्लत जाय धोये-धाये, आदत कहां जाये

गन्दगी धोने से छूट सकती है, पर बुरी आदत नहीं छूटती।

इश्क, मुश्क, खांसी-खुश्क, खून-खराबा छुपता नहीं

ये स्वतः प्रकट हो जाते हैं।

इश्क छिपाने से नहीं छिपता

प्रेम स्वतः प्रकट हो जाता है।

इस घर का बाबा आदम ही निराला है

विलक्षण घर के लिये कहा जाता है।

ईंट का घर, मिट्टी का दर

बेतुका या बदनुमा काम।

ईंट का घर मिट्टी कर दिया

बना-बनाया काम बिगाड़ दिया।

ईंट का जवाब पत्थर से

जैसे को तैसा।

ईंट की लेनी पत्थर की देनी

ईंट का जवाब पत्थर से दिया जाता है।

उखली में मुसरा, माई-बाप बिसरा

खाने-पीने को मिला तो माँ-बाप की भी याद नहीं रहती।

उज्रे गुनाह बदतर, अर्जे गुनाह

अपराध छिपाना अपराध करने से भी बदतर है।

उठ गए ना जानिए, जो टट्टी दे गए बार

जो दरवाजे पर ताला लगाकर चला गया हो उसे मरा नहीं समझना चाहिए।

उड़ती-उड़ती ताक चढ़ी

किसी उड़ती खबर का सच बन जाना।

उतरा शहना, मर्दक नाम

पद से ही आदमी की प्रतिष्ठा होती है।

उत्तर जाय कि दक्खन वही करम के लक्खन

निकम्मे की अकर्मण्यता कहीं नहीं छूटती।

उत्तर गई लोई तो क्या करेगा कोई ?

निर्लज्ज पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

उघरहिं अन्त न होई निबाहू, कालनेमि जिमि रावन-राहू

कपट का निर्वाह अन्त तक नहीं होता।

उर्दू का मुहावरा दिल्ली पर खतम है

बढ़िया मुहावरेदार उर्दू दिल्ली में ही बोली जाती है।

उलटी गंगा पहाड़ को चली

जहां जिस वस्तु की आवश्यकता न हो उसका वहां जाना या असंभव घटना को कहते है।

उलटे बाँस बरेली को

असगत कार्य करने पर कहते हैं।

उसे तो धोनी भी नहीं आती

अनाड़ी के लिये कहा जाता है।

ऊँचे चढ़के देखा तो घर-घर माही लेखा

सुखी कोई नहीं। हर घर मे परेशानी।

ऊँघते को ठेलते का बहाना

काम बिगड़ने पर सारा दोष दूसरो पर मढ़ना।

ऊधो का लेना न माधो का देना

किसी से कोई मतलब नही। सब झमेलों से दूर। अपने-आप मे काम चलाना।

ऊधो की पगड़ी माधो के सिर

किसी का दोष किसी के सिर। अहमद की पगड़ी मोहम्मद के सिर।

ऊधो बन आए की बात

किसी काम मे अप्रत्याशित रूप से सफलता मिलने पर कहते है।

ऊपर से राम-राम भीतर से कसाई का काम

कपटी और धूर्त।

एक अकेला, दो का मेला

एक से दो भले।

एक अकेला दो से ग्यारह

एक और एक ग्यारह होते हैं। सघ मे बड़ी शक्ति है।

एक और एक ग्यारह होते हैं

एकता मे बड़ा बल है।

एक कहो न दस सुनो

न किसी को गाली दो न दस सुनो। जैसा करोगे वैसा पाओगे।

एक को साईं, एक को बधाई

वायदा किसी से करना, देना किसी को, खातिर किसी और की करना अथवा आश्वासन देकर टरका देना।

एक खाए दूध-मलीदा, एक खाए भुस

अपना-अपना भाग्य है।

एक का तीतें, तीनों तीत
एक का स्वभाव बुरा हो तो दूसरे भी वैसे ही बन जाते है।

एक खता, दो-खता, तीसरी खता मादरज़ाद
एक-दो खता भूल से हो सकती है फिर भी खता करे तो समझो जन्मजात स्वभाव है।

एक गरीब को मारा था तो नौ मन चरबी निकली थी
ऐसे धनी जो कर या चन्दा देने मे अपने को गरीब बताते हैं, उनके प्रति व्यंग्य !

एक घड़ी की 'ना' सारे दिन का उद्धार
किसी भी विषय में संकोच छोड़कर एक बार 'ना' कह देने से बार-बार की झंझट से मुक्ति मिल जाती है।

एक घड़ी की बेहयाई सारे दिन का आधार
अपना उल्लू सीधा करने के लिए जो बेशर्मी अख्तियार कर लेते है, उनसे कहा जाता है।

एक चुप सौ को हरावे
मौनं स्वार्थ साधनम्। चुप रहनेवाले के सामने बोलनेवाले हार मान लेते हैं।

एक चुप हजार चुप
वाद-विवाद में एक चुप हो जाये तो सभी चुप हो जाते हैं।

एक जोरू की जोरू, एक जोरू का खसम;
एक जोरू का शीश फूल, एक जोरू का पशम
कोई स्त्री का दास होता है तो कोई उसका स्वामी, कोई उसके माथे का आभूषण होता है तो कोई उसका पश्म।

एक जोरू सारे कुनबे को बस है
एक होशियार औरत सारे घर को संभाल लेती है।

एक डूबे तो जग समझाए, सब जग डूबा जाए
सभी गलत रास्ते पर हों तो कौन समझाए।

एक तवे की रोटी, क्या छोटी क्या मोटी
दो एक सी वस्तुओं मे छोटे-बड़े का क्या भेद-भाव करना।

एक तो था ही दीवाना तिस पर आई बहार
बिगड़े को और बिगड़ने का अवसर मिल जाना।

एक तो पड़ा लोटता है दूसरा कहे जरा घोली देना
बुरा परिणाम देखकर भी उसे न छोड़ना।

एक तो मियाँ ये ही थे, दूसरे खाई भाँग, एक तो मीरा ये ही थे दूजे खाई भाँग
देखा-देखी शौक करने और हानि उठाने पर कहा जाता है।

एक तो मीठ और कठौत भर
बढ़िया चीज और वह भी बहुत सी।
एक नहीं सत्तर बला टले, एक ना सौ दुःख हरे
संकोच छोड़कर, 'ना' कह देने से बार-बार झंझट से मुक्ति मिल जाती है।
एक नूर आदमी, हजार नूर कपड़ा
कपड़ा और शोभा बढ़ा देता है।
एक दर बन्द, हजार दर खुले
हम किसी के आश्रित नही। आप नही तो दूसरा सही।
एक दिन के सौ साठ दिन
आज नहीं तो फिर सही। हम बदला लेकर रहेगे।
एक दिन मेहमान, दो दिन मेहमान, तीसरे दिन बलाए जान
मेहमानी दो दिन की होती है।
एक नजीर न सौ नसीहत
उदाहरण उपदेश से उत्तम है।
एक पंथ दो काज
एक काम मे दो काम या एक लाभ मे दो लाभ।
एक बोली तीन काम
एक पंथ दो काज।
एक मुश्किल को हजार हजार आसान रखी हैं
कठिन से कठिन काम को करने का उपाय खोजा जा सकता है।
एक सुहागन नौ लौंडे
वस्तु एक और चाहने वाले अनेक। लोक-जीवन की विवशता।
एक से दो भले
कही बाहर जाना हो तो एक से दो अच्छे होते हैं।
एक हरदसिया, सगरा गाँव रसिया
एक सुहागन नौ लौंडे।
एक हमाम में सब नंगे
सभी मे त्रुटियाँ होती हैं या साथवाले समान होते हैं। एक धोती मे सब नंगे।
एकहि घर को ह्वै रहे, दुर-दुर करे न कोय
एक के प्रति निष्ठा और भक्ति होने से दुत्कार नही सहनी पड़ती।
एक हुस्न आदमी, हुस्न कपड़ा, लाख हुस्न जेवर, करोड़ हुस्न नखरा
किसी पुरुष या स्त्री का जो कुछ अपना सौन्दर्य होता है, वह तो होता ही है पर कपड़ों से उसमे हजार गुनी, गहनों से लाख गुनी और हाव-भाव तथा कटाक्ष से उसमे करोड़ गुनी वृद्धि हो जाती है।

एहसान कर और दरिया में डाल
उपकार करके भूल जाना चाहिए।
एकै दाल, एकै चाउर, करै गुन औ बाउर
एक ही वस्तु किसी को लाभ और किसी को हानि पहुँचाती है।
एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय
एक बार एक ही काम हो सकता है अथवा एक बार मे एक ही को अनुकूल बनाया जा सकता है।
ऐंचन छोड़ घसीटन में पड़े
एक मुसीबत से बचे तो दूसरी मे फँसे।
ऐरे गैरे फसल बहुतेरे
फसल पर या घर मे अनाज होने पर मुफ्तखोरो की कमी नही रहती।
ऐब करने को भी हुनर चाहिए
बुरा काम करने के लिए भी कुशलता अपेक्षित है।
ऐसी कही कि धोये न छूटे
बहुत चुभती बात के लिए कहा जाता है।
ऐसे गये जैसे महफिल से जूता
चुपचाप उठकर चले जाना।
ओखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर
कार्य प्रारम्भ करने पर बाधाओं से नही डरना चाहिए।
ओलती का पानी बलेंडी नहीं जाता
नियम-विरुद्ध कोई काम नही होता।
ओछे की प्रीत, बालू की भीत
नीच की मित्रता अस्थिर होती है।
ओस चाटने से प्यास नहीं बुझती
अल्प-मात्रा से काम नही चलता। कंजूसी करने पर कहा जाता है। ओसो प्यास नही बुझती।
औघट चले न चौपट गिरे
न बुरे रास्ते चले न हानि उठाए।
कच्चा दूध सबने पिया है
सब मनुष्य है और भूल सभी से होती है।
कच्ची पेंदी दस्तरख्वान का जरर
अनुभवहीन के लिए कहा जाता है।
कचौड़ो की बू अब तक नहीं गई
बड़े पद से हटने पर भी जो बड़प्पन न भूल सके, उसमे कहते हैं।

कड़ुआ-कड़ुआ थू, मीठा-मीठा गप

अच्छे को ग्रहण करना और बुरे को अस्वीकार करना।

कड़ुए से मिलिये, मीठे से डरिए

कड़वा बोलने वाला खरी बात कहता है इसलिए उससे मित्रता रखनी चाहिए। मीठा बोलने वाला खुशामदी होता है, उससे बचना चाहिए।

कद्र खो देता है हर बार का आना-जाना

किसी जगह बार-बार जाने से सम्मान घट जाता है।

कन्या पराया घन है

बेटी सदा अपने पास नहीं रह सकती।

कनात बड़ी दौलत है

संतोष परम सुखम्।

कब मुआ और कब राक्षस हुआ

नीच के बड़ा होने और रोब जमाने पर कहा जाता है।

कबूतर खाने का सा हाल है, एक आता है एक जाता है

बराबर आना-जाना लगा रहने पर कहा जाता है।

कभी कुंडे के इस पार, कभी कुंडे के उस पार

भंगेडी या आलसी के लिए कहते हैं।

कभी के दिन बड़े, कभी की रात

समय एक सा नहीं रहता।

कभी घी घना, कभी मुट्ठी भर चना, कभी वह भी मना

हर स्थिति में संतुष्ट रहना। कभी समृद्धि तो कभी अभाव।

कभी न देखा बोरिया, सुपने आई खाट

हैसियत से बाहर के ऊँचे ख्याल बाँधना।

कभी न सोई साथ रे सुपने आई खाट

हैसियत से बाहर के स्वप्न संजोना।

कमर में तोसा बड़ा भरोसा

गाँठ की चीज समय पर काम देती है।

कमली ओढ़ने से फकीर नहीं होता

भेष बदलने से कोई साधु नहीं बन जाता।

कमावे खानखाना, उड़ावे मियाँ फ़हीम

कमावे कोई, उड़ावे कोई।

करछी हाथ से लेने को ही करते हैं

नौकर को काम करने के लिए ही रखते हैं।

करनी खाक की, बात लाख की
निकम्मे बातूनी के लिए कहा जाता है।

करनी ना करतूत लड़ने को मजबूत
दंगा-फसाद करने वाले या निकम्मे पुत्र को कहते है।

करनी न करतूत कहलाये पूत सपूत
निकम्मा लड़का।

कर सेवा, खा मेवा
सेवा का फल अच्छा मिलता है।

करिए मन की सुनिए सब की
बात सबकी सुनो पर करो वही जो अंतःकरण कहे।

करेगा सो भरेगा
जो करेगा सो भुगतेगा।

करो तो सवाब नहीं, न करो तो अजाब नहीं
ऐसा काम जिसके करने से न कुछ भलाई हो न बुराई।

करत-करत अभ्यास से जड़मति होत सुजान
अभ्यास बहुत बड़ी चीज है।

कल किसने देखा है
कल क्या हो कौन जानता है, इसलिए जो करना है आज ही कर डालो।

कल देवेगा कल पावेगा, कलपावेगा कलपावेगा
दूसरों को दुःख देने वाला सुख और दुःख देने वाला दुःख पाएगा।

कसम खाने ही के लिए है
झूठी कसम खाने वालों के प्रति व्यंग्य।

कहना आसान करना मुश्किल
मुंह से कहना सरल होता है पर करना कठिन।

कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमती ने कुनबा जोड़ा
बिल्कुल बेसिर-पैर के काम को कहा जाता है या बेतुकी वस्तुओं के संग्रह को।

कहीं डूबे भी तिरे हैं
एक बार जो काम बिगड़ गया उसके सभलने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।

कहूं तो मां मारी जाये, न कहूं तो बाप कुत्ता खाय
दोनों ओर संकट।

कहे से कोई कुएं में नहीं गिरता
हर आदमी सोचकर ही करता है।

काँटे से कांटा निकलता है
बुराई-बुराई से ही दूर होती है या दुष्ट को और दुष्टता से ही वश मे किया जा सकता है।

काका की भैंस, भतीजे की तोंद
निसन्तान का धन भाई-भतीजे खाते है।

कल्लर का सा झल्ला, आया बरसा चल्ला
सहसा आने, शान दिखाने और चले जाने पर कहा जाता है।

काजल की कोठरी मे कैसो हू सयानो जाय एक लीक काजल की लागि है पै लागि है
कुसगति के प्रभाव से चतुर व्यक्ति भी बच नही पाता है।

काजल की कजलौटी और फूलों का हार
बदसूरत के टिमाक से रहने पर कहा जाता है।

काजल की कोठरी में जाओगे तो धब्बा लगेगा
बुरी सगति या बुरे स्थान का प्रभाव पड़ता ही है।

काटे कटे न मारे मरे
हठी और धृष्ट के लिए कहते हैं।

काठ का घोड़ा नहीं चलता
बिना पैसे या बुद्धि के काम नही चलता।

काठ छीलो तो चिकना, बात छीलो तो रूखी
बात बढाना ठीक नहीं। आपसी मामले मे बहुत बहस नही करनी चाहिए।

काठ की हांड़ी बार-बार नहीं चढ़ती
छल-कपट बार-बार नही चल सकता। (काठ की हाडी एक बार चढती है)

काठ में दाढ़ में
पैसा या तो दूसरो के देने मे या खाने-पीने में खर्च होता है।

कानी को काना प्यारा, रानी को राना प्यारा
अपनी वस्तु सभी को प्रिय होती है या जिसके भाग्य में जो बदा होता है, वह उसी में सतुष्ट रहता है।

काम न काम की दुम
बेतुका काम।

काम का न काज का दुश्मन अनाज का
निठल्ले के लिए कहा जाता है।

काम को काम सिखाता है
काम करने से ही आता है। मनुष्य अनुभव से ही सीखता है।

काम चोर निवाले हाजिर
निठल्ले के प्रति कहा जाता है।
काम प्यारा है चाम प्यारा नहीं
काम से जी चुराने वाले से कहा जाता है।
काम सरा दुख बीसरा, छाँछ न देत अहीर
काम निकल जाने पर कोई नहीं पूछता।
काया माया का क्या भरोसा
शरीर और धन का क्या भरोसा, पता नहीं कब चले जायें।
काली भली न सेत, दोनों मारो एक ही खेत
निर्णय न होने पर दोनों को त्याग देना अच्छा है।
कासा दीजै, वासा न दीजै
अनजान को खाना खिला दे पर घर में जगह न दे।
किसी का घर जले कोई तापे
किसी की हानि से कोई लाभ उठाए।
किसी को तवे में दिखाई देता है, किसी को आरसी में
अपनी-अपनी दृष्टि है।
काल का मारा सब जग हारा
काल के सामने सब हार जाते हैं।
कुएं में भांग पड़ी है
सबकी बुद्धि भ्रष्ट है।
कुछ खलल है जिससे यह खलल है
कहीं कुछ गड़बड़ जरूर है जिससे यह सब कुछ हो रहा है।
कुछ खोकर ही सीखते हैं
आदमी ठोकर खाकर ही सीखता है।
कुछ तुम समझे कुछ हम समझे
एक दूसरे के मन की बात को ताड़ लेने पर कहा जाता है।
कुछ लेते हो, कहा, 'अपना काम क्या है ?' कुछ देते हो, कहा, 'यह शराफत बन्दे को नहीं आती।'
चालाक और स्वार्थी के प्रति कहा जाता है।
कुछ बसंत की भी खबर है
जब कोई आने वाली मुसीबत से बेखबर हो या जिसे शुभ अवसर की खबर न हो उससे व्यंग्य में कहते हैं।
कुनबे वाले के चारों पल्ले कीचड़ में हैं
परिवार वाले को हमेशा कोई न कोई मुसीबत लगी रहती है।

कुल्हिया में गुड़ नहीं फूटता
बड़ा काम छिपाकर नहीं किया जा सकता।

कुंडे के इस पार या उस पार
आलसी आदमी जो हमेशा चारपाई पर पड़े करवटें लेता रहे।

कूवत थोड़ी, मंजिल भारी
शक्ति कम और काम बडा। चलने की ताकत नही और रास्ता लम्बा। कूत थोड़ी और मंजिल भारी।

कोई आईने में देखे, कोई आरसी में
जिसके पास जो वस्तु होती है वह उसी से काम चलाता है।

कोई किसी की कब्र में नहीं जाता
अपने कर्मों का फल स्वयं भोगना पड़ता है अथवा मरने का कोई साथी नही होता।

कोई मरे कोई मल्हार गावे
संसार की स्वार्थपरायणता पर व्यंग्य।

कोई माल में मस्त, कोई ख्याल में मस्त
सब अपने-अपने रंग मे रंगे है।

कोई मुझको न मारे तो मैं सारे जहान को मारूँ
लड़ाकू के लिए कहा जाता है।

कोई सुने न सुने, मैं कहता हूं
बकवादी से व्यंग्य मे कहते हैं।

कोठी धोये, कीच हाथ लगे
गरीब को तंग करने से बदनामी या व्यर्थ के काम से हानि होती है।

कोठी में से मोठी नहीं निकली
बाप-दादो की पूंजी मे से कुछ खर्च नही हुआ अथवा उस अनुभवहीन युवक से कहते हैं जो स्त्री के सम्पर्क में न आया हो।

कोठे वाला रोवे, छप्पर वाला सोवे
धनी को पचास चिंताएँ लगी रहती हैं।

कोठे से गिरा संभलता है, नजरों से गिरा नहीं संभलता
खोई हुई प्रतिष्ठा फिर नही मिलती।

कोढ़ी को दाल-भात, कमासुत को फुटहा
आलसी को दाल-भात मिले और कमाऊ को ज्वार के फूले। काम करने वाले का सम्मान न होना।

कोदो का भात किन भातों में, ममिया सास किन सासों में
दूर के रिश्ते के आदमी के लिए कहा जाता है।

कोयला होय न उजला, सज्जी साबुन धोय

आदत नहीं छूटती अथवा बुरा भला नहीं हो सकता।

कौड़ी गांठ की, जोरू साथ की

गांठ का पैसा ही काम आता है और साथ की स्त्री ही वश में रहती है।

कौड़ी नहीं गांठ में, चले बाग की सैर

बिना पर्याप्त साधन के किसी काम को करने के लिए तत्पर होना।

कौड़ी न हो तो फिर कौड़ी के तीन-तीन

अपने पास पैसा नहीं तो फिर अपनी कोई कीमत नहीं।

कौड़ी पर खून नहीं होता

सामान्य लाभ के लिए बहुत हानि नहीं की जाती।

कौड़ी पास नहीं पड़ी अफीम की चाट

बिना पैसे के तर माल कैसे उपलब्ध हो।

काल करते आज कर, आज करते अब्ब।
पल में परलै होत है, फेर करेगा कब्ब।।

जो कुछ करना हो, अभी कर डालो, जीवन का क्या भरोसा।

कौन कहे राजाजी नंगे हैं

बड़ों की बात कहकर कौन उनकी अप्रसन्नता मोल ले।

क्या आग लेने आए थे

जब कोई तुरन्त जाना चाहे या आने का उद्देश्य न बताना चाहे तब कहा जाता है।

क्या खाक तेरी परवाह, चूल्हे में से निकल भाड़ में जा ?

तुम्हारी इच्छा की बलिहारी जो तुम चाहते हो कि मैं चूल्हे में से निकलकर भाड़ में जाऊँ अर्थात और भी गहरे संकट में पड़ूं।

क्या गोमती का पानी पिया है ?

नजाकत दिखाने पर कहा जाता है।

क्या पांव में मेंहदी लगी है ?

जो इतने धीरे चलते हो।

क्या पानी मथने से भी घी निकलता है ?

सूम के प्रति कहा जाता है। ऐसे काम के लिए भी जिसका कोई नतीजा न निकलने वाला हो।

क्या ले गया, शेरशाह, क्या ले गया सलीमशाह ?

धन-दौलत सब यहीं पड़ी रह जाती है। कोई साथ नहीं ले जाता।

क्या शान में ठुकले पड़ जायेंगे ?

अपने हाथ से काम करने या छोटों की सहायता करने से क्या बिगड़ जाएगा ?

क्या शान में बट्टा लग जायेगा ?
क्या शान मे जुपते पड़ जाएँगे ?

क्यों कहा और क्यों कहाई ?
क्यों किसी के लिए ऐसी बात कही जाए कि बदले में हमें भी वैसी ही बात सुनने को मिले।

खंजर तले दम लिया तो उससे क्या ?
आसन्न संकट से क्षणमात्र के लिए छुटकारा मिला तो उससे क्या ?

खता करे बीबी पकड़ी जाए बांदी
कसूर कोई करे और दण्ड कोई भोगे।

खल्क की जबान खुदा का नक्कारा
जनता की राय को खुदा का उपदेश समझना चाहिए।

खस कम जहां पाक
बुरे आदमी की मृत्यु पर कहा जाता है कि चलो अच्छा हुआ, दुनिया पाक हुई।

खांड़ और रांड का जोबन रात को
मिठाई और वेश्या का आनन्द रात मे।

खांड़ की रोटी जहां तोड़ो वहां मीठी
अच्छी वस्तु हमेशा अच्छी होती है।

खांड़ खूंदेगा सो खांड़ खाएगा
जो परिश्रम करेगा उसी को मिलेगा।

खांड़ बिना सब रांड रसोई
मिठाई के बिना भोजन का आनन्द नहीं मिलता।

खांड़ा बाजे रन पड़े दांता बाजे घर पड़े
तलवार चलना लडाई के लक्षण और झगड़ा होना घर की बरबादी के लक्षण हैं।

खाइए मन भाता, पहिनिए जग भाता
जो अपने को रुचे वही खाना चाहिए और जो सबको रुचे वह पहनना चाहिए।

खाक डाले चांद नहीं छिपता
निन्दा करने से यशस्वी के यश पर बट्टा नही लगता।

खाने को ऊद, कमाने को मजनूं
निकम्मे व्यक्ति के लिए कहा जाता है।

खाने को मंडुआ, पहनने को अमोआ
झूठी शान दिखाने पर कहा जाता है।

खाने में चटनी, पलंग पर नटनी
विलासियों का कथन।
खाने में शरम क्या, घूसों में उधार क्या ?
खाने में संकोच नहीं करना चाहिए और मार का बदला उसी समय चुका लेना चाहिए।
खाये के गाल, नहाये के बाल नहीं छिपते
किसी काम को छिपाने का प्रयास करने पर कहा जाता है।
खाली से बेगार भली
खाली बैठने से कुछ भी करना अच्छा है।
खैरात के टुकड़े बाजार में डकार
माँगे की चीज पर घमण्ड करना।
खाई मुगल की ताहरी, कहाँ जायेगी बाहरी
मुगल की ताहरी का स्वाद लग गया अब जा कहाँ सकती है।
खाऊँ तो गेहूं, नहीं तो रहूँ यूँ ही
जीभ के लालची के लिए कहते हैं।
खाते पीते जग मिले, चौसर मिले न कोय
सुख के सब साथी होते हैं, दुख में कोई नहीं आता।
खाना पराया है तो पेट तो पराया नहीं
लोभवश ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिसमें अपने को परेशानी हो।
खाना-पीना गाँठ का, निरी सलाम आलोक
झूठा शिष्टाचार दिखाने पर कहा जाता है।
खाना वहाँ खाओ तो पानी यहाँ पीना
जल्दी लौटना।
खाय तो पछताय, न खाय तो पछताय
ऐसी वस्तु जो वास्तव में अच्छी न हो पर जिसे अच्छी समझकर सब पाना चाहें।
खाये तो घी से नहीं तो जाए जी से
शौकीन खाने वाले के लिए कहा जाता है।
खाली हाथ क्या जाऊँ, एक संदेशा लेती जाऊँ
स्पष्ट बात न कहना।
खिलाए का नाम नहीं, रुलाए का नाम
पराये लड़के को चाहे जितना खिलाओ-पिलाओ कोई यश नहीं गाता पर किसी वजह से वह रोने लगे तो तुरन्त शिकायत की जाती है।

खुदा ने जवाब दे दिया है, बेहयाई से जीते हैं
    निर्लज्ज के लिए कहा जाता है।
खुदा लगती कोई नहीं कहता, मुंह देखी सब कहते हैं
    लोग खुशामद पसन्द करते हैं।
खुशामद में आमद है
    खुशामद से ही पैसा मिलता है।
खुशामदी का मुंह काला
    खुशामदी का बुरा हो।
खूब गुजरेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो
    एक सी प्रकृति वालों की मजे में कटती है।
खूब दुनिया को आजमां देखा, जिसको देखा बेवफा देखा
    दुनिया में सच्चे मित्र नहीं मिलते।
खैर जो हुआ सो हुआ
    हुआ सो हुआ, चिन्ता न करो।
गंदी बोटी का गंदा शोरवा
    गन्दी चीज से खराब चीज ही बनेगी।
गंवार गौं का यार
    गँवार भी अपना मतलब देखता है।
गँवार गांड़ा न दे, भेली दे
    मूर्ख आसानी से कोई चीज नहीं देता।
गए दक्खन, वहीं करम के लक्खन
    अकर्मण्य का कहीं ठिकाना नहीं।
गए वह दिन जब खलीलखां फाख्ता उड़ाते थे
    वे दिन गए जब खलीलखां मौज करते थे।
गया मर्द जिन खाई खटाई, और गई रांड जिन खाई मिठाई
    खटाई खाने से पुरुष का पुरुषत्व जाता रहता है और मिठाई खाने से विधवा चरित्रहीन हो जाती है।
गया वक्त फिर हाथ आता नहीं
    समय पर चूकना नहीं चाहिए।
गरज का बावला अपनी गावे
    गरजमन्द अपनी ही कहता है।
गरज बावली है
    गरजमन्द को अपने काम के सिवा और कुछ नहीं सूझता।

गरजमन्द करे या दरदमन्द करे
दूसरों की सहायता या तो गरजमन्द करता है या दयावान।

गरजते हैं वह बरसते नहीं
डींग हाँकने वाले काम नही करते।

गरमी सब्जह रंगों से और घर में भूनी भाँग नहीं
पैसा पास न होने पर भी सुन्दरियों की चाह। सामर्थ्य से बाहर इच्छा रखने पर कहा जाता है।

गाँठ का पूरा आँख का अन्धा
मूर्ख पैसे वाले के प्रति कहा जाता है।

गाँठ का पूरा मन का होना
मूर्ख और मन के बुरे धनी के लिए कहते हैं।

गाँठ गिरह में कौड़ी नहीं, मियां गट्टे वाले हो
गाँठ में पैसा नही फिर भी गट्टे वाले को बुलाते है कि अरे भाई दे जाना।

गाँठ गिरह से मद पीवे, लोग कहें मतवाला
बुरे काम में पैसा खर्च करके बदनामी कमाना।

गाँड़ चले, मन चनों को
दस्त लगते हैं पर चना खाने को मन करता है। सहन-शक्ति से बाहर काम करने की इच्छा रखना।

गाँड़ में गू नहीं और कौवे मेहमान
झूठी शान दिखाना।

गाँड़ में लंगोटी न सिर पर टोपी
आवारा के लिए कहा जाता है।

गाँड़ू का हिमायती भी हारा है
कायर की कोई सहायता नही कर सकता।

गाँव गए की बात
बाहर जाने पर कौन काम लग जाए, कब लौटे—ऐसा भाव व्यक्त करने के लिए कहा जाता है।

गाँव तुम्हारा, नाँव हमारा
झूठमूठ की नामवरी चाहना।

गाँव दहा जाए, सिवाने को लड़ाई
हदबंदी की लड़ाई और पूरा गाँव नष्ट हो रहा है। साधारण बात पर झगड़ा बढ़ना।

गाँव में घर न जंगल में खेती
जिसका कुछ न हो उसका कहना।

गाड़ी को देख लाड़ी के पाँव फूले

आराम सभी चाहते हैं अथवा वस्तु को सामने देखकर उसके उपयोग की इच्छा हो ही जाती है।

गाना और रोना किसको नहीं आता

सबको आता है।

गाय न बाछी नींद आवे आछी

किसी चीज की चिन्ता न होने पर नींद अच्छी आती है।

गले पड़ा ढोल बजाना ही पड़ता है

बेबसी का भाव व्यक्त करने के लिए कहा जाता है।

गिनी बोटी, नपा शोरबा

कठोर मितव्ययिता अथवा ऊपरी आय न होने पर कहा जाता है।

गिरे का क्या गिरेगा ?

जिसकी हालत बहुत बिगडी हो उसके लिए कहते हैं।

गीली लकड़ी सीधी हो सकती है

बच्चे को सब सिखाया जा सकता है।

गीली-सूखी सब जलती है

अच्छी-बुरी सब चीजें काम आ जाती हैं या आग में सब जलता है।

गुड खाए, गुलगुलों से परहेज

एक बुरा काम करने पर दूसरे बुरे काम से बचने का ढोंग।

गुड़ खायें, पुये में छेद करें

गुड़ खाए, गुलगुलों से परहेज।

गुड़ दिए मरे तो जहर क्यों दीजे ?

मिठास से काम चल जाय तो सख्ती क्यों की जाय।

गुड़ न दे पर गुड़ की सी बात तो करे

कुछ न दे पर मीठी बात तो करे।

गुड़ बैंगन हो गए

जब कोई सस्ती चीज महंगी हो जाती है तब कहा जाता है।

गुड़ भरा हँसिया खाते बने न उगलते

जब कोई ऐसा काम सामने आ जाए जिसे न करते बने न छोड़ते, तब कहा जाता है।

गुजर गई गुजरान, क्या झोंपड़ी क्या मैदान

किसी ऐसे मनुष्य का कथन जो जीवन का ऊँच-नीच सब देख चुका हो और जाने को तैयार बैठा हो।

गू में कौड़ी गिरे तो दांतों से उठा ले
कंजूस के प्रति कहा जाता है।

गू में न ढेला डाले, न छींटे पड़ें
न बुरा काम करे न अपयश मिले।

गोद में लड़का शहर में ढिंढोरा
भुलक्कड़ स्वभाव। (बगल में छोरा नगर में ढिंढोरा।)

गोयठा जले गोबर हंसे
यह नहीं देखता अब उसकी भी बारी है।

गुरु कीजै जान के, पानी पीजै छान के
स्पष्ट है।

गैर के लिए कुंआ खोदेगा तो आप ही गिरेगा
दूसरे की हानि चाहने वाला स्वयं हानि उठाता है।

गोद का खिलाया गोद में नहीं रहता
अपना लड़का भी काम नहीं आता। ब्याह होने पर बहू के वश में हो जाता है।

घर कर घर कर, सत्तर बला सिर कर
घर-गृहस्थी एक जंजाल है।

घर का आटा कौन गीला करे ?
घर की चीज कौन बिगाड़े ?

घर की खांड़ किरकिरी, चोरी (बाहर) का गुड़ मीठा
घर की अच्छी चीज पसन्द न करना और बाहर की बुरी चीज के लिए ललचाना। पत्नी की उपेक्षा कर वेश्यागमन करना।

घर की जोरू की चौकसी कहां तक
घर के आदमी पर कहां तक नजर रखी जा सकती है।

घर की बला घर में
घर की मुसीबत घर मे।

घर की शोभा घरवाली
घर को घरवाली ही संवारती है, वही उसकी शोभा है।

घर जले तो जले, चाल न बिगड़े
पुराणपंथियों के प्रति व्यंग्य।

घर न बार, मियां मुहल्लेदार
शेखीबाज के लिए कहा जाता है।

घर में जोरू का नाम चाहे बहू-बेगम रख लो
घर मे चाहे जो करो।

घर में आई जोय, टेढ़ी पगड़ी सीधी होय
विवाह होने पर अकड़ निकल जाती है या इज्जत बढ़ जाती है।

घर में नहीं दाने बुढ़िया चली भुनाने
झूठी शान दिखाने पर कहा जाता है।

घर में रहे तो घर को खाय बाहर रहे तो बाहर को खाय
निठल्ले के प्रति कहा जाता है।

घर वाले का एक घर, निघरे के सौ घर
घर वाले को चिन्ता लगी रहती है, घरहीन स्वतन्त्र और निश्चिन्त होता है।

घास खाये दिन कटें तो सब कोई खाय
जिस चीज की आवश्यकता होती है उसी से वह पूरी होती है।

घायल की गति घायल जाने
जिस पर बीतती है, वही जानता है।

घर खीर तो बाहर भी खीर
जो घर मे अच्छा खाते है, उन्हे बाहर भी अच्छा मिलता है, दूसरों को खिलाओगे तो वे भी तुम्हे अच्छा खिलाएंगे अथवा घर में अगर अच्छा खाने को मिलता है तो बाहर भी मिले यह आवश्यक नहीं।

घर खोदे, ईंधन बहुत
घर खोदने से काठ-कबाड़ बहुत मिल जाता है या घर को बर्बाद करने पर ही उतारू हो गए तो उसके लिए खर्च की क्या कमी?

घर घरवाली से
गृहिणी गृहमुच्यते। घर की शोभा घरवाली।

घर जले, घूर बतावे
अपने-आप को या दूसरों को धोखे मे रखना।

घर जले, गुंडा तापे
किसी के नुकसान का लाभ जब फालतू आदमी उठायें तब कहा जाता है।

घर तंग, बहू जबरजंग
मोटी-ताजी या खर्चीली स्त्री।

घर में खरच न ड्योढ़ी पर नाच
झूठी शान दिखाना।

घर में चिराग नहीं बाहर मशाल
झूठी तड़क-भड़क दिखाना।

घर में जो शहद मिले तो काहे वन को जाय
घर बैठे सब चीज मिल जाँय तो उसके लिए कोई कष्ट क्यों उठाए।

घर में पक्के चूहे, बाहर करें पत्थ
झूठा दिखावा करना।
घी भी खाओ और पगड़ी भी रखो
खर्च भी करो और इज्जत भी बनाए रखो।
घी का लड्डू टेढ़ा भी भला
स्वभाव से जो चीज अच्छी है, वह अच्छी ही रहेगी अथवा भला भला ही रहता है।
घी गिर गया, मुझे रूखी ही भाती है
झेंप मिटाने का बहाना।
घी के खवैया को छाँछ नहीं रुचती
जिसे अच्छी चीज मिले, उसे कम अच्छी चीज नही भाती।
घूरे के भी दिन फिरते हैं
छोटा भी उन्नति करता है।
घूसों में उधार क्या ?
बदला तुरन्त दिया जाता है।
चंदन की चुटकी, ना गाड़ी का काठ, चंदन की चुटकी भली ना गाड़ी भर काठ
अच्छी चीज थोड़ी ही अच्छी।
चचेरे ममेरे बड़लले बहुतेरे
बड़े आदमी के बहुत रिश्तेदार बन जाते है।
चट मंगनी पट ब्याह, टूट गई टंगड़ी रह गया ब्याह
होनहार के लिए कहा जाता है।
चढ़ जा बेटा सूली पर, भगवान भली करेंगे
बैठे-ठाले जब कोई अपने को मुसीबत मे डाल दे तब उससे व्यग्य मे कहते है या जब कोई खतरे वाली सलाह दे तब सलाह देने वाले से कहते है।
चना और चुगल मुंह लगा बुरा
चना खाने में और चुगलखोर की बात भी सुनने में अच्छी लगती है पर बाद में दोनों से कष्ट होता है।
चने का मारा मरता है
आदमी की जब मौत आती है तो अत्यन्त साधारण कारण से भी मर जाता है।
चपनी भर पानी में डूब मरो
तुम्हें शर्म आनी चाहिए।
चप्पे जितनी कोठरी, मियाँ मुहल्लेदार
झूठी शान दिखाने वाले को कहा जाता है।

चमड़े की जबान है, भूल-चूक हो ही जाती है

जब किसी के मुंह से कुछ का कुछ निकल जाता है, तब कहते हैं।

चरसी यार किसके, दम लगाया खिसके

नशेबाज को अपने नशे से मतलब रहता है।

चली का नाम गाड़ी

जिसकी चल जाए वही सब कुछ है, बाकी टापा करें।

चलती का नाम गाड़ी, गाड़ी का नाम उखड़ी

दुनिया के उलटे ढंग पर कहा जाता है।

चलनी दूसे सूप को जिसमें बहत्तर छेद

जब कोई अपने बड़े ऐब न देखकर दूसरों के साधारण से ऐब देखता फिरे तब कहा जाता है।

चल मरघट की लकड़ियां सस्ती हैं

कंजूस से हँसी में कहा जाता है।

चले रांड का चरखा और चले बुरे का पेट

चलने को कहने पर टालने के लिए कहा जाता है।

चांद आसमान पर चढ़ा सबने देखा

वैभव पर या बढ़ती पर सबकी नजर होती है।

चांद चढ़े कुल आलम देखे

चन्द्रमा का उदय सारा संसार देखता है अर्थात् बात खुल जाने पर सबको ज्ञात हो जाता है।

चातुर तो बैरी भला, मूरख भला न मीत

मूर्ख मित्र से चतुर बैरी अच्छा है।

चार दिनों की चांदनी, फिर अंधेरी रात (पाख)

वैभव अस्थायी होता है, सुख का समय अल्प होता है अर्थात् संसार की चमक अस्थायी है; अंतिम परिणाम निराशा है।

चिकना घड़ा बूंद पड़ी और ढल गई

निर्लज्ज के लिए कहा जाता है।

चिकनी-चुपड़ी बातों से पेट नहीं भरता

कोरी बातों से काम नहीं चलता।

चिराग तले अंधेरा

जहाँ विशेष न्याय, सुरक्षा या विचार की आशा हो वहाँ कोई अनहोनी होने पर कहा जाता है।

चिराग से चिराग जलता है

ज्ञान से ज्ञान, संतान से संतान और समर्थ से दूसरे को सहायता मिलती है।

लोक-व्यवहार पर आधारित लोकोक्तियां

चुटका-चुटका साधेगा, दुआरे हाथी बांधेगा
जो थोडा-थोडा करके संचय करेगा वही दरवाजे पर हाथी बांधेगा।

चीरे चार, बघारे पांच
निठल्ले बातूनी के लिए कहा जाता है।

चुटके का खंये उकटे का ना खंये
गरीब का खा ले पर एहसान जताने वाले का न खाए।

चुपड़ी और दो-दो
दुहरा लाभ या बढिया और वह भी बहुत सी।

चूका और गया
जो चूकता है वही हानि उठाता है।

चूतिया मर गए, औलाद छोड़ गए
आप जैसा मूर्ख हमने नही देखा।

चूल्हा छोड़ भंसार में जाओ
हमें कोई मतलब नही, तुम चाहे जो करो।

चूल्हा झोंके, चांवर हाथ
काम में नजाकत दिखाना।

चूल्हे का राव, लाव लाव हो पुकारे
पेट या पेटू के लिए कहा जाता है।

चेरी सबके पांव धोये, अपने धोये लजावे
लोगों को अपना काम करने मे शर्म आती है फिर वे उसी प्रकार का दूसरों का काम भले ही करें।

चोली-दामन का साथ
परस्पर गहरा प्रेम।

चौदहवीं के चांद को गहन लगा
जब किसी का ऐसा अनिष्ट हो जाय जो होना नही चाहिए था तब कहा जाता है।

छटांक भर चून, चौबारे पर रसोई
जितना है उससे अधिक आंकना या मूर्खतापूर्ण आडम्बर।

छह चावल और नौ पखाल पानी
साधारण काम के लिए बहुत बडा आडम्बर।

छानी पर फूस नहीं ड्योढ़ी पर नाच
झूठी शान।

छुआ और मुआ
दुष्ट के लिए कहा जाता है। वह जिसे छू देता है वह फिर बचता नही।

छुरी पर कद्दू, कद्दू पर छुरी
हर हालत मे बात वही है। कद्दू ही कटेगी।

छूँछी हांड़ी बाजे टन-टन
अल्पज्ञ अपने को बहुत समझता है।

छूँछे (थोथा) फटके उड़-उड़ जाय
कम जानकार, दभी या परीक्षा में असफल।

छैल छींट, बगल ईंट
शौकीन पर पल्ले मे कुछ नही। बेतुका शौक।

छोटा सबसे खोटा
छोटा सबसे खराब—प्रायः हँसी में कहा जाता है।

छोटा सो मोटा
ठिगना आदमी तगडा होता है।

छोटे मियाँ तो छोटे मियाँ, बड़े मियाँ सुभान अल्लाह
छोटे मियाँ जो है सो तो है ही पर बड़े मियाँ उनसे भी बढ़कर हैं।

छोटे से गाजी मियाँ बड़ी सी दुम
ढीली-ढाली पोशाक पहिनने पर बच्चे से कहा जाता है।

छोड़े गाँव का नाम क्या?
जिससे अब कुछ प्रयोजन ही नही उसकी चर्चा से क्या लाभ?

जंगल में खेती नहीं, बस्ती में नहीं घर
कही कुछ न होना।

जंगल में मंगल बस्ती में कड़ाका
जंगल मे भोज, नगर मे उपवास। उलटा काम।

जग जानी, देश बखानी
ऐसी बात जिसे सब जानते हों।

जग जीता मोरी कानी, वर टाड़ होय तब जानी
जब एक आदमी दूसरे को धोखा दे लेकिन दूसरे ने भी उसे धोखा दे रखा हो तब कहते है।

जनम के साथी हैं, करम के साथी नहीं
बुरे कार्यों का कोई साथी नही होता या भाग्य में कोई हिस्सा नही बँटाता।

जब नीके दिन आइ हैं, बनत न लगि है देर
अनुकूल समय आने पर सब ठीक हो जाता है।

जनम के कमबख्त नाम बख्तावर सिंह, जनम के दुखिया नाम सदासुख, जनम के मगता नाम दाताराम
आँख के अन्धे नाम नयनसुख।

जने-जने की लकड़ी, एक जने का बोझ

बूंद-बूंद जल भरहि तलावा। थोड़ा-थोड़ा सब करें तो काम पूरा हो जाता है।

जब भी तीन और अब भी तीन, जब पाए तीन के तीन

स्थिति में कोई परिवर्तन न होना।

जमीन सख्त और आसमान दूर है

कहां शरण लूं—ऐसा भाव व्यक्त करने पर कहा जाता है।

जर गया जर्दी छाई, जर आया सुर्खी आई

बिना पैसों के आदमी उदास नजर आता है, पैसों से खुश दिखाई देता है।

जर, जमीन, जोरू झगड़े की जड़

जब झगड़ा होता है तो सम्पत्ति, जमीन और स्त्री को लेकर।

जर दीजे हजार, मगर दिल न दीजे, उलफत बुरी बला है किसी से न कीजे

रुपया दे पर दिल न दे, प्रेम बुरी चीज है, किसी से न करे।

जर नेस्त, इश्क टें-टें

बिना पैसों के इश्क नहीं होता।

जर है तो नर है, नहीं तो खंडहर है

पैसों के बिना कोई नहीं पूछता।

जर है तो नर है, नहीं तो पंछी बेपर है

पैसों से ही आदमी का महत्त्व बढ़ता है।

जलते की जाई गरीब के गले लगाई

अभागे की लड़की गरीब को ब्याही। जैसे को तैसा मिलना।

जले को जलाना, नमक-मिर्च लगाना

पीड़ित को और कष्ट देना।

जले हुए तो पत्थर मारा करते हैं

ईर्ष्या-द्वेष से कुढ़ा हुआ व्यक्ति पत्थर तो मारेगा ही।

जवानी दीवानी

जवानी में आदमी पागल हो जाता है, उसे अच्छा-बुरा नहीं सूझता।

जवानों की चलाचली, बुढ़िया को ब्याह की पड़ी

उलटा काम।

जस दूलह, तस बनी बराता

जैसा आदमी वैसे ही उसके संगी-साथी।

जहां का मुर्दा तहां ही गोर

जहां के मुर्दे तहां गड़ते हैं। जहां की चीज होती है वहीं ठिकाने लगती है।

जहाँ गढ़ा होगा, वहीं पानी भरेगा

अन्तहु कीच तहाँ जहँ पानी। दुर्बल चरित्र ही बुराइयों का शिकार होता है।

जहाँ चाह तहाँ राह

सच्ची इच्छा अवश्य पूरी होती है।

जहाँ जाय भूखा, तहाँ पड़े सूखा

दुखी जहाँ भी जाए उसे दुख ही मिलेगा।

जहाँ जाय बाले मियाँ तहाँ जाय पूंछ

जब कोई सदा किसी के साथ लगा रहता है तब कहते हैं।

जहाँ देखूंगी भरी बरात, वहीं नाचूंगी सारी रात

जहाँ लाभ की संभावना हो वहाँ समय बिताना।

जहाँ ब्याह तहाँ गीत

जिससे कुछ मिले, उसी के गीत गाएँगे।

जहाँ सेर, वहाँ सवैया, जहाँ सौ, वहाँ सवा सौ

थोड़े के लिए काम क्यों रुके?—ऐसा भाव प्रकट करने पर कहा जाता है।

जागते को कटिया और सोते को कटड़ा

जागने वाला हमेशा मुनाफे में रहता है।

जागेगा सो पावेगा, सोवेगा सो खोवेगा

सावधान रहने से लाभ होता है।

जाट कहै सुन जाटनी, याही गाँव में रहना,
ऊँट बिलैया ले गई हाँ जी हाँ जी कहना

जिस समाज में रहना हो उसीकी रीति-नीति के अनुसार चलना चाहिए।

जान की जान गई, ईमान का ईमान

हर तरह से घाटे में रहना।

जान के साथ जेवड़ा

मरते दम तक यह फन्दा नहीं छूटेगा। जब कोई अपने पति या स्त्री से बहुत दुखी हो तब कहा जाता है।

जाकर जा पर सत्य सनेहू सो तेहि मिलहिं न कछु संदेहू

जिसका जिस पर सच्चा स्नेह होता है वह उसे अवश्य मिलता है।

जान बची, लाखों पाए

किसी काम से छुटकारा मिला मानो लाखों की सम्पत्ति मिल गई।

जान सबको प्यारी है

जान सबकी बराबर है। किसी को सताना नहीं चाहिए।

जान है तो जहान है

दुनिया के सारे धन्धे जान के साथ हैं। मरने पर किसी से कोई सम्बन्ध नहीं रहता।

जाने वाले के हजार रास्ते हैं ढूंढने वाले का एक

भागने वाले न जाने किस रास्ते भाग जाते है, ढूंढने वाला केवल एक रास्ता देखता है। (जाने वाले के दस रास्ते)

जिगर जिगर है, दिगर दिगर है

अपना-अपना है, पराया पराया है।

जितना ऊपर उतना नीचे

सब तरह से चालाक जैसे आठों गाँठ कुमैत।

जितना गुड़ उतना मीठा

जितना पैसा उतनी अच्छी चीज या जितना पैसा उतना बढ़िया काम।

जितना छानो उतना किरकिरा

जितनी जाँच-पड़ताल उतने ही दोष।

जितना छोटा उतना खोटा

स्पष्ट है।

जितना रखा है, उतना चुग लो

जो तुम्हारा है उतना ले लो और उसी में संतोष करो।

जितने काले उतने बाप के साले

जितने शातिर-बदमाश हैं वे मेरी मुट्ठी में है।

जितनी चादर देखो उतने ही पैर पसारो

सामर्थ्य के अनुसार ही खर्च करना चाहिए।

जिधर जलना देखे उधर तापे

दूसरे की हानि से लाभ उठाना।

जिन ढूंढा तिन पाइयां गहरे पानी पैठि

परिश्रम करने और जोखिम उठाने से ही लाभ होता है।

जिसका काम उसी को छाजै और करे तो मूरख बाजै

जिसका जो काम होता है उसी को शोभा देता है।

जिस कारन मूंड़ मुंड़ाया, सो दुख आगे आया

दुख से पीछा न छूटने पर कहा जाता है।

जिसका खाना उसी का बजाना जिसका खाना उसी के गीत गाना

जो दे उसी का हो जाना।

जिसका चिकना देखा, फिसल पड़े

जहाँ कुछ मिलने का डौल देखा वहीं खुशामद करने लगे।

जिसकी जूती उसी का सिर

किसी की खातिर उसी के पैसे से करना या किसी की कही हुई बात से उसी को परास्त कर देना।

जिसको जोरू अन्दर उसका नसीबा सिकन्दर
जिसका औरत आया बनकर अंग्रेज के घर में घुस गई उसकी किस्मत खुल गई।

जिसको बीबी से काम, उसको लौंड़ी से क्या काम
जब बडो तक पहुंच है तब छोटो की खुशामद की क्या जरूरत।

जिसको महल में मैया, माँगे पैसा मिले रुपैया
बड़े आदमी के बेटे को किस बात की कमी।

जिसके चार भैया, मारें धौल छीन लें रुपैया
जिसके चार आदमी सहायक होते हैं वह सब कुछ कर सकता है।

जिसके पास ढिबुआ, वही हमारा बबुआ
जो खाने को दे वही हमारा मालिक। पैसे वाले की सब खुशामद करते हैं।

जिसके माँ-बाप जीते हों, वह हराम का नहीं कहलाता
जब किसी के निर्दोष होने के स्पष्ट प्रमाण मौजूद हों तब उस पर दोष लगाना ठीक नही।

जिसके सिर पर पड़ती है वही जानता है
अपनी मुसीबत आदमी आप ही जानता है।

जिसके सिर पर जूता रख दिया, वही बादशाह हो गया
किसी लफंगे फकीर का कथन।

जिसके हाथ लोई (डोई) उसका सब कोई
धनी और सबल की सब खुशामद करते है।

जिसने की बेहयाई उसने खाई दूध-मलाई
बेशर्म सुख-चैन से रहता है।

जिसने की शरम, उसके फूटे करम
संकोच या लिहाज करने वालो को नुकसान उठाना पड़ता है।

जिस पत्तल (बर्तन हांड़ी) में खाना उसी में छेद करना
कृतघ्नता।

जिनको कछू न चाहिए तेई साहंसाह
जिसकी आवश्यकताएँ जितनी कम हों, वह उतना ही सुखी रहता है।

जिस राह हो नहीं चलना, उसके कोस गिनने से मतलब ?
जो काम करना ही नही उसका क्यों जिक्र करना ?

जिस मुंह से पान चबाइये, उस मुंह से कोयले न चबाइये
एक बार जिसकी प्रशंसा कर चुके उसकी बुराई न करे अथवा जहाँ सम्मान-पूर्वक रहे, वहाँ अपमान सहकर नही रहना चाहिए।

जीते न पूछे, मुए-धड़ धड़ पीटे
आदमी की कद्र मरने पर ही होती है अथवा कृतघ्न संतान।
जैसा देश, वैसा भेष
जिनके बीच रहना उन्हीं का चलन अपनाना।
जैसी करनी, वैसी भरनी
जैसा काम वैसा फल।
जैसी नीयत वैसी बरकत
नीयत के अनुसार फल मिलता है।
जैसी संगत वैसी रंगत
संगत का प्रभाव अवश्य पड़ता है।
जैसी बहे बयार, पीठ तब तैसी दीजै
अवसर देखकर काम करना चाहिए अथवा अवसर का लाभ उठाना चाहिए।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल होय
जैसी संगत वैसी रंगत।
जैसे कंता घर रहे तैसे रहे विदेश
अकर्मण्य व्यक्ति का घर रहना या न रहना समान है।
जैसे को तैसा
बुरे के साथ बुरा व्यवहार ही नीति-सगत है। शठे शाठ्यम् समाचरेत्।
जैसे साजन आए, तैसे बिछौना बिछाए
जैसे आए वैसा सत्कार।
जो जिसका भावता, सो ताही के पास
जो जिसको दिल से चाहता है, वह उसे अवश्य मिलता है।
जीते जी का नाता
आत्मीय के मरने पर शोकाकुल को धैर्य बँधाने के लिए कहा जाता है।
जीते जी का मेला है
आदमी जब तक जिन्दा रहता है तभी तक मिलना-जुलना है।
जीते रहे तो लानत कहना
किसी को कोसना या शाप देना।
जूठा खंये मीठ के लालच
अच्छे लाभ के लालच में ओछा काम भी करना पड़ता है।
जेठ के भरोसे पेट
दूसरे के आश्रित रहना या उसके भरोसे कोई काम करना।
जैसे दाम वैसा काम
जैसी मजदूरी दोगे, वैसा ही काम होगा।

जो कोई कलपाय है सो कैसे फल पाय है

जो दूसरों को सताता है, उसे शान्ति नहीं मिलती।

जो टका देगा उसका लड़का खेलेगा

जो पैसे खर्च करता है, वही लाभ उठाता है।

जो तैरेगा सो डूबेगा

प्रयास न करने वाले के लिए असफलता का प्रश्न ही नहीं उठता।

जो दम गुजरे सो गनीमत

आनन्द से जितना समय बीत जाए सो ही अच्छा।

जो धन जाता देखिए, आधा लीजै बाँट

यदि पूरी सम्पति नष्ट हो रही हो तो आधी दूसरों को दे कर यश लूट लेना चाहिए।

जो पहले मारे सो मीर

जो पहले मारता है वही जीतता है। (पहल करने वाला ही सफल होता है)

जोर थोड़ा, गुस्सा बहुत

कमजोर को गुस्सा बहुत आता है।

जोरू खसम की लड़ाई क्या ?

होती ही रहती है।

जोरू न जाँता, अल्लाह मियाँ से नाता

अविवाहित फक्कड़ के लिए कहा जाता है।

जोरू टटोले गठरी और माँ टटोले अंतड़ी

स्त्री धन चाहती है, माँ पुत्र का स्वास्थ्य।

जो अपनी सहायता करते हैं ईश्वर उन्हीं की सहायता करता है

स्पष्ट है।

जो दूसरों को कुँआ खोदता है, कुँए में गिरता है

दूसरो की हानि चाहने वाला स्वयं हानि उठाता है।

जो धरती पर आया, उसे धरती ने खाया

धरती में जन्म लेने वाला धरती मे मिलता है।

जो निकले सो भाग धनी के

चोट्टे लापरवाह मजदूर का कथन।

जो फल चक्खा नहीं, वही मीठा

अलभ्य वस्तु के लिए मन ललचाता है।

जो बहुत करीब सो ज्यादा रकीब

नजदीक के लोग ही दुश्मन होते है।

लोक-व्यवहार पर आधारित लोकोक्तियां

जो माँ से सिवा चाहे सो डायन
मां से अधिक प्रेम कोई नहीं कर सकता।
जो मेरे सो तेरे, काहे दाँत निपोरे
ईश्वर ने सबको एक सा पैदा किया है।
जो बोले, सो कुंडा खोले
भलमनसाहत का नतीजा।
जो बोले सो घी को जाए
जो सलाह दे वही करे या किसी काम मे मूर्खतापूर्ण हठ करना।
जो हाँडी में होगा सो रकाबी में आएगा
मन की बात प्रकट होकर ही रहती है या जो होना होगा, होगा ही फिर चिन्ता क्यों ?
जौक में शौक, दस्तूरी में लड़का
खुशी में शौक और मुफ्त मे लड़का। आनन्द के कार्य में भी लाभ।
ज्यों-ज्यों भीजै कामरी, त्यों-त्यों भारी होय
कर्ज अथवा पापो का बोझ बढ़ने पर कहा जाता है।
झगड़ा झूठा, कब्जा सच्चा
अधिकार ही सच्चा है।
झगड़े की तीन जड़ जर, जमीन और जोरू
स्पष्ट है।
झूठ कहे सो लड्डू खाय, साँच कहे तो मारा जाय
दुनिया में झूठों की कद्र होती है।
झूठ बोलने वालों को पहले मौत आती थी अब बुखार भी नहीं आता
हँसी में कहा जाता है (समय की बलिहारी है)
झूठे के मुँह आग
झूठे को दण्डित करना चाहिए अथवा झूठा झगड़े लड़ा करता है।
झोंपड़ी में रहे महलों का ख्वाब देखे
बूते से बाहर काम करने की सोचना।
टका तो टकटका नहीं तो झकझका
धन है तो ठीक अन्यथा कुछ भी नही।
टके का सब खेल है
धन से सब काम चलते हैं।
टुकड़ों का पाला है
किसी के प्रति उपेक्षा या घृणा मे कहा जाता है।
टूटी का क्या जोड़ना गाँठ-पड़े और न रहे
झगड़ा होने पर मेल मुश्किल से होता है।

टूटी की क्या बूटी ?

टूटी चीज जुड़ती नही। मौत की दवा नही।

ठेंगा थाम लबेदे हजार

मजबूत का सहारा लेना चाहिए।

ठोकर लगी पहाड़ की, तोड़े घर की सिल

बाहर से पराजित होकर घरवालों पर गुस्सा उतारना।

डालते देर नहीं सिर पर कोतवाल

गलत काम करते ही पकड़ा जाना।

डूबते को तिनके का सहारा

संकट मे थोडा सहारा भी बहुत है।

ढटींगर काहे मोटा, लाहा गिने न टोटा

बेफिक्र के लिए कहा जाता है।

तई की तेरी खपड़े की मेरी

अपना ही स्वार्थ देखना।

तकल्लुफ में रेल चल दी

ज्यादा तकल्लुफ भी नुकसानदेह है।

तत्ता कौर निगलने का न उगलने का

गरम दूध या धरम-संकट की स्थिति।

तन्दुरुस्ती हजार न्यामत है

स्वास्थ्य से बढ कर कुछ नही।

तन कसरत में मन औरत में

दो विरोधी काम एक साथ नही हो सकते।

तन को कपड़ा न पेट को रोटी

दयनीय स्थिति के लिए कहा जाता है।

तब लग झूठ न बोलिए, जब लग पार बसाय

जहाँ तक वश चले झूठ नही बोलना चाहिए।

तरुना न जाने मरना

जवान मरने से नही डरता।

तवे की तेरी, तगारी की मेरी

तई की तेरी खपड़ी की मेरी।

तिनका उतारे का अहसान होता है

छोटे से छोटे काम का भी एहसान होता है।

तिनके की ओट पहाड़

छोटे कारण मे बड़ी कठिनाई या छोटी चीज के पीछे बड़ा रहस्य।

तिनके की चटाई नौ बीघा फैलाई
अधिक दिखावा करना।

तीन बुलाये तेरह आये दे दाल में पानी
जब किसी जगह बिना बुलाए बहुत से फालतू आदमी पहुँच जायें तब कहते हैं।

तुख्म तासीर, सोहबत का असर
बीज का गुण और सोहबत का असर नहीं जाता। खोटे की खोटी और भले की भली संतान होती है।

तुझे पराई क्या पड़ी, अपनी बात निबेड़
दूसरों की आलोचना करने से पहले अपनी ओर देख या अपना काम-काज छोड़ कर दूसरों के झगड़े में नहीं पड़ना चाहिए।

तुम जानो तुम्हारा काम जाने
हमारी बात नहीं मानते तो चाहे जो करो।

तुम तो कुछ जानते ही नहीं, औंधे मुंह दूध पीते हो
जब कोई भोला और अनजान बने तब कहा जाता है।

तुम तो जब माँ के पेट से भी नहीं निकले होगे
तुम तो तब पैदा भी नहीं हुए होगे, फिर तुम्हें क्या पता कि उस वक्त क्या हुआ ?

तुम भी कहोगे 'कोई मुझे जोरू करे'
जो अपने को बहुत होशियार समझे उससे कहा जाता है।

तुम भी कहोगे 'मुझे चरखा ला दे'
तुम औरतों का ही काम कर सकते हो। मूर्ख के लिए कहते हैं।

तुम थूकते हो हम थूकते भी नहीं
हम तुम से अधिक घृणा करते हैं।

तुलसी कारी कामरी, चढ़ै न दूजो रंग
स्वाभाविक प्रवृत्ति नहीं बदलती।

तुम सरीखे सैकड़ों फिरते हैं
हम तुम्हारी परवाह नहीं करते।

तुम्हारी जूती और तुम्हारा ही सिर
तुम जो खर्च कर रहे हो वह तुम्हारे माथे जाएगा।

तुम्हारी बात उठाई जाय न धरी जाय
तुम्हारी बात समझ मे नहीं आती या तुम कोई उपयोगी बात नही करते।

तुम्हारी बात में बंद क्या ?
तुम्हारी बात का भरोसा क्या ?

तुम्हारी बात पल की न बेड़े की
    बेहूदी या बेतुकी बात।
तुम्हारे भतार न हमारे जोय, अस कुछ करौं कि बेटवा होय
    विधवा से रडुंवे का प्रस्ताव।
तुम्हारे मरे देश खाक, हमारे मरे देश पाक
    विनम्रता दिखाना।
तुम्हारे मरे देश पाक, हमारे मरे देश खाक
    मूर्खतापूर्ण दम्भ।
तुम्हारे मुंह में घी-शक्कर
    खुशखबरी सुनाने पर कहा जाता है।
तू गोर खोद मोकों, मैं गाड़ आऊं तोकों
    भरपूर बदला चुकाना।
तू सच्चा, तेरा गुरु सच्चा
    व्यंग्य में झूठे से कहते हैं।
तेरा माल सो मेरा माल, मेरा माल सो हैं-हैं
    दूसरे की चीज हथियाना और अपनी न छूने देना।
तेरी करनी तेरे आगे, मेरी करनी मेरे आगे
    अपने कर्मों का फल भोगेंगे या ईश्वर देखेगा।
तेरे बैंगन, मेरी छाछ
    अपनी छोटी वस्तु के बदले, दूसरे की बड़ी वस्तु लेना. चतुराई से काम लेना।
तेल जल चुका
    जिन्दगी खत्म हो चुकी या पैसा उड़ गया खर्च के लिए अब कुछ नहीं।
तैराक ही डूबते हैं
    काम करने वाला ही असफल भी होता है।
तोला भर की आरसी, नानी बोले फारसी
    लम्बी-चौड़ी बात करना।
थाली गिरी झनकार सबने सुनी
    लड़ाई-झगड़े का पता लग ही जाता है।
थाली पर से भूखा नहीं उठा जाता
    नाराज होकर भोजन छोड़ने पर कहा जाता है।
थाली फूटी न फूटी, झनकार तो सुनी
    झूठा सन्देह करने या भाइयों के झगड़े के सम्बन्ध में कहा जाता है।
थूकों सत्तू नहीं सनते
    अपर्याप्त सामान से काम नहीं होता।

थैली में रुपया, मुँह में गुड़

पास में रुपया हो और जबान भी मीठी हो तो मनुष्य सुखी रहता है।

थोड़े धन में खल इतराय

ओछा थोड़ा पाकर ही इतराने लगता है।

थोथे फटके उड़-उड़ जायें

मूर्ख या झूठा परीक्षा में कहीं नहीं ठहरता या मूर्ख गम्भीर नहीं होता।

थोड़े पानी में उभरे फिरते हैं

थोड़ा पाकर ही घमण्ड में फूल जाते हैं।

दबी भाप ही ढक्कन उठाती है

अवरुद्ध मनोवेगों में बड़ी शक्ति होती है।

दम भरने की जगह (फुर्सत) नहीं

जब काम से बिल्कुल फुर्सत न मिले तब कहा जाता है।

दर्शन थोड़े, नाम बहुत

जब किसी में ख्याति के अनुरूप गुण न मिलें तब कहा जाता है।

दवा और दुआ दोनों

एक साथ सब काम साधना।

दस्तरखान बिछाने में सौ ऐब, न बिछाने में एक ऐब

कोई काम करना हो तो अच्छी तरह किया जाय अन्यथा न करना ही अच्छा।

दही-भात में मूसल

अनचाहा हस्तक्षेप करने वाला।

दाँत कुरेदने को तिनका नहीं बचा

अग्नि-काण्ड की भीषणता प्रकट करने के लिए कहा जाता है।

दाग लगाए लंगोटिया यार

सगे मित्र से ही पोल खुलती है।

दादा जान पराये घरदे आजाद करते थे

हम उनमें नहीं जो अपना गाँठ से कुछ खर्च करें। हम तो मुफ्त की वाहवाही लूटने वाले हैं।

दाता दे, भंडारी का पेट फटे

मालिक देना चाहे पर नौकर आनाकानी करे, तब कहा जाता है।

दादा मरेंगे जब बैल बँटेंगे, दादा मरेंगे जब मीरारास बँटेगी, दादा मरेंगे तो पोते राज करेंगे

किसी काम को अनिश्चित समय के लिए टालना या असम्भव शर्त लगाना।

दाना दुश्मन, नादान दोस्त से बेहतर
बुद्धिमान दुश्मन मूर्ख मित्र से अच्छा।

दाम आवे काम
पैसा वक्त पर काम आता है।

दाम करे सब काम
पैसे से ही काम होते हैं।

दाल-भात में मूसरचन्द
अनचाहा हस्तक्षेप करने वाला।

दाहिना धोये बायें को और बायां धोये दायें को
परस्पर सहयोग से ही काम होता है।

दिनन के फेर ते सुभरे होत माटी के
भाग्य के विपरीत होने पर सम्पत्ति नष्ट हो जाती है।

दिन दूनी, रात चौगुनी
तेजी से वृद्धि होने पर कहा जाता है।

दिन भर चले अढ़ाई कोस
आलसी के प्रति कहा जाता है।

दिन भले आयेंगे तो घर पूछते चले आयेंगे
सौभाग्य को बुलाना नही पड़ता।

दिया लिया ही आड़ो आता है
अच्छे कर्म ही अन्त मे काम आते हैं।

दिया हाथ, खाने लगा साथ
किसी को थोडा सहारा देने पर जब वह गले पड़ जाय, तब कहा जाता है।

दिये तले अंधेरा
चिराग तले अंधेरा।

दिल में आई को राखे सो भडुआ
मन मे आई वात को छिपाना नही चाहिए।

दिल्ली से मैं आऊँ खबर कहे मेरा भाई
जब जानी हुई बात को स्वय कहकर दूसरे से पूछने के लिए कहा जाए या जब जानी हुई बात को कोई दूसरा सुनाने आए तब कहा जाता है।

दिल्ली से हींग आई, तब बड़े पक्के
व्यर्थ का आडम्बर या आवश्यकता से अधिक विलम्ब।

दिन दस के व्यवहार में झूठे रंग न भूल
अल्पकालिक-जीवन की चमक-दमक में पड़ना ठीक नही।

देखी तेरी कालपी, बावन पुरा उजाड़
कोरा नाम, असलियत कुछ भी नहीं।
देने के नाम से दरवाजे के किवाड़ भी नहीं देते
कंजूस या ना-देनदार के प्रति कहा जाता है।
देर आयद, दुरुस्त आयद
देर से होने वाला काम ठीक होता है।
दो आदमियों की गवाही से फाँसी होती है
दो की गवाही या सलाह मानी ही जानी चाहिए।
दोनों हाथ संभाले नहीं संभलती
इज्जत बचाना मुश्किल हो गया है।
दौड़ चले न चौपट (औंधा) गिरे
जल्दबाजी करने वाला हानि उठाता है।
देते देखा और को ताते बदन मलीन
कंजूस दूसरों को देते देखकर भी क्षुब्ध होता है।
दो चून के भी बुरे होते हैं
दो का मुकाबिला मुश्किल से होता है।
दो प्याले पी तो ले, हरामजदगी तो पेट में है
हर्ज क्या है ? पेट में न जाने कितने ऐब हैं।
दो में तीसरा, आँखों में ठीकरा
दो के बीच में तीसरे की उपस्थिति खटकती है।
धीरज, धरम, मित्र अरु नारी।
आपत्तिकाल परखिए चारी॥
धैर्य, धर्म, मित्र और स्त्री की परीक्षा आपत्ति-काल में ही होती है।
धोती में सब नंगे
अन्दर से सब एक से हैं अथवा सब मे कुछ न कुछ दोष होते है।
न गाड़ी भर आशनाई, न जो भर नाता
किसी से कोई मतलब नहीं।
न गू में ढेला डालो न छींटे उड़ें
न बुरा काम करो न बुराई हाथ लगे।
न जीने का शादी, न मरने का गम
दुनिया से उदासीन व्यक्ति का कथन।
नदी किनारे रूखड़ा, जब तब होय विनाश
खतरे का काम करने वाला कभी भी हानि उठा सकता है।

नमक की खान में जो गया, सो नमक हुआ

संगति का प्रभाव अनिवार्य है।

न मारे मरे न काटे कटे

उस उद्धत व्यक्ति या लड़के के लिए कहते हैं जिससे सब परेशान हों।

नया चिकनियां रेंड़ी का तेल

नौसिखिया या ऊटपटांग ढंग से काम करने या बेतुकी चीज से काम लेने पर कहा जाता है।

नदी-नाव संजोग

दो का अचानक कहीं मिल जाना।

नया नौ गंडा, पुराना छह गंडा

नयी की कद्र अधिक होती है।

नया नौ दिन, पुराना सौ दिन

नयी चीज तो थोड़े ही दिन रहती है, पुरानी पर निर्भर रहना चाहिए।

नात का न गोत का, बांटा मांगे पोथ का

अनुचित या बेतुकी मांग करने पर कहा जाता है।

नादान की दोस्ती जी का जियान

नादान की दोस्ती प्राण-लेवा होती है।

नादान दोस्त से दाना दुश्मन भला

मूर्ख दोस्त से अक्लमन्द दुश्मन अच्छा।

नाना की दौलत पर नवासा ऐंठा फिरे

दूसरे के धन पर ऐंठना।

नाना के टुकड़े खावें, दादा का पोता कहावें

[illegible] किसी और की [illegible] पर कहा जाता है।

नानी तो क्वांरी ही मर गई और नवासे के सात सात

छोटे आदमी के बड़ी [illegible] और [illegible] पर कहा जाता है।

नान न नाम की भूख

निकृष्ट या बेतुका [illegible]।

नाम बड़ा, दर्शन छोटे (थोड़े)

ख्याति के अनुसार गुणों का न होना।

नाम मेरा, [illegible]

किसी [illegible] का [illegible] और दूसरे की [illegible] [illegible]

निज [illegible], [illegible]

[illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]

नील का टीका कोढ़ का दाग
ये छूटते नही।

नीयत साबित, मंजिल आसान
नीयत भली हो तो सब काम बन जाते हैं।

नेक अन्दर बद, बद अन्दर नेक
भलाई-बुराई सभी के साथ लगी है।

नेकी कर दरिया में डाल
उपकार करने पर उसे भूल जाना चाहिए।

नेकी का बदला बदी
भलाई के बदले बुराई।

नेकी और पूछ-पूछ
भलाई करने मे पूछना क्या।

नेकी बर्बाद, गुनाह लाजिम
नेकी तो भाड़ मे गई, उसके बदले बुराई मिली।

नौ तेरह बाईस न बताइए
आप किसी से जबर्दस्ती अपनी बात नही मनवा सकते। सही बात न मानने और व्यर्थ का तर्क करने पर कहा जाता है।

नौ दिन चले अढ़ाई कोस
बहुत सुस्त एवं आलसी के लिए कहा जाता है।

नौह भर खाया तो खाया, मुंह भर खाया तो खाया
चोरी छोटी हो या बड़ी, है तो चोरी ही।

पड़ौसी के मेंह बरसेगा तो बौछार यहाँ भी आएगी
धनी के पड़ोस से लाभ ही होगा।

पढ़ा न लिखा, नाम विद्याधर, पढ़ा न लिखा नाम मुहम्मद फाजिल
बेशऊर। आँख का अन्धा, नाम नयनसुख।

पढ़िए भैया सोई, जा में हँड़िया खुदबुद होई
वही पढना अच्छा, जिससे पेट का धन्धा चल सके।

पढ़े घर की पढ़ी बिल्ली
शिक्षा का प्रभाव दूसरों पर भी पड़ता है।

पढ़े तो हैं पर गुने नहीं
अनुभवहीन पढ़े-लिखे।

पत्थर मारे मौत नहीं आती
जब मौत आती है तभी कोई मरता है या उस व्यक्ति के लिए कहा जाता है जिससे घर के लोग परेशान हों।

पर की खेती पर की गाय, वह पापी जो मारन जाय
मनुष्य दूसरे के नुकसान को चुपचाप देखता रहता है—इसी मनोवृत्ति के लिए कहा जाता है।

पराई थैली का मुंह सँकरा
अपना धन कोई आसानी से नहीं देना चाहता।

पर घर कूदे मूसलचन्द
बिना बुलाए मेहमान या बिना पूछे हस्तक्षेप करने वाले को कहा जाता है।

पर घर कबहुँ न जाइए, जात घटत है जोत
दूसरे के घर जाने से सम्मान मिट जाता है।

पहाड़ का बासा, कुल का मासा
पहाड़ पर गुजर-बसर मुश्किल से होती है।

पराया खाइए गा-बजा, अपना खाइए टट्टी लगा
घर का भेद नही खोलते।

पत्थर मोम नहीं होता
हृदयहीन को दया नही।

पर्‌यो अपावन ठौर में, कंचन तजत न कोय
बहुमूल्य वस्तु को अपवित्र स्थान से उठाने मे कोई भी संकोच नही करता।

पर स्वारथ के कारनै सज्जन धरत शरीर
सज्जन पुरुष दूसरों के हित के लिए ही शरीर धारण करते हैं।

पहले अपनी ही दाढ़ी बुझाते हैं
पहले अपना ही काम देखा जाता है।

पहले घर में तो पीछे मस्जिद में
पहले घर देखो फिर बाहर।

पहले ही गस्से में बाल
आरम्भ ही में अपशकुन होने पर कहा जाता है।

प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं
अधिकार अभिमान की जड़ है।

पाँच जूतियाँ और हुक्के का पानी
अपात्र के माँग करने पर कहा जाता है।

पाँच पंच मिलि कीजे काज, हारे जीते होइ न लाज
मिल-जुलकर किए गए काम में यदि हार भी हो तो लज्जा की बात नही।

पानी का हगा ऊपर आता है
दुष्कर्म छिपता नहीं।

पानी मथने से कहीं घी निकलता है

सूम के प्रति कथन या कोई नतीजा न निकलने पर कहा जाता है।

पानी में पत्थर नहीं सड़ता

रकम किसी मातवर आदमी के जमा हो तो वह डूबती नहीं।

पानी पीजे छान के, गुरु कीजे जान के

पानी छानकर पीना चाहिए और गुरु देखभालकर करना चाहिए।

पीछा पीछा ही है

वर्तमान से बढ़कर नहीं हो सकता।

पीठ पीछे कुछ भी हो

मेरे पीछे कुछ होता रहे।

पीठ पीछे बादशाह को भी बुरा कहते हैं

पीठ पीछे तो लोग बड़े से बड़े की भी बुराई करते हैं।

पीने को पानी नहीं, छिड़कने को गुलाब

झूठी शान दिखाने पर कहा जाता है।

पुरुष साठा सो पाठा, स्त्री बीसी सो खीसी

पुरुष साठ वर्ष का होने पर भी जवान बना रहता है, स्त्री का यौवन बीस वर्ष के बाद ढलने लगता है।

पूछते-पूछते तो दिल्ली चले जाते हैं

अपनी सहज बुद्धि से काम लेकर बहुत कुछ किया जा सकता है।

पूत के पाँव पालने में पहचाने जाते हैं

आसार या लक्षण पहले ही दिख जाते हैं।

पूत सपूत तो क्यों धन संचै ? पूत कपूत तो क्यों धन संचै ?

बेटा सपूत हो या कपूत, दोनों ही स्थितियों में धन सचय करने की कोई आवश्यकता नही।

पूरी से पूरी पड़े तो सभी न पूरी खायें

हमेशा पूरी खाकर नहीं रहा जा सकता या हमेशा मौज-मजा नहीं किया जा सकता।

पेट भरे की बातें

आदमी का जब पेट भरा होता है तो वह काम नहीं करना चाहता और सौ तरह की बातें बनाता है।

पेट भरे के खोटे चाले

पेट भरा होने पर बदमाशी सूझती है या बुरे कर्मों पर खर्च होता है।

पैदा हुआ मापैद के वास्ते

जन्म होता है मरने के लिए।

पैसा गांठ का जोरू साथ की

वक्त पर यही काम आते हैं।

पैसा नहीं हाथ, चले नवाब के साथ

बड़ों की नकल करने पर कहा जाता है।

पैसा हाथ का मैल है

पैसे को महत्व नहीं देना चाहिए। वह तो आता-जाता रहता है।

पैसा पास का, घोड़ी रान की

तभी वे वक्त पर काम आते हैं।

पोस्ती की आँच ऊपर को नहीं जाने की

दुखिया की आह व्यर्थ नहीं जाती।

प्यासा कुएँ के पास जाता है, कुआं प्यासे के पास नहीं जाता

जिसको जरूरत होती है, उसी को जाना पड़ता है।

प्रेम-गली अति साँकरी, जा में दो न समाय

प्रेम एकान्तिक होता है उसमें द्वैत-भाव को स्थान नहीं।

फलाने की माँ ने खसम किया, 'बहुत बुरा किया', करके छोड़ दिया, 'और भी बुरा किया'

पहले तो कोई काम करना नहीं चाहिए और यदि करे तो निभाना चाहिए अर्थात् एक भूल पर दूसरी भूल नहीं करनी चाहिए।

फालूदा खाते दाँत टूटे तो बला से

ऐसी विपत्ति के लिए खेद करना व्यर्थ है जिससे बचना मुश्किल हो।

फावड़े का नाम गुलसफा

जब किसी के पीछे बहुत दिनों तक घूमना और खुशामद करना व्यर्थ सिद्ध हो और कोई लाभ की आशा न हो तब कहा जाता है।

फूटी देगची, कलई की भड़क

दिखावटी चीज।

फूस की झोंपड़ी और बारूदी (हवाई) फुलझड़ी

फिर क्यों न आग लगे ?

बंदगी ऐसी और इनाम ऐसा

इतनी सेवा की और बदले में यह मामूली-सा इनाम।

बंदा जोड़े पली-पली, रहमान लुढ़ावे कुप्पे

जब किसी का परिश्रम और कंजूसी से इकट्ठा किया धन नष्ट हो जाए या कोई संचय करे और दूसरा बेरहमी से खर्च करे तब कहा जाता है।

बंदा बशर है

आदमी आदमी होता है। भूल होने पर कहा जाता है।

बख्त उड़ गए, बुलन्दी रह गई
अच्छे दिन निकल गए, केवल नाम रह गया।
बख्तावर का आटा गीला, कमबख्त की दाल गीली
मुसीबत हमेशा कमबख्त की ही है।
बख्तों के बलिया, पकाई खीर हो गया दलिया
बदकिस्मत के लिए कहा जाता है।
बगल में छोरा (लड़का) शहर में ढिंढोरा
भुलक्कड़ स्वभाव के सम्बन्ध में कहा जाता है।
बगल में सोटा नाम गरीबदास
कहने को सीधे-सादे पर हैं तेज-तर्रार।
वचनों का बाँधा खड़ा है आसमान
किसी को वचन देकर तोड़ना नहीं चाहिए।
बच बे जुम्मा, आँधी आई
आती विपत्ति से बचने के लिए कहा जाता है।
बचे नर हजार घर
एक अच्छे आदमी की रक्षा होने से हजार घरों की रक्षा होती है।
बड़ा जाने किया, बालक जाने हिया
सयाना काम से और बच्चा प्यार से खुश होता है।
बड़ी बहू, बड़ा भाग
बहू की उम्र जब वर से अधिक होती है तब वर-पक्ष वालों को तसल्ली देने के लिए कहते हैं।
बड़े कड़ाही में तले जाते हैं
बड़ों का अपमान मत करो—ऐसा कहने पर किसी का कथन।
बड़े बर्तन की खुर्चन भी बहुत है
आर्थिक स्थिति बिगड़ने पर भी बड़े आदमी के घर से जो निकलता है वही बहुत होता है।
बड़े शहर का बड़ा ही चाँद
बड़े शहर की सब बातें बड़ी होती हैं या बड़े शहर में बड़े ठग भी रहते हैं।
बड़ों की बात बड़े पहचानें
बड़े आदमी ही बड़ों की बात समझ सकते हैं।
बद अच्छा बदनाम बुरा
इसलिए कि बदनाम आदमी कोई बुराई न भी करे तो भी लोगों का ध्यान उसी पर जाता है।

बद बदी से न जाये तो नेक नेकी से भी न जाये
बुरा अगर बुराई न छोड़े तो भले को भी अपनी अच्छाई नहीं छोड़नी चाहिए।

बदली की छाँव क्या ?
क्षणस्थायी।

बन आए की बात रे ऊधो !
सफलता बड़ी चीज है या भाग्य की बात है।

बनी के सब यार हैं
समृद्ध या धनी के सब मित्र बन जाते हैं।

बनी के सौ साले, बिगड़ी का एक बहनोई भी नहीं
पास मे अगर पैसा है तो सब कोई अपनी बहन ब्याहने को तैयार हैं, पर गरीब की बहिन से कोई ब्याह नहीं करता।

बना तो बनी, नहीं दाऊदखाँ धनी
अगर एक जगह काम करते न बना तो दूसरी जगह चला जाऊँगा—ऐसा भाव व्यक्त करने के लिए कहा जाता है।

बराती किनारे हो जाएँगे, काम दूल्हा-दुल्हन से पड़ेगा
बाहर वाले तो झगड़ा कराकर अलग हो जाते हैं पर सुलझाना तो उन्हें ही पड़ता है जिनमें आपस में झगड़ा होता है।

बरातियों को खाने की चाह दूल्हा को दुल्हन की चाह
सब मतलब से मतलब रखते हैं।

बल तो अपना बस, नहीं तो जाए जल
अपना बल ही काम आता है दूसरे का नहीं।

बहुत गई, थोड़ी रह गई
बहुत उम्र बीत गई, थोड़ी बाकी है; ईश्वर इज्जत से काट दे।

बहुत सोना दलिद्र की निशानी
आलस्य दरिद्रता का लक्षण है।

बहू बेटी सब रखते हैं
माँ-बहिन की गाली देने पर या बुरी नजर डालने पर भर्त्सना में कहा जाता है।

बांस डूबे, बौरी थाह माँगे
ऊँट बहे जायें, गदहा कहै, 'कितना पानी ?'

बात का चूका आदमी और डाल का चूका बन्दर संभलता नहीं
हानि उठाकर रहते हैं।

बात कहे की लाज
जो बात कहे उसे पूरा करे।
बात की बात खुराफात की खुराफात
बात ठीक भी है और हँसी की भी।
बात छीले रूखड़ी और काठ छीले चीकना
किसी बात को बार-बार उकसाना ठीक नही।
बात जो चाहे अपनी पानी माँग न पी
अपनी इज्जत रखना चाहते हो तो पानी भी माँगकर न पीओ।
बात कही और पराई हुई
कहते ही सबको मालूम हो जाती है।
बात गई फिर हाथ नहीं आती
मुँह से निकली बात फिर वापस नही हो सकती या इज्जत गई तो हाथ नही आती।
बात पर बात याद आती है
कोई बात छिडने पर ही कोई भूला हुआ प्रसंग याद आता है।
बात पूछे बात की जड़ पूछे
बहुत खोद-खोद कर पूछने वाले से कहा जाता है।
बात रह जाती है वक्त निकल जाता है
उचित सहायता मांगते हुए भी न मिलने पर कहा जाता है।
बात लाख की, करनी खाक की
बातें लम्बी-चौड़ी और करनी कुछ नही या बड़े व्यक्तित्व का निन्दनीय काम।
बात न बात की दुम
बेकार या बेतुकी बात।
बातों से काम नहीं चलता
काम करते समय या पावना देते समय कोई कोरी बातो मे टाले तब कहते हैं।
बातों हाथी पाइए, बातों हाथी पाँव
बातों से ही हाथी की सवारी मिलती है या उसके पाँवों तले कुचले जाते हैं।
बात कहिए जग-भाती, रोटी खाइए मन-भाती
बात दूसरो की रुचि के अनुकूल करनी चाहिए पर भोजन अपनी रुचि के अनुसार लेना चाहिए।
बदनाम जो होंगे क्या नाम न होगा
किसी भी तरह प्रतिष्ठा या प्रसिद्धि पाने की चेष्टा करने पर कहा जाता है।

बड़े तो थे ही छोटे सुभान अल्ला
बड़े मियां तो बड़े मियां छोटे मियां सुभान अल्ला

एक से एक धूर्त अथवा छोटे का बड़े से अधिक धूर्त होना।

बद बदी से न जाए तो क्या नेक नेकी से जाए

बुरा अगर बुराई न छोड़े तो क्या भले को भलाई छोड़ देनी चाहिए।

बाजार की गाली किसको, जो फिरके देखे उसको

कौन क्या कहता है, इसकी परवाह नहीं करनी चाहिए।

बाजार की मिठाई से निर्वाह नहीं होता

घर की रोटी खाये बिना काम नहीं चलता। (वेश्यापरक)

बाजार की मिठाई जिसने चाही उसने खाई

वेश्या के लिए कहा जाता है क्योंकि उसके पास कोई भी जा सकता है।

बाजार का सत्तू, बाप भी खाए बेटा भी खाए

यह भी वेश्यापरक है। अर्थात् ऐसी वस्तु जो सबके लिए सुलभ है।

बाप करे बाप के आगे आए, बेटा करे बेटे के आगे आए

जो जैसा करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है।

बाप का नाम उआ-मुआ, पूत का नाम जीते खां

साधारण हैसियत का आदमी जब शेखी बघारे तब कहा जाता है।

बाप की टांग तले आई और मां कहलाई

सम्मान योग्य न होने पर भी जब सम्मान देना पड़े तब कहा जाता है।

बाप की बारात बेटा जाए

संतान रहते दूसरा विवाह करने पर या असंगत काम व बात होने पर कहा जाता है।

बाप दिखा या गोर बता

या तो दो या न होने का सबूत दो।

बाप भला न भैया, सबसे बड़ा रुपैया

रुपयों के लिए सब नाते टूट जाते है।

बाप पेट में पूत ब्याहने चला

असंभव या हास्यजनक बात।

बाप मरा घर बेटा आया, इसका टोटा उसमें गया

जितना घाटा हुआ उतना मुनाफा हो गया। प्रायः व्यंग्य में कहा जाता है।

बाप मरे पर बैल बंटेंगे

लम्बे समय का वायदा।

बाप मारे का बैर है

जानी दुश्मनी है।

बाप से बैर पूत से सगाई

अस्वाभाविक बात।

बान जल गया पर बल न गए

रस्सी जल गई पर ऐंठ न गई अर्थात् नष्ट होने पर शेखी न गई।

बाबा कमावे बेटा उड़ावे

सर्चीले लड़के को कहते हैं।

बाबा जी चेले बहुत हो गए हैं, बच्चा, भूखों मरेंगे तो आप चले जाएँगे

मुफ्तखोरों के लिए कहा जाता है।

बाल की खाल, हिन्दी की चिन्दी

व्यर्थ की नुक्ताचीनी।

बालू की भीत, ओछे की प्रीत, पतुरिया की प्रीत, तितली का रंग

ये स्थायी नही होते।

बारह बरस काठ में रहे चलते दफे पाँव से गए

दुर्भाग्य की बात।

बारह बरस पीछे घूरे (कूड़ी) के भी दिन फिरते हैं

कभी न कभी अच्छे दिन आते हैं।

बारह बाँट, अट्ठारह पैंड़े

बहुत उलझा हुआ काम।

बासी बचे न कुत्ता खाए

गरीबी या कंजूसी के संदर्भ में कहा जाता है।

बिजली काँसे पर गिरती है

दुःख बड़े पर ही पड़ता है।

बिजली मेहमान घर मे नहीं तिनका

गरीब के घर में किसी बड़े आदमी का आना।

बिन गौं का बँधना

बिना तली का लोटा।

बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख

जो मिलने वाला होता है वह आप ही मिल जाता है माँगने से तो भीख भी नहीं मिलती।

बिन माँगे मिले सो दूध, माँगे मिले सो पानी

बिना माँगे जो चीज मिले वही अच्छी।

बिन रोये तो माँ भी दूध नहीं पिलाती

बिना माँगे अपनी इच्छा से कोई कुछ नही देता।

बिना बिचारे जो करे सो पाछे पछताय

काम सोच-विचार कर करना चाहिए अन्यथा पछताना पड़ता है।

विपत बराबर सुख नहीं जो थोड़े दिन होय

क्योंकि उसमे मनुष्य को बहुत अनुभव प्राप्त होते है।

विपत संघाती तीन जने जोरू, बेटा, भाय

विपता में पत्नी, पुत्र और भाई ही काम आते हैं।

बिफरे रिजाले और मूर्ख भले मानुष से डरिए

असंतुष्ट नीच और मूर्ख भले आदमी से डरना चाहिए।

बिनु सतसंग विवेक न होई

ज्ञान सत्संग से ही सम्भव है।

बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि लेय

पुरानी बातें भूलकर भविष्य का ध्यान रखना चाहिए।

बुड्ढे की न मरे जोरू, बारे की न मरे माँ

बुढ़ापे में स्त्री मरने से बड़ा कष्ट होता है और बालक की माँ मरने से वह अनाथ हो जाता है।

बुढ़िया की पैंठ बिना कब सरे ?

बुढ़िया को बाजार गए बिना चैन कहाँ ? जब कोई अपनी आदत नहीं छोड़ता तब कहते हैं।

बुढ़िया दीवानी हुई पराये बर्तन उठाने लगी

सयाने मूर्ख के लिए कहा जाता है।

बुड्ढा ब्याहे पड़ोसियों को सुख

हँसी में कहा जाता है।

बुरा कहने वाले पर तीन हर्फ

बुरा कहने वाले पर लीन (लाम+ऐन+नून) अर्थात् धिक्कार या थू।

बुरा बेटा खोटा पैसा वक्त पर काम आता है

बुरी चीज भी काम आती है।

बुरे भले में चार अंगुल का फर्क होता है

बुरे भले में बहुत अन्तर नहीं होता। वही काम थोड़ी सी सावधानी से सुधर जाता है और वही असावधानी से बिगड़ जाता है।

बूंद-बूंद पड़े घट (तालाब) भर जाता है

थोड़ा-थोड़ा करके काम पूरा हो जाता है।

बंद का चूका घड़े ढलकावे

मौके पर चूकने और बाद में सुधारने का प्रयास करने पर कहा जाता है।

बूंद से गई हौज से नहीं आती
बूंद का चूका घड़े छलकावै ।
बूंद से बिगड़ी हौज से नहीं सुधरती
बिगड़ा हुआ काम प्रयास करने पर नहीं बनता ।
बेअदब, बेनसीब, बाअदब, बानसीब
बड़ों का सम्मान करने वाला भाग्यवान और सम्मान न करने वाला अभागा होता है ।
बेकार मवास कुछ किया कर, कपड़े ही उधेड़ कर सीया कर
खाली बैठे रहने से कुछ न कुछ करना अच्छा है ।
बेकारी से बेगारी भली
बैठे रहने की अपेक्षा मुफ्त में ही दूसरों का काम कर देना अच्छा ।
बेखर्ची में आटा गीला
जब ऐसा काम सामने आ जाये जिस पर खर्च करना जरूरी हो और गाँठ में कुछ भी न हो तब कहा जाता है ।
बेटा खाय बाप लखाय, कलयुग अपना बल दिखलाय
पुत्र जब पिता की सुख-सुविधा का ध्यान न रखे तब कहा जाता है ।
बेहया की नाक कटी तो दो हाथ (सवा गज) और बढ़ी
वेशर्म को शर्म कहाँ ।
बैटा बन के सब खाते हैं, बाप बन के कोई नहीं खाता
प्रेम से बोलने वाले को सब चाहते है, रौब जमाने वाले को कोई नहीं ।
बेटा हुआ तब जानिए जब पोता खेले बार
पुत्र का होना तभी सार्थक है जब घर में पोता खेलता हो ।
बेटी का धन निभाना है, आते भी रुलाये जाते भी रुलाये
लड़की का होना अच्छा नहीं । उसके पैदा होने पर भी दुःख होता है और ब्याह के बाद जब ससुराल जाती है तो तब भी दुःख होता है ।
बैठे से बेगार भली
बेकारी से बेगारी भली ।
बैठे-बैठे तो कारूँ (कुबेर) का खजाना भी खाली हो जाता है
उद्योग न करने से धन समाप्त हो जाता है ।
बैरी बोल घिनावने, मरिए अपने बोल
मृत्यु तो अपने समय पर ही होती है पर बैरी के बोल सहे नहीं जाते ।
बोटी नहीं तो शोरवा ही सही
जो मिले वही बहुत ।

बोलते की आशनाई है

जब तक जीवन है तभी तक मित्रता है। मित्र के मरने पर दुःख प्रकट करते हुए कहा जाता है।

ब्याह नहीं किया, बरातें तो देखी हैं

स्वानुभव नही है पर दूसरों को करते तो देखा है।

ब्याह पीछे पत्तल भारी

जब उत्सव समाप्त हो जाता है तब उस सम्बन्ध में सामान्य खर्च भी एक बोझ मालूम पड़ता है।

ब्याह में बीद का लेखा

बेमौके का काम या बात। हर काम का एक समय होता है।

भंग पीना आसान है, मौजें जन मारती हैं

बिना जाने-बूझे काम तो कर डाला पर उसका परिणाम भोगना सरल नही।

भड़भड़िया अच्छा, पेट पापी बुरा

मन मे रखने वाला अच्छा नहीं होता।

मट्टी में हाथ डाले सोना होय

भाग्यवान के लिए कहा जाता है।

भले काम में देर कैसी

शुभस्य शीघ्रम्।

भला किया सो खुदा ने बुरा किया सो बन्दे ने

हमने बुरा ही किया—ऐसा भाव व्यक्त करने के लिए कहा जाता है।

भाई दूर, पड़ोसी नेरे

समय पर पड़ौसी ही काम आता है भाई नही।

भाई सो भाई बाकी सब छींके पर

भाई ही अपना होता है अथवा जो वस्तु अच्छी लगती है वही खाई जाती है।

भात खाने बहुतेरे काम दूल्हा-दुल्हन से

मुफ्तखोरों के लिए कहा जाता है।

भात छोड़ा जाता है साथ नहीं छोड़ा जाता

भोजन भले ही छोड दे पर यात्रा मे साथ नही छोड़ना चाहिए।

भारी पत्थर देखा चूमा और छोड़ दिया

अपने करने योग्य न जँचने पर होशियारी से हाथ खींच लेना ही उचित है।

भीख के टुकड़े बाजार में डकार

झूठी अकड दिखाना।

भीत टले पर बान न टले

बुरी आदत किसी तरह नही छूटती।

भीतर का घाव रानी जाने या राव

मन की व्यथा वही जानता है जो पीड़ित होता है।

भूआ की नदी में कौन बहे ?

व्यर्थ की शंका पड़ने पर या सुख सभी चाहते हैं—ऐसा भाव व्यक्त करने के लिए कहा जाता है।

भूख को भोजन क्या और नींद को बिछौना क्या

भूखे को जो भी मिल जाय वही खा लेता है और जिसे नींद आ रही हो वह बिछौने की परवाह नहीं करता।

भूख मीठी होती है

भूख मे रूखा-सूखा कुछ नहीं देखा जाता।

भूख में किवाड़ पापड़,
भूख में गूलर पकवान

भूख में जो भी मिले वही अच्छा।

भूखा मरता, क्या न करता

मरता क्या न करता ? बुभुक्षितम् किम् न करोति पापम्।

भूखा मरे कि सतुआ खाने

भूखा मरने की अपेक्षा सत्तू ही खाना अच्छा।

भूखा सो रूखा

भूखे को जल्दी क्रोध आता है।

भूखे घर में नोन निहारी

भूखे के लिए नमक ही नाश्ते की तरह है। उसे जो मिले वही बहुत है।

भूखे ने भूखे को मारा, दोनों को गश आ गया

गरीब या साधनहीनों—की लड़ाई पर कहा जाता है।

भूखे से कहा दो और दो क्या ? कहा, 'चार रोटियाँ'

भूखे को खाने के सिवा और कुछ नही सूझता।

भूनी भाँग न कड़ुवा तेल

ऐसा मनुष्य जिसके पास कुछ न हो।

भूल गए राग रंग भूल गए छकड़ी
तीन चीज याद रहीं, नोन तेल लकड़ी

गृहस्थी का चक्कर।

भोग-भोग, छत्तीसों राग

जितना भी हो सके, जीवन का आनन्द लूट लो।

मंगाई छोंट लाया ईंट, मंगाई हींग लाया अदरक

इच्छा के विरुद्ध काम करना या सुनी-अनसुनी करना।

मजनूं को लैला का कुत्ता भी प्यारा
प्रेमी को प्रेमिका की बुरी से बुरी चीज भी अच्छी लगती है।

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत
निराश कभी नहीं होना चाहिए।

मन चलता है पर टट्टू नहीं चलता
इच्छाएं तो बहुत हैं पर शरीर साथ नहीं देता।

मन जाने पाप, माई न बाप
अपने किए पाप को अपना मन ही जानता है, मां-बाप भी नहीं जानते।

मनमोदक नहिं भूख बुझाई
मात्र कल्पना से कार्य सिद्ध नहीं होते।

मनवा मर गया, खेल बिगड़ गया
हिम्मत हारने से काम बिगड़ जाता है।

मन में बसे, सो सपने दसे
जो बात मन में होती है वही स्वप्न में दिखाई देती है।

मरता क्या न करता ?
जीवन के लिए सब कुछ करना पड़ता है।

मरने को क्या हाथी-घोड़े जुड़ते हैं
जब चाहे तब मर जाए—उपेक्षा में कहा जाता है।

मरने जायें, मल्हार गावें
अवसर के विपरीत काम करना।

मरीजे इश्क को दीदार काफी है
प्रेम के रोगी के लिए अपने प्रिय को देख लेना काफी है।

मरे न जीये, हुकुर-हुकुर करे
बूढ़े रोगी के लिए कहते है जिसकी सेवा करते-करते घर के लोग थक जाते हैं।

मरे न पीछा छोड़े
किसी से परेशान होने पर कहा जाता है।

मरे न मांचा ले
न मरता है न चारपाई पर आराम से लेटता ही है। बहुत तंग आने पर कहा जाता है।

मां के पेट से कोई सीखकर नहीं निकलता
काम करने से ही आता है।

मांगे तांगे काम चले तो ब्याह क्यों करें ?
हंसी में कहा जाता है।

माँगन भलो न बाप से जो विधि राखे टेक
यदि विधाता निबाह दे तो बाप से माँगना भी अच्छा नहीं।
माँ नारंगी, बाप कोयला, बेटा रोशनउजोला
जब कोई छोटा आदमी अधिक दिखावा करे तब कहा जाता है।
माँ-बाप जीते कोई हराम का नहीं कहलाता
अपने किसी दावे का प्रमाण देने के लिए कहा जाता है।
माँ मारे और माँ ही माँ पुकारे
संतान का माँ के प्रति अपनापन।
माँड़ न जुरे, माँगे ताड़ी
हैसियत से अधिक शौक।
मान का माहुर अपमान का लड्डू
मान का जहर भी अच्छा है।
मान न मान, मैं तेरा मेहमान
जबर्दस्ती गले पड़ने पर कहा जाता है।
मान का पान हीरा समान
सम्मान से दी गई थोड़ी वस्तु भी बहुत है।
मन भावे तो ढेला सुपारी
मन को अच्छा लगने पर बुरी वस्तु भी अच्छी लगती है।
माया के भी पाँव होते हैं आज मेरे कल तेरे
लक्ष्मी एक जगह नहीं रहती।
माया तेरे तीन नाम परसू-परसा-परसराम
पैसे की इज्जत होती है।
माया से माया मिले कर कर लम्बे हाथ
धनी के पास ही और अधिक धन आता है अथवा धनी की सब इज्जत करते हैं।
माया से माया मिले, मिले नीच से नीच
पानी से पानी मिले, मिले कीच से कीच
जो जैसा होता है, वैसी ही संगति करता है।
मार खाता जाए और कहे मारो तो सही
कायर और निर्लज्ज के लिए कहा जाता है।
मारते के पीछे और भागते के आगे
कायर के लिए कहा जाता है।
माल मुफ्त, दिले बेरहम
दूसरे का माल बेरहमी से खर्च करने पर कहा जाता है

मिलकी ना कहे दिलकी, बंठे दरवाजे निकले खिड़की

धनी कब कौन सा काम किस तरह करता है कोई जान नही पाता ।

मिल गए की सलाम आलेक है

झूठे मित्र के लिए कहा जाता है ।

मीजान ज्यों का त्यों, कुनबा डूबा क्यों

अल्पविद्या भयंकरी ।

मीठा और कठौत भर

अच्छी चीज कम ही मिलती है या दुहरा लाभ होने पर भी कहा जाता है ।

मीठा-मीठा हप, कड़ुआ-कड़ुआ थू

अच्छी चीज लेना और बुरी चीज छोड़ देना ।

मीठे से मरे तो माहुर क्यों दीजे ?

गुड़ दिये मरे तो जहर क्यों दीजे ।

मीर साहब की जात आली है, मुंह चिकना पेट खाली है

शौकीनी पर व्यंग्य ।

मीर साहब जमाना नाजुक है, दोनों हाथ से थामिए दस्तार

अपनी इज्जत बचाइये ।

मीर्रा गोर बराबर

जितने बड़े मियां उतनी ही बड़ी उनकी कब्र । आमदनी-खर्च बराबर ।

मुंह मांगी तो मौत भी नहीं मिलती

चाहा नही होता ।

मुंह लगती सब कहते हैं, खुदा लगती कोई नहीं कहता

सब मुलाहिजे मे पक्षपात करते हैं, सच नही कहते ।

मुंह से निकली हुई पराई बात

बात मुंह से निकली नही कि सबको मालूम हो जाती है ।

मुंह से लाम काफ मत निकालो

बदजुबानी मत करो ।

मुफ्त का माल किसको बुरा लगता है

मुफ्त का माल सबको अच्छा लगता है ।

मुफ्त का सिरका शहद से मीठा

मुफ्त की बुरी चीज भी अच्छी लगती है ।

मुफ्त की दावत में फकत रोटी ही गोश्त है

मुफ्त का रूखा भी खाने को मिले तो वह भी अच्छा ।

मुफ्त की शराब काजी को भी हलाल

मुफ्त का माल किसको बुरा लगता है ।

मुर्दा बदस्त जिन्दा जो चाहिए सो कीजै
    मुर्दा जिन्दे के हाथ में, उसका चाहे जो करो।
मुर्दे को बैठकर रोते हैं, रोजगार को खड़े होकर
    जीवन से जीविका भारी है।
मुल्के खुदा तंग नेस्त, पाये मरा लंग नेस्त
    उद्योगी पुरुष का अपने पर विश्वास व्यक्त करना।
मूंज की टट्टी गुजराती ताला
    अरहर की टट्टी गुजराती ताला।
मूंजी का माल, निकले फूट के लाल
    मूंजी का माल हजम नहीं होता।
मूंजी को नमाज छोड़ के मारे
    दुष्ट को जब देखे तब मारे।
मूरख का बल मौन
    मूर्ख अगर चुप रहे तो उसकी मूर्खता प्रकट नहीं होती।
मोजे का घाव मियाँ जाने या पाँव
    जिसका कष्ट वही जानता है।
मौके का घूंसा तलवार से बढ़कर
    समय पर किए गए काम का नतीजा अच्छा होता है।
मूर्ख को समझाइए, ज्ञान गाँठ को जाए
    मूर्ख को उपदेश देना व्यर्थ है।
मूली हाथ पराईयाँ, जिस चाहे तिस दे
    दूसरे के हाथ की बात है वह चाहे जो करे, हम क्या कर सकते हैं।
मेंह बरसेगा तो बौछार आ ही जाएगी
    कोई उदार हृदय खर्च करेगा तो हमें भी कुछ न कुछ मिल ही जाएगा।
मेरे मेरे मुंह की सी, तेरे तेरे मुंह की सी करता फिरता है
    चापलूस के लिए कहा जाता है।
मेहर है पर दूध नहीं
    झूठी आवभगत।
मोम हो तो पिघले, कहीं पत्थर भी पिघलता है
    कंजूस और कठोर आदमी के लिए कहा जाता है।
मौत के आगे सब हारे हैं
    मौत पर किसी का वश नहीं चलता।
यकीन बड़ा रहबर है
    विश्वासो फलदायकः।

यह कै फाकों में सीखे थे ?

आपने यह जो लाजवाब बात कही, वह कितने उपवास करने के बाद सीखी थी ?

यह घोड़ा किसका ? 'जिसका मैं नौकर', तू नौकर किसका ? 'जिसका यह घोड़ा ?'

किसी बात का सीधा उत्तर न देना। घुमा-फिराकर बात करना।

यह बात वह बात टका धर मोरे हाथ

बार-बार अपने ही मतलब की बात कहने वाले से कहा जाता है।

यह वह गुड़ नहीं जो चिऊँटी खाए

कंजूस या सतर्क आदमी की चीज के लिए कहा जाता है।

यथा नाम तथा गुणा

नाम के अनुरूप गुण।

यहाँ उल्टी गंगा बहती है

यहाँ सब काम उल्टे होते हैं।

या करे दर्दमंद या करे गरजमंद

या तो दुखी खुशामद करता है या गरज वाला।

या बेईमानी तेरा ही आसरा

बेईमानी करने पर कहा जाता है।

यार वही जो भीड़ में काम आवे

मित्र वही जो विपद् में काम आवे।

याराँ चोरी न पीराँ दगाबाजी

मित्रों से मन की बात छिपाना और सन्तों को ठगना अच्छा नहीं।

रँडुआ गया सगाई को आपको लाभ या भाई को

स्त्री की उसे भी जरूरत है इसलिए वह पहले अपना मतलब पूरा करेगा या दूसरे का ? उसे भेजा ही नहीं जाना चाहिए था।

रक्खा तो चश्मों से, उड़ा दिया तो पश्मों से

नौकर का कथन—रखते हैं तो ठीक नहीं तो परवाह नहीं या किसी को पहले आदर से रखना और फिर अनादर करके भगा देना।

रखिए मेलि कपूर में हींग न होय सुगन्ध

स्वभाव कभी नहीं बदलता।

रजील की दो न अशराफ की सौ

नीच की दो गालियाँ भी भले आदमी की सौ गालियों के बराबर हैं।

रस दिये मरे तो विष क्यों दीजे

गुड़ दिये मरे तो जहर क्यों दीजे ?

रस्सी जल गई पर ऐंठ न गई, रस्सी जल गई पर बल न गए
बुरी दशा होने पर भी अकड़ न छूटना।

रहना भला विदेश का, जहां न अपना कोई
किसी वीतराग का कथन।

रहे झोपड़ी में ख्वाब देखे महलों का
उच्चाकांक्षा रखना।

रांड, भांड और सांड बिगड़ें बुरे
ये तीनों नाराज होने पर विकट रूप धारण कर लेते हैं।

रांड, सांड, सीढ़ी, संन्यासी, इनसे बचे तो सेवे काशी
स्पष्ट है।

राई रत्ती भर नाता नहीं, गाड़ी भर आशनाई
हमें किसी से कोई मतलब नहीं या मित्रता की अपेक्षा साधारण रिश्तेदारी अच्छी चीज है।

राज का दूजा, बकरी का तीजा दोनों खराब
राजा के दो लड़के हों तो वे राज्याधिकार के लिए लड़ते हैं और दो थन वाली बकरी के तीन बच्चे हुए तो उन्हें भरपेट दूध नहीं मिलता।

रात गई, बात गई
समय नष्ट हुआ काम न हुआ, रात की बात रात के साथ गई या चर्चा मत करो आदि भावों को व्यक्त करने के लिए कहा जाता है।

रात थोड़ी, कहानी बड़ी
थोड़े समय में पूरा नहीं होगा—ऐसा भाव व्यक्त करने के लिए कहते हैं।

रात थोड़ी स्वांग बहुत
काम अभी बहुत करना है—ऐसा भाव प्रकट करने के लिए कहा जाता है।

रात भर गाई-बजाई, लड़के के नूनी ही नहीं
जिस काम के लिए आडम्बर किया जाय वह असफल सिद्ध हो तब कहा जाता है।

रात माँ का पेट
सब कष्टों को भुला देती है या बुरे कार्यों को ढक लेती है।

रानी को राना प्यारा, कानी को काना प्यारा
अपनी वस्तु सभी को प्यारी होती है अथवा जो जैसा होता है वह वैसे ही को पसन्द करता है।

रानी गई हाट, रीझकर लाई चक्की के पाट
बड़े आदमियों की सनक के सम्बन्ध में कहा जाता है।

रानी दीवानी हुई औरों को पत्थर अपनों को लड्डू मारकर
होशियार पागल। देखने में सिडी पर वास्तव में बडा चतुर।
रानी से कौन कहे, 'आगा ढक'
बड़ों को कौन उपदेश दे।
राह पड़े जानिए या वाह पड़े जानिए
साथ होने या काम पड़ने पर ही पहचान होती है।
रीझेंगे तो पत्थर ही मारेंगे
ओछे या नीच प्रसन्न होने पर भी कष्ट ही पहुँचाते हैं।
रूठे को मनाय नहीं, फटे को सिलाय नहीं तो काम कैसे चले
रूठे को मनाया न जाय तो वह रूठा ही बैठा रहेगा और फटे कपड़े को न सिला जाय तो और फट जाएगा।
रूठे बाबा, दाढ़ी हाथ बेचारे क्या करें
बेचारे क्या करें ? (बेबसी की स्थिति पर कहा जाता है।)
रूप रोवे, भाग खावे
भाग्य ही बड़ी चीज है।
रो के पूछ ले हँस के उड़ा दे
ऐसा धूर्त जो सहानुभूति दिखाकर भेद की बात जान ले और बाद में उसकी हँसी उड़ाता फिरे।
रोग का घर खाँसी, लड़ाई का घर हांसी
स्पष्ट है।
रोग तथा शत्रु को छोटा न समझ
रोग और शत्रु को बढ़ने देना मूर्खता है।
रोगी को रोगी मिला कहा, 'नीम पी'
जिसे जिस बात का अनुभव होता है, वही दूसरों को बताता है।
रोजगार और दुश्मन बार-बार नहीं मिलता
इन्हें नहीं छोड़ना चाहिए।
रोटी पड़ी तो पेट में हो गया मस्त शरीर
भूख न लागे जीव को, लाख जतन तदबीर।
पेट भरा होने पर ही आदमी को काम सूझते हैं।
रोटी पर का घी गिर पड़ा, मुझे रूखी भाती है
किसी वस्तु के हाथ से निकल जाने पर झेंप मिटाना।
रोटी वहां खाना तो पानी यहां पीना
बहुत जल्दी आना।

रोते गए, मुए की खबर लाए

बेमन से काम करने और असफल होने पर कहा जाता है।

रो में सब रवाँ है

धुन में जो भी किया जाय वही ठीक है।

लग गई जूती उड़ गई खेह, फूल पान सी हो गई देह

निर्लज्ज के लिए कहा जाता है।

लड्डू कहे, मुँह मीठा नहीं होता

बातो से काम नही चलता। नाम से गुण प्रकट नहीं होता।

लड़की तेरा ब्याह कर दें, कहा, 'मैं कैसे कहूँ'

कोई संकोच की बात बड़ो से कैसे कही जाती है।

लड़कों में लड़का, बूढ़ों में बूढ़ा

सीधा-सादा या सर्वप्रिय।

लड़ाई में लड्डू नहीं बंटते हैं

लडाई कोई अच्छी चीज नही होती है।

लड़का जने बीबी, पट्टी बाँधे मियाँ

दर्द किसी को हो और रोता फिरे कोई।

लाचारी का नाम महात्मा गांधी

गांधी जी के राजनीतिक विचारो के विरोधियों का कथन।

लाठी मारे पानी जुदा नहीं होता

रिश्तेदारी झगड़े से नही टूटती।

लात खाय पुचकारिये होय दुधारू धेनु

गुणी पुरुष के ऐब को भी सहन करना चाहिए।

लारा-लीरी का यार कभी न उतरे पार

जरूरत से ज्यादा सोच-विचार करने वाले का काम पूरा नही होता।

लालखाँ की चादर बड़ी होगी तो अपना बदन ढँकेगा।

किसी के पास धन हो तो हमे क्या ?

लाल गुदड़ी में नहीं छिपते

श्रेष्ठ मनुष्य बुरी स्थिति मे भी नही छिपता।

लालच बुरी बलाय

लालच सबसे बड़ा दुर्गुण है।

लातों के देव, बातों से नहीं मानते

नीच समझाने से नहीं समझते।

ले-दे आटा कठौती में

घुमा-फिराकर अपने ही पास रखने पर कहा जाता है।

लड़तों के पीछे और भागतों के आगे
कायर के लिए कहा जाता है।
लड्डू लड़े पूरा झरे
दो बड़ों की लड़ाई मे दूसरो को लाभ होता है।
लाग लागी तब लाज कहाँ
प्रेम होने पर लाज शर्म अलग रखी रहती है।
लाचारी पर्वत से भारी
मजबूरी में न जाने क्या क्या करना पड़ता है।
लाड़ का नाम भनभार खातून
लाड़ का नाम लड़ाकू बिटिया। प्रेम में बच्चों के अजीब अजीब नाम रख दिये जाते हैं।
लाड़ला लड़का जुवारी और लाड़ली लड़की छिनाल
बहुत लाड़ करने से बच्चे बर्बाद होते हैं।
लात मारी झोपड़ी, चूल्हे मियाँ सलाम
जिसका रहने का कोई ठिकाना न हो उसके लिए कहते हैं।
लाएगा दारा तो खाएगी दारी, न लाएगा दारा तो पड़ेगी ख्वारी
पुरुष कमाकर लायेगा तो स्त्री खाएगी नहीं तो झगड़ा होगा। गृहस्थी के बखेड़ों पर कहा जाता है।
ले के दिया काम के खाया, ऐसी तैसी जग में आया
जो दूसरों का पैसा लेकर न दे उसके लिए कहा जाता है।
वक्त का रोना बेवक्त के हँसने से बेहतर है।
हर काम अपने समय पर ही अच्छा होता है।
वक्त की खूबी है
समय का प्रभाव है। (व्यंग्य)
वक्त निकल जाता है बात रह जाती है
जब कोई किसी की सहायता नहीं करता या शिकायत दूर नहीं करता तब कहा जाता है।
वह कौन सी किशमिश है जिसमें तिनका नहीं
कुछ न कुछ दोष सभी मे होते हैं।
वह कौन सी टपरी जो हमसे छपरी
वह कौन सा घर है जो हमसे छिपा है तुम हमें क्या सिखाओगे, हम सब जानते हैं।
वह गुड़ नहीं जो मक्खी बैठे
तुम्हारी बात में आने से रहे या तुम्हें कुछ प्राप्त नहीं होगा।

वह गुड़ नहीं जो च्यूँटिया खाँय
 वह गुड़ नही जो मक्खी बैठे ।
वह डूबे मँझधार जिन पर भारी बोझ
 दुष्कर्मी के लिए कहा जाता है ।
वही तीन बीसी, वही साठ, वही चारपाई, वही खाट
वही मन वही चालीस सेर
 एक ही बात । किसी तरह कहो ।
वह बरबारी जल गया
 वह जगह ही नष्ट हो गयी । अब कोई आशा नही ।
वह बात कोसों गई
 मौका दूर निकल गया । अब नहीं मिलने का ।
वार वाले कहें पार वाले अच्छे, पार वाले कहें वार वाले अच्छे
 हर आदमी अपनी अपेक्षा दूसरों को सुखी समझता है । अपनी दशा से किसी को संतोष नहीं होता ।
वाह मियाँ काले, खूब रंग निकाले
 अपनी शक्ल ही बदल डाली —ऐसा भाव व्यक्त करने पर कहते हैं ।
वाह मियाँ बाँके, तेरे बगले में सौ सौ टाँके
 छैल-चिकनियों के लिए व्यंग्य में कहा जाता है ।
वा सोने को जारिए जासों टूटे कान
 अच्छी वस्तु भी यदि हानि पहुँचाए तो उसे त्याग देना चाहिए।
शक्कर दिए मरे तो जहर क्यों दीजे
 गुड़ दिए मरे तो जहर क्यों दीजे ?
शगल बेहतर है इश्कबाजी का, क्या हकीकी और क्या मजाजी का
 प्रेम का धन्धा ही अच्छा है, फिर चाहे वह आध्यात्मिक हो या लौकिक ।
शर्म की बहू नित भूखों मरे
 शर्म से काम नहीं चलता । जाने की शरम ताके फूटे करम ।
शहद लगाकर चाटो
 ऐसा दस्तावेज जिस पर कार्यवाही [illegible] मियाद से बाहर हो गया हो ।
शादी है गुड्ड गुड़ियों का
 गर्भ तो होगा ही ।
शाम में क्या मुर्गे पढ़ेंगे
 शाम में क्या बढ़ा मन

शाम के मुर्दे को कब तक रोयें
इस तरह कैसे पूरा पड़ेगा। सारी रात कोई रो नहीं सकता।
शाहजहाँ बूढ़े, बगल में छड़ी, खाते-पीते विपत पड़ी
बुढापे में कष्ट होता है।
सखी की कमाई में सब का साझा
क्योंकि दाता सबको बाँटकर खाता है।
सखी के माल पर पड़े सूम की जान पर पड़े
दाता का केवल धन खर्च होता है पर कजूस के प्राणों पर आ बनती है।
सखी से भेंटा नहीं तो सूम से क्यों बिगाड़े ?
मित्रता तो हरेक से रखनी चाहिए।
सखी से सूम भला जो तुरत दे जवाब
देने में जो बहुत टालमटोल करे उससे कहा जाता है।
सच और झूठ में चार अंगुल का फर्क होता है
आँखों देखी और कानों सुनी बात में बड़ा अन्तर होता है।
सच कहे सो मारा जाय
सच बात किसी को अच्छी नहीं लगती।
सच की ससी बुरी होती है
सच की पकड़ बुरी होती है। लोग सच से घबराते हैं।
सच बात कड़ुई लगती है
सच्ची बात अच्छी नहीं लगती।
सच बोलना आधी लड़ाई मोल लेना है
सच बात किसी को अच्छी नहीं लगती।
सच है हरामजादे की रस्सी दराज है
दुष्ट का अन्त मुश्किल से आता है।
सच्चे के आगे झूठा रो मरे
सच्चे के आगे झूठे की नहीं चलती।
सठ सुधरहिं सत्संगति पाई
सत्संगति से दुष्ट भी सुधर जाते हैं।
सड़ी साहिबी और गच का सोना
झोपड़ी में रहकर महलों के ख्वाब देखना।
सत हारा गया मारा
जो सत्य छोड़ देता है, वह मारा जाता है।
सत्तू खाके शुक्र क्या
तुच्छ वस्तु पाकर प्रशंसा क्या ?

सदा दौर-दौरा यह रहता नहीं, गया वक्त फिर हाथ आता नहीं

दबदबा हमेशा बना नही रहता और समय गुजर गया तो वापस नही लौटता।

सब घर मटियाले चूल्हे

सब घरों का एक ही हाल है या कोई न कोई बुराई मौजूद है।

सबसे बेहतर है मियाँ साहब सलामत दूर को

किसी से अधिक घनिष्ठता बढ़ाना ठीक नही।

सब ही बात खोटी, सिरे दाल रोटी

दाल-रोटी ही मुख्य है।

सबेरे का भूला सांझ को भी घर आवे तो भूला नहीं कहलाता

भूल को जल्दी सुधार ले तो अच्छा है। या भूल सुधारने वाले को दोष नही।

सभा बिगारे तीन जने—चुगल, चूतिया, चोर

जिस सभा मे ये तीन मौजूद हो उसका आनन्द जाता रहता है।

समझने वाले की मौत है

समझदार को ही सब कुछ भुगतना पड़ता है या वह चुप नही रह पाता इसलिए भी मुसीबत है। समझदार की मौत है।

समझा और पत्थर हुआ

समझदार अपनी बात या विचारों को आसानी से नही छोड़ता।

समझो न बूझो खूँटा लेके जूझो

बिना समझे हठ करना। दुराग्रही होना।

समय चुके पुन का पछताने

अवसर निकल जाने पर पछताना व्यर्थ है।

समय की बात है

कभी सबल को भी निर्बल के सामने झुकना पड़ता है।

समय समय सुन्दर सभी, रूप कुरूप न कोय

अपने अपने समय पर सभी सुन्दर लगते हैं।

सयाने का गू तीन जगह

होशियार ही धोखा खाता है।

सबाब न अजाब, कमर टूटी मुफ्त में

निष्फल परिश्रम पर कहा जाता है।

सवाल दीगर, जवाब दीगर

पूछा जाय कुछ, जवाब मिले कुछ।

ससुराल सुख की सार, जो रहे दिना दो चार

ससुराल में आनन्द है पर वहाँ अधिक नही रहना चाहिए।

सांचो कोई न माने, झूठों जग पतियाय

सच बात कोई नहीं मानता, झूठ सब मान लेते है।

सांभर जाय अलोना खाय

मूर्खता या आलस्य की बात है।

सांभर में नोन का टोंटा

वस्तु की प्रचुरता होने पर भी अभाव की स्थिति।

सांभर में पड़ा सो सांभर हुआ

समाज आदि के प्रभाव से बचना कठिन होता है।

साठा सो पाठा, बीसी सो खीसी

पुरुष साठ वर्ष तक भी जवान रहता है और स्त्री बीस वर्ष मे ही बूढी दिखलाई देने लगती है।

सात पांच की लाकड़ी एक जने का बोझ

सबकी सहायता से काम आसान हो जाता है।

सात पांच मिल कीजे काज हारे जीते आवे न लाज

कोई कार्य दस-पांच लोगों की सलाह लेकर करना चाहिए, ऐसा करने से अगर वह बिगड़ भी जाए तो शर्मिन्दगी नही उठानी पड़ती।

सात पांच का भानजा न्योता ही न्योता फिरे

सात मामा का एक भानजा भूखा ही भूखा पुकारे

जिस काम के जिम्मेदार बहुत हों वह अधूरा ही रहता है।

साथ जोरू खसम का

जीवन पर्यन्त सच्चा साथ तो पति-पत्नी का ही रहता है।

सार पराये पीर को क्या जाने अनजान

अनुभवहीन दूसरे के कष्ट को गहराई से नही समझ पाता।

सार-सार को गहि रहे, थोथा देय उड़ाय

तत्व की बात ग्रहण कर लेनी चाहिए और व्यर्थ की बात छोड़ देनी चाहिए।

सारा गांव जल गया, काले मेघा पानी दे

हानि होने पर उपाय सोचना।

सारा शहर जल गया बी फातमा को खबर हो नहीं

अपने मे ही मस्त रहने पर कहा जाता है।

सारी उम्र काठ में रहे चलते वक्त पांव गए

भाग्यहीन के लिए कहा जाता है।

सारी खुदाई एक तरफ, जोरू का भाई एक तरफ

साले की लोग बड़ी कद्र करते हैं इसलिए कहा जाता है अथवा सारी सृष्टि एक ओर और ईश्वर की महिमा एक ओर।

सारी जाती देखकर आधी लेय बचाय

सब कुछ नष्ट होने की स्थिति मे कुछ भी बचा लेना ठीक है।

सारी देग में एक ही चावल देखते हैं

नमूना देखकर ही माल का पता लगता है या छोटी बात से ही मन का सारा भेद जान लिया जाता है।

सारी रमायन सुनो 'सीता किसकी जोरू थी ?' सारी रात कहानी सुनी सुबह को पूछै, 'सुलेखा औरत थी या मर्द ?'

ध्यान से न सुनना, भूल जाना या समझ न पाना।

सावन के अन्धे को हरा ही हरा सूझता है

हर आदमी दूसरो का हाल भी अपने जैसा समझता है।

सावन में हुए सियार, भादों में आई बाढ़, ऐसी बाढ़ कभी नहीं देखी थी

छोटी आयु वाले का बड़े-बूढो जैसी बात करने पर या दूर की हांकने पर कहा जाता है।

सावन साग न भादों दही, क्वार मीन न कातिक मही

सावन मे हरा साग, भादो में दही, क्वार में मछली और कार्तिक मे छाँछ ठीक नही होते।

सारे दिन ऊनी-ऊनी, रात को चरखा-पूनी

बेसमय का काम करना।

सिड़ी है तो क्या पर बात ठिकाने की कहता है

मूर्ख भी कभी-कभी समझदारी की बात करते है।

सिफले की मौत माघ

माघ मे गरीब की मौत आती है।

सियाह करो या सफेद

कुछ तो करो या सब तुम पर निर्भर है।

सीखो बेटा सोई जामें हँडिया खुदबुद होई

ऐसी विद्या पढ़ो जिससे गुजर-बसर हो सके।

सुख के सब साथी हैं, सुख संपत का सब कोई है

सुख मे सभी मित्र बनते हैं,दुःख मे कोई नही पूछता।

सुख में आये करमचन्द, लगे मुंड़ावन गंज

बैठे-ठाले मुसीबत मोल लेना।

सुख से दुःख भला जो थोड़े दिन का होय

दुःख में ही अनेक नये-नये अनुभव होते हैं।

सुघड़ बलैयाँ ससुरा ले, बैल माँग बहू को दे

होशियार को सभी चाहते हैं।

सुता जो राखै चोरी पर तो पगड़ी पत रख मोरी पर

जो चोरी की नीयत रखता है उसे अपनी इज्जत को भी एक ओर रखना पड़ता है।

सुनिए सबकी करिए मन की

सबकी सुने पर करे वही जो अपने मन में जँचे।

सुपने में राजा भए दिन को वही हवाल

सपने की बात सच्ची नहीं होती।

सुबह का भूला शाम को घर आवे तो भूला नहीं कहलाता

सवेरे का भूला साँझ को घर आवे तो भूला नहीं कहलाता।

सुबह होती है, शाम होती है उम्र यों ही तमाम होती है

जीवन की नश्वरता पर कहा जाता है।

सुहाते की लात न सुहाते की बात

प्रिय जन की लात भी सही जाती है पर अप्रिय की बात भी बुरी लगती है।

सूखे लकड़ी की तरह, खाये बकरी की तरह

खाए तो बहुत फिर भी दुर्बल। सूखा रोग।

सूझे न बिटौरा, चांद से राम-राम

उपलों का टीला तो दीख न पड़े और चले हैं दूज का चाँद देखने।

सूझे नहीं और गुलेल का शौक

योग्य न होने पर भी करने का चाव।

सूरज धूल डालने से नहीं छिपता

बड़े बुराई करने से बुरे नहीं बन जाते या तेजस्वी का तेज छिपता नहीं।

सूरदास खल कारी कामरि पर चढ़ै न दूजो रंग

दुष्ट अपना स्वभाव नहीं छोड़ता।

सीरत अच्छी सूरत अच्छी

अच्छे व्यवहार से सूरत भी अच्छी लगती है।

सेज चढ़ते ही रांड

जीत के समय मृत्यु, जीती बाजी हार जाना या बना-बनाया काम बिगड़ जाना।

सेंत का चूना दादा की कब्र

मुफ्त का माल सभी उड़ाना चाहते हैं।

सेर की हांडी में सवा सेर पड़ी और उफानी

ओछे को थोड़ी सफलता मिली और उसका दिमाग फिरा।

सेवा करे मेवा पाये

सेवा का फल अच्छा।

सोटा बल बिन काम न आवे, बेरी छीन तुझे गुदका वे
बिना बल के लाठी से स्वयं मार खाना।

सोटे बल अब तेरी बारी
अन्तिम उपाय काम में लाने पर कहा जाता है।

सो ताको सागर जहाँ जाकी प्यास बुझाय
जिसकी जिससे तृप्ति हो वही उसके लिए सर्वोपरि है।

सोते को सोता कब जगाता है
अज्ञानी को अज्ञानी नही सुधार सकता।

सोना छुवे मिट्टी हो
अभागे कर्महीन को कहते है।

सोने की कटार को कोई पेट में नहीं मारता
बड़े से बड़े लाभ के लिये कोई प्राण नही दे सकता।

सोने की कटोरी में कौन भीख नहीं देगा
सुन्दर कन्या को वर मिलने मे देर नही लगती या धनी को आसानी से कर्ज मिल जाता है।

सोने की अँगूठी पीतल का टाँका, माँ छिनाल पूत बाँका
अच्छी वस्तु मे एक ऐब होने से पूरी वस्तु बुरी हो जाती है।

सोने की गँडुवा और पीतल की पेंदी
अशोभन कार्य या अच्छाइयाँ होते हुए भी कोई बड़ा दोष होना।

सोने का निवाला खिलाइये और शेर की नजरों से देखिए
बच्चों के लालन-पालन के सम्बन्ध मे कहते हैं।

सोने की बड़ेरी फूस का छप्पर
विवेकहीनता या असंगत कार्य।

सोने को सलाम रूपे को आलेक, भूखे को न देख
धनी की इज्जत, गरीब की पूछ नही।

सोवे भाड़ पर, सपना देखे धरोहर का
साधारण मनुष्य के बड़ी-बड़ी इच्छाएँ करने पर या डींग हाँकने पर कहा जाता है।

सोहनी बुवा और चटाई का लंहगा
बेतुका शौक।

सोने में सुगन्ध
गुणी मे और भी महत्वपूर्ण गुण।

सेर को सवा सेर
जबर्दस्त या चालाक को भी कोई मिल ही जाता है।

हँसते ही घर बसता है
प्रेम-सम्बन्ध हो जाता है।
हँसते हो कुछ पड़ा पाया है
व्यर्थ हँसने पर कहा जाता है।
हँसी में खँसी
बहुत हँसने से खाँसी आती है अर्थात् बुराई उत्पन्न होती है।
हँसे तो औरों को रोवे तो अपनों को
खुशी के साथी दुःख में साथ नहीं देते।
हँसे तो हँसिए, अड़े तो अड़िए
जो जैसा करे उसके साथ वैसा ही करे।
हक कहे से अहमक बेजार
मूर्ख को सच से चिढ़ होती है। या वह सच बोल नही पाता।
हक कहे से मारा जाय
सच कहने वाले को जान से हाथ धोना पडता है।
हक, हक है, नाहक नाहक
सही सही है और गलत गलत।
हग न सकें पेट को पीटें
स्वयं काम न कर सकें दूसरों को दोष दें।
हगा न घर रखा
दोनों दीन से गये। न इधर के रहे न उधर के।
हजार आफतें हैं एक दिल लगाने में
प्रेम करना एक मुसीबत की चीज है।
हजार जूतियाँ मारूँ और एक न गिनूँ
बहुत पीटने के लिये कहा जाता है।
हजार जूतियाँ लगीं और इज्जत न गई
बेशर्म के लिए कहा जाता है।
हजार नियामत और एक तन्दुरस्ती
तन्दुरस्ती हजार नियामत है।
हजार बरस का रेजा और नन्हीं नाव
सयाना व्यक्ति जब अपने को भोला और अनजान बताए तब कहते हैं।
हजार लाठी टूटें तो भी घरबार के बासन तोड़ने को बहुत हैं
बूढ़ा हुआ तो क्या दम तो है।
हड्डी खाना आसान पर पचाना मुश्किल
रिश्वतखोरों के लिए कहा जाता है।

हथेली पर जहर रखा रहे खायेगा सो मरेगा

खतरनाक काम से हानि होगी ही।

हनोज दिल्ली दूर है

अभी दिल्ली दूर है।

हनोज रोज अव्वल

अभी तो पहला ही दिन है, सुधार हो सकता है।

हप-हप झप-झप खाते हो धन्धा करते तजते प्राण

कामचोर के लिए कहा जाता है।

हम चौड़े, बाजार संकरा

अहंकारी जो अपने को बड़ा और दूसरों को छोटा समझता है।

हमने भी तुम्हारी आंखें देखी हैं

हम भी तुम्हारी ही तरह हैं, हमें धौंस मत दिखाओ।

हम प्याला और हम निवाला

एक साथ खाने-पीने वाले मित्र या निकट के सम्बन्धी।

हम रोटी नहीं खाते, रोटी हमको खाती है

आदमी को पेट की चिन्ता सताती है।

हम ही को करना सिखाने आया है

हम को ही बेवकूफ बनाने आया है।

हमारे घर आओगे क्या लाओगे ? तुम्हारे घर आवेंगे क्या खिलाओगे ?

हर हालत में अपना ही मतलब देखना।

हमारे दादा ने घी खाया और हमारा हाथ सूंघो

अयोग्य जब पुरखों की बड़ाई करे तब कहा जाता है।

हमारे घर से आग लाई, नाम धरा बैसांदुर

दूसरे की मांगे की चीज पर घमण्ड करना अथवा उपकार न मानने पर कहा जाता है।

हमारे बड़े बरदे आजाद करते थे

जो दूसरों का पैसा खर्च करवाकर यश लूटे उसके लिए कहा जाता है।

हम्माम की लुंगी, जिसने चाही उसने बांध ली

सर्व साधारण के काम की वस्तु के प्रति कहा जाता है।

हर निवाले बिस्मिल्ला

जो खाने को तो तैयार रहे पर काम कुछ न करे ऐसे निठल्ले से कहा जाता है।

हर बार गुड़ मीठा

हर बार सफलता की चाहना करने पर कहा जाता है।

हराम का बोल उठता है, हलाल का झुक जाता है
असल जहां नम्र होता है, कम-असल बेधड़क बोलता है।
हराम कोठे चढ़ के पुकारता है
बुरा काम छिपा नहीं रहता।
हराम खाना और शलजम
ईमान ही बिगाड़ना है तो छोटी चीज पर क्यों बिगाड़ें ?
हराम चालीस घर लेकर डूबता है
दुश्चरित्र अपने साथ दूसरों को भी बदनाम करता है।
हरामजादे की रस्सी दराज है
बदमाशों से कोई कुछ नहीं कह पाता।
हराम में बड़ा मजा है
हरामखोरी करने वालों पर व्यंग्य।
हल्दी लगे न फिटकरी, पटाक बहू आन पड़ी
जब कोई मुफ्त में ही काम बना ले तब कहा जाता है।
हां जी हां जी सबसे कीजे, करिए अपने मन की
स्पष्ट है।
हांडी का भात छुपे, मुंह की बात न छुपे
मुंह पर आई बात नहीं छिपती, प्रकट होकर रहती है।
हांसी बैरी बइयर की, खांसी बैरी चोर की
हंसी-दिल्लगी से औरत बिगड़ती है और खांसने से चोर पकड़ा जाता है।
हाजिर मारे गाफिल रोवे
जो मौके पर होता है वही लाभ उठाता है जो चूक जाता है वह पछताता है।
हाड़ों ढेरी या दामों ढेरी
या तो मर जाए या खूब रुपया पैदा करे।
हाथ का दिया साथ खाने लगा
धृष्ट के लिए कहा जाता है।
हाथ के सांकल मुंह के प्यार
दिखावटी प्रेम।
हार मानी, झगड़ा जीता
एक हठ छोड़ दे तो झगड़ा मिट जाता है।
हारूं तो हूरूं, जीते तो हूरूं
हार हो या जीत पर नोचूंगा अथवा इच्छा के विरुद्ध किसी से काम नहीं लिया जा सकता।
हारे के हर नाम
असहाय को ईश्वर का नाम सूझता है या हारे हुए को चाहे जो कह लो।

हारे भी हरावे, जीते भी हरावे
सब तरह से अपनी ही जीत चाहने वाले से कहा जाता है।

हाल गया अहवाल गया, दिल का ख्याल न गया
स्वास्थ्य और सम्पत्ति चौपट होने पर भी आदत न गई।

हासिद का मुंह काला
ईर्ष्या करने वाले की फजीहत होती है।

हा-हा खाए बूढ़े नहीं ब्याहे जाते
कोई असंगत काम हाथ-पैर जोड़कर नही कराया जा सकता।

हिरे फिरे खेत में को राह
जानबूझकर गलत काम करना।

हिसाब ज्यों का त्यों, कुनबा डूबा क्यों ?
मूल कारण समझ में न आना या अल्पविद्या भयंकरी।

है आदमी है काम, नहीं आदमी नहीं काम
जीवित रहते काम से छुट्टी नहीं मिलती या अगर मनुष्य है तो उसके लिए काम की कमी नहीं।

है घरनी घर गाजत है, नहिं घरनी घर पादत है
घर घरवाली से होता है।

है मर्द वही पूरे जो हर हाल में खुश है
वही साहसी है जो हर दशा में प्रसन्न रहे।

होड़ का कार जी का भार
स्पर्द्धा का काम कठिन होता है, चिन्ता लगी रहती है।

होत का बाप अनहोत की मां
पिता सपत्ति मे और मां विपत्ति मे काम आती है।

होत की जोत है
धन रहने तक ही सब कुछ है।

होती आई है
परम्परा से चली आई है।

होते की बहिन और बाप हैं बिन होत की जोय
संकट मे पत्नी ही साथ देती है।

होते ही ना मर गए जो कफन भी थोड़ा लगता
नालायक के लिए कहा जाता है।

हौंस नाक बुढ़िया चटाई का लहंगा
बेतुका शौक।

हौज भरे तो फव्वारे छूटें
धन होने पर ही खर्च किया जा सकता है।

अच्छे घर बयाना दिया

जबर्दस्त से उलझने पर कहा जाता है।

अनकर चुक्कर अनकर घी, पांडे बाप का लागा की ?

रसोइये के बाप का क्या खर्च हुआ ? दूसरे के माल को बेरहमी से खर्च करना।

अनके धन पर चोर राजा

दूसरे के धन पर मौज उड़ाना।

अनदेखा चोर साले बराबर

अनदेखा चोर बाप बराबर

पकड़े जाने पर ही चोर-चोर कहलाता है।

अनाड़ी का सौदा बाराबाँट

मूर्ख का कोई काम ढंग से नहीं होता।

अनाड़ी का सोना बाराबानी

मूर्ख का सोना हमेशा चोखा, क्योंकि उसे सोने की परख ही नहीं होती।

अपना दीजै, दुश्मन कीजै

उधार देना दुश्मन बनाना है।

अपना लेना क्या, पराया देना क्या ?

अपना तो मिलेगा ही पराया देने का क्या मतलब ?

अपना ही माल जाए और आप ही चोर कहलाए

हर ओर से अपना ही नुकसान।

अपनी डफली (डफली) अपना राग

अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग

अपना अलग-अलग मत रखना।

अपनी-अपनी तुनतुनी, अपना-अपना राग

अपनी धुन में मस्त।

अपने माल में खोट तो परखैया का क्या दोष ?

अपने में ही कमी हो तो दूसरों को दोष देना व्यर्थ।

अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत

पीछे पश्चाताप करना व्यर्थ है।

अमानत में खयानत तो जमीन भी नहीं करती

धरोहर में बेईमानी तो धरती भी नहीं करती।

अब के मुंड़हे हो राजा

जब कोई आदमी यह दम्भ भरे कि उसके बिना कोई काम चल ही नहीं सकता तब कहा जाता है।

जाति, वर्ग और विभिन्न पेशों पर आधारित लोकोक्तियां

अँधियारी गई कि चोर
आदत छूटना कठिन है।
अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता
अकेला व्यक्ति कोई बड़ा काम नहीं कर सकता।
अगम बुद्धि बानिया, पच्छम बुद्धि जाट
बनियों की चालकी और जाटों के भोलेपन पर कहा जाता है।
अच्छे भये अटल, प्राण गये निकल
लालची पेटू। मथुरा के चौबे ब्राह्मणों पर आधारित। मनचाहे लाभ के साथ करारी हानि होने पर कहा जाता है।
अभी सेर में पौनी भी नहीं कती है
अभी तो बहुत कुछ काम बाकी है।
अभी लोहा लाल है
अभी मौका है।
अटका बनिया सौदा दे
विवश होकर कोई कार्य करना।
अड़ी पड़ी काजी के सिर पड़ी
किसी काम की भलाई-बुराई मुख्य आदमी के ही सिर पड़ती है।
अगले पानी, पिछले कीच
काम में शीघ्रता करने वाले को लाभ होता है।
अपना कुत्ता बरजो, हम भीख से बाज आए
सहायता के बदले उलटी मुसीबत आने पर कहा जाता है।
अदालत का बड़ा नाजुक मुआमला है
हर बात में परेशानी। फिर क्या फैसला हो कुछ ठीक नहीं।

अच्छे घर बयाना दिया

जबर्दस्त से उलझने पर कहा जाता है।

अनकर चुक्कर अनकर घी, पांडे बाप का लागा की ?

रसोइये के बाप का क्या खर्च हुआ ? दूसरे के माल को बेरहमी से खर्च करना।

अनके धन पर चोर राजा

दूसरे के धन पर मौज उड़ाना।

अनदेखा चोर साले बराबर

अनदेखा चोर बाप बराबर

पकड़े जाने पर ही चोर-चोर कहलाता है।

अनाड़ी का सौदा बारावांट

मूर्ख का कोई काम ढंग से नहीं होता।

अनाड़ी का सोना बाराबानी

मूर्ख का सोना हमेशा चोखा, क्योंकि उसे सोने की परख ही नहीं होती।

अपना दीजै, दुश्मन कीजै

उधार देना दुश्मन बनाना है।

अपना लेखा क्या, पराया देना क्या ?

अपना तो मिलेगा ही पराया देने का क्या मतलब ?

अपना ही माल जाए और आप ही चोर कहलाए

हर ओर से अपना ही नुकसान।

अपनी दपली (डफली) अपना राग

अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग

अपना अलग-अलग मत रखना।

अपनी-अपनी तुनतुनी, अपना-अपना राग

अपनी धुन में मस्त।

अपने माल में खोट तो परखैया का क्या दोष ?

अपने में ही कमी हो तो दूसरों को दोष देना व्यर्थ।

अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत

पीछे पश्चात्ताप करना व्यर्थ है।

अमानत में खयानत तो जमीन भी नहीं करती

धरोहर में बेईमानी तो धरती भी नहीं करती।

अब के मुंड़हे हो राजा

जब कोई आदमी यह दम्भ भरे कि उसके बिना कोई काम चल ही नहीं सकता तब कहा जाता है।

अलिफ के नाम खुटका भी नहीं जानते

अलिफ के नाम बे भी नहीं जानते

मूर्ख या अनपढ़ के लिए कहा जाता है।

अशरफियाँ लुटें, कोयलों पर मुहर

बहुमूल्य वस्तु के स्थान पर निकम्मी चीज की रक्षा करने की मूर्खता।

असबाब में असबाब, एक तंग एक रबाब

बस अपनी तो यही सम्पत्ति है—किसी फक्कड़ कलाकार का कथन।

असौज में जो बरसे दाता, नाज-नियार का रहे न घाटा

क्वांर में पानी बरसने से फसल अच्छी होती है।

अहीर का क्या जजमान, लपसी का क्या पकवान ?

लपसी की तरह अहीर भी कोई अच्छा जजमान नहीं होता।

अहीर का पेट गाहिर, बामन का पेट मदार

दोनों जातियों के पेटूपन पर व्यंग्य।

अहीर का दहेंड़ी मटिया सुर्खरू

ऐसे स्थान से सम्बद्ध व्यक्ति के लिए कहते हैं जहाँ खूब खाने-पीने को मिलता हो।

अहीर गाड़ी जात गाड़ी, नाई गाड़ी कुजात गाड़ी

गाड़ी चलाना अहीर का ही काम है।

अहीर वेख गड़रिया मस्ताना

दूसरों का गलत अनुसरण करने पर कहा जाता है।

अहीर में जब गुन निकले, जब बालू में घी

अहीर से उसके व्यवसाय के भेद नहीं जान सकते। (जाति विद्वेषमूलक)

आज के बनिया कल के सेठ

व्यापार में शीघ्र उन्नति होती है।

आकिल को एक हर्फ बहुत है

समझदार थोड़े में समझ जाता है।

आगिल खेती आगे आगे, पाछिल खेती भागे जागे

विलम्ब करने से जो मिल जाए, समझो भाग्य से मिला।

आठ जुलाहे नौ हुक्का, जिस पर भी धुक्कमधुक्का

जुलाहों की सिधाई और मूर्खता पर कहा जाता है।

आठ मिले काठ, तुलसी मिले जाट

जाटों पर फब्ती।

आधी रोटी बस, कायथ है कि पस

तकल्लुफपसन्द कायस्थों पर फबती।

आधे असाढ़ तो बैरी के भी बरसे

ईश्वर सबके साथ समान व्यवहार करता है।

आन से मारे, तान से मारे, फिर भी न मरे तो बान से मारे

वेश्याओं के प्रति कहा जाता है।

आप डूबे बामना जिजमान भी ले डूबे

आप तो नष्ट हुए ही यार-दोस्तों को भी बर्बाद कर गए।

आम की कमाई नीबू में गँवाई

इधर लाभ तो उधर हानि हिसाब किताब बराबर।

आये कनागत फूले कांस, बामन उछले नौ-नौ बांस

ब्राह्मणों की लोलुपता पर व्यंग्य।

आ लगा मुरमुरे वाला

बातूनी आदमी के लिए कि वह फिर आ गया बकवास करने।

आसमान के फटे को कहां तक थेगली लगे

बहुत बिगड़ा काम कहां तक संभले।

आदमी को दवा आदमी

आदमी आदमी को सुधारता है।

इन्दर राजा गरजा म्हारा जिया लरजा

बादल गरजा और गल्ले का व्यापारी घबराया क्योंकि अब वह मनमाने भाव पर नहीं बेच सकेगा।

इनके यहां तो चमड़े का जहाज चलता है

वेश्याओं के लिए कहा जाता है।

इन तिलों में तेल नहीं

आशा मत रखो।

इश्क में आदमी के टांके उधड़ते हैं

इतने कष्ट मिलते हैं कि अक्ल ठिकाने लग जाती है।

इश्क के कूचे में आशिक की हजामत होती है

आशिक बर्बाद हो जाता है।

इस हाथ ले, उस हाथ दे

नकद सौदा या तुरन्त फल मिलना।

उकतानी कुम्हारी नाखून से मिट्टी खोदे

उतावलापन दिखाने पर कहा जाता है।

उठी पैठ आठवें दिन लगती है

कार्य सिद्धि के अवसर बार-बार नहीं आते। उठती पैठ आठवें दिन।

उत्तम खेती, मद्धम बान, अधम चाकरी, भीख निदान
खेती सर्वोत्तम है।

उधार खाना और फूस का तापना बराबर है
उधार के पैसों से अधिक दिनों तक काम नही चल सकता।

उधार बड़ी हत्या है
उधार देना बहुत बुरा है।

उस्ताद हज्जाम नाई मैं और मेरा भाई, घोड़ी और घोड़ी का बछेड़ा और मुझको तो आप जानते ही हैं
किसी वस्तु के बँटते समय घुमा-फिराकर कई नामों से लेना।

ऊँची दुकान फीका पकवान
बाहरी आडम्बर। नाम ऊँचा काम निम्न कोटि का। नाम बड़े दर्शन थोड़े।

ऊँट मरा कपड़े के सिर
एक मद की हानि दूसरे मद से पूरी करना।

ऊपर से पानी दे, नीचे से जड़ काटे
कपटपूर्ण आचरण।

ऊसर खेत में केसर
मूर्खतापूर्ण कार्य या आश्चर्य की बात।

उलटा चोर कोतवाल को डाँटे
अपराध करने पर भी रौब जमाए या अपराधी दूसरों पर दोष मढ़े।

ऋण मुचे न कासी
कर्ज से छुटकारा मिलना कठिन है।

एक अहीर की एक ही गाय, ना लागे तो छूंछा जाय
एक होना ठीक नही है या एक ही कमाने वाला।

एक आसामी सौ अर्जियाँ
एक जगह और उसके उम्मीदवार बहुत से। बेतुका काम।

एक के दूने से सौ के सवाये भले
बिक्री अधिक होने पर लाभ भी अधिक।

एक की दारू दो, दो की दारू चार
एक उद्धत को दबाने के लिए दो और दो को दबाने के लिए चार की आवश्यकता होती है।

एक चना बहुतेरी दाल
मुख्य वस्तु ही रक्षणीय होती है।

एक तो गड़ेरन दूसरे लहसुन खाए
गन्दे का और गन्दा होना या ओछे का ऊँचे पद पर इतराना।

एक तो चोरी दूसरे सीनाजोरी
अपराध करने पर आंख दिखाना।

एक परहेज न सौ हकीम
दवा से पथ्य उत्तम है।

एक पानी जो बरसे स्वाती कुरमिन पहिने सोने की पाती
स्वाति नक्षत्र में पानी बरसने से फसल अच्छी होती है।

एक तो भीख और पछोर पछोर
मुफ्त के माल मे ऐब नही निकालना चाहिए।

एक मुर्गी नौ जगह हलाल नहीं होती
एक आदमी कई काम एक साथ या कई स्थानों पर काम नही कर सकता।

एक म्यान में दो छुरी एक म्यान में दो तलवारें नहीं समातीं
समान महत्त्वाकांक्षी एक साथ नहीं निभ सकते, एक साथ दो महत्वपूर्ण कार्य नही हो सकते या विरोधी विचार के लोग एक साथ नही रह सकते।

एक थैली के चट्टे बट्टे
एक समान दुर्गुणी।

ऐसी मेख मारी कि पार निकल गई
मन को गहरी चोट पहुंचने पर कहा जाता है।

ऐसे ही तुमने सोंठ बेची है
तुमसे क्या मैंने कर्ज ले रखा है जो दबूं।

ओछी पूंजी खसमों खाए
कम पूंजी से व्यापार करने पर हानि होती है।

ओछे के बैल गिरे
ऐसी घटना जिसकी ओर किसी का ध्यान नहीं जाता या जब कोई छिछोरा अपने थोड़े नुकसान को बढ़ा-चढ़ाकर कहे तब कहते हैं।

ककड़ी के चोर की गर्दन नहीं नापते (मारते)
छोटे अपराध पर बड़ा दण्ड नही देते।

कचहरी का दरवाजा खुला है
लड़ते क्यों हो अदालत में नालिश करो।

कजा के आगे हकीम अहमक
मौत के आगे वैद्य-हकीम की कुछ नहीं चलती।

कजा के तीर को ढाल की हाजत नहीं होती
कजा का तीर किसी के रोके नहीं रुकता।

कड़खा सोहे पाली ने, बिरहा सोहे माली ने
कड़खा गड़ेरियों के मुंह मे और बिरहा मालियों के।

कम खर्च बालानशीं
थोड़े पैसों में आराम की चीज।
कड़वी दवाई का फल मीठा
स्वाद बुरा फल अच्छा।
कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर
एक-दूसरे पर निर्भरता या संयोगवश कभी कोई ऊँचा तो कभी नीचा होता है।
कब के बनिया कब के सेठ
सहसा धनवान बनने पर कहा जाता है।
कर खेती परदेश को जाए वाको जनम अकारथ जाए
जो खेती करके स्वयं देख-भाल नहीं करता उसका परिश्रम व्यर्थ जाता है।
करघा छोड़ जुलाहा जाए, नाहक चोट बिचारा खाए
करघा छोड़ तमाशा जाए, नाहक चोट जुलाहा खाए
अपना काम छोड़कर दूसरों के झगड़े में पड़ने से हानि उठानी पड़ती है।
कर्ज की क्या माँ मरी है ?
कर्ज एक जगह से नहीं तो दूसरी जगह से मिल जाएगा।
करमहीन खेती करे, बैल मरे या सूखा पड़े
भाग्यहीन जो भी करता है, वही गड़बड़ हो जाता है।
करिया बामन गोर चमार, तेकरा संग न उतरे पार
इनका विश्वास नहीं करना चाहिए। (जाति-विद्वेष मूलक)
करो खेती और बोओ बैल
खेती में बैल खटते हैं या खेती के लिए अच्छे नस्ल के बैल पैदा करो।
करो खेती और भरो दण्ड
लगान आदि देना पड़ता है या कष्ट उठाने पड़ते हैं।
कलाल की बेटी डूबने चली, लोग कहें मतवाली
मुसीबत में लोग मजाक उड़ाते हैं।
कल्लर का खेत, कपटी का हेत
ऊसर की खेती और कपटी की मित्रता समान है।
कमानी न पहिया, गाड़ी जोत मेरे भैया
पहले से कोई प्रबन्ध न करने पर भी काम करने की तैयारी।
कवित सोहे भाट ने, और खेती सोहे जाट ने
जिसका जो काम है वह उसी को शोभा देता है या कर सकता है।
कसाई की बेटी दस वर्ष में बच्चा जनती है
टेढ़े व्यक्ति के सब काम जल्दी होते हैं या उससे सब भय खाते हैं।

कसाई के घास को कटड़ा खा जाए ?
टेढ़े से सब भय खाते हैं।

कहाँ राजा भोज कहाँ कंगला तेली
कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली
बड़े के सामने छोटे की क्या बिसात ? (गंगू तेली से 'गांगेय तैलप' का तात्पर्य है, जिसे भोज ने हराया था।)

कहें खेत की, सुने खलिहान की
कहना कुछ सुनना कुछ। कहे जमीन की सुने आसमान की।

कहे से कुम्हार गधे पर नहीं चढ़ता
हठी हठ पर अड़ा रहता है, कहने से काम नहीं करता। अपनी इच्छा से काम करने वाले के प्रति कहा जाता है।

कागज की नाव आज न डूबी तो कल डूबी
धोखाधड़ी अधिक नहीं चल सकती।

कागज की नाव नहीं चलती
ऊपरी तड़क-भड़क से काम नहीं चलता।

कागज की पनडुब्बी आज न डूब्बी कल डूब्बी
कागज की नाव आज न डूबी तो कल डूबी।

काजी का प्यादा घोड़सवार
दफ्तर के बाबू और चपरासी जो अपने को साहब से कम नहीं समझते, उन की जल्दबाजी पर व्यंग्य।

काजी की लौंडी मरी सारा शहर आया, काजी मरा कोई न आया
बहुत से काम बड़े आदमियों को खुश करने के लिए किए जाते हैं, उनके मरने पर कोई नहीं पूछता।

काजी के घर चूहे भी सयाने
हाकिम के घर के छोटे भी सयाने।

काजी के मरने से क्या शहर सूना हो जाएगा ?
किसी के न रहने से दुनिया के काम नहीं रुकते।

काजी के मूसल में नारा
बड़ा हाकिम जो भी करे—कौन कहे।

काजी जी पहले अपना आगा तो ढांको, पीछे किसी को नसीहत देना
तुम स्वयं नंगे हो दूसरों को क्यों उपदेश दो ?

काजी जी दुबले क्यों ? शहर के अंदेशे से
व्यर्थ में दूसरों की चिन्ता करना।

काजी न्याय न करेगा तो घर तो जाने देगा
बात तो स्पष्ट करनी ही है, चाहे कोई माने या न माने।

काजी ब-दो गवाह राजी
दो गवाहों से अदालत को संतोष हो जाता है।

काजी बहुतेरा हारा रहे, पर बन्दा न हारा
मूर्ख और जिद्दी के लिए कहा जाता है।

काटने वाले को थोड़ा, बटोरने वाले को बहुत
काम करने वालों को कम और फालतू आदमियों को अधिक मिलने पर कहा जाता है।

का बरषा जब कृषी सुखाने, समय चूकि पुनि का पछताने
समय निकल जाने पर वस्तु की प्राप्ति से क्या लाभ? या अवसर निकल जाने पर पश्चत्ताप व्यर्थ है।

कायथ का बेटा मरा भला या पढ़ा भला
कायस्थ अगर पढ़ा-लिखा न हो तो वह किसी काम का नहीं।

काना टट्टू, बुद्धू नफर
दोनों एक से निकम्मे या अधूरे व टूटे-फूटे साज-सरजाम वाले के लिए भी कहते हैं।

काल कड़ाऊ किसान का खाऊ
सूखा और कर्जा दोनों किसान के लिए दुखदायी हैं।

कम खर्च बालानशीन
कम दामों की बढ़िया टिकाऊ वस्तु।

कमान से निकला तीर और मुंह से निकली बात फिर नहीं लौटती
सोच-समझकर बोलना चाहिए।

काता और ले दौड़ी
थोड़े से किए काम को दिखाते फिरना।

किसी का अवा बिगड़े, इनका खदाने का खदाना बिगड़ गया
सर्वनाश हो गया। पूरा चौपट हो गया।

कुछ लोहा खोटा, कुछ लोहार खोटा
दोनों ओर ही त्रुटियाँ होना।

कुमार का गधा जिन्हीं के चूतड़ मिट्टी देखे, तिन्हीं के पीछे दौड़े
क्योंकि उसी को वह अपना मालिक समझता है।

कुम्हार का गुस्सा उतरे गधे पर
बड़े पर जोर न चलने से छोटों पर गुस्सा उतारा जाता है।

कुम्हार के घर चुक्के का दुख
एक आश्चर्य की बात। कुम्हार के घर तो चुक्के (कुल्हड) बनते ही है फिर उनकी क्या कमी ?

कुम्हार के घर बासन का काल
एक आश्चर्य की बात।

कुम्हार से पार न पाये गधे के कान उमेठे
कमजोर पर गुस्सा उतारना।

कूदते-कूदते नचनियां हो जाता है
अभ्यास बडी चीज है। अनाड़ी भी अभ्यास करने से कलावंत बन जाता है।

कूदे-फांदे तोड़े तान, ताका दुनिया राखे मान
जो अधिक ढोंग दिखाता है दुनिया उसी का मान करती है।

कै लड़े सूरमा, कै लड़े अनजान
लड़ने का काम बहादुरों का होता है या जो मूर्ख होते हैं वही लड़ाई मोल लेते हैं।

कोदरी के गांव में धोबी पटवारी
जहां जैसे लोग तहां तैसे कारिन्दे।

कोई तोलों कम, कोई मोलों कम
हर आदमी में कोई न कोई कमी रहती है। किसी मे गम्भीरता की तो किसी मे भलमनसाहत की।

कोई मोल में भारी, कोई तोल में भारी
किसी मे सज्जनता अधिक तो किसी मे गम्भीरता। कोई पैसे मे बडा तो कोई सज्जनता में।

कोयलों की दलाली में काले हाथ
बुरो के साथ बुराई ही मिलती है।

कोल्हू के बैल को घर ही कोस पचास
ऐसे मनुष्य के लिए कहते हैं जिस पर काम का बहुत बोझ हो।

कोल्हू से खल उतरी, भई बैलों जोग
बूढ़े मनुष्य या अपने पद से हटा दिए गए व्यक्ति के लिए कहते है।

कौन सी चक्की का पीसा खाया है
जिससे तुम इतने मोटे हो गए हो—हँसी मे कहा जाता है।

क्या काजी की गधी चुराई है ?
मैंने क्या बिगाडा है जो धमका रहे हो।

क्या कोयलों की नाव डूब जाएगी
ऐसी कौन सी बडी हानि हो जाएगी ?

क्या खूब सौदा नकद है, इस हाथ दे उस हाथ ले
कर्मों का फल तुरन्त मिलता है।
क्या उधार की मां मारी गई है
कहीं न कहीं तो मिल ही जाएगा।
कूजे ढले कि माट ?
पहले बूढ़े मरेंगे या जवान कौन जाने ?
कौड़ी के तीन-तीन
बर्बाद या बेइज्जत होने पर अथवा सस्ती वस्तु के लिए कहा जाता है।
खरादी का काठ काटे ही कटे
काम करने से ही होता है।
खरी मजूरी चोखा काम
पूरी और अच्छी मजदूरी देने से काम अच्छा होता है।
खाद पड़े तो खेत, नहीं तो भूड़ का रेत
खेत में खाद देने से ही उपज अधिक हो पाती है।
खाद सँवारे खेत, सीख सँवारे प्रीत
खाद से खेत अधिक फसल देता है और सीख से मित्रता दृढ़ होती है।
खाली बनिया क्या करे ? इस कोठी का माल उस कोठी में धरे
जब कोई खाली बैठा आदमी व्यर्थ का काम करे तब कहा जाता है।
खेत गए किसान
खेती अपने हाथ से ही होती है।
खेत बिगारे खरतुआ, सभा बिगाड़े दूत
घासपात से खेती चौपट होती है और चुगलखोर से सभा।
खेत बिराना बोय के बीज अकारथ जाए
कोई लाभ नहीं होता।
खेती खसम सेती
खेत गए किसान।
खेती राज रजाए, खेती भीख मँगाए
फसल अच्छी हुई तो लाभ नहीं तो हानि।
खेल न जाने मुर्गी का, उड़ाने लगा बाज
साधारण काम तो आता नहीं मुश्किल काम करने लगे।
खोल घड़ा, कर बेघड़ा
घड़ा खोलकर जल्दी सामान दे। ऐसे ग्राहक के लिए कहते हैं जो लेने के लिए तो जल्दी मचाए पर देने के लिए जिसके पास दाम न हों।

जाति, धर्म और पेशों पर आधारित लोकोक्तियां

गंगा बही जाय कलवारी न छाती पीटे
निष्प्रयोजन अफसोस करने वालों के लिए कहा जाता है।

गढ़े कुम्हार, भरे संसार
एक के काम से बहुत से लोग लाभ उठाते है।

गधा मरा कुम्हार का धोबिन सती होय
जिससे कोई सम्बन्ध न हो उसके लिए अनावश्यक सिरदर्द।

गधों से हल चले तो बैल कौन बिसाय ?
छोटों से अगर बड़ों के काम होने लगें तो बड़ो को कौन पूछे ? जब कोई दिए गए काम को न कर सके तो तब कहा जाता है।

गवाह चुस्त, मुद्दई सुस्त
सहायकों का तत्पर रहना और स्वयं लापरवाही दिखाना।

गांड न धोये सो ओझा होय
ओझाओं (भूत भगाने वालों) पर व्यग्य।

गांव में धोबी का छैल
गांव में धोबी का लड़का ही शौकीन बना फिरता है।

गाड़ी तो चलती भली, ना तो जान कबाड़
जो वस्तु काम दे, वही सार्थक है।

गिरहकट का भाई गंठकट
समान रूप से कपटी। चोर-चोर मौसेरे भाई।

गीली लकड़ी खराद पर नहीं चढ़ती
अनुभवहीन से काम नही बनता।

गुरु-गुरु विद्या, सिर-सिर ज्ञान
सबके पास न तो एक सी विद्या होती है और न सबकी समझ एक सी होती है।

गुरु गुड़ ही रहे, चेले हो गये शक्कर
चेले गुरु से आगे बढ़ गए।

गू का पूत नौसादर
बुरे घर मे भी सपूत पैदा हो सकता है।

गू की दारू भूत और भूत की दारू गू
जैसे का तैसा इलाज।

गोर चमाइन गरमे मातल
गोरी चमारिन अपने रूप के गर्व मे उन्मत्त रहती है अथवा ओछा ऐश्वर्य पाकर इतराता है।

ग्वालिन अपने दही को खट्टा नहीं कहती

कोई भी अपनी चीज को बुरा नही बताता।

घड़ी भर की बेशर्मी सारे दिन का आधार (आराम)

सकोच छोड़कर 'ना' कह देने से आराम रहता है। (वेश्यापरक)

घड़ी में तोला, घड़ी में माशा

चित्त ठिकाने न रहना।

घड़े में घड़ा नहीं भरा जाता

एक खाली बर्तन को यदि दूसरे बर्तन की चीज से भर दिया जाय तो लाभ क्या होगा ? एक बर्तन तो खाली रहेगा ही।

घर का खेत न खेतीबारी, कहे मियाँ मेरी नम्बरदारी

झूठी शेखी बघारने पर कहा जाता है।

घर में दवा, हाय हम मरे

होते हुए भी भटकने की मूर्खता।

घर ही में बैद, मरिए क्यों ?

घर ही बैद मरे कैसे ?

घर में होशियार आदमी के होते हुए भी जब काम बिगड़ जाय तब कहते हैं।

चचा चोर भतीजा काजी

घर का एक आदमी अच्छा और दूसरा बुरा अथवा न्याय में पक्षपात का डर हो तब कहा जाता है।

चमार चमड़े का यार

नीच कामवासना की तृप्ति के लिए ही प्रेम करता है।

चमारो के कोसे ढोर नहीं मरते

किसी के चाहने मात्र से किसी का बुरा नही होता।

चने चबाओ या शहनाई बजाओ

दो काम एक साथ नही हो सकते।

चलती का नाम गाड़ी

धनवान की ही पूछ होती है अथवा जिसका नाम चल जाय वही ठीक है।

चलते चोर लंगोटी हाथ

चोर को भागते समय जो भी मिल जाय वही बहुत।

चाक चौबन्द, टका नाल बन्द

बढ़िया घोडा और नाल-बधाई एक टका। गलत मितव्ययिता।

चाकर के आगे कूकर, कूकर के आगे पेशखेमा

काम को एक दूसरे पर टालना।

जाति, धर्म और पेशों पर आधारित लोकोक्तियां

चाकर को उज्र नहीं, कूकर को उज्र है
नौकर की अपेक्षा कुत्ता अधिक स्वतन्त्र होता है।

चाकर से कूकर भला जो सोवे अपनी नींद
नौकर कुत्ते से भी गया बीता होता है।

चाकर है तो नाचाकर, ना नाचे तो ना चाकर
नौकरी करनी है तो हुक्म बजाओ।

चाकरी में आकरी क्या
नौकरी में हीला-हवाला क्या?

चाह चमारी चूहड़ी, सब नीचन की नीच
लोभ बुरी चीज है।

चिडाल न छोड़े मक्खे, न छोड़े बाल
ऐसे मनुष्य के लिए कहते है जो हर तरह की चीजें खा ले।

चिट्ठी न परवाना, मार खाए मुल्क बेगाना
जब कोई बिना कुछ कहे किसी की चीज छीन ले, तब कहते हैं।

चिराग जला, दांव गला
चिराग जलने से चोरों का दांव नही लगता।

चित भी मेरी पट भी मेरी
हर तरफ से अपना ही लाभ।

चूमा झाड़ खाओ, लड्डू न तोड़ो
ब्याज या मुनाफा खा लो पर पूंजी बर्बाद न करो।

चेले लावें मांगकर बैठे खाय महन्त
राम भजन का नाम है पेट भरन का पंथ
महन्तों और साधुओं के सम्बन्ध में लोक-ज्ञान का निचोड।

चोर और सांप दबे पै चोट करते हैं
बच निकलने का रास्ता नही मिलता तो चोट करते है।

चोर का जी कितना?
चोर डरपोक होता है।

चोर का भाई गंठकट
जो जैसा होता है उसके यार-दोस्त भी वैसे होते हैं।

चोर का मन बकचे में
चोर की नजर गठरी पर ही रहती है। चोर की नजर गठरी पर।

चोर का मुंह चांद सा
चोर चेहरे से अपने को निर्दोष साबित करता है अथवा उसके चेहरे पर अपराध की कालिमा पुती रहती है।

चोर की जमानत नहीं होती

कोई उसका हिमायती नही होता।

चोर की जोरू कोने में सिर देकर रोती है

चुपचाप रोती है।

चोर की दाढ़ी में तिनका

अपराधी सदा सशकित रहता है।

चोर की माँ कोठी में सिर दे के रोती है

चोर की जोरू कोने मे सिर देकर रोती है।

चोर का हाल सो मेरा हाल

सफाई में कहा जाता है।

चोर के घर छिछोर

चोर के घर मे चोरी होने पर कहा जाता है।

चोर के ख्वाब में बकचे

चोर सपने मे भी चुराने के लिए गठरियाँ देखता है।

चोर के घर मोर

चालाक से भी कोई चालाकी करे तब कहा जाता है।

चोर के पेट में गाय, आप ही आप रंभाय

आदमी का अपराध उसकी बातों से प्रकट हो जाता है।

चोर के पैर नहीं होते

चोर के पैर कितने ?

चोर तुरन्त भाग जाता है।

चोर के मन में चोरी बसे

जिसकी जो आदत होती है वह छूटती नही।

चोर के हाथ में दीया

ऐसा साधन जो सहायक भी हो सकता है और हानिकारक भी।

चोर को अंगारी मीठ

अपनी निर्दोपिता सिद्ध करने के लिए चोर जलता अगारा भी जीभ पर रख लेता है।

चोर को चोर ही पहचाने

जैसे को तैसा ही पहचानता है।

चोर को चोरी सूझे

बुरे को बुरा काम ही सूझता है।

चोर को गाँठ से पकड़िए, छिनाल को पकड़िए खाट से

नही तो अपराध प्रमाणित करना कठिन होता है।

चोर को पनहई दूर से सूझे है

अपराधी को हमेशा मार खाने का भय बना रहता है।

चोर चकार चूके पर चुगल न चूके

चुगलखोर चुगली करके ही रहता है।

चोर चुरावे गर्दन हिलावे

चोर चोरी से इनकार करता है।

चोर जाते रहे की अंधियारी

जिसकी जो आदत है वह तो करेगा ही।

चोर न जाने चोर की सार

चोर ही चोर के तौर-तरीके जानता है।

चोर न जाने मंगनी के बासन

चोर को चुराने से काम। उसे इससे क्या मतलब कि तुम्हारे हैं या दूसरे के।

चोर ढोर दोनों हाजिर हैं

माल समेत चोर पकड़ा गया।

चोर-चोर मौसेरे भाई

गिरहकट का भाई गठकट।

चोर चोरी से गया तो क्या हेरा-फेरी से भी गया

बुरी आदत रह-रहकर प्रकट हो जाती है।

चोरी और मुंह-जोरी

कसूर भी करे और जवाब भी दे।

चोरी और सीनाजोरी

अपराध करने पर धृष्टता करना।

चोरी का गुड़ मीठा

बाहर की या मुफ्त की चीज अच्छी लगती है। पराई स्त्री से सम्बन्ध रखने पर भी कहा जाता है।

चोरी का माल मोरी में जाता है

अनुचित ढंग से कमाया धन यों ही नष्ट हो जाता है।

चोरी बे-बाग नहीं होती

भेद बिना चोरी नहीं होती।

चोरी बे सुराग नहीं निकलती

बिना सुराग चोरी का पता नहीं चलता।

चौब्बे गए छब्बे बनने, दुब्बे ही रह गए

लाभ के बजाय हानि।

छत्री का शोहदा, कायथ का बोदा, बामन का बैल, बनिए का ऊत

यदि ये ऐसे हो तो किसी काम के नही।

छब्बे होने गए दुब्बे भी न रहे

जब लाभ के स्थान पर हानि हो तब कहा जाता है।

छोड़ जाट, पराई खाट

किसी के साथ बहुत अत्याचार करने या किसी की चीज पर जबरदस्ती कब्जा करने पर कहा जाता है।

जनम के दुखिया करम के हीन, तिनको देव तिलंगवा कीन

सिपाही घर पर नही रह पाता इसलिए कहा जाता है।

जने-जने का मन रखते, वेश्या हो गई बांझ

सबको प्रसन्न रखना बडा कठिन है।

जने-जने से मत करो कार-भेद की बात

अपने रोजगार या मन का भेद हरेक को मत बताओ।

जब तक पहिया लुढ़कता है, तभी तक गाड़ी है

जब तक कोई वस्तु काम दे तभी तक उसके नाम की सार्थकता है अथवा अवसर का लाभ उठा लेना चाहिए।

जब तक पहिया लुढ़के, लुढ़काए जाओ

जब तक काम चले चलाते रहना चाहिए।

जब नटनी बाँस पर चढ़ी तो घूंघट क्या ?

जब किसी काम को करने के लिए उतारू हो गये तो फिर सकोच क्या।

जब नाचने निकली तो घूंघट क्या ?

किसा बुरे काम को करने का इरादा किया तो उसे भी अच्छी तरह करना चाहिए।

जर को जर ही खींचता है

धन से धन पैदा होता है।

जल सूर बामन, रन सूर छत्री, कलम सूर कायथ, गंड सूर खत्री

खत्री कायर होता है। (जाति-विद्वेषमूलक)

जहाँ न जाय सुई, वहाँ भाला घुसेड़ते हैं

गुंजाइश से अधिक की आशा करने पर या अतिशयोक्ति से काम लेने पर कहा जाता है।

'जाट रे जाट, तेरे सिर पर खाट', 'तेली रे तेली तेरे सिर पर कोल्हू', 'तुक तो मिला ही नहीं', 'बोझों तो मरेगा'

मूर्ख काव्य या भाषा की विशेषता क्या जाने ? वह तो अपनी बुद्धि के अनुसार ही अर्थ लगाता है।

जात औकात
नीच ।

जान मारे बनिया, पहचान मारे चोर
दूकानदार जान-पहचान वालों को ठगता है और चोर भेद पाकर ही चोरी करता है ।

जाय लाख रहे साख
भले ही लाखों बर्बाद हो जाय पर अपनी साख बनाए रखनी चाहिए ।

जात का बैरी जात, काठ का बैरी काठ
अपनी ही जात वाले से हानि पहुँचती है । कुल्हाड़ी की बेंट यदि काठ की न होती तो वह काट न सकती ।

जितना तपेगा उतना बरसेगा
बादल जितना गरमाता है, उतना ही बरसता है ।

जिसका पल्ला भारी, वही झुके
जिसके पास पैसा है वही दे सकता है या भले आदमी को ही झुकना पड़ता है ।

जिसका बनिया यार, उसको दुश्मन की क्या दरकार ?
बनिया जान-पहचान वालों को ठगता है ।

जिसके लिए चोरी की वही कहे चोर
जिसकी खातिर बदनामी मोल ली वही बुराई करे ।

जिसने कोड़ा दिया, वही घोड़ा भी देगा
आलसी या भाग्यवादी का कथन ।

जीता सो हारा, हारा सो मुआ
अदालतों की मुकदमेबाजी के सम्बन्ध में कहा जाता है ।

जीते तो हाथ काला, हारे तो मुंह काला
जुआरी के सम्बन्ध मे कहा जाता है ।

जुआरी को अपना ही दांव सूझता है
स्वार्थी के प्रति कहा जाता है ।

जुए में बैल भी हारे हैं-
जुए में बैल भी परेशान रहते हैं और रुपये-पैसे की बाजी मे मनुष्य परेशान रहता है ।

जुलाहे की जूती सिपाही की जोय, धरा-धरी पुराना होय
उपयोग में न आने से व्यर्थ हो जाती हैं ।

जुलहा जाने जो काटे ?
जुलाहों के बुद्धूपन पर व्यंग्य ।

जुलाहे का तीर न हो

जुलाहे को लगा था तीर खुदा भली करे

ऐसे अवसर पर कहते हैं जब किसी विषय पर जान-बूझकर उपेक्षा करने में उसका बुरा परिणाम निकल सकता हो।

जुलाहे की तरह ईद-बकरीद को पान खा लेते हैं

कभी-कभी शौक करने या कजूस के लिए कहा जाता है।

जुलाहे की मसखरी माँ-बहिन से

जुलाहे के बुद्धूपन पर कहा जाता है।

जैसा बो वैसा काट

जैसा करोगे वैसा पाओगे।

जैसा सुई चोर, वैसा बज्जुर चोर

चोरी-चोरी सब बराबर।

जैसा सूत वैसी फेंटी, जैसी माँ वैसी बेटी

जैसे के तैसे होते है।

जैसी तेरी तानी वैसी मेरी भरनी

जैसा माल वैसा काम।

जैसी तेरी तानी बनिए, वैसा मेरा बुनना

जैसे के बदले तैसा।

जाट मरा तब जानिए, जब तेरहवीं हो जाय

ऐसे व्यक्ति के लिए कहा जाता है, जिससे किसी काम के करने की आशा कम होती है।

जैसी लक्खो बन्दरिया, वैसे मनवा भांड

दोनो एक से चालाक।

जोगी का लड़का खेलेगा तो सांप से

बाप के गुण-दुर्गुण बेटे में भी आ जाते हैं।

जोगी किसके मीत और पातर किसकी यार ?

जोगी और वेश्या किसी के नहीं होते।

जो चोर की सजा सो मेरी

चोर का हाल सो मेरा हाल।

जो चोरी करता है सो मोरी भी रखता है

बदमाशी करने वाला अपना बचाव भी सोच रखता है।

जोरू का खसम मर्द और मर्द के खसम कर्ज

जोरू मर्द के वश में रहती है और मर्द कर्ज के (कर्ज बुरी बला है)।

जो बोवेगा सो काटेगा
जैसा करेगा वैसा पावेगा।

जौहरी को जौहरी पहचाने
गुण की परख गुणी ही कर सकता है।

झटपट की घानी आधा तेल आधा पानी
जल्दी का काम अच्छा नहीं होता।

झाड़ भी बनिए का बैरी
बनिए से सब नाराज रहते है।

टका कराई और गंडा दवाई
जहाँ खर्च करना चाहिए, वहाँ खर्च न करना और दूसरी मद मे अधिक खर्च करना।

टका रोटी अब ले चाहे तब ले
इतना कभी ले लो। इससे अधिक की आशा मत करो।

टके की मुर्गी छह टके महसूल
किसी वस्तु के लाने मे उसके मूल्य से अधिक व्यय होना।

टके की लौंग बाननी खाय, कहो घर रहे कि जाय
बनियों की कंजूसी पर फबती।

टट्टी की ओट में शिकार खेलते हो
छिपकर किसी के विरुद्ध कार्य करते हो।

टके के पान बनैनी खाय कहो ये घर रहे कि जाय
बनियों की कृपणता पर व्यंग्य।

ठण्डा लोहा गरम लोहे को काट देता है
क्रोध पर शान्ति से विजय मिलती है।

ठग न देखे, देखे कलवार, ठग न देखे, देखे कसाई
दुष्टो की एक-सी प्रकृति के लिए कहा जाता है। (शेर न देखे न देखे बिलाई)

ठठेरे ठठेरे बदला
जैसे के साथ तैसा।

डाबर डूबे जग तिरे, जग डूबे डाबर तिरे
नीची जमीन के खेत ही अच्छे होते हैं।

डोम और चना मुंह लगा बुरा
डोम धृष्ट होता है और चना खाते-खाते बहुत खा लिया जाता है, जिसमे हानि होती है।

डोम के घर ब्याह, मन आवे सो गा
अश्लील गीत गाए जाने पर कहा जाता है।

डोम डोली, पाठक प्यादा

मूर्ख मालिक को समझदार नौकर मिलने पर कहते है। (जाति-विद्वेषमूलक)

डोमनी का पूत चपनी बजाय, अपनी जात आप ही बताय

किसी का जातिगत स्वभाव नही जाता।

डोम, बनिया, पोस्ती तीनों बेईमान

(जातिवाद का विषभरा वचन)।

ढोके के बंगाल, कूजे के कंगाल

जहां जो चीज बहुतायत से होती है, उसका अभाव होना।

ढाल तलवार सिरहाने और चूतड़ बंदी खाने

कायर आदमी।

ढाल न डफ, हर-हर गीत

बिना साज-सामान के काम।

ढोल के भीतर पोल

बाहर से तड़क-भडक भीतर से खोखला, ऊपरी ठाट-बाट तो अच्छा पर भीतर धांधलेबाजी।

तकाजे का हुक्का भी नहीं पिया जाता

उधार बुरी चीज है।

तरकश में तो तीर नहीं, शरमा-शरमी लड़ते हैं

शर्म रखने के लिए कोई काम करते हैं।

तलवार का खेत हरा नहीं होता

लड़ाई मे नष्ट हुए खेत, सिपाही का खेती करना अथवा पशुबल में बरकत नही होती।

तलवार का घाव भरता है, बात का घाव नहीं भरता

बुरे वचन सहना कठिन होता है।

तलवार की आँच के सामने कोई बिरला ही ठहरता है

कठिन परीक्षा मे सभी सफल नही होते।

तलवार मारे एक बार, एहसान मारे बार-बार

किसी का ऐहसान लेना बहुत बुरा है।

तराजू के मेंढक इस पल्ले से उस पल्ले में

सदा पक्ष बदलने वालों से कहा जाता है।

तवा मतवारी, काहे की भटियारी

कोरी शेखी।

तांत बाजी, राग पाया

मुंह से बात निकलते ही आदमी की योग्यता का पता लग जाता है।

तानां बाना सूत पुराना
    व्यर्थ का परिश्रम।
तानी घाट कि बानी घाट ?
    त्रुटि किस ओर है, एक ओर या दोनों ओर ?
ताल न तलैया बोओ सिंघाड़े भैया
    बिना साधन और सामान के काम।
तिरिया रोवे नेह (पुरुष) बिना, खेती रोवे मेह बिना
    स्पष्ट है।
तिल चोर सो बज्जुर चोर
    चोरी-चोरी सब बराबर।
तिल रहे तो तेल निकले
    मूल या पूँजी के सुरक्षित रहने से ही व्यापार चल सकता है।
तीन का टट्टू तेरह की जीन
    साज-संवार में अधिक व्यय करने पर कहा जाता है।
तीन में न तेरह में, न सेर भर सुतली में, न करवा भर राई में
    किसी गिनती में नहीं। (वेश्यावृत्तिमूलक)
तेल डाल कमली का साझा
    नाम-मात्र की सहायता देकर अपने को साझीदार बताना।
तेल देखो तेल की धार देखो
    प्रत्येक कार्य सोच-समझकर और धैर्य के साथ करो।
तेली का तेल जले, मशालची का दिल जले
    एक को खर्च करते देखकर दूसरे का परेशान होना।
तेली का काम तमोली करे, चूल्हे में आग उठे
    जिसका काम उसी को छाजे।
तेली का तेल गिरा हीना हुआ, बनिए का नोन गिरा दूना हुआ
    किसी की अपनी हानि से भी लाभ होने पर कहा जाता है।
तेली का तेल भगत भैया जी को
    खर्च कोई करे नाम किसी का।
तेली के बैल को घर ही कोस पचास
    घर में रात-दिन काम में खटने वाले के लिए कहा जाता है।
तेली के तीनों मरें और ऊपर से टूटे खाट
    हमें किसी से कोई प्रयोजन नहीं—ऐसा भाव व्यक्त करने पर कहा जाता है।
तेली क्या जाने मुश्क की सार ?
    बन्दर क्या जाने अदरख का स्वाद ?

तेली जोड़े पला-पली, रहमान उड़ावे कुप्पे

एक कमावे दूसरा लुटावे अथवा मनुष्य के किए पर ईश्वर पानी फेर देता है।

तेली रोवे तेल को मकसूद रोवे खली को

सबको अपनी-अपनी पड़ी है।

तेली से ब्याह किया और तेल का रोना

जिसके लिए उपाय किया या इज्जत गँवाई उसी का अभाव।

तेल तिलों ही से निकलेगा

मुनाफा तो लागत में से ही निकलेगा। कोई अपनी गाँठ से नुकसान नहीं देगा।

तू तेली का बैल लगा रह घानी से

रात-दिन काम में खटने वाले से कहा जाता है।

तोकों न भुनाऊँ तेरी मइया को और बँधाऊँ

कजूस के प्रति व्यंग्य जो किसी काम में खर्च नहीं करना चाहता।

तोड़ने आया चारा और खेत पर हजारा

अनुचित दावा करना।

तीर न कमान, मियाँ का अल्लाह निगहबान

झूठी शेखी हाँकने वाले से कहा जाता है।

तीर न कमान, मेरे चाचा खूब लड़े

तीर न कमान मियाँ का अल्लाह निगहबान।

तेरा टका रहे मेरा बिक जाय

अपना ही मतलब देखना।

तेरे जौ तेरी दरांती, चाहे जैसे काट

मुझे कोई मतलब नहीं।

थोड़ी पूँजी खसमों खाय

थोड़ी पूँजी व्यवसाय ही को नष्ट कर देती है।

दया पाई गूजरी, गहरा आसन लाओ

दुर्बल से अनुचित लाभ सभी उठाते हैं।

दया बनिया पूरा तोले

बनिया जिससे भय खाता है, उसको पूरा तोलता है।

दया हाकिम महकूम के लावे

रिश्वतखोर हाकिम अपने अधीनस्थ से डरता है।

दमड़ी की पाग, अधेली का जूता

उलटा-सीधा काम। पाग के दाम जूते से अधिक होने चाहिए।

दमड़ी को हांड़ी लेते हैं तो ठोक बजाकर लेते हैं

हर चीज ठोक-बजाकर लेनी चाहिए।

दमड़ी की लाई, लौंग पान, बनैतो खाय ये घर रहे कि जाय

बनियों की कृपणता पर व्यंग्य।

दमड़ी की घोड़ी छह पसेरी दाना, दमड़ी की बुढ़िया टका सिर मुड़ाई

जितने की चीज नहीं उस पर उतने से अधिक खर्च।

दमड़ी की मुर्गी नौ टका निकवाई, दमड़ी की बुलबुल टका छुड़ाई

किसी काम में मुनाफा कम और खर्च अधिक।

दवा की दवा गिजा की गिजा

ऐसी वस्तु जो दवा का काम भी करे और पेट भी भरे।

दादा कहने से बनिया गुड़ देता है

आदमी खुशामद पसन्द है या खुशामद बड़ी चीज है।

दारू ये--गजब खामोशी !

क्रोध की दवा मौन है।

दिल्ली की कमाई दिल्ली ही में गँवाई

नौकरी में कुछ नहीं बचता।

दीवार खाई आलों ने, घर खाया सालों ने

दीवार पर अधिक आले बनने से वह कमजोर हो जाती है और साले घर बर्बाद कर देते हैं।

देखा भाला तोपची और चपरा सैयद होय

झूठा बड़प्पन दिखाना।

देता भूले ना लेता

कर्जदार भूल जाता है पर लेने वाला नहीं भूलता।

देनी पड़ी बुनाई और घटा बतावे सूत

देने में हीला-हवाला करने पर कहा जाता है।

दे बारूद में आग, किसकी रही और किसकी रह जाएगी

खूब खर्च करो। सदा किसी की नहीं रहती।

देश चोरी न परदेश भीख

बाहर भीख माँगना अच्छा।

देश चोरी परदेश भीख

चोरी या भीख ही गुजर-बसर का साधन होने पर कहा जाता है।

दर्जी की सुई कभी ताश में कभी टाट में

परिस्थितियाँ सदा एक सी नहीं रहतीं।

दो कसाइयों में गाय मुरदार

दुष्टों के बीच फँस जाने की स्थिति मे कहा जाता है।

गाय स्वयं मर जाती है तो फिर खाई कैसे जाए ?—मुसलमानों से संबंधित।

दो खसम की जोरू चौसर की गोट

जिसका दाँव लगा, उसी ने कब्जा कर लिया।

दो जोरू का खसम चौसर का पाँसा

कभी इधर से तो कभी उधर से ढकेल दिया जाता है।

दो टके की बुलबुल नौ टके हुसकाई

कम महत्व की वस्तु को अधिक महत्व देना।

दो दिल राजी तो क्या करेगा काजी ?

मियाँ-बीवी राजी तो क्या करेगा काजी ? जब दो आपस में सहमत हो तो मध्यस्थ या पंच की क्या आवश्यकता ?

दोनों दीन से गए पाण्डे हलुवा मिला न माँडे

अपना काम छोडकर दूसरे का काम संभालने से जब सफलता न मिले तब कहा जाता है।

दो घर मुसलमानी, तिसमें भी आनाकानी

सजातीय थोडे और उनमें भी झगडा।

धन का धन गया, मीत का मीत

उधार देने से मित्रता भी गई।

धोबी का कुत्ता घर का न घाट का

दोनों ओर से किसी का भी विश्वासपात्र न होना या किसी काम का न होना।

धेला सिर मुंड़ाई, टका बदलाई

मुख्य काम में खर्च कम, ऊपरी काम मे अधिक।

धोबी के घर पड़े चोर वह न लुटे लुटे और

दूसरों के कपडे ही चोरी जाएँगे।

धोबी पर बस न चले गधैया के कान उमेठे (मरोड़े)

कमजोर पर गुस्से उतारना।

धोबी बेटा चाँद सा, सौटी और पटाक

दूसरों के पैसों पर साफ-शौकीन बने फिरने वालों के प्रति कहा जाता है।

धोबी रोवे धुलाई को, मियाँ रोवे कपड़ों को

सब अपना स्वार्थ देखते हैं या दोनों पक्षों द्वारा शिकायत करने पर कहा जाता है।

नउवा देख के कांखे बार
चीज सामने देखकर उसके उपयोग की इच्छा हो जाती है।

नंगों की बस्ती में धोबी का व्यवसाय
अलाभकर व्यवसाय।

नक्कार-खाने में तूती की आवाज कौन सुनता है
बड़ों के आगे गरीब और असहाय की बात कौन सुनता है।

नक्कारे बाजे, दमामे बाज गए
दुनिया में न जाने कितने लोग आए और अपनी तड़क-भड़क दिखाकर चले गए।

नट विद्या पाई जाय, जट विद्या न पाई जाय
जाट बड़े चतुर होते हैं, यह भाव व्यक्त करने के लिए कहा जाता है।

न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी
काम न आने या काम न करना चाहने पर असम्भव शर्त लगाना।

न गाय के थन न किसान के भाण्डे
काम का कोई सिलसिला ही नहीं।

नया हकीम, दे अफीम
अनाड़ी हकीम की दवा का विश्वास नहीं करना चाहिए।

नये बावर्ची, साग में शोरबा
नयापन या फूहड़पन दिखाने पर कहा जाता है।

नाई, दाई, बैद, कसाई, इनका सूतक कभी न जाई
इन चारों का अशौच कभी नहीं जाता।

नाई की बारात में सब के सब ठाकुर
सब अपने को बड़ा समझने लगें तो काम कौन करे ?

नाई नाई बाल कितने जिजमान आगे ही आते हैं।
जो बात स्वयं ही सामने आने वाली हो उसके विषय में पूछ-ताछ करने की क्या जरूरत ?

नाई सबके पाँव धोये, अपने धोत लजाये
अपना काम स्वयं करने में लोगों को शर्म आती है।

नाऊ की सी आरसी हर काहू के पास
हर किसी के उपयोग की वस्तु।

नाच न जाने आँगन टेढ़ा
काम न आने पर साधनों को दोष देना।

नाचे-कूदे तोड़े तान, ताका दुनिया राखे मान
सीधे को कोई नहीं पूछता।

नट का बच्चा तो कलाबाजी ही करेगा

वंश या जाति का प्रभाव अवश्य पड़ता है।

नाप न तोल, भर दे झोल

अपने मतलब की कहना।

निठल्ला बनिया, पत्थर तोले

खाली बैठे बेमतलब का काम करने पर कहा जाता है।

नीम हकीम खतरा-ए-जान, नीम मुल्ला खतरा-ए-ईमान

थोड़ा ज्ञान हानिकारक होता है। अल्पविद्या भयंकरी।

नापे सौ गज, फाड़े न एक गज

वायदा पूरा न करने वाले के प्रति कहा जाता है।

नेकनाम बनिया, बदनाम चोर

वाणिज्य करने वाले की साख होती है चोर की नहीं।

नेवता बामन शत्रु बराबर

ब्राह्मणो को न्यौता दिया मानो घर मे शत्रु बुला लिया। ब्राह्मण बहुत खाने के लिए बदनाम हैं।

नौ कनौजिया और नब्बे चूल्हे

छूतछात पर व्यग्य।

नौकर आगे चाकर, चाकर आगे कूकर

नौकर का नौकर कुत्ते के समान होता है।

नौकरी अरण्य की जड़, नौकरी ताड़ की छाँव

नौकरी का क्या भरोसा ?

नौकरी की जड़ जबान पर

कोई भरोसा नही।

नौ की लकड़ी नब्बे खर्च

कम मूल्य की वस्तु के रखरखाव मे अधिक व्यय करना।

नौ की लकड़ी नब्बे ढुलाई

जितने का काम नही उस पर उससे अधिक खर्च।

नौ कूंड़े और दस नेगी

जितनी चीज नही, उससे अधिक माँगने वाले।

नौ नगद न तेरह उधार

नकद सौदा अच्छा।

पंच जहाँ, वहाँ परमेश्वर, पंच माने खुदा, खुदा माने पंच

पंच मिल खुदा, खुदा मिल पंच, पंच-मुख परमेश्वर

पंचो का न्याय ईश्वर का न्याय है।

पंचों का कहना सिर-आंखों पर, मगर परनाला यहीं गिरेगा
अपनी ही जिद्द पर अड़ा रहना।
पंचों का जूता और मेरा सिर
मैं पंचों की हर बात मानने को तैयार हूं।
पंच कहें बिल्ली तो बिल्ली ही सही
जो सबकी राय वही हम मान लेंगे।
पंचों शामिल मर गए, जानों गए बरात
सबके साथ कष्ट अखरता नहीं है।
पढ़े फारसी बेचे तेल, यह देखो कुदरत (किस्मत) का खेल
योग्यता होने पर भी निम्न श्रेणी का काम करने की बाध्यता।
पठान का पूत, घड़ी में औलिया घड़ी में भूत
घड़ी घड़ी में जिसका मिजाज बदले उसके लिए कहा जाता है।
पतुरिया रूठी, धरम बचा
चलो अच्छा हुआ। एहसान से बचे।
पर उपदेश कुशल बहुतेरे
उपदेश देना सबसे सरल है।
पहली बोहनी अल्ला मियां की आस
सुबह की पहली बिक्री शुभ होती है।
पहले तोल पीछे बोल, पहले तोलो पीछे बोलो
सोच-समझकर बोलना चाहिए।
पहले बो, पहले काट
काम शीघ्र तो परिणाम शीघ्र।
पहले मारे सो मीरी
जो आगे बढ़कर हाथ मारे जीत उसी की।
पाण्डे जो पछताएंगे, वही चने की खाएंगे
पहले न मानना और फिर खुशी से वही करना।
पाण्डे दोऊ दीन से गए
दो काम हाथ में लेने और दोनों से हाथ धोने पर कहा जाता है।
पानी पीकर जात पूछते हो
काम होने पर विचार करते हो।
पास कौड़ी न बाजार लेला
बेफिक्र। जिसका कोई लेना-देना नहीं उसके लिए कहा जाता है।
पानी बाढ़े नाव में, घर में बाढ़े दाम, दोनों हाथ उलीचिए, यही सयानो काम
खुलकर खर्च करना चाहिए।

पीर जी की सगाई मीर जी के यहाँ
व्यवहार समान स्तर पर ही होता है।

पीर बबर्ची भिश्ती खर
ब्राह्मणो पर व्यग्य। सब तरह का काम करने वाला आदमी।

पुराना ठीकरा और कलई की भड़क
पुरानी वस्तु को नई बनाने की व्यर्थ चेष्टा या बूढ़े के चमक-दमक से रहने पर कहा जाता है।

पठानों मे गाँव मारा, जुलाहों की चढ़ बनी
कुनबापरस्ती के लिए कहा जाता है।

पराये भरोसे खेला जुआ, आज न मुआ काल मुआ
सट्टे मे हानि उठानी पडती है।

पानी में पत्थर नहीं सड़ता
रकम किसी मातबर आदमी के पास जमा हो तो वह डूब नही सकती।

पीठ पीछे डोम राजा
पीठ पीछे डोम भी अपने को राजा समझता है।

फजर फजर की नाह कुछ नहीं
प्रात.काल ग्राहक सौदा लेने से इनकार करे तो अपशकुन मानकर दूकानदार कहता है।

फटे में पाँव, दफ्तर में नाँव
झगड़े मे पडने से ही अदालत में नाम लिखा जाता है।

फावड़ा न कुदार, बड़ा खेत हमार
झूठी शेखी बघारना।

बँधी रहे, न टके बिकाय
चीज रखी भले ही रहे पर सस्ती नही बेचेंगे या चीज बहुत दिनों तक रखी रहे तो फिर कोई उसे टके के लिए भी नही पूछता।

बजाज की गठरी पर झींगुर राजा
दूसरे की वस्तु पर घमंड करना।

बजा दे खनिया ढोलकी, मियां खैर से आए
कठिन काम का बीड़ा उठाने वाले के असफल लौटने पर कहा जाता है।

बड़ा बोल काजी का प्यादा
बड़ी बात कहने वाला काजी का प्यादा है क्योंकि वही उदण्डता से बोलता है।

बड़ी कमाई पर नोन बिकया
बहुत कमाई की तो नमक बेचा या बहुत कमाकर भी नमक बेचना।

बड़े चोर का हिस्सा नहीं

क्योंकि उसे जो लेना होता है वह पहले ही ले लेता है।

बड़े-बड़े ढह गए, बढ़ई कहे, 'कितना पानी'

असमर्थ के साहस करने पर कहा जाता है।

बड़े तो अमीर, घटे तो फकीर, मरे तो पीर

मुसलमानों के प्रति हिन्दुओं का कथन। मुसलमान हर स्थिति से लाभ उठाता है।

बंदा जोड़े पली-पली, रहमान उड़ावे कुप्पे

परिश्रम व्यर्थ जाने या कंजूसी का धन नष्ट होने पर कहते हैं।

बधिया मरी तो मरी आगरे तो देखा

नुकसान हुआ सो हुआ पर कुछ नया अनुभव तो हुआ।

बन आये की फकीरी भी भली

करते बने या सफलता मिले तो फकीरी का धन्धा भी अच्छा।

बनिया जिसका यार, उसको दुश्मन क्या दरकार

बनियों पर ताना।

बनिया मीत न वेश्या सती

स्पष्ट है।

बनिया भी अपना गुड़ छिपाकर खाता है

घर का भेद नहीं बताया जाता या बुरा काम छिपाकर किया जाता है।

बनिया मारे जान, ठग मारे अनजान

बनिया जान-पहचान वालों को ठगता है।

बनिया रीझे हर्रे दे

बनिया महा कृपण होता है।

बनिया से सयाना सो दीवाना

बनिए से अधिक चतुर कोई नहीं होता।

बनिये का जी धनिये बराबर

बहुत छोटा होता है।

बनिए के पेशाब में बिच्छू पैदा होता है

बनिया बहुत धूर्त होता है।

बनिए का बहकाया और जोगी का फिटकारा

इनका बचना कठिन है।

बनिए का बेटा कुछ देखकर ही गिरता है

हर काम मतलब से करता है।

बनिए का मुंह ग्राह और पेट मोम

पेट काटकर रुपये जमा करता है।

बनिए का सलाम बेगरज नहीं होता

मतलब से ही सलाम करता है।

बनिए का साहू भड़भूजा

बनिए पर व्यंग्य।

बरसे का काम छिदना नहीं होता

ठग को कोई नही ठग सकता।

बरसे सावन तो हों पाँच के बावन

सावन में वर्षा होने से खेती को बहुत लाभ होता है।

बाढ़ें पूत पिता के धर्मा, खेती उपजे अपने कर्मा

खेती अपने प्रयास से ही अच्छी होती है।

बाँस चढ़ी गुड़ खाय

प्रयत्न करने पर ही फल मिलता है।

बाजार उसी का जो ले के दे

लेन-देन में साफ रहने वाले की साख होती है, अत: उसे चीज मिलनी सरल होती है।

बाप ओझा माँ डायन

दोनों एक से तो संतान कैसी ?

बाप न मारी पीदड़ी बेटा तीरन्दाज, बाप न मारे मेंढकी बेटा तीरन्दाज

पुरखों से अपने को बढा चढाकर दिखाने वाले शेखीबाज को कहते हैं।

बाप बनिया पूत नवाब

बाप तो कंजूस बेटा खर्चीला।

बामन के बबुआ कहलें, नान जात लतमारले

ब्राह्मण तो सम्मान पाने से और छोटी जाति के लोग पिटने से ठीक रहते हैं।

बामन बचन परमान

ब्राह्मण की बात ही प्रामाणिक मानी जानी चाहिए।

बामन बेटा लोटे-पोटे मूल-ब्याज दोनों घोटे

ब्राह्मण चिकनी-चुपड़ी कहकर मूल और ब्याज दोनो हड़प लेता है या जब तक मय ब्याज वसूल नही कर लेता पिण्ड नही छोड़ता।

बामन मंत्री, भाट खवास, उस राजा का होवे नाश

जिस राजा का ब्राह्मण तो मंत्री और भाट खास निजी सेवक हो उसका नाश हो जाता है।

बामन हुए तो क्या हुए, गले लपेटा सूत
केवल गले में जनेऊ लपेटने से कोई ब्राह्मण नहीं होता। कर्म भी होने चाहिए।

बारह बरस दिल्ली रहे भाड़ ही झोंका
व्यर्थ समय गँवाने पर कहा जाता है।

बारह में तीन गए तो रही खाक
वर्षात के तीन महीने सूखे गए तो क्या बचा।

बाँस के बाँस, मल्लाही की मल्लाही
पूरा खर्च देने पर भी परेशानी या अपमानित होना।

बाहर पाण्डे लम्बी धोती, भीतर मंडुवे की रोटी
ऊपरी दिखावट पर व्यंग्य।

बिंध गया सो मोती, रह गया सो पत्थर
जो हो जाय वही सार्थक, बाकी व्यर्थ।

बिच्छू का मंतर न जाने सांप के बिल में हाथ डाले
जो काम बिल्कुल नहीं जानते, उसे करने का साहस करना।

बिन मांगे मोती मिलें, मांगे मिले न भीख
अनायास लाभ होने पर कहा जाता है।

बिनौलों की टूट में बरछी का घाव
लाभ थोड़ा, हानि बहुत।

बिन लाग खेले जुआ, आज न मुआ कल मुआ
जो बिना युक्ति के जुआ खेलता है, वह हानि उठाता है।

बिसवा विष की गांठ
वेश्या जहर की पुड़िया अथवा जमीन लड़ाई की जड़।

बीज बोआ नहीं खेत का दुःख
काम किया नहीं और सफल होगा या नहीं इस बात की चिन्ता।

बावन तोले पाव रत्ती
बिल्कुल ठीक।

बूट बड़ा होय तो भनसार न फोड़े
अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

बेधर्मा भई और बेहना के साथ
बुरा काम किया और मजा भी न आया, गुनाह बेलज्जत।

बेसवा सती न कागा जती
वेश्या चरित्रवान नहीं होती और कौवा भी निरामिष-भोजी नहीं होता।

बेंगनों का नौकर नहीं हूं, आपका नौकर हूं
ठकुरसुहाती करना।
बैठा बनिया क्या करे, इस कोठी का माल उस कोठी में धरे
खाली बनिया क्या करे, इस कोठी का माल उस कोठी में धरे।
बैद करे बैदाई, चंगा करे खुदाई
वैद का तो केवल नाम होता है आराम तो ईश्वर करता है।
बैद की बैदाई गई, कानी की आंख गई
दोनों ओर नुकसान।
बोटी देकर बकरा लेते हैं
खूब नफे का सौदा करते हैं।
बोया गेहूं उपजे जौ, बोये आम फले भाटा
भलाई के बदले बुराई या काम कुछ, परिणाम कुछ।
बोहनी ठोहनी रद
बोहनी होने से बला टलती है। बिक्री अच्छी होती है।
बोहरे की राम-राम, जम का सनेशा
क्योंकि आकर तकाजा करेगा।
ब्याज मोटा मूल का टोटा
ब्याज की दर अधिक होने से मूल के भी डूबने का भय रहता है।
भडुवे को भी मुंह पर भडुवा नहीं कहते
किसी के मुंह पर उसे भला-बुरा नहीं कहते।
भांड़ो संग खेती की, गा-बजा के अपनी की
लफगों के साथ काम करने से हानि होती है।
भागते चोर की लंगोटी भली
चलते चोर लगोटी लाभ।
भादों का घाम और साझे का काम
दोनो बुरे है।
भादों दोनो साख का राजा है
भादों में पानी बरसने से दोनो फसलें अच्छी होती है।
भादों में बरषा होय, काल पछोकर जाकर रोय
भादो में पानी बरसने से अकाल पडने का भय नही रहता।
भारी ब्याज मूल को खोय
ब्याज मोटा मूल का टोटा।
भुस के मोल मलीदा
बढ़िया चीज सस्ते दामो पर मार[illegible] नब क[illegible]

मूखा गया जोय बेचने अधाना कहे बंधक रखो, मूखा जोरू बेचे राजा कहे उधार लूं

विपदग्रस्त से अनुचित लाभ उठाना।

भूखा तुरक न छोड़िए हो जाय जी का झाड़

भूखे मुसलमान को नहीं छोड़ना चाहिए।

भूखा बंगाली भात ही भात पुकारे

आदत आसानी से नहीं छूटती।

भूमिया तो भूमि पं मरी तू क्यों मरी बटेर ?

जब साधारण मनुष्य बड़ों के झगडे मे पड़े तब कहते है।

भूल-चूक लेनी-देनी

हिसाब चुकाये जाने पर कहा या लिखा जाता है।

भूला फिरै किसान जो कातिक माँगे मेह

कातिक की वर्षा से कोई लाभ नहीं होता।

भले आदमी की मुर्गी टके-टके

भला आदमी मुलाहिजे में मारा जाता है।

भाव न जाने राव

राजा मुरव्वत या बाजार-भाव क्या जाने ?

भीख माँगे और आँख दिखावे

जबर्दस्ती माँगने या नीच के रौब जमाने पर कहा जाता है।

भीख माँगे और पूछे गाँव की जमा

छोटी हैसियत का आदमी जब ऐसी बात करे जिससे उसका कोई सम्बन्ध न हो, तब कहा जाता है।

मंडुये के आटे में शर्त क्या ?

सस्ती चीज के अच्छी होने की शर्त नहीं बदी जाती।

मकदूर की माँ कौड़ी ही रगड़ती है

कौड़ी-कौड़ी का हिसाब रखने से ही धनी बनते हैं।

मकर-चकर की घानी, आधा तेल आधा पानी

धूर्त और चालाक व्यापारियों के लिए कहा जाता है।

मक्खीमार बड़ा चमार

कंजूस के लिए कहा जाता है।

मट्टी का घड़ा भी ठोंक बजाकर लेते हैं

हर चीज देख-भालकर लेनी चाहिए या बिना विचारे कोई काम नहीं करना चाहिए।

मरजाद गाँव की धर्म पंचों का

पंचों के कर्तव्य पालन में ही गाँव की मर्यादा है।

मट्टी में हाथ डाले सोना होय

भाग्यवान पुरुष।

मरने पं डोम राजा

इसलिए कि श्मशान घाट पर वही कर लेता है। बाद में कुछ भी होता रहे।

मरे पं बैद

काम के नष्ट होने पर उपाय।

मर्द-औरत राजी तो क्या करेगा काजी ?

किसी मामले में अगर दो आदमियों में समझौता हो जाए तो उसमें फिर कोई क्या कर सकता है।

मर्द की बात और गाड़ी का पहिया आगे को चलता है

भले आदमी अपनी बात नहीं बदलते।

मल्लाह का लंगोटा ही भीगता है

क्योंकि वह और कोई वस्त्र पहिनता ही नहीं।

मल्लाहों को मल्लाही दी, बाँस के बाँस लाए

पैसा भी खर्च किया और आराम भी नहीं मिला।

मशालची मरे तो पटबीजना हो, यहाँ भी चमके, वहाँ भी चमके

हँसी में कहा जाता है।

माँ का पेट कुम्हार का आवा

एक ही माँ के बच्चे अलग-अलग रूप-रंग के होते हैं, इस पर कहा जाता है।

माँ एमी, बाप तेमी, बेटा शाने जाफरान, माँ तेलिन, बाप पठान, बेटा शाने जाफरान, माँ धोबन पूत बजाज, माँ पनहारी, बाप कंजर, बेटा मिर्जा संजर

जब कोई छोटा आदमी बहुत दिखावा करता है तब कहा जाता है।

माघ का जाड़ा जेठ की धूप बड़े कष्ट से उपजे

स्पष्ट है।

मुद्दई सुस्त, गवाह चुस्त
सहायक तत्पर और स्वयं लापरवाह।
मुंह लगाई डोमनी, नाचे ताल-बेताल
नीच मुंह लगाने से सिर पर चढ़ता है।
मुल्ला की दाढ़ी वाहवाही में गई, मियां की दाढ़ी तबर्रुक में गई
झूठी प्रशंसा में लुट गई।
मुहरें लुटी जायें, कोयलों पर मुहर
अशर्फियां लुटें कोयलों पर मुहर।
मेरा बैल मनतिक नहीं पढ़ा है
व्यर्थ की हुज्जत करने वाले से पिण्ड छुड़ाने के लिए कहा जाता है।
मेव का पूत बारह बरस में बदला लेता है
मेव प्रतिहिंसा के लिए प्रसिद्ध हैं।
मेव मरा तब जानिए जब तीजा हो जाय
मेव जाति के स्वभाव पर फब्ती। जाट मरा तब जानिए तेरहवीं हो जाय।
मुलाजिए नौ, तेजरौ
नया नौकर काम में फुर्ती दिखाता है।
माँगे की मंगनी गुड़िया का सिंगार
माँगे की चीज से शौक करना।
मौके का घूंसा तलवार से बढ़कर
समय पर किए गए काम का नतीजा अच्छा होता है।
मौत और गाहक का एतबार नहीं, जाने किस वक्त आ जाए
स्पष्ट है।
यहाँ अच्छे अच्छों के पर जलते हैं
यहाँ फरिश्ते भी घबराते हैं। कड़े अफसर या कठिन काम के विषय में कहा जाता है।
या मारे साझे का काम या मारे भादों का घाम
साझे का काम और भादों का घाम कष्ट दायक होते हैं।
या खाय घोड़ा या खाय रोड़ा
घोड़ा पालने और मकान बनाने में बहुत खर्च होता है।
यथा राजा तथा प्रजा
जैसा मालिक वैसा मातहत।
यार डोम ने किया जुलाहा तन ढाँकन को कपड़ा पाया, यार डोम ने किया सिपाही बात-बात में करे लड़ाई
जैसा संग वैसा फल।

रंगरेज होते तो अपनी दाढ़ी रंगते
मन की मौज।
रंडियों की खर्ची और वकीलों का खर्चा पेशगी ही दिया जाता है
क्योकि वाद मे फिर कोई जल्दी नही देता।
रंडी का जोबन रकाबी में
जो पैसा दे वही उसका उपयोग कर सकता है या बढ़िया चीजें खाने से रंडी का यौवन बना रहता है।
रंडी किस की जोरू और भड़ुवे किसके साले
ये अपने मतलब के होते हैं।
रंडी की कमाई या खाय ढाढ़ी या खाय गाड़ी
रंडी का पैसा गायकों को खिलाने मे या गाड़ी-भाड़ा देने में खर्च होता है।
रंडी के नाक न होती तो गू खाती
बदबू न आती तो गंदी से गदी चीज खा लेती या बदनामी का डर न होता तो गदे से गदा काम कर लेती।
रंडी तेरा यार मर गया, 'कहा कौन सो गली का ?'
सैकड़ों होते हैं कोई मर जाए तो उसे क्या परवाह ?
रंडी पैसे की आशना है
रंडी को पैसो से मतलब।
रंडी मोम की नाक होती है
पैसा देकर चाहे जिधर मोड़ लो।
रस मारे रसायन हो
पारे को भस्म करने से सोना-चांदी बनता है या इच्छा का दमन करने से सिद्धि मिलती है।
रही बात थोड़ी, जीन लगाम घोड़ी
बहुत थोड़े काम से ही जब आदमी यह समझ ले कि बस अब तो पूरा काम हो गया है, तब कहते हैं।
रहे अन्त मोची के मोची
फिर जैसे का तैसा हो जाना। बहुत कष्ट उठाने पर भी हालत न सुधरना।
राजपूत जाट मूसल के धनुहीं, टूट जात नवें नहीं
हठ और कट्टरता के लिए कहते हैं।
राज का राज में, ब्याज का ब्याज में, नाज का नाज में
जहा का पैसा वही खर्च हो जाता है।
राजा करे सो न्याय, पासा पड़े सो दांव
दैववशात् जो सामने पड़ता है, सहना पड़ता है।

राजा किसके पाहुने जोगी किसके मीत ?
    राजा और जोगी किसी के नहीं होते ।
राजा न्याव न करेगा तो घर तो जाने देगा
    अपनी बात निस्संकोच कहनी चाहिए अथवा प्रयत्न अवश्य करना चाहिए ।
रात को मालजादी दिन को खूं जादी
    रात को वेश्या दिन को भलीमानस ।
रांड का सांड, सौदागर का घोड़ा, खाय बहुत चले थोड़ा
    दोनों बुरे ।
रुपया आनी जानी शय है
    धन एक जगह नहीं टिकता ।
रुपया तो शेख नहीं तो जुलाहा
    धन से ही आदमी छोटा या बड़ा बनता है ।
रुपया हाथ का मैल है
    दान पुण्य में खर्च करो—भिखारियों का कथन ।
रुपये का काम रुपये से चलता है
    कोरी बातों से नहीं ।
रुपये को रुपया कमाता है
    रुपये से रुपया आता है या रुपये से रोजगार होता है ।
रोगिया भावे सो वैद बतावे
    रोगी कोई बड़ा आदमी हो तब कहा जाता है ।
रोजगार और दुश्मन बार-बार नहीं मिलता
    इनको पाकर छोड़ना नहीं चाहिए ।
रोज कुंआ खोदना और रोज पानी पीना
    कठिनाई में रहना ।
रोज-रोज की दवा भी गिजा हो जाती है
    जो दवा रोज खाई जाय, लाभ नहीं करती ।
रोजी का मारा दर-दर रोवे, पूत का मारा बैठ के रोवे
    रोजी की मार सबसे बुरी होती है ।
रोटिया चाकर चसहा घोड़, खाय बहुत चले थोड़
    ये दोनों किसी काम के नहीं होते ।
रोने से रोजी नहीं बढ़ती
    रोजी परिश्रम से बढ़ती है ।
लड़ाई में लड्डू नहीं बंटते
    मार-पीट होती है और यह अच्छी बात नहीं ।

लड़ न भिड़े तरकस पहिने फिरे
शेखीबाज के लिए कहा जाता है।
लड्डू न तोड़ो, चूरा झार खाओ
मूल मत छुओ। ब्याज से काम चलाओ।
लड़का रोवे बालों को नाई रोवे मुंड़ाई को
सब अपना स्वार्थ देखते हैं।
लगा तो तीर नहीं तो तुक्का ही सही
प्रयत्न करो, कुछ न कुछ नतीजा निकलेगा ही।
लाद दे लदा दे हाँकने वाला साथ दे
अनुचित माग करने पर कहा जाता है।
लीक-लीक गाड़ा चले, लीकहिं चले कपूत
लीक छोड़ तीनों चले, शायर सिंह सपूत
परम्परा का उल्लघन साधरण व्यक्ति का काम नही है।
लुहार कूँची कभी आग में कभी पानी में
एक सी स्थिति में रहना।
लूट का मूसल भी बहुत है
मुफ्त का जो मिले सो अच्छा।
लूट कोयलों की मार बरछी की
कोयलो की लूट मे बरछी का घाव।
लेता मरे कि देता
जो कर्ज नही देना चाहता उसका कथन कि देखें कौन मुझसे लेता है और देता है तो कौन ?
लेना एक न देना दो
किसी से कोई सरोकार नही। न किसी से एक लो न किसी को दो दो।
लेना देना काम डोम-ढाढ़ियों का मुहब्बत अजब चीज है
जो लेकर देना नही चाहते उन पर व्यंग्य।
लेना न देना, काटे न मसले
व्यर्थ समय नष्ट करना या न सौदा करना न खरीदना।
लेना न देना, गाड़ी भरे चना
कुछ खरीदना है नही। व्यर्थ की बात करना।
लेना देना साढ़े बाईस
सौदा पक्का करके भी न खरीदना। कोरी बात।
लेना न देना, बातों का जमा-खर्च
कुछ खरीदना है नही। व्यर्थ की बात करना।

लेने के देने पड़ गए

लाभ की जगह हानि हो गई या उलटे मुसीबत में पड़ गए।

लेने देने के मुंह में खाक पड़े, मुहब्बत बड़ी चीज है

लेकर टरकाना। कंजूस की उक्ति।

लेने में न देने में

कोई सम्बन्ध नहीं।

लोमड़ी के शिकार को जांय तो शेर का सामान कर लीजिए

तैयारी पूरी करनी चाहिए।

लोहा जाने लुहार जाने धौंकने वाले की बला जाने

अपने काम से काम रखना।

लोहे की मंडी में मार ही मार

दनादन हथौड़े ही चलते नजर आते हैं।

वक्त का गुलाम और वक्त ही का बादशाह

जब जैसा तब तैसा बन जाना। अवसरवादी अथवा वक्त ही कभी किसी को बादशाह तो कभी गुलाम बना देता है।

वक्त वक्त की रागिनी है

समय-समय की बात है या हर काम का एक समय होता है।

वह कीमियागर कैसा जो मांगे पैसा

जो सोना-चांदी बनाने का दावा करे वह पैसा क्यों मांगे ?

वकीलों का हाथ पराई जेब में

वकील दूसरों के धन पर जीते है।

वहम की दवा तो लुकमान के पास भी नहीं

शक्की को कोई नहीं समझा सकता।

शाह का माल, मुंह पड़े दूना

साहूकार हर सौदे में मुनाफा कमाता है।

शाह के सवाये कमबख्त के दूने

कम मुनाफे पर बेचने वाला सच्चा साहूकार होता है। जो अधिक चाहता है वह व्यापार से ही हाथ धो बैठता है।

शाह जी की अमलदारी है

किसी राजा जमींदार या हाकिम की अमलदारी में कोई अनोखी बात होना।

शिकार के वक्त कुतिया हगासी

काम के वक्त बहाना बनाकर गायब हो जाना।

शिकार को गए और खुद शिकार हो गए

दूसरे को हानि पहुंचाने गए और स्वयं हानि उठा बैठे।

शुक्रवार की बादरी रहे शनिश्चर छाय, घाग कहे सुन घागिनी बिन बरसे न जाय
स्पष्ट है।

शेख क्या जाने साबुन का भाव
जिसका जिस काम से सम्बन्ध नहीं होता, वह उसके भेद नहीं जानता।

शेख चंडाल न छोड़े मक्खी न छोड़े बाल
बहुत खाऊ के लिए तिरस्कारपूर्वक कहा जाता है।

शेख ने कछुए को भी दगा दी
धोखेबाज आदमी के लिए कहा जाता है।

शेख ने कौवे को भी दगा दी
बहुत धूर्त और चालाक के लिए कहा जाता है।

शेखी और तीन काने
पासे के तीन काने फेंके और उस पर भी इतनी शेखी।

सखी सूम का लेखा बरस दिन में बराबर हो जाता है
इसलिए कि कजूस का धन चोर-डाकू हर ले जाते हैं।

सब धान बाईस पसेरी
जहाँ सबको एक डंडे से हाँका जाए वहाँ कहा जाता है। सस्ती वस्तु के लिए भी कहा जाता है।

सब से भला किसान खेती करे और घर रहे
जीविका के लिए जो बाहर जाते हैं उनका कथन।

सब से भले मूलचन्द करे न खेती भरे न दण्ड
मूर्ख सुखी रहता है।

सरदारी का डंडा खटका है
जो अपनी बीती हुई प्रतिष्ठा के अभिमान में रहकर कोई छोटा पद स्वीकार नहीं करना चाहता उससे कहा जाता है।

सलीते में मेख लश्कर में शेख न रखे
शेख फौज के काम के नहीं होते।

सस्ता ऊंट, महंगा पट्टा
उलटी बात।

सस्ता गेहूँ घर-घर पूजा
अच्छी और सस्ती चीज का लोग खूब उपयोग करते हैं।

सस्ता रोवे बार-बार, महँगा रोवे एक बार
सस्ती चीज अच्छी नहीं होती। महँगी चीज ही टिकाऊ होती है।

सस्ता हँसावे महंगा रुलावे
सस्ता अन्न होने पर प्रसन्नता, महँगा होने पर दुःख।

सस्ती भेड़ की टांग उठाकर देखते हैं
अच्छा होने में सन्देह होता है।

सांटे की सगाई और ब्याजू रुपये का एहसान क्या ?
बदले का ब्याह और ब्याज पर लिए गए रुपये में किसी का क्या एहसान ?

साख गए फिर हाथ न आए
लेन-देन में विश्वास उठा तो उठा।

साख लाख से भली
लाखों रुपयों की अपेक्षा साख बड़ी चीज है।

साझा सधे न बाप का

साझा भला न बाप का, ताव भला न ताप का
साझा बाप के साथ भी नहीं निभता।

साझे का काम उजाड़े चाम
साझे के काम में झगड़ा होता है।

साझे की माँ गंगा न पावे
साझे का काम सफल नहीं होता।

साझे की सुई सांग में चले, साझे की सुई ठेले पर लदती है।
साझे का काम ठीक नहीं होता।

साझे की हांडी चौराहे पर फूटे
साझे के काम की बड़ी दुर्गति होती है।

सारी उम्र भाड़ ही झोंका
बेशऊर या बदकिस्मत से कहा जाता है।

सारी चोट निहाई के सिर
जिम्मेदार पर ही मुसीबत आती है।

सावन मास चले पुरवैया, खेले पूत बला ले भैया
सावन में पुरवैया चलने से सूखा पड़ता है इसलिए किसान का बेटा बेकार रहता है और उसकी माँ ईश्वर से कुशल मनाती है।

सावन मास चले पुरवैया, बेचे बरदा को लो गैया
सूखा पड़ने पर गुजर के लिए गाय खरीदे।

साहूकार को किसान, बालक को मसान
पीछे पड़ने पर कहा जाता है।

साहू बहे न जाय, गों से जाय
साहू जो भी करता है मतलब से करता है।

साहू बट्टे वह भी साहू
घाटे से बेचने वाला भी साहूकार होता है।

सिखाये पूत दरबार नहीं जाते

झूठे सिखाये-पढ़ाये गवाहों से मुकदमा नहीं जीता जाता।

सिपाही की जोरू, सदा रांड

सिपाही हमेशा बाहर रहता है। और लड़ाई में कभी भी मारा जा सकता है, इसलिए कहा जाता है।

सिपाही की रोटी सिर बेचे की

उसके सदा मरने का खतरा रहता है।

सिपाही को ढाल रखने की जगह चाहिए

फिर वह अपने लायक जगह बना लेता है या जहाँ लेटे वहीं उसका घर होता है।

सिफत भी हो मुफ्त भी हो, बड़े पने की भी हो

जो कम दाम में बढ़िया चीज खरीदना चाहता हो उससे व्यंग्य में कहा जाता है।

सिर नकद, नौकरी उधार

काम तुरन्त करवाना और मजदूरी के लिए टरकाना।

सिर नहीं या सिरोही नहीं

मरने-मारने पर उतारू हो जाने पर कहा जाता है।

सिर गाड़ी पर पहिया करे तो रोटी मिलती है

उद्यम करने से ही आय होती है।

सिंह बंदी के प्यादे का आगा-पीछा बराबर

जिसकी आय बहुत कम हो उसका आगा-पीछा भूत-भविष्य बराबर है।

सीख देत औरों को पाण्डा, आप भरे पापों का भाण्डा

परोपदेशे पाण्डित्यम्।

सील-सड़प्पे तो लाला जी के साथ गए, अब तो देखो और खाओ

कंजूसी पर कहा जाता है।

सीखेगा नाऊ का, कटेगा बटाऊ का

अपना ही स्वार्थ देखना।

सुई कतरनी गज उंगलेटा रखे सो दर्जी का बेटा

आदमी की पहचान उसके साज-सामान से होती है।

सुई कहे मैं छेदूं, पहले छेद कराये

मनुष्य दूसरों के दोष देखना चाहता है पर अपने दोष नहीं देखता।

सुई के नाके से सबको निकाला है

नासमझ जो सबसे एक सा व्यवहार करता है या होशियार जो सबको एक रास्ते पर चलाए।

सुई जहां न जाय वहां सूआ घुसेड़ते हैं।

जो काम हो नहीं सकता उसे जबर्दस्ती करना।

सुख सोवे कुम्हार जाको चोर न लेवे मटिया,सुख सोवे शेख और चोर न भांड़े लेय
सुख सोवे शेख जिनके न टट्टू न मेख, सुख सोवे होल जिनके गाय न गोल

जिसके पास जितना काम, उसको उतना ही आराम।

सुनार की खटाई और दर्जी के वन्द

टाल-मटोल की आदत पर कहते हैं।

सुनार अपनी मां की नथ में से भी सोना चुराता है

सुनार की चोरी की आदत नहीं छूटती।

सुर में इस्सर बसे

संगीत में ईश्वर का वास है।

सूखा-साखा बामन हो गया फूल-फाल चुगता

गरीब के अचानक पैसे वाला होने पर कहा जाता है।

सूजा सटका कपड़ा फटका

सुई के घुसते ही कपड़े में छेद हो जाता है। दुष्ट जहां जाता है कुछ न कुछ उपद्रव करता है।

सूखे धानों पानी पड़ा

ऐन मौके पर सहायता मिली।

सूखते धान को पानी मिला

नष्टप्राय को जीवन-दान मिला।

सूखे सावन रूखे भादों

भदई फसल अच्छी नहीं होती।

सूत न कपास जुलाहे (कोली) से लट्ठमलट्ठा

बिना कारण लड़ना।

सूत के बिनौले हो गये

गुड़-गोबर हो गया। सब चौपट हो गया।

सूना खेत जोड़िया सोवे क्यों न खेत ऊजड़ होवे

खेत यदि सूना हो और रखवाली करने वाला भी यदि सोता हो, तो खेती उजड़ जाएगी।

सूनी सार से मरखना बैल भला

कुछ न होने से कुछ होना अच्छा।

सूप बोले तो बोले चलनी भी बोले जिसमें बहत्तर छेद

अपने अवगुण न देखकर दूसरों की बुराई करने पर कहा जाता है।

सूरमा चमा भाड़ नहीं फोड़ सकता
कमजोर ताकतवर का सामना नही कर सकता। अकेले से काम नही हो सकता।

सूरा काटे और बिल में घुस जाय
वीर पुरुष अपना रास्ता स्वयं बना लेते हैं।

सेर को सवा सेर
जबर्दस्त को भी दबाने वाला होता है।

सेर में पसेरी का धोखा
असंभव बात। अधिक नुकसान होने पर ही कहा जाता है।

सेर में पौनी भी नहीं कती
अभी कुछ भी काम नही हुआ।

सोना-चांदी आग ही परखते हैं
मनुष्य की परीक्षा विपत्ति मे ही होती है।

सोना जाने कसे और मानुस जाने बसे
सोने की परीक्षा कसौटी पर और मनुष्य की परीक्षा सम्पर्क से होती है।

सोना लेकर मिट्टी भी नहीं देता
लेकर न देने वाले से कहा जाता है।

सोने से गढ़ाई महंगी
वस्तु के मोल से बनवाई अधिक या लाभ कम, परिश्रम अधिक।

सोवे राजा का पूत या जोगी अवधूत
क्योंकि उन्हें किसी बात की चिन्ता नही रहती।

सोवे भाड़ पर सपना देखे धरोहर का
साधारण आदमी के डींग हाँकने पर या बड़ी-बड़ी इच्छाएं करने पर कहा जाता है।

सौ के रह गए साठ, आधे गए नाट, दस देंगे दस दिला देंगे दस का देना क्या
कर्ज चुकाने मे हीला-हवाला करने या झूठा-सच्चा हिसाब लगाकर रकम बराबर करने पर कहा जाता है।

सौ गज वारूँ और एक गज न फाड़ूँ
देना कुछ नही, केवल बहलाना या कहना बहुत, काम कुछ न करना।

सौदा कर नफा होगा
क्रय-विक्रय या उद्योग से फल अवश्य मिलेगा।

सौ दिन चोर के तो एक दिन साह का
बदमाश कभी न कभी पकड़ा ही जाता है।

सौदा बिक गया दूकान रह गई
जवानी निकल गई, पंजर रह गया।
सौ भड़ुवे मरें तो एक चम्मचचोर पैदा हो, सौ रंडी मरें तो एक आया।
खानसामा और आया बड़े दुश्चरित्र होते हैं।
सौ दंडी न एक बुन्देलखंडी
एक बुन्देलखंडी सौ लठैतों के बराबर होता है।
सौ सुनार की एक लुहार की
मौके की एक चोट सफल होती है।
सौ लठैत न एक पटैत
एक पटेबाज सौ लठैतों के बराबर होता है।
सौदा सौदाइयों बात नफे में
ग्राहक पटाने के लिए लच्छेदार बातों से तात्पर्य।
हँसते ठाकुर, खँसते चोर, इन दोनों का आया और
हानि उठानी पड़ती है।
हँसता बामन खँसता चोर, कुपढ़ कायथ कुल का बोर
तीनों कुल के नाशक हैं।
हँसुआ के ब्याह खुरपा के गीत
असंगत काम।
हँसुआ रे ! तू टेढ़ काहे ? आ तो अपनी गौ से
मनुष्य को अपना काम निकालने के लिए टेढ़ा होना पड़ता है।
हकीम को कारूरे(पेशाब) से लाज ?
कैसे काम चले ?
हजार इलाज और एक परहेज
पथ्य हजारों इलाज से अच्छा है।
हजार भड़ुवे मरें तो एक खिदमतगार हो
खितमतगार भड़ुवों से भी अधिक धूर्त होता है।
हजार रंडियाँ मरें तो एक आया हो
आया रंडी से भी अधिक धूर्त होती है।
हज्जाम का उस्तरा मेरे सिर पर भी फिरता है और तेरे सिर पर भी
जैसा मैं वैसे तुम।
हज्जाम का लड़का पहले उस्ताद का ही सिर मूँड़ता है
गुरु को ही चूना लगाता है।
हज्जाम के आगे सबका सिर झुकता है
वक्त पर सबको सिर झुकाना पड़ता है।

हथिया बरसे, चित्रा मँडराय, घर बैठे किसान रिरियाय

हस्त नक्षत्र में पानी बरसने से और चित्रा मे बादल मंडराने से फसल की हानि होती है।

हम से और चौसर

हमसे ही चालाकी अथवा मजाक।

हर हरवाहा पक्का काम, चटर-पटर करे चतुरे का चाम

पक्का काम किसान का ही होता है।

हर फन मौला, हर फन अधूरा

जो हर फन सीखना चाहता है वह किसी में भी सफल नही होता।

हराम की कमाई हराम में गँवाई

बुरे काम की कमाई बुरे काम में ही खर्च होती है।

हरी खेती, गाभन गाय मुँह पड़े तब जानो जाय

जब तक खेत का अनाज घर न आ जाय और गाय भी न बिआए तब तक क्या पता क्या हो?

हलवाही चरवाहे को

जिसका जो काम नही उससे वह काम लेना।

हलवाई की जाई, सोवे साथ कसाई

धर्मविरुद्ध कार्य करने पर कहा जाता है।

हल्दी की गाँठ हाथ लगी, चूहा पंसारी बन बैठा

थोड़ा सा धन या विद्या पाकर अपने को बड़ा समझना।

हल्दी लगे न फिटकरी, रंग चोखा ही आय

खर्च कुछ न हो और काम भी बन जाए।

हाट भलो न सीर की संगत भली न वीर की

साझे की दूकान और स्त्री का साथ अच्छा नही।

हाथ का देना और बैर बिसाना

उधार देना दुश्मनी मोल लेना है।

हाथ का हथियार पेट का आधार

अपने औजारो के सम्बन्ध मे कारीगर का कथन।

हाथ कौड़ी न बाजार लेखा

झूठी शान दिखाने पर कहा जाता है।

हाथ लिया काँसा तो रोटियों का क्या साँसा

जब भीख ही माँगनी है तो रोटियों की क्या कमी?

हार में हार न घर में खेती

गरीबी हालत के लिए कहा जाता है।

हारे जुआरी को कब कल पड़ता है
जुआरी हारने पर खेलने के लिए और भी बेचैन हो जाता है।

हारे भी हार जीते भी हार
अदालत के मुकद्दमों पर कहा जाता है।

हाली का पेट सुहाली से नहीं भरता
परिश्रमी को अधिक भोजन चाहिए।

हिन्दू मुसलमान का चोली-दामन का साथ है
एक के बिना दूसरे का काम नहीं चल सकता।

हिन्दीन फारसी लालाजी बनारसी
पढ़े-लिखे के मूर्खता करने पर कहा जाता है।

हिसाब जौ-जौ, बख्शीश सौ-सौ
हिसाब पाई-पाई का लो ईनाम चाहे सैकड़ों में दो।

हीजड़े की कमाई मुंडौनी में गई
रोज-रोज हजामत बनाने के कारण।

हीनी पुड़िया छत्तीस रोग
घटिया दवा से रोग और बढ़ते हैं अथवा छत्तीस रोगों में घटिया दवा काम नहीं देती।

हीरे की कदर जौहरी जाने
गुण की परख गुणी ही जानता है।

हौज भरें तो फव्वारे छूटें
खूब पैसा होने पर ही खूब खर्च सम्भव है।

धर्म, संस्कृति और लोक-विश्वासों पर आधारित लोकोक्तियं

अन्त बुरे का बुरा

बुरे का अन्त बुरा ही होता है।

अन्त भला सो भला

परिणाम में जो अन्ततः अच्छा निकले वही भला अथवा सब बातों को सोचकर अन्त मे जिस परिणाम पर पहुँचा जाय, वही ठीक है।

अन्त भले का भला

भले का अन्त भला ही होता है।

अन्दर छूत नहीं, बाहर कहें दुर-दुर

पाखण्डी के प्रति कहा जाता है।

अंधा मुल्ला टूटी मसीदा

जैसे को तैसा या दोनों एक से।

अंधी गैया, धरम रखवाली

दीन-हीन की सेवा करनी चाहिए।

अंधे का खुदा हाफिज

अंधे की रक्षा ईश्वर करता है। (अंधी गौ का दैव रखवाला)

अकेले दुकेले का अल्लाह बेली

अनाथ का ईश्वर सहायक होता है।

अच्छा किया खुदा ने, बुरा किया बंदे ने

किसी काम के लिए ईश्वर को दोष देना व्यर्थ है।

अकाल मृत की मुक्ति नहीं

असामयिक मृत्यु अच्छी नही होती।

अच्छा किया रहमान ने, बुरा किया शैतान ने

ईश्वर के सब काम अच्छे होते है, बुरे काम तो शैतान करता है—व्यंग्योक्ति।

अनहोनी होती नहीं, होती होवनहार
होनी होकर ही रहती है।
अनकर धन पर लछमी-नरायन
पराये धन को हड़प जाना या उस पर धन्ना-सेठ बनना।
अनमिले के त्यागी रांड मिले बैरागी
जब जैसा अवसर देखना तब वैसा करना।
अल्वर देवी जव्वर बकरा
जैसे को तैसी वस्तु।
अलख पुरुष की माया, कहीं धूप कहीं छाया
ईश्वर की लीला जानी नही जाती।
अपना हाथ जगन्नाथ
अपना हाथ जगन्नाथ की तरह पवित्र है अर्थात् अपने हाथ का काम ही अच्छा होता है।
अल बल खुदा बल
ईश्वर का बल ही सबसे बड़ा बल है।
अल्लाह अल्लाह करो और खैर मानो
बस अब तो खुदा का नाम लो और कुशल मनाओ।
अल्लाह अल्लाह खैर सल्लाह
ईश्वर की बड़ी कृपा जो सब काम खैरियत से हुआ।
अल्लाह का दिया सब कुछ
ईश्वर ने जो दिया वही बहुत है या जो कुछ है ईश्वर का दिया है।
अल्लाह का दिया सिर पर
ईश्वर जो कुछ दे सहर्ष स्वीकार है अथवा ईश्वर का दीपक (चांद) हमारे सिर पर है जो रात को प्रकाश देता है।
अल्लाह का नाम लो
ईश्वर का भय खाओ।
अल्लाह पार है तो बेड़ा पार है
ईश्वर की कृपा हो तो सब काम बन जाता है।
अल्ला हो अकबर
ईश्वर महान है।
अल्लाह ही की चोरी नहीं तो बन्दे का क्या डर है?
जब ईश्वर सब जानता है, उससे कोई बात छिपी नहीं तो आदमी से क्या डरना?

अपने मरे बगैर स्वर्ग नहीं दीखता, अपने मुए राम नहीं

अपनी मुसीबत आप ही झेलनी पड़ती है या अपने किए बिना काम नहीं होता।

अस्तबल की बला बन्दर के सिर

किसी का दोष किसी के सिर मढ़ा जाना।

आँखों की सुइयाँ निकालना बाकी है

बस थोड़ा काम बाकी है।

आई तो रोजी नहीं तो रोजा

मिला तो ठीक नहीं तो व्रत समझो।

आई मौज फकीर की, दिया झोंपड़ा फूंक

विरक्त किसी भी वस्तु का मोह नहीं करता या मस्तमौला का मन-मर्जी काम करना।

आई तो ईद बरात न आई तो जुम्मेरात

हर दशा में संतोष करना।

आए थे हरि-भजन को ओटन लगे कपास

ऊँचा काम करने आए थे नीच कर्म में फँस गए।

आए मीर, भागे पीर

बड़े हुनरमन्द के सामने छोटे की दाल नहीं गलती।

आओ पीर घर का भी ले जाओ

मिलने की आशा नहीं और गाँठ का भी चला जाना।

आग में भूत या मुसलमान हो

दोनों में से एक बुरा काम करने के लिए विवश होने पर कहा जाता है।

आगे खुदा का नाम

जो कुछ कर सकते थे कर दिया, आगे खुदा मालिक है।

आठ बार, नौ त्योहार

हिन्दुओं के बहुत त्योहार होते हैं या हमेशा त्योहार मनाना।

आत्मा में पड़े तो परमात्मा की सूझे

पेट भरा होने पर ही कोई काम सूझता है।

आदम आया, दम आया

आदम के साथ सृष्टि का आरम्भ हुआ।

आदमी का शैतान आदमी है

मनुष्य ही मनुष्य के पतन का कारण होता है।

आधे गाँव दिवाली, आधे गाँव फाग

मिलकर काम न करना या मनमानी करना।

आपा तजे तो हरि भजे

अहंकार छोड़ने पर ही ईश्वर-भक्ति संभव है।

आया रमजान, भागा शैतान

अच्छे के सामने बुरा नहीं ठहरता।

आवे न आवे वृहस्पति कहावे

दम्भी व्यक्ति के लिए कहा जाता है।

आशिकी और खाला जी का घर

सोने में सुगन्ध। कोई रोक-टोक नहीं।

आशिकी और मामा जी का डर

इश्क में मामा जी का डर क्या ? क्या चिन्ता ?

आशिकी खाला जी का घर नहीं

प्रेम करना आसान नहीं है।

आज मरे, कल पितरों में

मरने पर सब भूल जाते हैं।

इक लख पूत सवा लख नाती, उस रावण के दिया न बाती

बड़े परिवार या सम्पत्ति का गर्व नहीं करना चाहिए। अन्त में कोई साथ नहीं देता।

इधर किबला कुतुब, उधर खदोजा; मूतूं तो मूतूं किधर ?

दोनों ओर सकट।

ईंट की देवी झामे का परसाद

जैसी देवी वैसी पूजा या जैसे को तैसा।

ईद पीछे चाँद मुबारक

शुभ अवसर के बाद बधाई या बेमौके का काम।

ईद पीछे टर, बरात पीछे धौंसा

काम मौके पर ही होना चाहिए। ईद पीछे टर।

ईश्वर (राम) की माया कहीं धूप कहीं छाया

देवो विचित्रा गतिः।

उगले तो अन्धा, खाये तो कोढ़ी

साँप-छछूंदर की दशा। असमंजस की स्थिति।

उधेड़ के रोटी न खाओ, नंगी होती है

उधेड़कर रोटी खाना अच्छा नहीं, इससे बदनामी होती है।

एक न शुद दो शुद

एक ही क्या कम था और अब दो हो गए। दूसरे के अनावश्यक रूप से बोलने या हस्तक्षेप करने पर कहा जाता है।

एक इतवार के व्रत से जनम का कोढ़ नहीं जाता

कोई पुरानी बीमारी एक-दो दिन के प्रयास से दूर नही होती।

एक ओर चार वेद, एक ओर चतुराई

पुस्तकीय ज्ञान से चतुराई श्रेष्ठ है।

एक तो डायन दूसरे हाथ लुआठ

दुष्ट के हाथ ताकत आने पर वह और भी भयंकर हो जाता है।

एक पापी सारी नाव को डुबोता है

एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है।

एक हाथ जिक्र पर, एक हाथ फिक्र पर

एक हाथ से माला जपना और दूसरे से काम की फिक्र करना। पाखण्डी के लिए कहा जाता है।

ऐसे होते तो ईद-बकरीद में काम आते

निठल्ले के शेखी बघारने पर कहा जाता है।

ओलती तले का भूत सत्तर पुरखों का नाम जाने

घर का आदमी घर के सब भेद जानता है।

एक तो मीरां थे ही, दूजे खाई भांग

हालत और बिगड़ने पर कहा जाता है।

कब्र में तीन दिन भारी होते हैं

मरने के बाद भी परेशानियों से पिण्ड नही छूटता।

कब्र पर कब्र नहीं बनती

कब्र पर कोई कब्र नही बनाता, कर्ज चढाना अच्छा नही, फिजूलखर्ची ठीक नही, घर मे सभी एकमत नही होते या विधवा के विवाह की भर्त्सना मे कहा जाता है।

करना चाहे आशिकी और मामा जी का डर

जब इश्क करने चले तो फिर डर किस बात का?

कर भला हो भला, अंत भले का भला

भला करने वाले का अन्त मे भला ही होता है।

करम के बलिया पकाई खीर हो गया दलिया

भाग्यहीन जिस काम मे भी हाथ डालता है वही चौपट हो जाता है।

कल का जोगी चूतड़ जटा

नौसिखिये का ऊटपटांग कार्य या ढंग।

कागै काग न भिखारी भीख

सूम के लिए कहा जाता है जो न तो काग-बलि देता है और न भिखारी को भीख।

कानी गाय, बामन के दान

निकम्मी चीज दूसरे के मत्थे मढ़ना।

काली गाय बामन के दान

श्रेष्ठ वस्तु दूसरे को देनी चाहिए।

काल का मारा सब जग हारा

मौत से सब हारे हैं।

करम-गति टारे नाहिं टरी

कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है।

करम प्रधान विश्व करि राखा

जो जस कीन्ह सो तस फल चाखा।

संसार में कर्म की प्रधानता है, जो जैसा करता है, वैसा ही फल पाता है।

काल के हाथ कमान, बूढ़ा बचे न जवान

मृत्यु किसी को नहीं छोड़ती।

किसकी माँ ने घोंसा खाया है ?

अर्थात् मेरे जन्म के अवसर पर मेरी माँ ने भी सोंठ खाई है, भूसी नही खाई। एक प्रकार की चुनौती।

किसी का लड़का, कोई मिन्नत माने

जो काम स्वयं करने का है, उसे कोई दूसरा करता फिरे तब कहते हैं।

कुएँ का ब्याह, गीत गावे मजीद का

असंगत काम।

कुफ्र तोड़ा खुदा-खुदा करके

ईश्वर का नाम ले-लेकर किसी प्रकार विपत्ति से पार पाया।

कुरान पर कुरान रखने का क्या मुजायका है ?

दो श्रेष्ठ वस्तुओं को किसी भी प्रकार रखो, वे तो हर हालत में श्रेष्ठ ही रहेंगी।

कोढ़ी के जूं नहीं पडतीं

लोगों का विश्वास है कि कोढ़ी के सिर में जुएँ नही पडती अर्थात् वे भी उससे दूर रहती हैं।

कोसे जियें, असीसें मरें

दुनिया के सारे काम ईश्वर की मरजी से होते हैं। मनुष्य कुछ नही कर सकता।

क्या करेगा दौला, जिसे दे मौला

भगवान ही सबको देता है, दौला उसमें कुछ नहीं करता।

खल्क की जबान खुदा का नक्कारा

जनमत ईश्वर का उपदेश है।

खल्क खुदा का मुल्क बादशाह का

सृष्टि ईश्वर की और जमीन बादशाह की है।

खड़े पीर का रोजा रखा है क्या

जो आने पर आसन ग्रहण न करे उससे कहते हैं।

खाला का दम और किवाड़ की जोड़ी

डींग हांकने वाले के लिए कहा जाता है।

खाला जी का घर नहीं है

आसान काम नही है।

खिजर मिले जो खिजर मिले

इच्छित वस्तु के मिलने पर कहा जाता है।

खुदाई ख्वार, गधे सवार

ईश्वर करे तुझे गधे पर सवार होना पड़े।

खुदा का दरवाजा, हमेशा खुला है

हमेशा उससे फरियाद की जा सकती है।

खुदा का दिया कंधे पर, पंचों का दिया सिर पर

पंचों की आज्ञा ईश्वर की आज्ञा से बड़ी है।

खुदा का दिया सिर पर

खुदा का दिया मजूर या खुदा का दीपक (चांद) हमारे सिर पर है।

खुदा का मारा हराम, अपना मारा हलाल

जो अपने-आप मर जाता है उसे तो अपवित्र और जिसे स्वयं मारते हैं उसे पवित्र मानते है।

खुदा किसी को किसी पर मुहताज न करे

ईश्वर करे हमें कभी किसी का एहसान न लेना पडे।

खुदा किसी को लाठी लेकर नहीं मारता

मनुष्य स्वयं अपने किए का फल भोगता है।

खुदा की बातें खुदा ही जाने

ईश्वर की बातें ईश्वर ही जानता है।

खुदा की चोरी नहीं तो बन्दे को क्या डर

कोई काम छिपाकर क्यो करे ?

खुदा की लाठी में आवाज नहीं

ईश्वर कब किस तरह दंड देता है, इसका पता नही चलता।

खुदा के घर से फिरे हैं
जो मौत से बच जाए या भविष्य-वक्ता होने का ढोंग करे उससे कहा जाता है।

खुदा जालिम से पाला न पड़े
ईश्वर अत्याचारी से बचाए।

खुदा देखा नहीं तो अक्ल से तो पहचाना है
भले ही ईश्वर को देखा न हो पर उसे बुद्धि से जाना जा सकता है।

खुदा देता है तो नहीं पूछता 'तू कौन है'?
ईश्वर को जिसे देना होता है उसे देता है फिर वह कोई भी हो।

खुदा देता है तो छप्पर फाड़कर देता है
किसी न किसी बहाने देता ही है।

खुदा दो सींग भी दे तो वे भी सहे जाते हैं
ईश्वर का दिया कष्ट भी स्वीकार्य है।

खुदा भरे को भरता है
जिसके पास पैसा होता है, ईश्वर उसी को और देता है।

खुदा भूखा उठाता है, भूखा सुलाता नहीं
ईश्वर दिन भर मे सबको भोजन देता है।

खुदा महफूज रखे हर बला से
ईश्वर हर विपत्ति से बचाए।

खुदा मेहरबान तो जग मेहरबान
ईश्वर की कृपा है तो सबकी कृपा है।

खुदा रज्जाक है, बन्दा कज्जाक है
ईश्वर सबका रक्षक है, मनुष्य भक्षक है।

खुदा शक्कर खोरे को शक्कर ही देता है
ईश्वर सबकी इच्छा पूरी करता है।

खुदी और खुदा में बैर है
अहमन्यता और ईश्वर मे बैर है।

गंगा आवनहार, भगीरथ के सिर पड़ी

गंगा को आना था भगीरथ को जस
जिस काम को होना होता है वह होकर रहता है। अनायास किसी को यश मिल जाता है।

गंगा की गैल में मदार के गीत
दो बेमेल वस्तुओं का साथ कैसे निभे?

गंगा किसकी खुदाई है

एक मूर्खतापूर्ण प्रश्न ।

गंगा गए मुड़ाए सिद्ध

सुयोग मिलते ही काम कर देना चाहिए ।

गंगा नहाए क्या फल पाए, मूंड़-मुंड़ाए घर को आए

ढोंग करने वालों पर व्यंग्य ।

गंजी सती, ऊत पुजारी

जैसे को तैसा ।

गए थे रोज़ा छुड़ाने नमाज गले पड़ी

आराम का उपाय करने पर कष्ट मिलना ।

गए बिचारे रोजे रहे एक कम तीस

तीस में से एक रोजा कम हो गया, उन्तीस रह गए, मुसीबत कम तो हुई ।

गंगा गए गंगादास, यमुना गए यमुनादास

मुंह देखी कहने, अविश्वसनीयता या सिद्धान्तहीनता के प्रसंग में कहते हैं ।

गया पेड़ जिन बैठे बगुला

बगुले का बैठना अपशकुन माना जाता है ।

गले पड़ी बजाए सिद्ध

जब विवश होकर कोई काम करना पड़े तब कहा जाता है ।

गाय का दूध सो माय का दूध

गाय का दूध माँ के दूध के समान होता है ।

गिने-गिनाए टोटा पाए

रोज-रोज गिनने या सँभालने से घाटा होता है ।

गौरा रूठेगी तो अपना सुहाग लेगी भाग तो न लेगी

आश्रयदाता के अप्रसन्न होने पर आत्म-निर्भर व्यक्ति का कथन ।

घड़ी में गांव जले नौ घड़ी भद्रा

आवश्यक कार्य करने के लिए टाल-मटोल करने पर कहा जाता है ।

घर आया नाग न पूजे, बाम्बी पूजन जाय

जो काम आसानी से हो रहा हो उसे न करके बाद में कष्ट उठाने पर कहा जाता है ।

घर का जोगी जोगना आन गाँव का सिद्ध

गुणी व्यक्ति का सम्मान घर में नहीं बाहर होता है ।

घर का भेदी लंका ढावे

घर का शत्रु बाहरी शत्रु से अधिक बुरा होता है । आपसी फूट बुरी होती है ।

घर के खीर खायें और देवता भला मानें

देवताओ के नाम से खीर-पूड़ी खाना या स्वार्थ के लिए कोई ऊँचा बहाना करना।

घर के पीरों को तेल-मलीदा

घर वालो की अपेक्षा बाहर वालो से अधिक अच्छा व्यवहार।

घर के रोवें बाहर के खायें दुआ देत कलन्दर जांए

घर के लोगों को न पूछना और बाहर वालों का आदर सम्मान करना।

घर में रहे न तीरथ गए, मूंड़-मुंड़ाकर जोगी भए

जीवन का कोई ध्येय पूरा न हो सका या किसी काम मे सफलता न मिल सकी।

घर में दिया तो मस्जिद में दिया

पहले घर सँभाले पीछे बाहर।

घड़ी में औलिया घड़ी में भूत

मानसिक स्थिति का एक सा न रहना।

घोड़ा चाहिए बिदायगी को जरा फिरते से अइयो

जरूरत पर चीज न दी जाय और उसके लिए टाल दिया जाय तब कहा जाता है।

चांदनी में शहद नहीं होता

शुक्ल पक्ष में मधु-मक्खियाँ शहद इकट्ठा नही करती।

चार वेद और पांचवां लवेद

डंडे से सब डरते है।

चिराग रोशन मुराद हासिल

पीरों की दरगाह में दिये जलाकर रखो और अपनी मनोकामना पूरी करो।

चींटी की आवाज अर्श पर

निर्बल की पुकार भगवान सुनता है।

चील के घर में पारस होता है

लोक-विश्वास।

चीरा है जिसने वही नीरेगा

जिसने मुँह दिया है वही भोजन भी देगा।

चुगलखोर खुदा का चोर

चुगलखोर बुरा आदमी होता है।

चुड़ैल पर दिल आ गया तो परी क्या चीज है

प्रेम रूप-कुरूप नही देखता, वह अन्धा होता है।

चुप की दाद खुदा देगा

चुपचाप सहन करने वाले की ईश्वर सहायता करता है।

छट्टी न चिल्ला हराम का पिल्ला

तेरी न छठी हुई है और न चालीसा। तू हराम का बच्चा है।

छठी के पोतड़े अब तक नहीं धुले

अभी तुम बच्चे हो।

छींकते गए छींकते आए

छीकने से काम बिगड़ जाता है। काम से गए तो खाली हाथ लौटना पड़ता है।

छोटी सी बछिया बड़ी सी हत्या

बुरा कर्म तो हर हालत मे बुरा ही रहेगा।

चुड़ैल पर दिल आ जाए तो वह भी परी है

कुरूप से कुरूप स्त्री से भी अगर प्रेम हो जाए तो वह भी सुन्दर लगती है।

जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान

संतोषं परमं सुखं।

जम से बुरा जनेत

बराती यम से भी बुरे होते हैं।

जहां कुत्ता होता है वहां नेकी का फरिश्ता नहीं आता

मुसलमानो का एक विश्वास।

जहाँ बहू का पीसना, वहीं ससुर की खाट

एक आपत्तिजनक बात।

जा विध राखे राम, ताही विध रहिए

दुःख मे धैर्य और संतोष से काम लेना चाहिए।

जाहिद का क्या खुदा है हमारा खुदा नहीं,

ईश्वर सबका है।

जाहिल फकीर शैतान का टट्टू

मूर्ख साधु के सिर पर शैतान सवार रहता है।

जाप के विरते पाप

यह सोचकर कि अच्छे कर्मों से बुरे कर्म ढँक जाते है, दुष्कर्म करना।

जाको राखे साइयां, मारि सकै न कोय

जिसका रक्षक ईश्वर है उसको कोई भी नही मार सकता।

जिजमान चाहे स्वर्ग को जाय चाहे नरक को मुझे दही-पूड़ी से काम

केवल अपना स्वार्थ देखना।

जितने मुण्ड, उतने पिण्ड
जितने लड़के हों पितरों का श्राद्ध उतना ही अच्छा होगा।
जांत-पांत पूछे न कोई, हरि को भजे सो हरि का होई
ईश्वर-भक्त की कोई जाति नहीं होती या ईश्वर के लिए सब समान है।
जिधर रब, उधर सब
ईश्वर जिसका साथी है, उसके सब साथी हैं।
जिनकी यहां चाह, उनकी वहां भी चाह
सज्जन पुरुषों को ईश्वर भी चाहता है और अपने पास जल्दी बुला लेता है।
जिसने कोड़ा दिया, वह घोड़ा भी देगा
आलसियों या भाग्यवादियों का कथन।
जिसने चीरा वही नीरेगा
जिसने मुंह दिया, वही भोजन भी देगा।
जिसने लगाई वही बुझाएगा
दैवी विपत्ति को दैव ही दूर कर सकता है, जिसने झगडा उठाया वही सुलझाएगा अथवा जिसने भूख दी है वही उसे मिटाएगा।
जिधर मौला उधर आसफउद्दौला
ईश्वर की मर्जी के खिलाफ तो आसफउद्दौला भी नहीं जा सकते।
जीते के खून से हीरा धुंधला होता है
जिन्दे की खून की गरमी के सम्मुख हीरे की चमक भी धुंधली होती है।
जुमा छोड़ शनीचर नहाए, उसका शनीचर कभी न जाए
स्पष्ट है।
जैसी करनी वैसी भरनी
कर्मानुसार फल भोगना ही पड़ता है।
जैसा देवता वैसी पूजा
जो जैसा होता है उसके साथ वैसा ही व्यवहार होता है।
जैसी रूह वैसे फरिश्ते
कर्मानुसार फल या एक जोड़ मिलने पर कहा जाता है।
जैसे हरगुन गाए, तैसे गाल बजाए
सेवा में समय बर्बाद करना या व्यर्थ की बकवास करना।
जो कबीर काशी में मरि हैं, रामहि कौन निहोरा
हम तो कर ही लेंगे लेकिन उसमें फिर तुम्हारी क्या तारीफ ?
जो खुदा सिर पर सींग दे तो वह भी सहने पड़ते हैं
किसी धैर्यवान और संतोषी व्यक्ति का कथन।

जोगी किसके मीत

जोगी किसी के मित्र नहीं होते।

जोगी को बंस बला

पात्रता देख कर ही दान करना चाहिए।

जो गुड़ खाय सो कान छिदाय

मीठा खाने के लिए कष्ट उठाना पड़ता है।

जोगी जुगत जानी नहीं, कपड़े रंगे तो क्या हुआ?

किसी काम को अच्छी तरह सीखे बिना केवल भेष बदलने से काम नहीं चलता।

जो जस करे, सो तस फल चाखा

जैसी करनी वैसी भरनी।

जोगी जोगी लड़ें, खप्परों का खौर

बड़ों की लड़ाई में छोटे पिसते हैं।

जोगी मार, छार हाथ

गरीब को मारने से कोई लाभ नहीं।

डाढ़ी खुदा का नूर है

मुसलमानों में दाढ़ी पवित्र मानी जाती है।

डायन को भी दामाद प्यारा

माँ को लड़की बहुत प्यारी होती है।

डायन खाय तो मुंह लाल, न खाय तो मुंह लाल

बदनाम आदमी बुराई से बच नहीं सकता।

डायन भी दस घर छोड़कर खाती है

दुष्ट से दुष्ट भी अपने पड़ोसियों का लिहाज करता है।

डूबा वंश कबीर का उपजा पूत कमाल

ऐसी संतान का होना जो अपने पूर्वजों की मर्यादा तोड़ दे।

तकदीर लिखे की तदबीर क्या करे?

भाग्य के लिखे को नहीं मिटाया जा सकता।

तबेले की बला बन्दर के सिर

अस्तबल की बला बन्दर के सिर।

तराजू से खड़े होकर न तोलो बरकत जाती है

व्यापारियों का विश्वास।

तले धरती ऊपर राम

किसी असहाय का कथन।

तसबीह फेरूँ किसको होरूँ

बगुला-भक्त की उक्ति या उस पर व्यंग्य।

तीन गुनाह खुदा भी बख्शता है

अपराध करके जब कोई माफी माँगता है, तब कहा जाता है।

तीन दिन कब्र में भी भारी होते हैं

कब्र में तीन दिन मुसीबत के होते हैं या मरने पर भी मुसीबत पिंड नहीं छोड़ती।

तीन लोक से मथुरा न्यारी

नियम या परम्परा के विरुद्ध काम करने पर कहा जाता है।

तीरथ गए मुड़ाए सिद्ध

यदि एक काम के साथ दूसरा काम भी बन रहा हो तो अवश्य कर लेना चाहिए या किसी काम को अगर हाथ में ले तो अच्छी तरह पूरा करना चाहिए।

तीसरे दिन मुर्दा भी हलाल है

आपत्तिकाले धर्मोन्नास्ति।

तुम्हारे फरिश्तों को भी खबर नहीं है

तुम्हें कुछ पता नहीं है।

तुरत दान महाकल्याण

देना हो तो तुरन्त देकर छुट्टी पाओ।

तुलसी का पत्ता, कौन छोटा कौन बड़ा ?

जहाँ कई पूज्यजन मौजूद हों, वहाँ कहा जाता है।

तुलसी या संसार में सबसे मिलिए धाय, ना जाने किस भेष में नारायण मिल जाँय।

सबके साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए।

तेरे दया-धर्म नहीं मन में, मुखड़ा क्या देखे दरपन में

पाखण्डी या निर्दयी के लिए कहा जाता है।

तोबा कर बन्दे इस गन्दे रोजगार से

किसी बुरे काम से रोकने के लिए कहा जाता है।

तोबा का दरवाजा खुला है

कसूर की हमेशा क्षमा माँगी जा सकती है।

तोबा बड़ी सिपर है गुनहगार के लिए

अपराधी के लिए प्रायश्चित बड़ी ढाल है।

त्रेता के बीजों को पहुँच गए

बहुत ईमानदार और सच्चे बन गए।

जोगी किसके मीत

जोगी किसी के मित्र नही होते ।

जोगी को बैल बला

पात्रता देख कर ही दान करना चाहिए ।

जो गुड़ खाय सो कान छिदाय

मीठा खाने के लिए कष्ट उठाना पड़ता है ।

जोगी जुगत जानी नहीं, कपड़े रंगे तो क्या हुआ ?

किसी काम को अच्छी तरह सीखे बिना केवल भेष बदलने से काम नही चलता ।

जो जस करे, सो तस फल चाखा

जैसी करनी वैसी भरनी ।

जोगी जोगी लड़ें, खप्परों का खौर

बड़ों की लड़ाई मे छोटे पिसते है ।

जोगी मार, छार हाय

गरीब को मारने से कोई लाभ नही ।

डाढ़ी खुदा का नूर है

मुसलमानो में दाढी पवित्र मानी जाती है ।

डायन को भी दामाद प्यारा

माँ को लडकी बहुत प्यारी होती है ।

डायन खाय तो मुंह लाल, न खाय तो मुंह लाल

बदनाम आदमी बुराई से बच नहीं सकता ।

डायन भी दस घर छोड़कर खाती है

दुष्ट से दुष्ट भी अपने पड़ोसियों का लिहाज करता है ।

डूबा वंश कबीर का उपजा पूत कमाल

ऐसी संतान का होना जो अपने पूर्वजो की मर्यादा तोड़ दे ।

तकदीर लिखे की तदबीर क्या करे ?

भाग्य के लिखे को नही मिटाया जा सकता ।

तबेले की बला बन्दर के सिर

अस्तबल की बला बन्दर के सिर ।

तराजू से खड़े होकर न तोलो बरकत जाती है

व्यापारियो का विश्वास ।

तले धरती ऊपर राम

किसी असहाय का कथन ।

तसबीह फेरूँ किसको होरूँ

बगुला-भक्त की उक्ति या उस पर व्यंग्य।

तीन गुनाह खुदा भी बख्शता है

अपराध करके जब कोई माफी मांगता है, तब कहा जाता है।

तीन दिन कब्र में भी भारी होते हैं

कब्र में तीन दिन मुसीबत के होते हैं या मरने पर भी मुसीबत पिंड नहीं छोड़ती।

तीन लोक से मथुरा न्यारी

नियम या परम्परा के विरुद्ध काम करने पर कहा जाता है।

तीरथ गए मुड़ाए सिद्ध

यदि एक काम के साथ दूसरा काम भी बन रहा हो तो अवश्य कर लेना चाहिए या किसी काम को अगर हाथ में ले तो अच्छी तरह पूरा करना चाहिए।

तीसरे दिन मुर्दा भी हलाल है

आपत्तिकाले धर्मोन्नास्ति।

तुम्हारे फरिश्तों को भी खबर नहीं है

तुम्हे कुछ पता नही है।

तुरत दान महाकल्याण

देना हो तो तुरन्त देकर छुट्टी पाओ।

तुलसी का पत्ता, कौन छोटा कौन बड़ा ?

जहाँ कई पूज्यजन मौजूद हो, वहाँ कहा जाता है।

तुलसी या संसार में सबसे मिलिए धाय, ना जाने किस भेष में नारायण मिल जाँय।

सबके साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए।

तेरे दया-धर्म नहीं मन में, मुखड़ा क्या देखे दरपन में

पाखण्डी या निर्दयी के लिए कहा जाता है।

तौबा कर बन्दे इस गन्दे रोजगार से

किसी बुरे काम से रोकने के लिए कहा जाता है।

तौबा को दरवाजा खुला है

कसूर की हमेशा क्षमा मांगी जा सकती है।

तौबा बड़ी सिपर है गुनहगार के लिए

अपराधी के लिए प्रायश्चित बड़ी ढाल है।

त्रेता के बीजों को पहुँच गए

बहुत ईमानदार और सच्चे बन गए।

थोड़ा करे गजाबी मियाँ, बहुत करें डफाली

संत-महात्माओ की शक्ति तो थोडी ही होती है पर चेले उसे बढा दिया करते है।

थोड़ी आस मदार की बहुत आस गुलगुलों की

कुछ मिलने की आशा से ही लोग बड़े आदमियो के पास जाते है।

दाता की नाव पहाड़ चले

दानी के सभी काम सफल होते है।

दादा मरि है तो भोज करि हैं

किसी काम को अनिश्चित समय के लिए टालना या कठिन शर्त लगाना।

दाने दाने पर मुहर

बिना भाग्य के एक दाना भी नही मिलता।

दिन में सोवे, रोजी खोवे

दिन मे सोना अच्छा नहीं है।

दिया दान मांगे मुसलमान

मुसलमानों मे दहेज वापस लेने की प्रथा पर हिन्दुओं की फबती।

दिया फातिहा को लगे लुटाने

किसी चीज का दुरुपयोग करना।

दिये की रोशनी मशहर तक

दान का प्रकाश स्वर्ग तक।

दीन से दुनिया है

धर्म के सहारे ही संसार टिका है।

दिन ईद रात शबे बरात

हमेशा मौज-मजा।

दीन से दुनिया रखनी मुश्किल है

धर्म पालन से दुनिया मे रहना मुश्किल है अथवा ईश्वर को प्राप्त करना सरल है पर दुनिया मे रहना कठिन।

दीवाली के दिये चाटकर जायँगे

मुफ्तखोरों के लिए कहा जाता है।

दीवाली की रात को बूटी-बूटी पुकारती है

अधिक गुण वाली होती है।

दीवाली जीत, सालभर जीत

दीवाली में जुए मे जीतना शुभ है।

दुर्बल मारे शाह मदार

दैवो दुर्बलघातकः।

दुविधा में दोनों गए, माया मिली न राम
दोनों में से कोई भी काम न कर पाना। संशय की स्थिति अथवा अनिश्चित बुद्धि वालों का कोई काम सिद्ध नहीं होता।

देवी सवार का कौन साथ
अनमेल का साथ कैसे निभे ?

देवी दिन काटे, लोग परचों मांगे
स्वयं विपत्ति में होने पर जब कोई सहायता मांगे तब कहा जाता है।

देखा-देखी साधे जोग, छीजे काया बाढ़े रोग
दूसरों का गलत अनुसरण करना ठीक नहीं।

देवता वासना के भूखे होते हैं
देवता प्रेम और भक्ति चाहते हैं।

देव न मारे डंग से कुमति देत चढ़ाय
ईश्वर किसी को डंडे से नहीं मारता। मनुष्य की कुबुद्धि ही उसे नष्ट करती है।

दोनों खोये जोगिया मुद्रा और आदेश
धर्म-कर्म से च्युत होना और ऊपर से बदनामी तथा अपमान।

दो मुल्लों में मुर्गी हराम
दो की बहस में काम आगे नहीं बढ़ता।

धरम की जड़ सदा हरी
धर्म पर चलने वाला सदा फलता-फूलता है।

धाओ, जो विध लिखा सो पाओ, धाओ-धाओ, करम लिखा सो पाओ
मिलेगा वही जो भाग्य में लिखा है।

नंगा ख़ुदा से बड़ा
नंगे को किसी बात का भय नहीं।

न ख़ुदा ही मिला न विसाले सनम, न इधर के हुए न उधर के हुए
कुछ भी तो न बना। किसी निराश फकीर का कथन।

नमाज छुड़ाने गए रोजे गले पड़े
सुख का उपाय करने पर दुःख मिलना।

नया मुल्ला अल्ला ही अल्ला पुकारता है, नया मुसल्ला, अल्ला-अल्ला
नौसिखिया अधिक जोश दिखाता है या नया पद मिलने पर जोश बहुत आता है।

नया मुल्ला प्याज बहुत खाता है
नया-नया दीक्षित अपने को बहुत दिखाता है।

नया अतीत, पेड़ पर अलाव, नया जोगी और गाजर का शंख, नये नमाजी बोरिये का तहमद

नौसिखिये का ऊटपटांग कार्य या ढंग । कल का जोगी चूतड़ जटा ।

नाम लेवा न पानी देवा

संतान के लिए कहा जाता है ।

नाव किसने डुबोई ? ख्वाजा खिजर ने ।

करनी का दोष दूसरो के सिर मढ़ना ।

निकाही न ब्याही, मुंडी बहू कहाँ से आई ?

झूठमूठ का रिश्ता जोड़ने पर कहा जाता है ।

निर्बल के बल राम, निर्धन के धन गिरधारी

निर्बल या निर्धन का सहायक भगवान है ।

नेकी करो खुदा से पाओ

भलाई का बदला ईश्वर देता है ।

नेकी की जड़ पाताल में

भलाई का फल सदा मिलता रहता है ।

नेकी ही रह जाती है

भले कर्म ही जीवित रहते हैं ।

नेमी पाँडे, कमर में जटा

ढोंगी के लिए कहा जाता है ।

पड़वा गमन न कीजिए, जो सोने का होय

प्रतिपदा को यात्रा नही करनी चाहिए ।

पढ़ो न, कजा की

नमाज न पढ़ने के विरुद्ध चेतावनी ।

पराये धन पर लछमी नरायन, पराये धन पर या हुसैन

पराये धन पर मौज करना ।

पराये गंडों के भरोसे न रहना, पराये गडों के भरोसे न रहो कुछ कमर में भी बूता चाहिए

कार्य पुरुषार्थ से ही सिद्ध होता है गंडे या ताबीज से नही ।

पराया सिर कुरान की जगह

पराये माल या वस्तु की वकत न करना ।

पहले ही बिस्मिल्ला गलत

आरम्भ ही में विघ्न ।

परहित सरिस धर्म नहिं भाई

दूसरों के हित के समान संसार में कोई दूसरा धर्म नही है ।

पांच पण्डे, छठे नरायन
जहां दस-पांच व्यक्तियों के गुट में अकस्मात् ऐसा व्यक्ति पहुंच जाये जो उनका नेतृत्व कर सके या जहां उसकी जरूरत हो—प्रायः व्यंग्य में कहा जाता है।

पाक नाम अल्लाह का
पवित्र नाम तो ईश्वर का है।

पाक रह, बेबाक रह
जिसका दिल साफ हो उसे कोई डर नहीं रहता।

पानी पीवे छान के, जीव मारे जान के
आडम्बर। जैनियों पर फब्ती।

पाप का घड़ा भर कर डूबता है
पापी की भले ही पहले उन्नति हो पर अन्त में विनाश ही होता है।

पापी की नाव डूबे पर डूबे
पापी नष्ट होकर रहता है।

पापी का माल अकारथ जाए
बुरी कमाई बुरे कार्यों पर ही खर्च होती है।

पापी की नाव भर के डूबे
पापी पहले सफल होता है पर अन्त में नष्ट हो जाता है।

पार उतरूं तो बकरा दूं
विपत्ति में मनौती मनाना और छुटकारा मिलने पर भूल जाना।

पिछली रोटी खाय पिछली मत्त आय
सबसे बाद की रोटी खाने से बुद्धि नष्ट हो जाती है।

पीरां न परन्द, मुरीदां परन्द
पीरों के पंख नहीं होते, पंख तो उनके चेले लगा दिया करते हैं। चेले पीरों का गुणगान करके अपना उल्लू सीधा करते हैं।

पीर मियां बकरी, मुरीद मियां बांगा
गुरु चेलों की कमाई खाते हैं।

पुन्न की जड़ सदा हरी
पुण्यात्मा सदा फलता-फूलता है।

पूरब जाओ या पच्छम वही करम के लच्छन
भाग्य नहीं बदलता या अकर्मण्य कुछ नहीं कर सकता।

पूरी-लपसी घर में खाय, झूठों देवी से आस लगाय
पूरी-लपसी स्वयं खा लेते हैं और देवी से मनोकामनाओं के पूरी होने की झूठी आशा रखते हैं।

पूत की जात को सौ जोखों

लड़के को सौ व्याधियाँ लगी रहती हैं।

फकत तावीज से काम नहीं चलता कुछ करम में बूता चाहिए

दैव या तन्त्र-मन्त्र के भरोसे रहने से काम नहीं चलता, पुरुषार्थ भी चाहिए।

फकीर अपनी कमती में ही खुश है

जो है उसी में संतोष करता है।

फकीर की जुबान किसने कीली

फकीर का मुँह कोई बन्द नहीं कर सकता।

फकीर की सूरत ही सवाल है

फकीर को बोलने की आवश्यकता नहीं पड़ती। देखते ही पता चल जाता है कि वह कुछ चाहता है।

फूल वही जो देवता (महेश) चढ़ें

जो किसी बड़े काम में प्रयुक्त हो, उसी का जीवन सफल है।

फतह और शिकस्त खुदा के हाथ

हार-जीत दैवाधीन है।

फतह दाद इलाही है

जीत या सफलता ईश्वर की देन है।

फतह तो खुदा के हाथ है पर मार-मार तो किए जाओ

होगा वही जो ईश्वर को करना है पर अपना उद्योग तो किए जाओ।

फरिश्तों के भी पर जलते हैं

ऐसी जगह जहाँ बड़े-बड़े भी जाने में घबराते हैं।

फरिश्तों को भी खबर नहीं

बहुत ही गुप्त बात।

फातिहा न दरूद, खा गए मरदूद

फातिहा न दरूद, लड़ने को मजबूत

निकम्मे कहीं के ! बिना फातिहा पढ़े ही खा गए।

फाल की कौड़ियाँ मुल्ला को हलाल

हक का पैसा सबको पचता है।

फाल जबान या फाल कुरान

शुभ-अशुभ का ज्ञान फकीर की जुबान से या कुरान से ही होता है।

बगल में छुरी, मुँह में राम

धूर्त के लिए कहा जाता है।

बगल में तूती का पिंजड़ा नबी जी भेजो

धूर्त या लोभी के लिए कहा जाता है।

बत्तीस दांत की भाषा खाली नहीं जाती

कोसना, आशीष या प्रार्थना व्यर्थ नहीं जाती ।

बस हो चुकी नमाज मुसल्ला बढ़ाइए

बात हो चुकी अब आप तशरीफ ले जाइए।

बहुत अतीत, मठ खराबा

मठ में अगर बहुत साधु हो तो उसकी पवित्रता नष्ट हो जाती है।

बाटे-घाटे कुतिया मरी, नाथ कहे, मोरी वाचा फरी

दैवयोग से होने वाले काम को अपने किए का प्रताप बताने वाले से कहा जाता है।

बाबा आवें न घंटा बजे

बाबा आयें न ताली बजे

किसी के बिना कोई काम रुका हो और उसकी प्रतीक्षा की जा रही हो तब कहा जाता है।

बामन की बेटी कलमा पढ़े

दु खप्रद या असभव बात अथवा कोई श्रेष्ठ वस्तु जिसके लिए धर्म भी त्यागा जा सके।

बारावफात की खिचड़ी, आज है तो कल नहीं

ऐसी वस्तु जो आज तो बहुतायत से मिल रही हो पर बाद मे न मिले।

बारह बरस का कोढ़ी एक ही इतवार पाक

कोई पुराना रोग एक दिन में दूर नही होता।

बारह बरस की कन्या छठी रात का वर, मन माने सो कर

बाल-विवाह पर व्यंग्य।

बरह बरस सेई कासी, मरने को मगगह की माटी

अन्त बुरा होने पर कहा जाता है।

बासी भात में अल्लाह मियाँ का कौन निहोरा

जो वस्तु अपने आप या स्वयं के प्रयास से मिल जाए उसमे किसी का क्या एहसान ?

बिपत पड़ी जब भेंट मनाई, मुकर गयी जब देने आई

सुख का अवसर आ जाने पर मनुष्य दुख की सब बातें भूल जाता है।

बिन होनी होती नहीं और होनी होवनहार

जो होना होता है वह होकर रहता है। जो नही होना होता है वह नही होता।

बिस्मिल्लाह के गुम्बद में बैठे हैं

साधु-सन्यासियों का जीवन व्यतीत करते है या स्वर्गवासी हो गए हैं।

बिस्मिल्लाह ही गलत है

काम के शुरू मे ही भूल हो जाने पर कहते हैं।

बीवी बारे बांदी खाय, घर की बला कहीं न जाय

अच्छा कार्य करते समय केवल परिवार का ही ध्यान रखने पर कहते हैं।

बुढ़िया मर गई तो गम नहीं, पर फरिश्तों ने घर देख लिया

वे फिर आ सकते हैं।

बुरे वक्त का अल्लाह बेली

बुरे समय पर भगवान ही सहायता करता है।

बुरे से खुदा भी डरता है

बुरे से सब घबराते हैं।

बूड़ा वंश कबीर का, उपजा पूत कमाल,
हरि का सुमिरन छोड़ि के, घर ले आया माल।

अपने पूर्वजो की चाल-ढाल या धर्म को छोड़ देने वाली संतान के प्रति कहा जाता है।

बे-ऐब जात खुदा की

केवल ईश्वर ही निष्कलक है।

बेटा मरियो पर तिस्सर न पड़ियो

तीसरे लडके का जीने से मरना अच्छा।

ब्याह हुआ नहीं और गौने का झगड़ा

ब्याह हुआ नही और बहू की विदा के लिए झगड रहे है। किसी काम के होने से पहले ही बाद के परिणाम के लिए झगड़ना।

भागते भूत की लंगोटी भली

जाते हुए माल में से जो कुछ मिल जाए वही बहुत है।

भूत के पत्थर की चोट नहीं लगती

क्योकि उसका भौतिक अस्तित्व नही होता। बहुत धूर्त या चालाक के लिए कहते हैं।

भूत जान न मारे सता मारे

दुष्ट के लिए कहा जाता है।

भूले बामन गाय खाई, अब खाऊँ तो राम दुहाई

एक बार भूल करने पर जब कोई वैसा न करने की प्रतिज्ञा करे तब कहते हैं।

भूखा उठाता है, भूखा सुलाता नहीं

ईश्वर सबको खाने को देता है।

भूले-बिसरे राम सहाई

भूले-चूके का ईश्वर मालिक है।

मक्के गए न मदीना गए, बीच ही में हाजी भए
अनायास अभीष्ट-सिद्धि होने पर कहते हैं।
मक्के में रहते हैं, पर हज नहीं करते
सुलभ चीज की कद्र नहीं होती।
मन चंगा तो कठौती में गंगा
मन शुद्ध होना चाहिए।
मन में शेख फरीद, बगल में ईंट
कपटी मनुष्य।
मर गए मरदूद, जिनका फातिहा न दरूद
दुष्ट मर गया, जिसका कोई क्रिया-कर्म भी नही हुआ।
मरे को मारे शाह मदार
दुखिया को भगवान और भी दुख देता है—देवो दुर्बलघातकः।
मरे तो शहीद, मारे तो गाजी
धर्म-रक्षा में दोनों ओर लाभ।
मर्द के चार निकाह दुरुस्त हैं
मुसलमानों के धार्मिक विश्वास पर हिन्दुओं का ताना।
मस्जिद ढह गई, मेहराब रह गई
मरने पर केवल नाम रह जाता है।
महिमा घटी समुद्र की जो रावन बसा पड़ोस
बुरे की संगति करने से अच्छा भी कलंकित हो जाता है।
माँगन गए सो मर गए
माँगने से मर जाना अच्छा है।
माँ छोड़ मौसी से मजाक
मुसलमानों मे मौसी से भी हँसी-मजाक करते हैं। (जाति-विद्वेष मूलक)
माथ मुड़ा के फजीहत भये, जात-पाँत दोनों गए
ऐसा काम करना जिससे कहीं के न रहें।
मार-मार किये जाव, फतह दाद इलाही है
भरपूर प्रयत्न तो करना ही चाहिए। सफलता ईश्वर के अधीन है।
मुँह में राम-राम, बगल में छुरी
धूर्त पाखण्डी के लिए कहा जाता है।
माया बादल की छाया
लक्ष्मी चंचल होती है।
मार के आगे भूत भागे (नाचे)
मार से सब भय खाते है।

मुंह से बोलो, सिर से खेलो
हूँ, हाँ कुछ तो करो।
मुई (मरी) बछिया बामन को दान
निकम्मी चीज दूसरे के गले मढकर एहसान जताना।
मुरदा वहिश्त में जाय या दोजख में यहाँ तो हलवे-मांड़े से काम
जो केवल अपना मतलब देखे उसके प्रति कहा जाता है।
मुरदे पर सौ मन मिट्टी, तो एक मन और सही
जब इतना नुकसान हुआ तो इतना और सही।
मुल्ला जी क्या कहें, आखून जी आगे ही समझे हुए हैं
तुम क्या कहोगे, हम पहले से ही सब जानते है।
मुल्ला न होगा तो क्या मस्जिद में अजान न होगी
किसी एक के न रहने से दुनिया के काम नही रुकते।
मुसलमानी में आनाकानी क्या
जो काम करना ही है उसके लिए हीला-हवाला क्या?
मुसल्ला पसार, बगल में यार
पाखण्डी के लिए कहा जाता है।
मूंड, दिया, मांग खाओ
चेला बना दिया, अब अपना काम तुम करो।
मेहर करे तो मेह बरसावे
ईश्वर की कृपा से ही सब कुछ होता है।
मौला यार तो बेड़ा पार
ईश्वर की कृपा से सब कुछ हो जाता है।
यह गंगा किसकी खुदाई है
जब कोई अपनी सम्पत्ति का बहुत घमंड करे तब उसे ताने मे कहा जाता है। उसके पास जो कुछ है वह ईश्वर का दिया है या उसके लिए वह कहने वाले का ऋणी है।
यक न शुद दो शुद
एक न शुद दो शुद।
यह भी अपने वक्त के हातिमताई हैं
बडे परोपकारी है।
यह वह फकीर नहीं जो खाकर दुआ दे
ऐसा व्यक्ति जो एहसान न माने।
यहाँ के बाबा आदम ही निराले हैं
जहाँ सनकीपन से काम लिया जा रहा हो, वहाँ कहा जाता है।

यहाँ फरिश्तों के भी पर जलते हैं
यहाँ बड़े-बड़े भी घबराते है।
यहाँ हज़रत जिब्राईल के भी पर जलते हैं
यहाँ वे भी घबराते है।
रपट परे की हरगंगा
अनायास कोई काम बन जाने पर कहा जाता है।
रमजान के नमाजी, मुहर्रम के सिपाही
धूर्त या पाखण्डी के लिए कहा जाता है।
रहमान को रहमान, शैतान को शैतान
जैसे को तैसा।
रहमान जोड़े पली-पली, शैतान लुढ़कावे कुप्पे
घर में स्त्री की संचित वस्तु को कुत्ते-बिल्ली खा जाँय या
एक तो सचय करे और दूसरा उड़ाए, तब कहा जाता है।
रांड मुई घर-संपति नासी, मूंड मुंड़ाय भये संन्यासी
यों ही साधु बनने वालों पर फबती।
रात की नीयत हराम
रात में सोचा गया काम सफल नही होता।
रात को झाड़ देना मनहूस है
रात को साँप का नाम नहीं लेते— (स्पष्ट है।)
राम की माया, कहीं धूप कहीं छाया
ईश्वर की विचित्र लीला है। कही सुख है तो कही दुख।
राम के भक्त काठ के गुड़िया, दिन भर ठक-ठक, रात के पुसकुरिया
रात मे दुष्कर्म करने वाले वैष्णव पुजारियो पर व्यग्य।
राम झरोखे बैठ के सबका मुजरा लेय।
जैसी जाकी चाकरी, वैसा ताको देय॥
जो जैसी सेवा करता है, वैसा फल पाता है।
राम नाम को आलसी, भोजन को तैयार।
राम भजन को आलसी भोजन को तैयार।
अकर्मण्य व्यक्ति।
राम नाम जपना, पराया माल अपना
धूर्त साधुओं या पाखण्डियों के लिए कहा जाता है।
राम भए जिहि दाहिने, सभी दाहिने ताहि
ईश्वर या भाग्य के अनुकूल होने पर सभी अनुकूल हो जाते है।

रीछ का एक बाल भी बहुत है

अपनी करामात दिखाता है। रीछ का बाल तावीज मे बाँधा जाता है।

रोजे को गये, नमाज गले पड़ी

मुसीबत और बढी।

रिजाला मस्त हुआ, खुदा को भूल गया

नीच के पास पैसा हो जाए तो वह ईश्वर को भूल जाता है।

रीत न सतवासा, मेरा लाड़ला नवासा

कोई जबर्दस्ती सम्बन्ध जोडता फिरे तब कहा जाता है।

रीते भरे, भरे ढुढ़कावे, मेहर करे तो फिर भर जावे

ईश्वर की इच्छा के लिए कहा जाता है।

रोजेखोर खुदा का चोर

रोजे मे खाना खुदा को धोखा देना है।

रोये से दान नहीं मिलता

जबर्दस्ती किसी से कुछ नही लिया जा सकता।

रौ बन्दे, खरीददार खुदा

चले चलो, ईश्वर मदद करेगा।

लंका में से जो निकले, सो बावन गज का

किसी जगह के सब लोग शरारती निकलें, तब कहा जाता है।

लहू लगा शहीदों में मिले

झूठा यश चाहने पर कहा जाता है।

लंका में सब बावन गज के

एक से एक शरारती।

लालच बुरी बला है

लोभ सबसे बडा दुर्गुण है।

लिखे ईसा, पढ़ें मूसा

लिखे मूसा, पढ़े खुदा

बुरी हस्तलिपि के लिए कहा जाता है।

लीपूं ओटा मरे मोटा

कोई धनी मरे तो महाब्राह्मण को दान मिले।

वह कमली ही जाती रही जिसमें तिल बँधे थे

अवसर निकल जाने पर जब कोई किसी चीज की माँग करे, तब कहा जाता है।

वक्र चन्द्रमहि ग्रसइ न राहू

कुटिल व्यक्ति से सब डरते है।

वह बिल्ली पूज के चलते हैं
शकुन-अपशकुन बहुत मानते हैं।
वह पानी मुलतान गया
अब तुम्हारा चाहा नहीं हो सकता। बात बहुत दूर गई।
वह बूंद मुलतान गई
वह पानी मुलतान गया।
वह मढ़ी हो जाती रही जहां अतीत रहते थे
वह आदमी अब नहीं रहे या वह समय ही अब जाता रहा। प्रायः उदार व्यक्ति के प्रसंग में कहा जाता है।
वही फूल जो महेश चढ़े
जिस वस्तु का सदुपयोग हो, वही सार्थक है।
वाह पीर आलिया, पकाई थी खीर, हो गया दलिया
अच्छा काम करने गए, पर बुरा हो गया।
विनाश काले विपरीत बुद्धि
पतन के समय बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।
विष निकस्यो अति मथन तें रत्नाकर हूँ माँहि
अधिक बात बढ़ाने से शान्ति भंग हो जाती है।
शंका डायन मन का भूत
शंका और इच्छा मनुष्य के शत्रु है।
शंख बाजे, सत्तर बला टले
हिन्दू-विश्वास।
शक्करखोरे को खुदा शक्कर ही देता है
जो जिस योग्य होता है ईश्वर उसे वैसा ही देता है।
शमा की रोशनी जलते तलक, दिये की रोशनी महशर तक
दान-पुण्य स्वर्ग तक साथ देता है।
शेख सद्दो का बकरा है
दुष्ट के लिए कहा जाता है।
शैतान जान न मारे, हैरान तो जरूर करे
दुष्ट आदमी प्राण न ले, पर परेशान तो अवश्य करता है।
शैतान ने भी लड़कों से पनाह मांगी है
लड़कों से शैतान भी घबराता है।
शैतान से ज्यादा मशहूर
जिसे सभी जानते हों, ऐसे के लिए व्यंग्य में कहा जाता है।

संख बजाओ सोवो साधू, जो सुख पावे काया
ढोंगी साधुओं पर कटाक्ष।
संगत की फूट का अल्लाह बेली
भगवान आपसी झगड़ों से बचाए।
संदल के छापे मुँह को लगे
तुम्हारी प्रतिष्ठा बढ़े। आशीर्वाद।
सखी का खजाना कभी खाली नहीं होता
दाता के पास कभी धन की कमी नहीं होती।
सखी का सर बुलन्द, मूँजी का गोर तंग
दाता का सर ऊँचा रहता है, कृपण अपनी कब्र मे भी दुख पाता है।
सखी की नाव पहाड़ चले
दाता के कठिन काम भी सफल होते हैं।
सच बराबर पुन्न नहीं, झूठ बराबर पाप
स्पष्ट है।
सच्चाई में खुदा की सूरत है
सत्य ही परमेश्वर है।
सदका दिए रद्द बला
दान-पुण्य करने से विपत्ति दूर होती है।
सदा ईद नही जो हलवा खाए
आनन्द के दिन सदा नही रहते।
सदा दिवाली संत के जो घर गेहूँ होय
घर मे सब खाने-पीने को हो तो नित्य ही त्योहार है।
सबके दाता राम
भगवान सबको देते है।
सब्र की दाद खुदा के हाथ है
संतोषी की ईश्वर सहायता करता है।
समुन्दर क्या जाने दोजख का अजाब
जो सुख मे रहता है वह कष्ट क्या जाने ?
समुन्दर-सोख को दरिया क्या
जो बड़ा काम कर सकता है उसके लिए छोटा काम क्या है ?
सवाब न अजाब, कमर टूटी मुफ्त में
निष्फल परिश्रम।
सब जग रूठा रूठन दे, एक वह न रूठा चाहिए
सबके मुख मोड़ने पर ईश्वर-विश्वासी का कथन।

सहरी खाये सो रोजा रखे

किसी की ओट मे अपना मतलब निकालना ।

सहरी न खाऊँ तो फिर काफिर न हो जाऊँ

मतलब की बात तुरन्त ढूंढ लेना ।

साईं के सौ खेल हैं

ईश्वर की लीला अद्‌भुत है । वह क्या किया चाहता है, पता नही चलता ।

सरेसे का टट्टू बना फिरता है

निकम्मे आदमी के लिए व्यंग्य मे कहा जाता है ।

सांच को आंच क्या

सांच को आंच नहीं

सच्चे को किसी बात का भय नही होता ।

सांच बरोबर तप नही, झूठ बरोबर पाप

जाके हिरदै सांच है, ताके हिरदै आप

सच्चे के मन मे ईश्वर का वास होता है ।

साझे की होली सबसे भली

उत्सव मिलजुलकर मनाने मे ही फबते हैं ।

सांप के मुंह में छछून्दर, निगले तो अन्धा, उगले तो कोढ़ी

दोनो ओर से संकट ।

साथ तो हाथ का दिया ही जाता है

दान ही साथ जाता है ।

साधु जन रमते भले, दाग न लागे कोय

चलते-फिरते रहने से चित्त निर्मल रहता है ।

साधु-भगत हो जिस पर छो, भूल भला न उसका हो

साधु जिस पर कुपित हो, उसका भला नही होता ।

साधु बच्चे बहुते झूठे थोड़े सच्चे

साधुओ मे झूठे बहुत और सच्चे थोडे ही होते हैं ।

साधो को क्या सवाद, गुड़ नहीं बताशे ही सही

ढोंगी साधुओं पर व्यग्य ।

सावन घोड़ी भादों गाय, माघ मास में भैंस बियाय, जी से जाय या खसमें खाय

स्पष्ट है ।

सहस्सर गोपी एक कन्हैया

वस्तु एक और चाहने वाले अनेक ।

सियार औरों को सगुन दे, आप कुत्तो से डरे

वह अपना बचाव नही कर सकता ।

सिवैंयों बिन ईद कैसी
पकवान के विना उत्सव कैसा ?

सीधा घर खुदा का
जहाँ किसी की रोक-टोक नही। अदालत के प्रसग मे कहा जाता है।

सुन्नी ना शिया, जी में आया सो किया
स्वतन्त्र विचारों का व्यक्ति या मनमानी करने वाला।

सुबह की 'ना' अच्छी नही
दूकानदारो का विश्वास।

सुबह की बोहनी, अल्ला मियाँ की आस
पहली बिक्री शुभ होती है।

सूत की अंटी और यूसुफ की खरीदारी
पूँजी थोडी और बहुमूल्य वस्तु खरीदने की इच्छा।

सेह का काँटा घर में मत रखो, लड़ाई होगी
एक लोक-विश्वास।

सोना पाना और खोना दोनों खराब
अनिष्ट होता है, लोक-विश्वास।

सौ खोटों का वह सरदार, जिसकी छाती एक न बार
ऐसा मनुष्य बुरा होता है (सामुद्रिक शास्त्र पर आधारित।)

सौ मुंडा न एक मुछमुंडा
एक मुछमुडा सौ मुडो से अधिक बदमाश होता है।

हक अल्ला पाक जाल अल्ला
ईश्वर सत्य है, पवित्र है।

हक कर हलाल कर दिन में सौ बार कर
सही और उचित काम कर, धर्म का काम कर, दिन मे सौ बार कर।

हक का राजी खुदा है
ईश्वर को सत्य पसन्द है।

हक का साथी खुदा है
ईश्वर सच बोलने वाले की मदद करता है।

हक नाम अल्ला का
सत्य नाम परमात्मा का है।

हकदार तरसे, अंगार बरसे
जो हकदार का हक छीनता है, उस पर अगारे बरसते हैं।

हज का हज निज का निज, हज का हज बनिज का बनिज
एक काम में दो काम।

हजार दवा और एक दुआ

ईश्वर की प्रार्थना हजारो दवाओं से उत्तम है।

हमखुरमा ओ हमसवाब

खाने का खाना और उसका पुण्य भी।

हमारी हम से पूछो, कोहकन की कोहकन जाने

हम तो अपनी बात जानते हैं, दूसरों की वे जानें। कार्य मे तग मत करो।

हरएक के कान में शैतान ने फूंक मार दी है तेरे बराबर कोई नहीं

हरेक आदमी अपने को दूसरों से बडा समझता है।

हर को भजे सो हर का होय, जात-पाँत पूछे नहिं कोय

जो ईश्वर का स्मरण करता है, वही उसे प्रिय होता है।

हरखे पितर तिलंजल पाये

पुरखों की श्रद्धा करने से वे प्रसन्न होते है।

हर शब शबे-रात है, हर रोज रोजे ईद

मन चंगा है तो रोज शबे-रात और ईद है। शान-शौकत से रहने वाले के लिए ऐसा कहते है।

हलवाई की दुकान और दादाजी का फातिहा

दूसरे के पैसों से वाहवाही लूटना।

हाजिर को लुकमा, गायव को तकबदीर

परोपकारी के लिए कहा जाता है।

हाजिरी के मेले में कोई हो

अच्छे काम मे सब शरीक हो सकते है।

हरामजादे से खुदा भी डरता है

दुष्ट से सभी डरते है।

हातिम के गोर में लात मारी

हातिम से भी बडे दानी। व्यंग्य मे कजूस से कहते है।

हाथ का दिया आड़ो आए

दान-पुण्य समय पर काम आता है

हाथ का दिया साथ चलेगा

दान-पुण्य परलोक मे काम आता है।

हाथ की लकीर कहीं मिटी हैं

भाग्य का लिखा होकर रहता है या पुश्तैनी सम्बन्ध नही टूटता।

हाथ बेचा है, कोई जात नहीं बेची

ऐसे नौकर का कहना जिससे उसका मालिक कोई ऐसा काम करने को कहे जो उसके योग्य न हो।

नारी-जाति से सम्बन्धित लोकोक्तियाँ

अँतड़ी में रूप, बकची में छव

चेहरे का सौन्दर्य खाने-पीने पर और शरीर का सौन्दर्य वस्त्राभूषणों पर निर्भर करता है।

अनकर सेंदुर देख, आपन कपार फोरे

दूसरे का सुख देखकर ईर्ष्या करना।

अनोखी जुरबा, साग में शोरबा

अनाड़ीपन पर कहा जाता है।

अपनी टाँग उघारिए आपहि मरिए लाज

घर का भेद खोलने से अपनी ही बदनामी होती है।

अब सतवती होकर बैठी, लूट लिया संसार

पाखण्डी स्त्री।

अपनी कोख का पूत नौसादर

अपनी चीज सबसे बढ़िया।

अय मेरे अगले, मनमाने सो कर ले

अत्याचारी पति के प्रति कहा जाता है।

अल गई बल गई, जलवे के वक्त टल गई

जो जरूरत के वक्त टल जाती हैं, उसके लिए कहते हैं।

अलबेली ने पकाई खीर, दूध की जगह डाला नीर

व्यर्थ में होशियार बनने वाली के लिए कहते हैं।

अला लूँ बला लूँ सहनक सरका लूँ

मीठी बातों से उल्लू सीधा करने वाली के प्रति कहा जाता है।

अल्लाह रे ! दीदे की सफाई !

कैसी आँख मारती है ?—इस भाव को व्यक्त करने के लिए कहते हैं।

हाथ सुमरनी, पेट कतरनी
धूर्त साधुओं के लिए कहा जाता है।
हानि लाभ जीवन-मरन, जस-अपजस बिधि हाथ
सब-कुछ ईश्वर के हाथ है, मनुष्य तो उसका कठपुतला है।
हार-जीत सब में रहे, हारे नहीं दातार
परमात्मा को छोड़कर सभी के साथ हार-जीत लगी है—अर्थात् सभी दु ख भोगते है।
हलाल में हरकत, हराम में बरकत
सज्जन दुःख पाते है। बुरे मौज करते है।
हाल में फाल, दही में मूसल
जब चैन से गुजर रही हो तब ज्योतिषी के पास जाकर भाग्य पूछना मूर्खता है।
हिम्मते मरदाँ मददे खुदा
उद्योगी पुरुष की ईश्वर मदद करता है।
हिरी-फिरी बल गई, जलवे के वक्त टल गई
पहले उत्साह दिखाना, पर खर्च की बात आने पर टल जाना।
होले रिजक, बहाने मौत
ईश्वर ही रोजी देता है और वही मारता है।
हुक्का, सुक्का, हुरकनी, गूजर औ जाट, इनमें अटक कहा बाबा जगन्नाथ का भात
इनमे छूतछात नही मानी जाती।
हुक्मी बन्दा जन्नत में
बडो की आज्ञा मानने वाला स्वर्ग जाता है।
हुए फेरे, चूमे मेरे
काम हो गया अब परवाह क्या। या, चीज मेरी है, जैसा चाहूँ,उपयोग करूँ।
होनहार मिटती नहीं होवे बिस्वे बीस
जो होना होता है वही होकर रहता है।
होनी न होनी तो खुदा के हाथ है, मार-मार तो किए जाव
प्रयत्न तो करना ही चाहिए।
होनहार होके टले। होनी बलवान है
होनहार होके रहती है।
होम करते हाथ जले
भला करने पर बुरा हुआ।

नारी-जाति से सम्बन्धित लोकोक्तियाँ

अँतड़ी में रूप, बकसी में छब

चेहरे का सौन्दर्य खाने-पीने पर और शरीर का सौन्दर्य वस्त्राभूषणों पर निर्भर करता है।

अनकर सेंदुर देख, आपन कपार फोरे

दूसरे का सुख देखकर ईर्ष्या करना।

अनोखी जुरवा, साग में शोरवा

अनाड़ीपन पर कहा जाता है।

अपनी टाँग उघारिए आपहि मरिए लाज

घर का भेद खोलने से अपनी ही बदनामी होती है।

अब सतवती होकर बैठी, लूट लिया संसार

पाखण्डी स्त्री।

अपनी कोख का पूत नौसादर

अपनी चीज सबसे बढ़िया।

अय मेरे अगले, मनमाने सो कर ले

अत्याचारी पति के प्रति कहा जाता है।

अल गई बल गई, जलवे के वक्त टल गई

जो जरूरत के वक्त टल जाती है, उसके लिए कहते हैं।

अलबेली ने पकाई खीर, दूध की जगह डाला नीर

व्यर्थ में होशियार बनने वाली के लिए कहते है।

अला लूँ बला लूँ सहनक सरका लूँ

मीठी बातो से उल्लू सीधा करने वाली के प्रति कहा जाता है।

अल्लाह रे! दीदे की सफाई!

कैसी आँख मारती है?—इस भाव को व्यक्त करने के लिए कहते हैं।

आँख गड्ड, नाक भद्द, सोहनी नाम
आँख का अन्धा, नाम नयनसुख।
आँख न नाक, बन्नो चाँद सी
शक्ल-सूरत कुछ न होने पर भी चटक-मटक से रहने वाली के लिए कहा जाता है।
आई थी आग लेने, मालकिन बन बैठी
बहाने से अधिकार ही कर लिया।
आई न गई कौले लग ग्याभन भई
अपने को भोली भाली या निर्दोष बताने पर कहा जाता है।
आई न गई, छो-छो घर में ही रही
जो कभी घर से बाहर न निकले, उसको उपेक्षा में कहते है।
आगे हात, पीछे पात
अत्यधिक गरीबी।
आ पड़ोसन मुझसी हो
दूसरों का बुरा चेतने के लिए कहा जाता है।
आ पड़ोसन लड़ें
बेमतलब लड़ने की इच्छा के लिए कहा है।
आया कातिक उठी कुतिया
निर्लज्ज स्त्री के लिए कहा जाता है।
आये चैत सुहावन फूहड़ मैल छुड़ावन
जो कभी-कभी सफाई करे अन्यथा मैली रहे, उसके प्रति कहते हैं।
आयेगा कुत्ता तो पायेगा टिक्का
मेहनत से ही खाने को मिलता है।
आलसी मर्द की चंचल नार
मर्द दुर्बल होगा तो घरवाली ताँक-झांक करेगी ही।
इतने की तो कमाई नहीं जितने का लहँगा फट गया
लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होने पर या दुराचरण के लिए कहा जाता है।
उठते लात बैठते घूंसा
दुर्व्यवहार होने पर कहा जाता है।
उठली बहू बलंडे साँप दिखाये
घर से भाग निकलने या काम से टलने का बहाना करने पर कहते हैं।
उठाओ मेरा मकना, मैं घर सँभालूं अपना
नयी बहू के रोब जमाने पर कहा जाता है।

उघेड़ के रोटी न खाओ, नंगी होती है

बदनामी होती है।

एक कौड़ी गांठी, चूड़ा पहनूं कि माठी

गांठ में पैसा न होने पर भी तरह-तरह की चीजें खरीदने की इच्छा।

एक तो कानी बेटी की माई, दूसरे पूछने वालों ने जान खाई

झूठी सहानुभूति दिखाने वालों के प्रति कहा जाता है।

एक तो मुआ अनिभाया था, दूसरे सई सांझ से आता था

दुराचारिणी का कथन।

ऐसी तेरे ही तले गंगा बहे है

तू ही बडी सच्ची या पतिव्रता है।

ऐसी बहू सयानी कि पैंचा मांगे पानी

बहू ऐसी होशियार है कि पानी भी उधार मांगती है ताकि कोई मुफ्त में न मांगे।

ऐसी लटकी कि भुईं में पटकी

ऐसा नीचा दिखाया कि जमीन चाट रही है।

ऐसी होती कातनहारी तो काहे फिरती मारी-मारी

अगर ऐसी ही होशियार होती तो मारी-मारी क्यों फिरती ?

ऐसे पै तो ऐसी, काजल दिए पै कैसी ?

सहज में तो इतनी सुन्दर, फिर काजल लगाने पर तो न जाने कितनी सुन्दर लगेगी।

ओढ़ी चादर हुई बराबर, मैं भी शाह की खाला हूं

बहुत शेखी मारने वाली से कहा जाता है।

ओछे के घर खाना, जनम जनम का ताना

छोटे आदमी का एहसान नहीं लेना चाहिए।

ओनामासी न आवे, मैया पोथी ला दे

ऐसी वस्तु मांगना जिसका उपयोग न जानते हों।

औरत और ककड़ी की बेल जल्दी बढ़ती है

लडकी जल्दी जवान होती है।

औरत के नाक न होती तो गू खाती

बुरे से बुरा काम करती है।

औरत पर जहां हाथ फिरा और वह फैली

विवाह के बाद कम उम्र की लड़की भी शीघ्र जवान हो जाती है।

औरत रहे तो आप से, नहीं तो जाये सगे बाप से

स्त्री अगर स्वयं सच्चरित्र है तो रहेगी, अन्यथा बाप के साथ भी निकल जाएगी। अथवा, स्त्री अपनी इच्छा से ही घर में रह सकती है नहीं तो बाप भी उसे नहीं सँभाल सकता।

कुंआरी खाय रोटियाँ, ब्याही खाय बोटियाँ

ससुराल जाती बेटी को कुछ-न-कुछ देना ही पड़ता है।

कुचाल संग हांसी, जीव-जान की फांसी

बुरे के साथ हँसी-दिल्लगी से बुराई मिलती है।

कुछ तो बावली, कुछ भूतों खदेड़ी

एक तो पगली, फिर मुसीबत की मारी।

कुटनी से तो राम बचावे, प्यारी होकर पत उतरावे

बुरी औरत से तो ईश्वर बचाए। प्रेम दिखाकर इज्जत उतरवा देती है।

कुन्द हथियार और किया भतार किसी के काम नहीं आते

दोनों बेकार हैं।

कोई भी माँ के पेट से लेकर नहीं निकला है

काम करने से आता है। माँ के पेट में सीखकर कोई नहीं आता।

कोख की आंच सही जाती है, पेडू की आंच नहीं सही जाती

संतान की मृत्यु सहन हो जाती है पति की नहीं। संतान की मृत्यु सहन हो जाती है पर भूख की ज्वाला नहीं। प्रसव-वेदना सहन हो जाती है पर पेट का दर्द नहीं।

कोख-माँग से ठंडी रहे

संतान और पति का सुख मिलता रहे। (आशीर्वाद)

कोठी-कुठले से हाथ न लगाओ, घर-बार तुम्हारा

झूठा प्रेम दिखाने पर कहा जाता है।

क्या चूड़ियाँ फूट जाएँगी ?

बहुत धीरे-धीरे काम करने वाली से कहा जाता है।

क्या जाने गँवार, घुंघटवा का भार ?

गँवार प्रेम का भेद क्या जाने ?

क्या टोटका करने आई थी ?

तुरन्त जाने या कम भोजन करने पर कहा जाता है।

क्या नंगी नहायेगी और क्या निचोड़ेगी ?

निर्धन और सामर्थ्यहीन के प्रसंग में कहा जाता है।

क्या मैं तेरी पट्टी के नीचे पैदा हुई हूं ?

मैं तुमसे क्यों दबूं ?

खलक का हलक किसने बन्द किया ?

दुनियां के मुंह को कौन बन्द कर सकता है ?

खसम का खाए, भाई का गाए

खाना किसी का, गाना किसी का।

और मजाक भूल गए, 'मेरे पीस आइयो'

दुराचारिणी स्त्री का अपने प्रेमी से कथन कि बस मेरे यहाँ पीस आओ—तुम्हें इसके सिवा कोई मजाक नही आता।

कंत न पूछे बात मेरी, धना सुहागन नाम

जब कोई अपने आप ही व्यर्थ में किसी स्थान की मालकिन बनी फिरे, तब कहा जाता है।

कमर न बूता, साझे सूता

निखट्टू पति के प्रति कहा जाता है।

कमाऊ आवै डरता, निखट्टू आवै लड़ता

काम करने वाला नम्र और निखट्टू लडाकू होता है।

कमाऊ खसम किसने न चाहे

स्पष्ट है।

कमाऊ पूत कलेजे सूत

कमाने वाला पुत्र प्रिय होता है।

करा और कर न जाना, मैं होती तो कर दिखाती

ऐब करना और उसे छिपाना सबके वश की बात नही।

कल का लीपा देव बहाय, आज का लीपा देखो आय

वर्तमान की चिन्ता करो।

काजल तो सब लगाते हैं पर चितवन भांत-भांत

बनाव-शृंगार तो सभी करते हैं पर निजी सौन्दर्य अलग ही होता है।

कातिक कुतिया माह बिलाई, चैत में चिड़िया सदा लुगाई

स्त्री की काम-वासना बडी प्रबल होती है।

काना मुझको भाय नहीं, काने बिन सुहाय नहीं

चीज पसन्द नही, पर उसके बिना गुजर भी नही।

कानी के ब्याह को सौ जोखों

जिसमें पहले ही त्रुटि हो उसमे विघ्न भी बहुत आते है।

का पर करूँ सिंगार, पिया मोर आंधर

जहाँ गुण-ग्राहक नही होता वहाँ गुणी का मन अपने करतब दिखाने मे नही लगता।

काले सिर का एक एक न छोड़ा

कुलटा के लिए कहा जाता है।

कुँआरी को सदा बसन्त

व्यंग्य मे वेश्या के लिए कहा जाता है।

कुंआरी खाय रोटियां, ब्याही खाय बोटियां
ससुराल जाती बेटी को कुछ-न-कुछ देना ही पड़ता है।
कुचाल संग हांसी, जीव-जान की फांसी
बुरे के साथ हँसी-दिल्लगी से बुराई मिलती है।
कुछ तो बावली, कुछ भूतों खदेड़ी
एक तो पगली, फिर मुसीबत की मारी।
कुटनी से तो राम बचावे, प्यारी होकर पत उतरावे
बुरी औरत से तो ईश्वर बचाए। प्रेम दिखाकर इज्जत उतरवा देती है।
कुन्द हथियार और किया भतार किसी के काम नहीं आते
दोनो बेकार है।
कोई भी मां के पेट से लेकर नहीं निकला है
काम करने से आता है। मां के पेट से सीखकर कोई नही आता।
कोख की आंच सही जाती है, पेडू की आंच नहीं सही जाती
संतान की मृत्यु सहन हो जाती है पति की नही। संतान की मृत्यु सहन हो जाती है पर भूख की ज्वाला नही। प्रसव-वेदना सहन हो जाती है पर पेट का दर्द नही।
कोख-मांग से ठंडी रहे
संतान और पति का सुख मिलता रहे। (आशीर्वाद)
कोठी-कुठले से हाथ न लगाओ, घर-बार तुम्हारा
झूठा प्रेम दिखाने पर कहा जाता है।
क्या चूड़ियां फूट जाएँगी ?
बहुत धीरे-धीरे काम करने वाली से कहा जाता है।
क्या जाने गँवार, घुंघटवा का भार ?
गँवार प्रेम का भेद क्या जाने ?
क्या टोटका करने आई थी ?
तुरन्त जाने या कम भोजन करने पर कहा जाता है।
क्या नंगी नहायेगी और क्या निचोड़ेगी ?
निर्धन और सामर्थ्यहीन के प्रसंग में कहा जाता है।
क्या मैं तेरी पट्टी के नीचे पैदा हुई हूं ?
मैं तुमसे क्यो दवूं ?
खलक का हलक किसने बन्द किया ?
दुनियां के मुंह को कौन बन्द कर सकता है ?
खसम का खाए, भाई का गाए
खाना किसी का, गाना किसी का।

खसम किया सुख सोने को कि पाटी लग के रोने को

बूढ़े से ब्याही या अनचाही पत्नी का कथन।

खसम देवर दोनों एक सास के पूत, यह हुआ कि वह हुआ

देवर से प्रेम करने वाली पर ताना।

खसम से छूटे, यारों के जाये

व्यभिचारिणी स्त्री।

खाना न कपड़ा सेंत का भतरा

निकम्मा पति।

खैर की जूती, खैरात का नाड़ा, पढ़ दे मुल्ला अकद उधारा

माँगे की जूती और माँगे का ही पैंजामा है इसलिए मुल्ला, तू ब्याह भी उधार करा दे।

गंठिया खुला बिटिया पारस

पुत्रवती होने पर स्त्री का सम्मान होता है।

गया जोबन भतार

अवसर बीतने पर काम करना।

गाँठ न मुठ्ठी फरफराय उठ्ठी

पास में पैसा नहीं पर किसी चीज को लेने का मन करना।

गाऊँ न गाऊँ तो बिरहा

या तो कुछ करे ही नहीं, या करे तो जो किसी को पसन्द नहीं।

गाओ बजाओ, कौड़ी न पाओ

सूम के लिए कहा जाता है।

गाओ-बजाओ, बन्ने के लोलो ही नहीं

जिसके लिए धूम-धाम की, वह है ही नहीं।

गाड़ी को देख लाड़ी के पाँव फूले

गाड़ी को देखकर लाड़ी के पाँवों में भी दर्द होने लगा। आराम सब चाहते हैं।

गुड़ खाएगी तो आएगी

बदचलन औरत के लिए कहा जाता है।

गुदड़ी से बीवी आई, 'शेख जी, किनारे हो'

ओछी जब प्रतिष्ठा पाकर इतराने लगे तब कहा जाता है.

गौंवड़े आई बरात, बहू को लगी हँगास

ऐन मौके पर जब कोई कहीं चली जाए तब कहा जाता है।

गोंद पंजीरी और ही खाए, जचहा रानी पड़ी कराहे

जिन्हें जरूरत है उन्हें तो न मिले और दूसरे मौज करें, तब कहा जाता है।

गोद का छोड़ के पेट के की आस
वर्तमान छोड़कर भविष्य पर निर्भर होना।
गोबर की सांझी भी पहरी-ओढ़ी अच्छी लगती है
सजावट अच्छी चीज है।
गोरी का जीवन चुटकियों में
युवती का यौवन छेड़छाड़ में या थोडा-थोडा करके समाप्त हो जाता है अथवा हमेशा नहीं रहता।
घर की मूंछें ही मूंछें हैं
बस शेखी मारते है, काम कुछ नही करते। निकम्मा पति।
घर-घर यही मटियाले चूल्हे हैं
सब घरो का एक-सा हाल है या सब जगह परेशानी है।
घर जल गया तब चूड़ियां पूछीं
काम बिगड़ने पर जब कोई सुधि ले, तब कहा जाता है।
घर की बीबी हांडिनी, घर कुत्तों का जोग
जिस घर की स्त्री हमेशा बाहर घूमती-फिरती है, वह घर बर्बाद हो जाता है।
घर-घर के जाले बुहारती फिरती है
घर-घर फिरती है, घर बदलती है या खुशामद करती फिरती है।
परबार तुम्हारा, कोठी-कुठल्ले को हाथ न लगाना
झूठा प्रेम या दिखावटी आदर-सत्कार।
घर भी बैठो और जान भी खाओ
निकम्मे लडके या निखट्टू पति के लिए कहा जाता है।
घर मिलता है तो वर नहीं मिलता, वर मिलता है तो घर नहीं मिलता
लड़की के विवाह का कही ठीक न पड़ना। कभी घर बुरा, कभी वर बुरा।
घर में घर, लड़ाई का डर
एक घर में अगर दो परिवार रहते हैं तो झगडे का डर रहता है।
घर में भूनी भांग नहीं और नेवते साठ
शक्ति के बाहर काम करने पर कहा जाता है।
घर में दिया तो मस्जिद में दिया
पहले अपना घर संभालना चाहिए फिर बाहर।
घर में दिया न बाती, मुंडो फिरे इतराती
झूठी शान दिखाना।
घर में देखी चलनी न छाज, बाहर मियां तीरन्दाज
झूठी शान दिखाने पर कहा जाता है।

घर में धान न पान, बीबी को बड़ा गुमान

गरीब होते हुए भी ऐंठ दिखाना।

घर में नहीं बूर, बेटा माँगे मोतीचूर

जब कोई ऐसी वस्तु माँगे जिसको देने की सामर्थ्य न हो, तब कहा जाता है।

घर यार के, पूत भतार के

दुश्चरित्र औरत के लिए कहा जाता है।

घर से बाहर भला

निकम्मे या लडाकू पति के लिए अथवा चिन्ता से मुक्ति के प्रसंग में कहा जाता है।

घूंघट वाली देखकर भली बीर मत जान

किसी स्त्री को घूंघट वाली देखकर सच्चरित्र न समझो।

घी सँवारे काम, बड़ी बहू का बड़ा नाम

काम तो पैसे से होता है, यश करने वाले को मिलता है।

चंबेली चाव में आई, बख्तावर रेवड़ियाँ बाँटे

जब कोई सूम खुशी मे खर्च करने लगे, तब कहा जाता है।

चकमक दीदा, खाए मलीदा

दुराचारिणी के लिए कहा जाता है।

चक्की तले घर तेरा, निकल सास घर मेरा

उद्धत बहू का कथन।

चक्की में कौर डालोगे तो चून पाओगे

पैसा खर्च करने से ही कुछ मिलता है।

चढ़ी कढ़ाई तेल न आया तो कब आएगा ?

मौके पर चीज न मिली तो कब मिलेगी ?

चल चकहे, मेरे मुँह मत लग

मुझसे बात मत कर। फटकार।

चल छाँव में आई हूँ, जुमला पीर मनाई हूँ

नजाकत-पसन्द औरत का कथन।

चलनी में गाय दुहे, कर्मों का क्या दोष ?

जान-बूझकर मूर्खता करने पर भाग्य का क्या दोष ?

चली-चली आई सौत के पीहर

जब कोई जान-बूझकर बर्बादी के रास्ते पर चले, तब कहते है।

चसका दिन दस का, पराया खसम किसका

पराई चीज अपनी नहीं हो सकती।

चातुर की चेरी भली, मूरख की नार से
मूर्ख की स्त्री होने से चतुर की चेरी होना अच्छा।
चार दिन का रंग-चंग, छोड़ दाढ़ीजरवा मोरा संग
दुष्ट पति से उसकी स्त्री का कथन।
चार दिन की आइयाँ और सोंठ बिसाइन जाइयाँ
जब कोई नयी विवाहिता प्रौढ़ा की-सी बात करे, तब कहा जाता है।
चाहे कोदों दलवाले, चाहे मँडुवा पिसवाले
जो कहेगा वही करूँगी लेकिन कोई एक काम करा ले।
चिकना देख फिसल पड़े
रूप-यौवन पर फिसलना या पैसों के लालच में पड़ना।
चिकनिया फकीर, मखमल की लँगोट
जब कोई हैसियत से बाहर काम करे तब कहा जाता है।
चिकने गाल तिलनिया के, जरे-भुरे भुरजिनिया के
आदमी की चाल-ढाल पर उसके व्यवसाय का असर पड़ता है।
चिराग में बत्ती और आँख में पट्टी
जो शाम से ही सोने की तैयारी करे, उससे कहा जाता है।
चीज न राखे आपनी, चोरों गाली देय
स्वयं सावधान न रहकर दूसरों को दोष देना।
चीरे चार, बघारे पाँच
बात अधिक, काम थोड़ा।
चुटिया को तेल नहीं, पकौड़ों को जी चाहे
महँगी वस्तु के लिए मचलना।
चूल्हे की न चक्की की
ऐसी स्त्री जो गृहस्थी का कोई काम न जाने।
चोट लगी पहाड़ की, तोड़े घर की सिल
बाहर का गुस्सा घर में उतारना।
छब गठरी में, जोबन रकाबो में
खूबसूरती अच्छे वस्त्रों से और यौवन अच्छे भोजन से बना रहता है।
छाज बोले सो बोले, चलनी भी बोले जिसमें बहत्तर सौ छेद
जब कोई अपनी त्रुटियाँ न देखकर दूसरे की आलोचना करे, तब कहा जाता है।
छावत मँड़वा गावत गीत, पिया बिन लागत सब अनरीत
स्पष्ट है।

छिनाल का बेटा 'बबुआ रे बबुआ !'
छिनाल के बेटे को सब दुलराते है या छिनाल अपने बेटे को बबुआ कहती है।

छूट भलाई सारे गुन
भलाई छोडकर सारे गुण हैं। बुरे मनुष्य के लिए कहा जाता है।

छेरी जी से गई, खाने वालों को सवाद न आया
जब किसी के आत्म-त्याग या परिश्रम की सराहना न की जाए तब कहते हैं।

छोटा घर, बड़ा समधियाना
स्थान की संकीर्णता के कारण जहाँ कोई काम अच्छी तरह न हो सके या जहाँ लोग अच्छी तरह उठ-बैठ न सकें।

छोड़ चले बंजारे की-सी आग
किसी ऐसी स्त्री का कथन जिसका प्रेमी उसे छोड़ गया हो।

छोड़ झाड़, मुझे डूबने दे
गलत काम करने या इरादा करके जब उसे न करना चाहें और उसके लिए बहाना बनायें, तब कहा जाता है।

जग जले तो जले, मैं आप ही जलती हूँ
स्वयं मुसीवत मे हूँ दूसरे की मुसीवत को क्या देखूँ ?

जनती न ढोल बजता
ऐसे पुत्र के लिए कहा जाता है जिसके कारण घर की बदनामी हो रही हो।

जब भूख लगी भड़वे को तंदूर की सूझी, और पेट भरा उसका तो दूर की सूझी
निकम्मे पति या उसके दिखावटी प्रेम के लिए कहते हैं।

जब से उगे बाल, तब से यही हवाल
बुरे लड़के के जवान होने पर कहा है।

जल में खड़ी प्यासों मरे
अभाव न होते हुए भी कष्ट भोगना।

जवान जाय पताल, बुढ़िया माँगे भतार
जवान-बेटी तो मरी जा रही है और बुढ़िया ब्याह किया चाहती है।

जहाँ देखी रोटी, वहाँ मुँड़ाई चोटी
जिससे कुछ मिलने की आशा हुई, उसी की हो जाना।

जहाँ देखें तवा-परात, वहाँ बितावें सारी रात
जहाँ खाने-पीने का डौल देखा, वहीं जम गए।

जाओ पूत दक्खन, वही करम के लच्छन
कहीं भी जाओ, भाग्य साथ नहीं छोड़ता या अकर्मण्य कहीं भी कुछ नहीं कर सकता।

जाके कारन पहनी सारी, वही टाँग रहे उघारी

कष्ट का ज्यों का त्यों बने रहना।

जान न पहचान, बड़ी खाला सलाम

बिना परिचय के ही रिश्ता जोड़ना।

जिसका भड़वा, उसका गीत

परिस्थिति के अनुसार ही काम किया जाता है।

जिसे पिया चाहे वही सुहागन, क्या गोरी क्या सांवरी ?

स्पष्ट है।

जीजा के माल पर साली मतवाली

मूर्खता की बात। साली को क्या मिलेगा ?

जीवे मेरा भाई, गली-गली भौजाई

ननद का भावज को ताना।

जैसा देवै वैसा पावै, पूत-भतार के आगे आवै

जो जैसा करती है वैसा ही पाती है। उसे नहीं तो उसके सगे लोगो को झेलना पड़ता है।

जैसी गई वैसी आई, हक महर का बोरिया लाई

आशा से जाने पर भी कुछ न मिलना। दुर्भाग्य।

जैसी माई, वैसी जाई

जैसी माँ, वैसी बेटी।

जैसी दाई आय छिनार, वैसो जाने सब ससार

जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।

जैसे कन्ता घर रहे वैसे रहे विदेश, जैसी ओढ़ी कामली वैसा ओढ़ा खेस

निकम्मे आदमी का घर या बाहर रहना एक-सा।

जो वर देख ताप मुझे आवै, सोई वर मुझे ब्याहने आवै

घृणित वस्तु का पल्ले पड़ना या अनचाहे कार्य करने के लिए विवश होना।

जोरू का मरना और जूती का टूटना बराबर है

जूती पुरानी होने पर नयी खरीदी जा सकती है और औरत के मरने पर दूसरा ब्याह किया जा सकता है।

टट्टर खोल निखट्टू आया

अकर्मण्य पति के लिए कहा जाता है।

टाट के अँगिया, मूँज के तनी, देख मेरे देवरा मैं कैसे बनी

भद्दी पोशाक या बुरे काम के प्रसंग में कहते है।

टुकड़े खाए दिन बहलाए, कपड़े फाटे घर को आए

ऐसे काम के सम्बन्ध मे कहा जाता है जिसमें केवल खाना भर मिल सके।

टेंट आंख में मुंह खुरदोला, कहे, 'मियां मोरा छैल-छबीला'

अपनी चीज की बहुत डींग हांकने पर कहा जाता है।

डूबो कंत भरोसे तेरे

जिसके भरोसे रहे उससे जब सहायता न मिले और हानि उठानी पड़े, तब कहा जाता है।

डेढ़ पाव आटा, पुल पर रसोई

व्यर्थ का दिखावा।

डोली न कहार, बीबी भई है तैयार

किसी के यहां बिना बुलाए ही जाना।

तले पड़ी का मोल क्या

जो वस्तु अपने अधिकार मे हो, उसका कोई मूल्य नही या गयी-गुजरी बात की चर्चा के समय नष्ट करना ठीक नही।

तवा न तगारी, काहे की भटियारी

कोरी शेखी हांकने या अपने विषय मे झूठी बात कहने पर कहा जाता है।

ताश पर मूंज का बखिया

असंगत काम।

तिरिया चरित्र जाने नहि कोय, खसम मार कर सत्ती होय।

स्पष्ट है।

तिरिया जात कमान है, जित चाहे तित तान

जहां चाहो या जितना चाहो झुका लो।

तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार

हमीर के हठ की तरह स्त्री का विवाह दुवारा [illegible] होता।

तुम तो मुझे छेड़ोगे

तू गधी कुम्हार की, तुझे राम से क्या

व्यर्थ हस्तक्षेप करने वाले से कहा जाता है।

तू चाहे मेरी जाई को, मैं चाहूँ तेरे खाट के पाए को

अच्छा व्यवहार करोगे तो बदले मे अच्छा ही व्यवहार पाओगे।

तू छुए और मैं मुई

सुकुमारता प्रकट करना या प्रसव-वेदना से पीडित का कहना।

तूने की रामजनी, मैंने किया रामजना

तूने जब ऐसा किया तो मैंने भी ऐसा किया।

तू भी रानी मैं भी रानी, कौन भरे कुएँ का पानी

जहाँ सब अपने को बड़ा समझते हों वहाँ कहा जाता है।

तेरा पानी मैं भरूँ, मेरे भरें कहार

झूठा बड़प्पन दिखाना।

तेरा हाथ और मेरा मुँह

कमाओ और मुझे खिलाओ।

तेरा है सो मेरा था, बराय खुदा टुक देखन दे

सास का बहू के प्रति कथन।

तेरी आन या तेरे गुसइयाँ की

तेरी सौगन्द खाऊँ या तेरे स्वामी की ?

तेरी आवाज मक्का-मदीने में

शुभ समाचार सुनाने वाले को आशीर्वाद या जब कोई चिल्लाकर कहे तब भी कहा जाता है।

तेल की जलेबी मुआ दूर से दिखाए

आशा तो बहुत देना पर करना कुछ भी नही।

तेल जले घी, घी जले तेल

स्त्रियों की धारणा है कि बहुत जलने से तेल घी और घी तेल के समान हो जाता है।

तेल न मिठाई, चूल्हे धरी कढ़ाई

बिना साधन के ही काम की तैयारी।

तेलन से क्या घोबन घाट ? इसके मूसल उसके लाट

दोनों एक सी विकट।

तेली का बैल ले के धोबन सती होय

व्यर्थ की सहानुभूति दिखाने पर कहा जाता है।

तेली खसम किया और रूखा खाया

समर्थ का आश्रय लेकर भी कष्ट मे रहना। मूर्खता।

टुकड़े खाए दिन बहलाए, कपड़े फाटे घर को आए

ऐसे काम के सम्बन्ध में कहा जाता है जिसमें केवल खाना भर मिल सके।

टेंट आंख में मुंह खुरदीला, कहे, 'मियां मोरा छैल-छबीला'

अपनी चीज की बहुत डींग हांकने पर कहा जाता है।

डूबी कंत भरोसे तेरे

जिसके भरोसे रहे उससे जब सहायता न मिले और हानि उठानी पड़े, तब कहा जाता है।

डेढ़ पाव आटा, पुल पर रसोई

व्यर्थ का दिखावा।

डोली न कहार, बीवी भई है तैयार

किसी के यहां बिना बुलाए ही जाना।

तले पड़ी का मोल क्या

जो वस्तु अपने अधिकार में हो, उसका कोई मूल्य नहीं या गयी-गुजरी बात की चर्चा के समय नष्ट करना ठीक नहीं।

तवा न तगारी, काहे की भटियारी

कोरी शेखी हांकने या अपने विषय में झूठी बात कहने पर कहा जाता है।

ताश पर मूंज का बखिया

असंगत काम।

तिरिया चरित्र जाने नहिं कोय, खसम मार कर सत्ती होय।

स्पष्ट है।

तिरिया जात कमान है, जित चाहे तित तान

जहां चाहो या जितना चाहो झुका लो।

तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार

हमीर के हठ की तरह स्त्री का विवाह दुबारा नहीं होता।

तुम तो मुझे छेड़ोगे

प्रकारान्तर से किसी के मन में बोलने या छेड़ने की इच्छा जाग्रत करना।

तुम रूठे, हम छूटे

चलो अच्छा हुआ तुम नहीं माने, हमने भी छुट्टी पाई। जब कोई मनाने पर भी न माने तब कहा जाता है।

तुम्हारे लड़के भी घुटनियों चलेंगे

तुम कभी वादा पूरा भी करोगे या सच भी बोलोगे ?

तू खोल मेरा मकना, मैं घर सँभालूं अपना

तेज-तर्रार औरत के लिए कहा जाता है।

तू गधी कुम्हार की, तुझे राम से क्या
व्यर्थ हस्तक्षेप करने वाले से कहा जाता है।
तू चाहे मेरी जाई को, मैं चाहूँ तेरे खाट के पाए को
अच्छा व्यवहार करोगे तो बदले में अच्छा ही व्यवहार पाओगे।
तू छुए और मैं मुई
सुकुमारता प्रकट करना या प्रसव-वेदना से पीड़ित का कहना।
तूने की रामजनी, मैंने किया रामजना
तूने जब ऐसा किया तो मैंने भी ऐसा किया।
तू भी रानी मैं भी रानी, कौन भरे कुएँ का पानी
जहाँ सब अपने को बड़ा समझते हों वहाँ कहा जाता है।
तेरा पानी मैं भरूँ, मेरे भरें कहार
झूठा बड़प्पन दिखाना।
तेरा हाथ और मेरा मुंह
कमाओ और मुझे खिलाओ।
तेरा है सो मेरा था, बराय खुदा टुक देखन दे
सास का बहू के प्रति कथन।
तेरी आन या तेरे गुसइयाँ की
तेरी सौगन्द खाऊँ या तेरे स्वामी की ?
तेरी आवाज मक्का-मदीने में
शुभ समाचार सुनाने वाले को आशीर्वाद या जब कोई चिल्लाकर कहे तब भी कहा जाता है।
तेल की जलेबी मुआ दूर से दिखाए
आशा तो बहुत देना पर करना कुछ भी नहीं।
तेल जले घी, घी जले तेल
स्त्रियों की धारणा है कि बहुत जलने से तेल घी और घी तेल के समान हो जाता है।
तेल न मिठाई, चूल्हे धरी कढ़ाई
बिना साधन के ही काम की तैयारी।
तेलन से क्या धोबन घाट ? इसके मूसल उसके लाट
दोनों एक सी विकट।
तेली का बैल ले के धोबन सती होय
व्यर्थ की सहानुभूति दिखाने पर कहा जाता है।
तेली खसम किया और रूखा खाया
समर्थ का आश्रय लेकर भी कष्ट में रहना। मूर्खता।

तोड़ डाल तू तागा, किस भड़वा के मुंह लागा

दुष्ट का साथ छोड़।

दक्खन गए न बहुरे, रहे चँदेरी छाया

जो विदेश ही में रह जाए उसके प्रति कहा जाता है।

दमड़ी की निहारी में टाट के टुकड़े

थोड़े पैसों में कोई अच्छी चीज कैसे आए ?

दमड़ी की दाल बुआ पतली न हो

जरूरत से ज्यादा कंजूसी पर कहा जाता है।

दमड़ी की गुड़िया टका डोली का

जितने की चीज नही उस पर उससे अधिक खर्च।

दमड़ी का अरहर सारी रात खरहर

जरा से काम को बहुत करके दिखाना।

दमड़ी की दाल, आप ही कुटनी आप ही छिनाल

किसी वस्तु का इतना कम होना कि उसमें एक का भी काम न चल सके

दरवाजे पर आई बरात, समधिन को लगी हँगास

काम के वक्त गायब हो जाना।

दसों उंगलियां, दसों चिराग

सब तरह से चतुर और काम करने वाली स्त्री को कहा जाता है।

दाई जाने अपनी हाई

दाई अपनी जैसी स्थिति ही सबकी समझती है अथवा जब कोई दूसरे के कष्ट को कम करके बताए तब भी कहते है।

दाता दातार, सुथना उतार

इतने उदार कि बीवी का पैंजामा भी उतार कर दे दे।

दिन को ऊनी-ऊनी, रात को चरखा-पूनी

असमय का काम करने पर कहते हैं।

दिन को शर्म, रात को बगल गर्म

दिन मे पति या प्रेमी से शर्म करने वाली से कहा जाता है।

दिया दूर से, लगी साथ खाने

माँगने पर कोई चीज दी तो वह और भी ढीठ हो गई।

दिया न बाती, मुंडो फिरे इतराती

कोरा घमण्ड।

दिल्ली की बेटी मथुरा की गाय, करम फूटे तो बाहर जाय

स्पष्ट है।

दिल्ली की दिलवाली, मुंह चिकना पेट खाली

शहर की छैल-छबीलियों पर फबती।

दिवाल रहेगी तो लेव बहुतेरे चढ़ रहेंगे

जान बचेगी तो मांस भी चढ जाएगा।

दूधों नहाओ, पूतों फलो

आशीर्वाद।

दो खसम की जोरू चौसर की गोट

जिसका दांव लगा, उसी ने कब्जा कर लिया।

देखा न भाला, सदके गई खाला

बिना देखे ही किसी की प्रशंसा करने पर कहा जाता है।

देखी पीर तेरी करामात। देखी राम तेरी करतूत

कोरा नाम, करतूत कुछ नही।

देखे बौरहया, आवें पांचों पीर

देखने मे पागल पर बडा चालाक।

देखो मिया के छंद बद, फाटा जामा तीन बन्द

कोरे शौकीन के लिए कहा जाता है।

दे दुआ समधियाने को, नहीं फिरती दाने-दाने को

स्पष्ट है।

धधाएगा सो बुताएगा

जुल्मी का विनाश जल्दी होता है अथवा दम्भ अधिक नही ठहरता है।

धिया पूत के न गाती, बिलैया के गाती

बच्चो के लिए तो कपडे नही और रखैल के लिए कपडे।

धी पराई, आँख लजाई

वहू जब कोई गलत काम करे तब कहा जाता है। विवाह होने पर लड़की को दवना पडता है या लज्जा करनी पडती है।

धी मुई जवाई खोट, धी मुई जवाई चोर

लडकी के मरने पर दामाद की कद्र नही होती।

धींवर के बस परी

बुरे के हाथ पड़ी हूँ।

धोती थी दो पांव, धोने पड़े चार पांव

विवाहित जीवन से ऊबी हुई स्त्री का कथन।

धोबी छोड़ सबका किया, रही खिजर के घाट

मुसीबत ज्यो-की-ज्यों रहने पर कहा जाता है।

नंगी क्या नहाएगी और क्या निचोड़ेगी
जिसके पास कुछ न हो, वह क्या अपने पर और क्या दूसरों पर खर्च करे?
नंगी ने रोका घाट, नहावे न नहाने दे
बेशर्म से सब घबराते है।
नंगा भली कि छींके पांव, नंगी भली कि टेटक मचवा
दो बुरी चीजों में से कम बुरी चीज ही पसन्द की जाती है।
नंगी होकर काता सूत, बुड्डी होकर जाया पूत
समय निकल जाने पर कार्य करना।
नई बहू टाट का लहँगा, नई नाइनी बांस की नहर
ऊटपटांग ढग।
नकटी मैया पानी पिला, पूता इन्हीं गुनन
ठीक ढग से बोलो तो काम हो।
नकटे का खाइए, उकटे का न खाइए
बदनाम के यहां खा लो, पर ओछे के यहां नही।
न तेल तलो, न ऊपर पलो
थोड़ी चीज देने पर कहा जाता है।
ननद का ननदोई गले लाग रोई
जिससे कोई सम्बन्ध नहीं, उससे प्रेम दिखाना।
न मै कहूँ तेरी न तू कहे मेरी
न मैं तेरी, बुराई करूँ न तू मेरी कर।
न मैं जलाऊँ तेरी न तू जला मेरी
न मैं तेरा नुकसान करूँ न तू मेरा कर।
नया चिकनिया, रँड़ी का कुतेल
नौसिखिया का ऊटपटांग काम।
न सूप दूसे जोग न चलनी सराहे जोग
दोनों एक से।
नाक कटे मुबारक, कान कटे सलामत
निर्लज्ज के लिए कहा जाता है।
नाक तो कटी पर वह खूब ही में मेरी
किसी बदनाम का नेकनामी के साथ मरना।
नाक दे या नरहनी दे
किसी को असमजस मे डालना।
नाक हो तो नथिया सोभे
नथ पहिनने के लिए भी अच्छी नाक चाहिए।

नाचने निकली तो घूँघट क्या
    काम में क्या शर्म !
नाता न गोता, खड़ा होकर रोता
    बेमतलब हस्तक्षेप करने वाले से कहा जाता है।
नातिन सिखावे आजी को बारह इयोढ़ें आठ
    छोटे द्वारा बड़े को सीख देने पर कहा जाता है।
नानी के आगे ननसार की बातें
    जानकार से अधिक ज्ञानवान बनने पर कहा जाता है।
नानी खसम करे, नवासा चट्टी भरे
    किसी की भूल का प्रायश्चित्त कोई करे।
नाम की नन्हीं, उठा ले जाय धन्नी
    देखने में छोटी पर बड़ी चालाक।
नार निकाले दंत, मर्द ताड़े अंत
    स्त्री के हँसने का मतलब मर्द समझ लेता है। हँसी और फँसी।
नारी के बस भए गुंसाई नाचत हैं मर्कट की नाईं
    स्त्री के वश में पड़कर पुरुष बन्दर की तरह नाचता है।
निखट्टू आए लड़ता, कमाऊ आए डरता
    स्पष्ट है।
निपूती का मुँह देख ले, सात उपास
    सुबह-सुबह बाँझ का मुँह देखना बुरा है।
नौमो गूँगा पीर मनाऊँ, ना चरखे के हाथ लगाऊँ
    काम न करने के लिए कोई व्यर्थ का बहाना बनाने पर कहा जाता है।
पंचफूला रानी बनी है
    अपने को बड़ी रूपवती समझती है।
पड़ली मियाँ तोर बस, जिन्ने चाहा तिन्ने धस
    स्त्री द्वारा अत्याचारी पति के अत्याचार विवश होकर सहन करने पर कहा जाता है।
पर मुई सासू, आसों आए आँसू
    बनावटी दु:ख का प्रदर्शन करने पर कहते है।
परदे की बीबी और चटाई का लहँगा
    प्रतिष्ठा के अनुरूप पोशाक न होने पर कहा जाता है।
पराया सिर लाल देख अपना सिर फोड़ डालेंगे
    पराये सौभाग्य पर ईर्ष्या करना।

पाँच महीने ब्याह के बीते, पेट कहाँ से लाई ?

अप्रत्याशित बात के होने पर कहते हैं।

पिया जिसे चाहे वही सुहागन

सुहाग उसी का सार्थक जिसे पति चाहे या जिस पर मालिक की कृपा होती है वही बडा है।

पीर को न शहीद को, पहले नकटे देव को

जो वस्तु दूसरों के लिए तैयार की गई हो उसे जब कोई अयोग्य व्यक्ति माँगे तब कहते हैं।

पीर जी की सगाई, मीर जी के यहाँ

जो जैसा होता है उसका व्यवहार वैसों से ही होता है।

पीसने वाली पीस ले जाएँगी, कुछ हत्था थोड़े ही उखाड़ ले जाएंगी

अपनी हानि हुए बिना यदि दूसरे का कोई काम बनता हो तो इनकार नही करना चाहिए।

पुरख की माया, बिरछ की छाया

जब तक मनुष्य रहता है तभी तक उसका नाम-धाम रहता है।

पूत न भतार, पीछों ही टाँय-टाँय

झूठी सहानुभूति दिखाने पर कहा जाता है।

पूत माँगे गई, भतार लेती आई

उन स्त्रियों के प्रति कहा जाता है जो फकीरों के पास संतान-प्राप्ति के लिए जाती है।

पूतों रात दुर्लभनी

लड़का मुश्किल से मिलता है।

पेट भी खाली, गोद भी खाली

धन-संपत्ति और संतान-सुख दोनो से वंचित।

पेट में पड़ा चारा, कूदने लगा बिचारा

पेट भरने पर उछल-कूद सूझती है।

पेट में पड़ी बूंद, नाम रखा महमूद

गर्भ रहते ही निश्चय कर लिया कि बेटा होगा। काम होने के पहले ही उसके परिणाम की कल्पना करना

पैसा न कौड़ी, बाजार में दौड़ी

व्यर्थ की उछलकूद। साधन न होने पर भी काम करने की इच्छा।

पैसा न कौड़ी बाँकीपुर की सैर

पैसा है नही फिर भी शौक करना चाहते हैं।

परदेशी बालम तेरी आस नहीं, बासी फूलों में बास नहीं

परदेशी से प्रेम करना व्यर्थ है। पता नहीं, वह कब छोड़कर चल दे।

फटे को न सीये और रूठे को न मनाये तो क्योंकर गुजारा होय ?

स्पष्ट है।

फूल आए हैं तो फल भी लगेंगे

स्त्री के ऋतुमती होने पर बच्चा भी होगा ही।

फूली-फूली गौने को, ठसक निकल गई रोने को

ससुराल जाने के बाद जो कष्ट मिलते हैं, उनसे अकड़ निकल जाती है।

फूहड़ करे सिंगार, मांग ईंटों से फोड़े

फूहड का सिंगार भी अजब होता है, वह ईंट पीसकर मांग भरती है।

फूहड़ के घर उगी चमेली, गोबर मांड उसी पर गेरी

मूर्ख अच्छी चीज की कद्र क्या जाने ?

फूहड़ चाले नौ घर हाले

फूहड़ जहाँ जाएगी, टंटा खड़ा करेगी।

फूहड़ जोरुआ, साग में शोरुआ

बेतुका काम करने पर कहा जाता है।

फूहड़ सीने बैठे, तब सुई तोड़े

बेशऊर हमेशा भौंड़े ढंग से काम करता है।

बंद के जाए बंद में नहीं रहते

किसी के दिन सदा एक से नहीं रहते।

बंदी जब शादी करती है तब ऐसा ही करती है

किसी के शादी-विवाह में असंतोषजनक प्रबन्ध पर चुटकी।

फेरों की गुनहगार है

हिन्दू विधवा दूसरा विवाह नहीं कर सकती, इसलिए कहते हैं।

बड़ी ननद शैतान की छड़ी, जब देखो तब तीर सी खड़ी

बड़ी ननद भावज पर रोब गाँठती है।

बड़ी बहू को बुलाओ जो खीर में नोन डाले

सयानी स्त्री से भूल होने पर या जो अपने को बहुत चतुर समझे, उसके प्रति कहते हैं।

बड़े घर में पड़िए, पत्थर ढो-ढो मरिए

बड़े घर में ब्याह होने पर स्त्री को काम अधिक करना पड़ता है।

बनी फिरे बेसवा, खोले फिरे केसवा

सास की लताड़।

बरसात वर के साथ
    वर्षा ऋतु पति के साथ ही अच्छी कटती है।
बस कर मियाँ बस कर, देखा तेरा लश्कर
    शेखीबाज से कहा जाता है।
बाँझ क्या जाने प्रसव की पीड़ा ?
    जिस पर बीतती है वही जानता है।
बाँझ बियानी, सोंठ उड़ानी
    बाँझ के अगर लड़का हो तो उसकी इज्जत बहुत बढ जाती है अथवा जब कोई बात का बतंगड़ बनाए तब भी कहा जाता है।
बाँदी के आगे बाँदी आई, लोगों ने जाना आँधी आयी
बाँदी के आगे बाँदी मेह गिने न आँधी
    नौकर के नीचे का नौकर बहुत काम करता है।
बाघ मार नदी में डारा, बिलाई देख डरानो
    ऐसा भय, जिसकी कोई आवश्यकता नहीं।
बारह बरस की पठिया, बीस बरस की टटिया
    स्त्रियाँ जल्दी बूढी हो जाती है, इसी प्रसंग मे कहा जाता है।
बाल-बाल गुनहगार
    बहुत विनीत भाव से अपना दोष स्वीकार करना।
बालों हाथ छिनाला और कागों हाथ सँदेसा
    ये दोनों काम सिद्ध नहीं होते।
बावली को आग बताई, उसने ले घर में आग लगाई
    मूर्ख को कोई खतरे का काम नहीं बताना चाहिए।
बावली खाट के बावले पाये, बावली राँड़ के बावले जाये
    जैसे के तैसे होते हैं।
बाहर के खायें, घर के गीत गायें
    वाहवाही लूटने के लिए अपव्यय करने पर कहा जाता है।
बाहर मियाँ सूबेदार, घर में बीबी झोंकें भाड़
    ऊपरी दिखावट पर व्यंग्य।
बिन घरनी घर भूत का डेरा
    घर घरवाली से होता है।
बिन घरनी घर पावत है है, घरनी से घर गाजत है
    घरवाली से ही घर हरा-भरा लगता है।
बिन बुलाए डोमिनी लड़के-बाले समेत आए
    निर्लज्ज, जो बिना बुलाए ही किसी जगह पहुंच जाए।

बिन बुलाए अहमक, ले दौड़े सहनक

बिना बुलाए न्यौते में आना या बेमतलब हस्तक्षेप करना।

बी दौलती, अपने तेहे में आप ही खौलती

धन-दौलत के घमंड में चूर होने पर कहते है।

बीबी को बाँदी कहा हँस दी, बाँदी को बाँदी कहा रो दी

नौकर को नौकर कहने से बुरा लगता है।

बीबी नेकबख्त दमड़ी की दाल तीन वक्त

कंजूस के लिए कहा जाता है।

बीबी बीबी, ईद आई—'चल हरामजादी, तुझे क्या ?

खर्च की बात बतलाते ही कंजूस चिढ़ता है।

बीबी बीबी ईद आई—'चल मुरदार, तुझे टिकिया से काम !

अपने स्वार्थ की दृष्टि से काम करने पर कहा जाता है।

बीबी मक्के न गई, लाड़ली हो आई

बीवी ने कभी कोई अच्छा काम नही किया, फिर भी लोग उन्हे प्यार करते हैं।

बुलावें न चुलावें, मैं तो दुल्हन की चाची

जबर्दस्ती अपना अधिकार जमाना।

बेटा जनकर निव चले, सोना पाकर दक चले

संतान और संपत्ति का घमंड नही करना चाहिए।

बेदर्द कमाई क्या जाने पीर पराई ?

हृदयहीन व्यक्ति के लिए कहा जाता है।

बेटा लाएगा चमारी, वह भी बहू कहलाएगी हमारी

जब कोई अपनी बुरी चीज को अच्छा बताए, तब कहा जाता है। अथवा बेटे के हर काम की सराहना करनी पड़ती है।

बेधर्म हुई और बेहना के साथ

बुरा काम किया और मजा भी न आया। गुनाहं बेलज्जत।

बेलज्जी बहुरिया पर घर नाचें

निर्लज्ज दूसरो के घर घूमती फिरती है।

बेवक्त की शहनाई, मुए कूढ़ ने बजाई

बेमौके की बात करने पर कहा जाता है।

बोया न जोता, अल्लाह मियाँ ने दिया पोता

अचानक भाग्य खुलने पर कहा जाता है।

बोली बोली तो यों बोली—'मेरी जूती बोले'

एक औरत दूसरी से लड़ते समय ताना मारकर कहती है।

घोले के न चाले के, मैं तो सूते के भली

सुस्त और आलसी औरत के लिए कहा जाता है।

ब्याही न बरात चढ़ी, डोली में बैठी न चूं-चूं हुई

बिना ब्याही स्त्री को दिया गया ताना।

भर हाथ चूड़ी, पट सूं रांड़

बदचलन या मक्कार औरत के लिए कहा जाता है।

भले बाबा बंद पड़ी, गोबर छोड़ कसीदे पड़ी

गरीब की बेटी बड़े घर में ब्याही गई तो उसकी स्वतन्त्रता ही छिन गई। सोचा था आराम होगा लेकिन वहाँ तो और भी आफतें हैं।

भाड़ लीपती जाय, हाथ काले का काला

बुरे के साथ भलाई करने से बुराई ही मिलती है।

भात खाते हाथ पिराय

इतनी सुकुमार है।

भीत होगी तो लेव बहुतेरे चढ़ रहेंगे

हड्डी रहेगी तो मांस भी चढ़ जाएगा, पूजी रहेगी तो धंधा भी बहुत मिल जाएगा अथवा जड़ रहेगी तो फल ही फल मिल जाएँगे।

भुस में चिनगी डाल जमालो दूर खड़ी

फसाद करने वाली शरारती या चुगलखोर स्त्री के लिए कहते हैं।

भूभल में रोटी दाब कर आई है

किसी स्त्री के जाने के लिए जल्दी मचाने पर कहा जाता है।

भूल गई दिन-दहाड़ा, मुंडों ने सिहरा बांधा

जब कोई अमीर होने पर गरीबी के पुराने दिन भूल जाए, तब कहा जाता है।

भूल गई नार हींग डाल दई भात में

जल्दी या घबराहट मे कुछ का कुछ कर जाना।

भूली रे रघुआ ! तेरी लाल पगिया पर

किसी के ऊपरी ठाट-बाट से धोखे मे, आने पर कहा जाता है।

भोजन न भात नैहर का समाद

विधवा का कही भी आदर नही। न मायके मे न ससुराल में।

मँगनी का चादर, ता पर पचास का आदर

दूसरे की वस्तु को अपनी करके बताना अथवा दूसरे की वस्तु का घमंड करना।

मँगना के सतुआ, प्यास के पिण्डा

अनिच्छा से दूसरे का सम्मान करने पर कहा जाता है।

मट्ठा मांगन चली, मलैया पीछे लुकाई

जरूरत पड़ने पर अगर कोई चीज माँगनी पड़े तो उसमे शर्म की क्या बात ?

मत कर सास बुराई, तेरे भी आगे जाई

स्पष्ट है ।

मन में गाती टस-टस रोवे, चूहा खसम कर सुख से सोवे

सयानी लडकी छोटे लड़के से ब्याही जाने पर ऊपर से तो रोती है पर भीतर से प्रसन्न है कि वह स्वतन्त्र रहेगी ।

मन मोतियों ब्याह, मन चावलों ब्याह

ब्याह तो सब एक से होते है चाहे मन भर मोतियो से हो या मन भर चावलो से ।

मर चली और शुक सामने

मरने मे शकुन-अपशकुन का विचार क्या ?

मर्द का क्या—एक जूती उतारी, दूसरी पहन ली

पुरुष एक स्त्री के मरने पर दूसरी शादी कर लेता है ।

मर्द का हाथ फिरा और औरत उमड़ी

ब्याह के बाद लडकी शीघ्र बढती है ।

मां चाहे बेटी को, बेटी चाहे मोटे धींग को

बेटी द्वारा माँ की परवाह न किए जाने पर कहा जाता है ।

मां डाइन हो तो क्या बच्चे को खाएगी ?

अपनी हानि आप कोई नही करता ।

मां-बेटी गाने वालीं, बाप-पूत बराती

जब कोई किसी खुशी के मौके पर अपने सगे-सम्बन्धियो को न पूछे और सब काम अकेले ही कर डाले तब कहते है ।

मां भटियारी पूत फतेहखां, मां भटियारी बेटा तीरन्दाज

पल्ले कुछ न होने पर भी शेखी बघारना ।

मान न मान, मैं दूल्हा की चाची

जबर्दस्ती गले पडना ।

माने तो देव नहीं तो भीत का लेव

विश्वास से ही सब होता है । विश्वासो फलदायकः ।

माने न जाने मैं भी नौशा की खाला

मान न मान मै तेरा मेहमान ।

मार मुए मार, तेरी हथेड़ियां पिराएँ, मेरी आदत न जाए

बहुत हठीली और बेशर्म औरत के लिए कहा जाता है ।

मार घुसैया, तेरी आस

बहुत सताये जाने पर स्त्री का पति से या नौकर का मालिक से कथन।

मियाँ नाक काटने को फिरे, बीवी कहे नथ गढ़ा दो

एक दूसरे की इच्छा के विरुद्ध काम होना या परस्पर मेल न होना।

मियाँ ने टोहा, सब काम से खोई

अपनी बेवकूफी से अडचन पैदा करने पर कहा जाता है।

मियाँ फिरे लाल गुलाल, बीवी के हैं बुरे हवाल

आप तो छैल-चिकनिया बने फिरना और घर की खबर न लेना।

मुंह की मीठी, हाथ की झूठी

मुँह से मीठी बात करे पर हाथ से कुछ न दे।

मुंह पर पूत, पीछे हरामी भूत। मुंह पर मुमानी पीठ पीछे सुअर खानी

सामने प्रशसा, पीठ पीछे निन्दा।

मुफ्त चन्दन घिसे जा बिल्ली

मुफ्त का माल सबको अच्छा लगता है या दूसरे की वस्तु का दुरुपयोग करने पर कहा जाता है

मेरा था सो तेरा हुआ, बराये खुदा टुक देखन दे

तेरा है सो मेरा था, बराय खुदा टुक देखन दे।

मेरे मियाँ के दो कपड़े, सुथना नाड़ा बस

अकर्मण्य पति का मजाक उडाने के लिए कहा जाता है।

मेरे लाला की उलटी रीत, सावन भादों चिनावे भीत

जो काम जब न करना चाहिए तब करना।

मेरे घर ही से आग लाई, नाम धरा बैसान्दुर

दूसरे के यहाँ से चीज लाकर उस पर घमड करना या किए का एहसान न मानना।

मेरा ब्याह, जीजी के ठिक्-ठिक्

बिना प्रयोजन दूसरे के सिर मे दर्द।

मेरे हैं सो राजा के नही और राजा मेरा मंगता

जब कोई अपनी चीज का बहुत घमड करे या किसी को माँगे पर न दे तब उसके प्रति कहा जाता है।

मेहरिया के आगे सगुन असगुन

स्त्रियो के लिए शकुन भी अपशकुन होता है, अर्थात् उन्हे हर बात मे सन्देह रहता है।

मै क्या तेरी पट्टी तले हूँ

मैं किस बात मे कम हूँ या क्या तेरी दबैल हूँ ?

मैं कब कहूँ तेरे बेटे को मिरगी आवे है

अपनी सफाई देना और बुराई भी करते जाना।

मै करूँ तेरी भलाई, तू करे मेरी आँखों में सलाई

भलाई के बदले बुराई करना।

मैं तुझे चाहूँ और तू चाहे काले धींग को

हम जिसे चाहते है वह दूसरे को चाहता है।

मैं तो तेरी लाल पगिया पर भूली रे रघुआ !

किसी बन-ठन कर रहने वाले पर व्यंग्य।

मैं भली, तू शाबास

एक दूसरे की प्रशंसा करना। अहो रूपम् अहो ध्वनिः !

मैं ही पाल करा मुस्टण्डा, मोय ही मारे लेके डंडा

अयोग्य या दुष्ट लडके के प्रति कथन।

मोको न तोकों, लै चूल्हे में झोंको

झगडे की जड ही समाप्त करो।

मोरी की ईंट चौबारे चढ़ी

नीच का उच्च पद पा जाना या नीच घर की स्त्री का बड़े घर मे विवाह हो जाना।

मोरे पीसनहारी, मै राउर पीसन जाऊँ ?

जब कोई अपने काम को अपनी प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझकर नही करना चाहता तब कहा जाता है।

यार का गुस्सा भतार के ऊपर

दुराचारिणी स्त्री के लिए कहा जाता है।

रत्ती दान न धी को दिया, देखो री समधिन का हिया

समधिन बडी कंजूस है।

रत्ती भर की तीन चपाती, खाने बैठें सात संगाती

कजूसी के लिए कहा जाता है।

रहा करीमना तऊ घर गया, गया करीमना तऊ घर गया

जब किसी आदमी के बिना काम भी न चले और रहने से हानि भी हो तब कहा जाता है।

रहो री कुतिया मेरी आस, मै आऊँ कातिक मास

निकम्मे और झूठे आश्वासन देने वाले पति के प्रति कहा जाता है।

रांड और खाँड का जोबन रात को

स्पष्ट है।

रांड का सांड, छिनाल का छिनरा

विधवा का लड़का आवारा और छिनाल का शोहदा होता है।

रांड के आगे गाली क्या ?

रांड से बढ़ कर कोसना नही।

रांड को बेटी का बल, रंडुवे को रुपये का बल

रांड को बेटी का बल इसलिए है कि रंडुवे के साथ विवाह करके अधिक से अधिक पैसा ले सकती है और रंडुवे को इस बात का बल है कि वह पैसा देकर कहीं भी शादी कर सकता है।

रांड तो बहुतेरी रहे, जो रंडुवे रहने दें

विधवाएँ तो सच्चरित्र रहना चाहती है पर जब रंडुवे रहने दें।

रांड रोवे, कुंआरी, रोवे साथ लगी सत-खसमी रोवे

झूठ-मूठ के रोने पर कहा जाता है।

राजा आगे राज, पीछे चलनी न छाज

विधवा का कथन।

राजा के घर गई और रानी कहलाई । राजा छुए और रानी होय

राजा की कृपा से रुतबा बढ़ता है।

राजा रूठेगा अपनी नगरी लेगा। राजा रूठेगा तो अपना सुहाग लेगा या किसी का भाग लेगा

स्वाधीन भावना प्रकट करने के लिए कहा जाता है।

रात नर्बदा उतरी, सुबह कुंआ देख डरी

स्त्री-चरित्र पर व्यंग्य।

रात पड़ी, बूंद नाम रखा महमूद

काम होने से पहले ही अपनी इच्छानुसार उसका नतीजा भी निकाल लेना।

रातों काता कातना, सिर पर नहीं नातना

व्यर्थ का परिश्रम।

रातों रोई, एक ही मूआ

प्रयास बहुत, लाभ थोड़ा।

रानी रूठेगी अपना सुहाग लेगी, क्या किसी का भाग लेगी ?

राजा रूठेगा अपनी नगरी लेगा।

रूप न सिंगार खत्रानी की साध

न तो रूप है, न बनाव-ठनाव है, फिर भी खत्रानी बनने की साध है। खत्रानियाँ सुन्दर होती हैं।

रोटी को रोवे, खपड़ी को टोवे

बहुत गरीबी।

रोटी गई मुंह में, जात गई गुह में

पेट के लिए जात भी छोड देते है। विधर्मी बन जाते है।

रोटी न कपड़ा, सेंत का भतरा

नाम का भर्तार या दिखावटी प्रेम करने वाला।

रोने तो को थी ही, इतने में आ गए भइया

मनचाहा काम करने के लिए वहाना मिल जाना।

लड़का को भगवा ना, बिलाई के गाती

घर के लोगो की परवाह न कर दूसरो की सहायता करना।

लड़ते तो नहीं, मुए मारते हैं

लड़ाई में मार-पीट तो होती ही है। किसी जनखे का कथन।

लड़का रोवे खसम चिल्लाय, लड़कौरी मेहरिया फजीहत होय

गृहस्थी की झंझट पर कहा जाता है।

लजाधुर बहुरिया, सराय में डेरा

धर्म-संकट की स्थिति या ऐसे शर्म की बलिहारी।

लिहाज की आँख जहाज से भारी

किसी से कुछ न कह पाने या इनकार न कर पाने पर कहा जाता है।

लुगाई रहे तो आप से, नहीं तो जाय सगे बाप से

औरत रहे तो आप से, नही तो जाय सगे बाप से।

लुटाया बिगाना माल, बंदी का दिल दरियाव

मालिक का पैसा बेदर्दी सेखर्च करने वाले नमकहराम नौकर आदि के लिए कहते है।

ले लिया पल्ला औरबीनन लागी सिल्ला

विना पूछे किसी काम मे हाथ लगाने पर कहा जाता है।

लौंडी बनकर कमाना, और बीवी बनकर खाना

परिश्रम करके कमाओ और इज्जत से खाओ।

यह भी कन्या जिसके अवलख बाल

अनहोनी या आश्चर्यजनक वात।

वारी गई, फेरी गई, जलवे के वक्त टल गई

ऊपरी लाड-प्यार दिखाकर जरूरत के वक्त टल जाना।

वाह बहू तेर चतुराई, देखा मूसा कहे बिलाई

असली बात न वताने पर कहा जाता है।

शक्ल चुड़ैल की, मिजाज परियों का

बदशक्ल औरत के टिमाक से रहने पर कहा जाता है।

शरम की बहू नित भूखों मरे

जिस की शरम, ताके फूटे करम। खाने-पीने में शरम नहीं करनी चाहिए।

शैतान तूफान से खुदा निगहबान

ईश्वर हमें शैतान और उसकी शरारतों से बचाए। बहुत बड़े शरारती के प्रसंग में कहा जाता है।

शौकिन बहुरिया, चटाई का लहंगा

बेतुका शौक।

संग सोई तो लाज क्या ?

स्पष्ट है।

सखी न सहेली, भली अकेली

ऐसी स्त्री जो अकेली रहना पसन्द करे।

सत्तू सास के पास, चटखोर बहू के पास

जो उपयोग न जाने उसके पास होना और जो जाने उसके पास न होना।

सगरी रैन बन-वन फिरी, भोर भई कुएँ से डरी

रात नर्बदा उतरी, सुबह कुंआ देख डरी।

सजन बिन ईद कैसी ?

पति के बिना उत्सव कैसा ?

सपूती रोवे टूकों को, निपूती रोवे पूतों को

अपना-अपना भाग्य है।

सदा की पदनी, उरदों दोष

अपनी बुराई छिपाने के लिए दूसरों को जिम्मेदार ठहराना।

सब कुछ गई मियां तेरी चुलबुल न गई। सब कुछ गई मियां की टल-टल न गई

बूढ़े शौकीन पति के प्रति कहा जाता है।

सब कोई झूमर पहिरे लंगड़ी कहे हम हूं

योग्य न होने पर भी इच्छा करना।

सब गुन की आगर धोया, नाक बिना बेहाल

एक दुर्गुण होने से सब गुण नष्ट हो जाते है।

सब गुन आगर, फूटल गागर। सब गुन पूरी, कौन कहे अधूरी

बेशऊर के लिए कहा जाता है।

सब सदके मैं अलग

अपने को छोड़कर सब न्योछावर। दिखावटी प्रेम।

सब गुन भरी बेतरा सोंठ

व्यंग्य में भ्रष्ट या धूर्त स्त्री के लिए कहा जाता है।

सब दिन चंगे, त्यौवार के दिन नंगे
खुशी के दिन खुशी न मनाना।
सराहल बहुरिया डोम के घर जाय
योग्य से ही कभी-कभी निराशा भी होती है।
सलामत रहे बहू जिसका बड़ा भरोसा है
किसी का लडका मरने पर उसे दिलासा देते हुए कहते है।
सलेमों बिन ईद कैसे ?
सलेमो (छैल-छबीली) के बिना ईद का आनन्द कहाँ ?
सही गए, सलामत आए
असफल होकर लौटने वाले से व्यग्य मे कहा जाता है।
साँई राज बुलन्द राज, पूत राज दूत राज
विधवा का कथन है कि पति के समय उसे जो सम्मान प्राप्त था वह अब पुत्र के समय मे उपलब्ध नही है।
साजन साजन मिल गए, झूठे पड़े बसीठे
मित्र तो फिर एक हो जाते हैं, उनका पक्ष लेने वाले मूर्ख बनते हैं।
साथ सोई, बात खोई
साथ सोने के बाद नारी का पहले जैसा महत्व नही रह जाता है।
साथ सोओ, पेट का दु.ख
गर्भ रह जाता है—यही दुःख है।
साबुत नहीं कान, बालियों का अरमान
योग्य न होते हुए भी इच्छा करना।
सारा घर जल गया जब चूड़ियाँ पूछीं
घर जल गया, तब चूड़ियाँ पूछीं।
सारी कुड़ियाँ मर गईं नानी से राह चले
क्या जवान औरतें मर गईं जो नानी के पीछे दौड़ते हो ?
सारी रात मिमियानी और एक बचा ही ब्यानी। सारी रात रोई, एक ही मरा(मुआ)
चिल्लपो या परिश्रम बहुत, फल कुछ नही।
सारी रात नर्बदा फिरदी कुआँ देख डरदी
स्त्री-चरित्र पर व्यंग्य।
सारे दिन पीसा-पीसा, चपना भर भी न उठाया
परिश्रम का कोई फल नही या निकम्मापन।
सारे धड़ की सुई निकाले सो कोई नहीं, आँख की सुई निकाले सो सब कोई
जो बहुत कुछ करे उसे सम्मान न देकर थोड़ा सा-करने वाले को महत्व देना।

सास की चेरी, सबकी जिठेरी

सास की नौकरानी से बहुएं भी डरती हैं।

सास की रीसो पतोहू के माथे

सास का गुस्सा बहू पर उतरता है।

सास का ओढ़ना, बहू का बिछौना

बहू अपने को बड़ा मानती है

सास को नहीं घांघरो, बहू चाहे तम्बू और सरांचे

सास के पास तो घाघरा नही है और बहू तम्बू तथा परदा चाहती है।

सास : कोठे पर की घास

सास के प्रति अवज्ञा प्रकट करने हेतु कहा जाती है।

सास कोठे, बहू चबूतरे

बहू सास से बढ़कर है। सास छिपकर करती है तो बहू खुल्लमखुल्ला।

सास गई गांव, बहू कहे मैं क्या-क्या खाऊं ?

सास के न रहने पर वह मौज करती है।

सास झांके टुई-टुई, बहू चली बैकुण्ठ

बैकुण्ठ से तात्पर्य तीर्थ-यात्रा या सैर-सपाटे से है।

सासड़ कारन बैद बुलाया, सौत कहे तेरा पगड़ी आया

सौतिया-डाह का भाव व्यक्त करने हेतु कहा जाता है।

सास न नन्दी, आप ही आनन्दी

अकेली मौज करती है।

सास बहू की हुई लड़ाई, करें पड़ोसिन हाथापाई

झगड़े मे मजा लेती हैं।

सास बहू की हुई लड़ाई, सिर को फोड़ मरी हमसाई

दूसरों के झगड़े में नही पड़ना चाहिए।

सास बिन कैसी ससुराल, लाभ बिन कैसा माल

सास के बिना जंवाई के लिए ससुराल व्यर्थ है और लाभ के बिना रोजगार।

सास मर गई, अपनी अलाह तूंबे में छोड़ गई

मरने पर भी सास की आत्मा सताती है।

सास मुई बहू बेटा जाया, याका पलटा या में आया

हिसाब ज्यों का त्यों।

सास मोरी मरे ससुर मोरा जिए, बहुरिया के राज भए

सास के मरने पर बहू स्वतन्त्र हो जाती है।

सासरा सुख वासरा

लड़की का ससुराल में रहना ही अच्छा।

सासरे तेरे सास, माथे तेरे भाग, बाप तेरे राज, तू बैठी-बैठी झाँक

बाप के राज से तुझे क्या ?

सास लुक्का-लुक्का, बहू बुक्का-भुक्का

सास छिपकर करती है तो बहू खुलकर।

सास से तोड़ बहू से नाता। सास से बैर पड़ोसिन से नाता

दोनों अनुचित या मूर्खतापूर्ण काम।

साली आधी निहाली, सलहज पूरी जोय

हँसी-मजाक के लिए तो सलहज साली से भी अधिक योग्य होती है।

साली निहाली, चहिए ओढ़ी, चहिए बिछा ली

साली निहाल करने वाली होती है। उसके साथ मनमाना व्यवहार किया जा सकता है।

सिर पर आरे चल गए, फिर भी मदार-मदार

घोर आलसी या अकर्मण्य के प्रति कहा जाता है।

सिर में बाल नहीं, भालू से लड़ाई

कमजोर होते हुए भी बलवान से झगड़ना।

सिवैयों बिन ईद कैसी ?

पकवानों के बिना उत्सव कैसा ?

सीखी सीख पड़ोसिन को, घर में सीख जिठानी को

दूसरों से सीखी विद्या औरों को देना।

सुघड़ सुघड़ हँस गई, फूहड़ों को आया हाँसा

हँसी की बात पर समझदार मुस्करा भर देते है किन्तु मूर्ख ठठाकर हँसते है।

सुन रे ढोल, बहू के बोल

किसी को सचेत करने लिए कहा जाता है।

सुरमा सब लगाते हैं पर चितवन भाँति-भाँति

काम सब करते है पर काम करने की विशेषता सबकी अलग-अलग होती है।

सुहागन का पूत पिछवाड़े खेले हैं

फिर से पुत्रोत्पत्ति का आशा बनी रहती है अथवा बड़े आदमी की हानि होने पर उसके पूरा होने की उम्मीद रहती है।

सुहाग भाग अरजानी, चूल्हे आग न घड़े पानी

बहुत गरीब या अभागे के विवाह पर कहते है।

सूनी सेज से मरखना बैल भी भला

रंडापे से तो बुरे स्वभाव वाला पति भी अच्छा। कुछ न होने से तो कुछ होना हजार दर्जे अच्छा।

सूरत चुड़ैल की सी, मिजाज परियों का सा
बदशक्ल होते हुए भी दिमाक से रहना।
सुस्सो जाऊँ या गुस्सो जाऊँ
असमजस की स्थिति उत्पन्न होने पर कहा जाता है।
सेंदुर न लगाए तो भतार का मन कैसे रखें
कुछ ऐसे काम होते हैं जो दूसरों की प्रसन्नता के लिए ही किए जाते हैं।
सेज की तो मक्खी भी बुरी
फिर सौत के सम्बन्ध मे तो कहा ही क्या जाय ?
सैया के अरजन भैया के नाऊँ, पहिन ओढ़ मैं सासुर जाऊँ
माँग कर लाई हुई चीज से शौक करना या पति के दिए हुए गहनों को मैके के बताकर पहनना।
सैया भये कोतवाल, अब डर काहे का ?
घर का आदमी जब रोब-दाब वाले पद पर पहुँच जाए तब कहा जाता है।
सोती थी पर काता नहीं जो काता तो पाँव पाँव
आलसी पर व्यग्य।
सोना-ओना कुछ जात नहीं
रुपये-पैसे से जाति नही पहचानी जाती।
सोना नीक तो कान फराये के
अच्छी वस्तु से हानि हो तो उसे त्यागना ही अच्छा।
सोने में पीलो, मोतियों में धौलो
सोने-मोती के गहनों से लदी स्त्री।
सौकन गई और आँख छोड़ गई
सौत के लडके के प्रति कहा जाता है।
सौ कोसा और एक भरोसा बराबर
एक गमखोरी सौ गालियाँ देने के बराबर अर्थात् गालियाँ देने से सहनशीलता अच्छी।
सौ गुलामों का घर सूना
सौ नौकरों के रहते मालिक के बिना घर सूना लगता है।
सौत चून की भी बुरी
सौत तो चून की भी बुरी होती है।
सौत की मूरत भी बुरी
सौत चून की भी बुरी।
सौत जाय, सौत का नाड़ा न जाय
सौत चली जाए पर उसका पति नहीं।

सौत पर सौत और जलापा

मौत की सौत और जलन अलग।

सौत भली सौतेला बुरा

सौत सही जा सकती है पर सौतेला हर समय आँखो मे खटकता रहता है।

हँस हँस खइए, फूहड़ का माल

मूर्ख का माल बेवकूफ बनाकर खाओ।

हँसी और फँसी

हँसना सहमति का लक्षण है।

हँसुवा दूर की, पड़ोसिन की नाक

पडोस की स्त्री से लडने को तैयार रहने पर कहा जाता है।

हँसुवा रे ! तू टेढ़ काहे ? आ तो अपनी गौं से

मनुष्य को अपना काम निकालने के लिए टेढा बनना पड़ता है।

हँगासे लड़के के नथुने पहचाने जाते हैं

मनुष्य का कष्ट उसके चेहरे प्रकट हो जाता है।

हमारी बिस्मिल्ला और हमसे ही 'छू'

हमसे ही मन्त्र सीखा और हमी पर परीक्षा।

हर देगी चमचा

अविश्वसनीय पति।

हरिगुन गावे धक्का पावे, चूतड़ हिलावे टक्का पावे

उचक्के मौज उडाते है।

हलके पिछोड़े, उड़-उड़ जायें

ओछा घमडी होता है, ओछे से कोई आशा न रखे अथवा ओछा गम्भीर नही होता।

हांडी न डोई, सब पत खोई

पत्नी की शिकायत कि घर मे कुछ नही है।

हाथ कंगन को आरसी क्या ?

प्रत्यक्षे किम् प्रमाणम् ?

हाथ कसीदा, आसमान दीदा

एकाग्र होकर काम न करना।

हाथ न गले, नाक में प्याज के डले

वेहूदा औरत।

हाथ न मुट्ठी, हलबलाती उट्ठी

पास में पैसा नही फिर भी चीज लेने का शौक।

हाथ-पाँव हिला, भगवान देगा

मेहनत का फल मिलता है।

हाथ में न गात में, मैं धनवन्तो जात में

झूठी कुलीनता।

हाथ में खाना, पात में खान।

अत्यधिक दरिद्रता के लिए कहा जाता है।

हाथों मेंहदी, पाँवों मेंहदी, अपने लच्छन औरों देदी

अपने बुरे लक्षण औरों को भी सिखाती है।

हाल का न काल का, टुकड़ा रोटी चमचा दाल का

किसी काम का नहीं।

हिल न सकूं मेरे सौं बखरे

झूठी शेखी बघारना या काम न करने पर भी हिस्सा पूरा माँगना।

हूर भी सौतन को डायन से बुरी है

परी सी सुन्दर सौत भी डायन से बुरी होती है।

होठ हिले न जिम्या डोली, फिर भी सास कहे बड़-बोली

व्यर्थ में दोष मढ़ना।

हो गई ढड्ढो, ठुमुक चाल कैसी ?

बुढ़िया होने पर ठसक के साथ चलना क्या ?

होते के सब होय हैं अनहोते की जोय

निर्धनता मे केवल पत्नी ही साथ देती है।

व्यवस्था के प्रति आम आदमी की प्रतिक्रियासूचक लोकोक्तियाँ

अंडे सेये कोई, बच्चे सेये कोई
परिश्रम कोई करे, लाभ कोई उठाए।
अंधाधुंध मनोहरा गाय
जहाँ कोई देखने-सुनने वाला नहीं, वहाँ जो मन में आए सो किए जाओ।
अंधा राजा चौपट नगरी
जहाँ मालिक स्वयं काम न देखे, वहाँ सब चौपट हो जाता है।
अंधा बाँटे शीरनी (रेवड़ी) फिर-फिर अपनों ही को देय
कुनबापरस्ती या पक्षपात।
अंधी पीसे, कुत्ता खाए
मेहनत कोई करे और मजा कोई लूटे।
अंधेर नगरी, अबूझ राजा
अंधेर नगरी चौपट राजा, टका सेर भाजी टका सेर खाजा
मूर्खों के शासन में न्याय कहाँ?
अंधेरे घर में घींगर नाचे
देखभाल के अभाव में उद्धतों की मनमानी।
अगला करे पिछले पर आये
बड़ों की भूल छोटों को भुगतनी पड़ती है या किसी काम की भलाई-बुराई उन पर आती है जो अन्त में करते हैं।
अच्छे हैं, पर खुदा पाला न डाले
देखने में अच्छे पर व्यवहार में बुरे। (पुलिस के प्रति दृष्टिकोण।)
अबरा की जोरू, सबकी भौजाई
कमजोर को सब सताते हैं।

अपरे की भेंस बियाइल, सगरो गांव भटिया ले धाइल

दुर्बल को भी सभी सताते हैं।

अमीर को जान प्यारी, गरीब को जान भारी

गरीब कष्ट मे रहता है, इसलिए उसे जान बोझ लगती है।

अमीर ने पादा सेहत हुई, गरीब ने पादा बेअदबी हुई

एक ही काम के लिए धनी को श्रेय मिलता है तो गरीब को फटकार मिलती है।

अमीर का उगाल, गरीब का आधार

अमीर जिसे तुच्छ समझकर फेंक देता है, गरीब का उससे बहुत काम चलता है।

अढ़ाई दिन के सक्के ने भी बादशाहत कर ली

जब कोई व्यक्ति हठात् ऊँचे पद पर पहुँचकर रौब दिखाता है तब कहा जाता है।

आँख बची माल दोस्तों का

कुव्यवस्था। थोड़ी सी असावधानी पर चोरी की आशंका।

आजादी खुदा की नियामत है

स्वतन्त्रता ईश्वर का वरदान है।

आधा मियाँ शेख शरफुद्दीन, आधा सारा गांव

जबर्दस्त का हिस्सा सबसे ज्यादा होता है अथवा बड़े परिवार वाले के लिए भी कहते हैं।

आलमगीर सानी, चूल्हे आग न घड़े पानी

आलमगीर का शासन अच्छा नही था। अतः कुव्यवस्था के लिए कहा जाता है।

कंगाली में आटा गीला

गरीबी मे आपत्ति पर आपत्ति पड़ना।

कमावे धोती वाला, उड़ावे टोपी वाला

काम कोई करे और फल दूसरा हड़प ले। धोतीवाला—हिन्दुस्तानी, टोपीवाला—अंग्रेज।

करे दाढ़ी वाला, पकड़ा जाए मूँछों वाला

बड़ों की भूल के लिए छोटे जिम्मेदार ठहराए जाते है।

काटे वार नाम तलवार का, लड़े फौज नाम सरदार का

काम छोटे करते हैं, यश बडो को मिलता है।

कानूनगा की खोपड़ी मरी भी दगा दे

माल-विभाग के कानूनगो और पटवारियो के आचरण पर व्यग्य।

काम करे नथवाली, पकड़ी जाए चिरकुट वाली
    सबल के अपराध पर निर्बल पकड़े जाते हैं।
काले की भी एक लहर आ जाती है
    अत्याचारी के लिए कहा गया है कि काले सर्प की तरह एक लहर उसके मन में भी उठती है।
काले के आगे चिराग नहीं जलता
    जबर्दस्त के सामने किसी की नहीं चलती।
काली हांडी पीछे
    किसी अत्याचारी हाकिम के मरने या अलग होने पर कहा जाता है। छोटी जातियों में किसी के मरने पर हांडी फोड़ने की प्रथा पर आधारित।
कुतिया चोरों से मिल गई तो पहरा कौन दे ?
    रक्षक ही भक्षक हो गए तो फिर क्या हो ?
कोऊ नृप होइ हमें का हानी। चेरी छाँड़ि न होइन रानी
    राजा कोई हो हमे तो दास ही रहना है। सामाजिक कार्यों के प्रति उदासीनता का भाव।
खल-गुड़ एक ही भाव
    कुशासन—जहाँ अच्छे-भले की परख न हो।
खेती कर-कर हम मरें, बहौरे के कोठे भरें
    किसान की कमाई को साहूकार हड़प जाते हैं।
खेप हारी, जनम नहीं हारा
    काम की जिम्मेदारी ली है, जिन्दगी नही बेची है।
खेल खिलाड़ी का, पैसा मदारी का
खेल खिलाड़ी का, मंगत भैया जी की
    काम कर्मचारी करते हैं, नाम अधिकारी का होता है।
गंजा कबूतरी, महल में डेरा
    अयोग्य को ऊँचा पद मिलना।
गरीब की जवानी, गरमी की धूप, जाड़े की चाँदनी *अकारथ जाए*
    कोई उपयोग नही।
गरीब की जोरू सबकी भाभी
    अबरा की जोय सबकी भौजाई।
गरीब की जोरू, उम्दा खानम नाम
    यह नाम बड़े आदमियों की औरतो का होता है।
गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाते हैं
    बड़ों के साथ छोटों को भी हानि उठानी पड़ती है।

गरीब की जोरू नाम धनेश्वरी

गुण के विरुद्ध नाम ।

गरीब की गाय लंगड़ी

गरीब की चीज में हर कोई ऐब निकालता है ।

गरीबी मे आटा गीला

विपति पर विपत्ति आना ।

गरीब को खुदा की मार

देवो दुर्बलघातकः ।

गरीब ने रोजे रखे, दिन बड़े हुए

गरीब के सभी विपरीत जाते हैं ।

घोड़े घोड़े लड़ें, मोची की जीन टूटे

बडों की लडाई मे छोटों को हानि उठानी पडती है ।

घोड़े मर गए, गधों का राज आया

योग्य व्यक्तियो के न रहने पर मूर्खों की बन आती है।

ग्वाले का दही, महतो की भेंट

गरीब की चीज बड़े हडप जाते है ।

चमार की अर्श पर भी बेगार

गरीब को सभी जगह कष्ट भोगने पड़ते है ।

चिल्लड़, चमोकन, चिथड़ा, ये तीनों विपत का बखेड़ा

जुएँ, मार खाना और चिथडे—ये तीनो गरीब के हिस्से में पडते हैं ।

चिराग गुल, पगड़ी गायब

कुव्यवस्था ।

चुरावे नथवाली, नाम लगे चिरकुट वाली का

बडे के अपराध करने पर छोटा पकडा जाता है ।

चिड़िया की चोंच में चौथाई हिस्सा

कमजोर को थोड़ा हिस्सा ही मिलता है ।

चोर चोरी कर गया, मूसलों ढोल बजा

कुप्रबन्ध ।

चौकी गाँव वालों को लूट खाती है

पुलिस-व्यवस्था पर व्यंग्य ।

जबर की जोए महतारी, निबल की जोय मेरी सालो

निर्बल को सब सताते है ।

जबर्दस्त का ठेंगा सिर पर

जबर के सामने दबना पड़ता है ।

जबर्दस्त का बीसों बिस्वा
जबर्दस्त जो कहे वही ठीक।

जबर्दस्त की लाठी सिर पर
जबर्दस्त के सामने दबना पडता है।

जबर्दस्त सबका जँवाई
सबल के आगे सब झुकते है।

जबरा मारे और रोने न दे
जबर्दस्त हर तरह से दबाता है।

जर का जोर पूरा है और सब अधूरा है
पैसे का बल ही सबसे बड़ा बल है।

जर का जर्रा भी आफताब है, बेजर की मिट्टी खराब है
धन का तो एक कण भी सूर्य के समान है धनहीन की बर्बादी होती है।

जरदार का सौदा है, बेजर का खुदा हाफिज
धनी ही हर चीज खरीद सकता है। धनहीन का ईश्वर ही मालिक है।

जर हजार जेब लगाता है, बेजर बिगड़ा नजर आता है
धन से हजार काम सभलते है। धनहीन बिगडा नजर आता है।

जमींदार की जड़ हरी
जमीदार हमेशा मौज करता है।

जमींदार को किसान बच्चे को मसान
किसान जमीदार के लिए वैसा ही है जैसा बच्चो के लिए प्रेत।

जमींदारी दूब की जड़
हमेशा फलती-फूलती है।

जाके डंडा, ताकी गाय
जिसके हाथ में शक्ति है, उसी का सब कुछ है।

जाको लोह ताको सोह
जिसके हाथ हथियार उसी का सब कुछ। अथवा जिसका हथियार उसी को शोभा देता है।

जालिम का जोर सिर पर
अत्याचारी के आगे किसी की नही चलती।

जालिम का पैंडा ही निराला है
अत्याचारी के काम समझ मे नही आते।

जालिम की उम्र कोता
अत्याचारी की उम्र कम होती है। क्योंकि लोग उसे न जाने कब मार डालें।

जालिम की जड़ भी उखड़ जाती है
अत्याचारी का भी अन्त में नाश हो जाता है।

जालिम की रस्सी दराज है
अत्याचारी अधिक दिनों तक जीता है क्योंकि उसे मारना कठिन होता है।

जिसका तेज, उसका भेज
जबर्दस्त ही किराया, मालगुजारी या कर्ज वसूल कर पाता है।

जिसका तेग, उसका देश
जिसके हाथ में बल है, वही भूमि पर अधिकार कर पाता है।

जिसका देग, उसका तेग
जिसके पास माल है, फतह उसी की होती है।

जिसकी लाठी उसकी भैंस
जाको डंडा ताकी गाय।

जुत-जुत मरें बैलवा, बैठे खांय तुरंग
गरीबों के धन पर धनवान मौज करते हैं अथवा कर्मचारी खटते हैं और अफसर बैठकर खाते हैं।

जोर की लाठी सिर पर
जबर्दस्त की लाठी सिर पर ही पड़ती है।

जोर के आगे जर्ब नहीं चलती
जबर्दस्त की चोट से कोई हानि नही पहुँचती।

जिसके घर दाने उसके कमले भी सयाने
लक्ष्मीपुत्र मूर्ख होने पर भी सम्मान पाता है।

तानाशाह दीवाना, जिसके चिट्ठी न परवाना
उसका जबानी हुक्म ही परवाना है।

तुम्हारे पान का उगाल हमारे पेट का आधार
तुम्हारे मुंह का उगाल हमारे पेट का आधार
दुर्बल गरीब का सबल के प्रति विनम्रता-प्रदर्शन।

तीतर के मुंह लक्ष्मी
हाकिम की जुबान में सब-कुछ है। वह जो कहेगा, वही होगा।

तोता के पेट में घुंघची
बड़े के पेट मे छोटा समा जाता है।

दबे पर सब शेर हैं
जो दबता है उसको सभी दबाते है।

दीवानी आदमी को दीवाना बना देती है
दीवानी के मुकदमे वर्षों चलते है। न्याय-व्यवस्था पर व्यंग्य।

दबते को सब दबाते हैं
कमजोर पर सब रौब जमाते है।
दुख भरे बी फाख्ता, कौवे मेवें खायें
मेहनत कोई करे और उसका फल कोई भोगे।
दूध का दूध पानी का पानी
न्याय करना या होना।
दौलत अन्धी होती है
धनी गरीब का न्याय नही करता।
धरती माता बोझ संभाले
अनाचारी के लिए कहा जाता है।
धींगा-धींगी बल्लू का राजा
जिसकी लाठी, उसकी भैंस।
नक्कारखाने में तूती की अवाज कौन सुनता है
दुर्बल की कोई नही सुनता।
नया-नया राज ढब-ढब बाज
जब कोई नया अधिकारी नयी बातें चलाता है, तब व्यंग्य मे कहा जाता है।
नये-नये हाकिम नई-नई बातें
नये-नये कानून बनते है।
नये नबाव आसमान पर दिमाग
नया आदमी थोड़ा सा अधिकार पाने पर इतराने लगता है।
नशा उसने किया, खुमार तुम्हें चढ़ा
अधिकारी के सम्बन्धी जब अपने को भी बड़ा समझने लगते है तब व्यग्य मे कहा जाता है।
नाचे कूदे बानरा, मेरा माल मदारी खाएँ
परिश्रम कोई करे, मजा कोई लूटे।
नौकर का चाकर, मड़ई का उसारा
नौकर का नौकर वैसा ही है जैसे झोपड़ी मे बरामदा शोभा नही देता या व्यर्थ होता है।
नौकर लाट कपूर के, होंठ मलें और हक लें
जबर्दस्ती हक लेने पर कहा जाता है।
परजा मरन राजा को हाँसी
राजा के सुख के लिए प्रजा मरती है।
पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं
गुलामी सबसे बड़ा अभिशाप है।

मुफलिस का चिराग रोशन नहीं होता
गरीब का कोई काम सफल नहीं होता।

मुफलिसी सब बहार खोती है, मर्द का एतबार खोती है
गरीबी बुरी चीज है, जिन्दगी बेमजा हो जाती है मनुष्य अपना विश्वास भी खो देता है।

मुंह देख के बीड़ा और चूतड़ देख के पीढ़ा
हैसियत देखकर सत्कार होता है।

मुए पर सौ दुर्रे
मरे को सब मारते है।

मुरगी की अजान कौन सुनता है ?
गरीब की कोई नही सुनता।

मैला कपड़ा पातर देह, कुत्ता काटे कौन संदेह
गरीब को सब सताते है।

यह भी किसी ने न पूछा कि तेरे मुंह में कितने दांत हैं
किसी ने मुझे टोका तक नही। राज्य का ऐसा प्रबन्ध जहाँ जान-माल की पूर्ण सुरक्षा हो।

राजा का परचाना और सांप का खिलाना बराबर है
दोनों काम खतरनाक हैं।

राजा की सभा नरक हो जाय
वहाँ सब खुशामदी होते हैं।

राजा के घर काज हमारे घर ठक-ठक
प्रजा से धन खींचकर राजा आनन्द मनाते हैं अथवा सबल के यहाँ कार्य ठीक से करना और निर्बल के यहाँ बेगार टालना।

राजा बुलावे, ठाढे आवें
जिसके हाथ में शक्ति होती है उसका सब कहना मानते हैं।

राजा राज, परजा चैन
न्यायी राजा होने से प्रजा सुख से रहती है।

रास्तगो मुफलिस मजलिस में झूठा
गरीब सच भी बोले तो भी अदालत मे झूठा ठहरता है।

रियासत के बगैर सियासत नहीं होती
बिना रोब-दाब के शासन नही चलता या बिना सम्पत्ति के राजनीति मे सफलता नही मिलती।

लदे की जोय सारे गाँव की सरहज
गरीब को सब छेड़ते हैं।

लड़ें सांड, बारी का भुरकस
बड़ों की लड़ाई में छोटे हानि उठाते हैं। गेहूँ के साथ घुन पीसे जाते हैं।

लड़े सिपाही नाम सरदार का
काम छोटे करते हैं नाम बड़ों का होता है।

लाठी के हाथ मालगुजारी बेबाक

ताकत से ही मालगुजारी सुरक्षित रहती है।

लाल किताब उठ बोली यों, तेली बैल लड़ाया क्यों ?
खेल खिलाकर किया मुसंड, बैल का बैल और दंड का दंड

समर्थ (लाल किताब = काजी) हमेशा दोष निर्बलों पर ही थोपते है या लोग अपने दोष छिपाते है और दूसरों को दोष देते हैं।

शाह खानम की आँखें दुखती हैं शहर के दिये गुल कर दो

नजाकत दिखाने पर कहा जाता है किन्तु यह सामन्ती व्यवस्था पर भी व्यंग्य है जिसमे सामन्त या जमीदार अपने आराम के लिए प्रजा के सुख-दुख की परवाह नही करते थे।

शेर और बकरी एक घाट पानी पीते हैं

अच्छे शासन के प्रसग में कहा जाता है।

शेर का खाजा बकरी

ताकतवर दुर्बलो के शोषण पर पलते हैं।

सच्चा जाय रोता आय, झूठा जाय हँसता आय

अदालतों के न्याय पर व्यंग्य।

सब घटा देते हैं मुफलिस गरज के माल का मोल

गरीबों की सभी उपेक्षा करते हैं।

सबै सहायक सबल के, कोऊ न निबल सहाय

सबल के सभी सहायक होते है निर्बल का कोई नही।

समरथ को नहिं दोष गुसांई

समर्थ व्यक्ति के दोषो पर लोग परदा डाल लेते है।

सार पराई पीर की क्या जाने धनवान

धनी गरीब का हाल क्या जाने ?

सावन के रपटे और हाकिम के डपटे का कुछ डर नहीं

सावन में रपटन होती ही है हाकिम भी डाँटते ही है, अत· लज्जा की कोई बात नही।

सिफारिश बिना रोजगार नहीं मिलता

स्पष्ट है।

सिर का नहाया पाक

सबसे ऊंचा हाकिम जो फैसला करे वह ठीक ही होता है।

सिह बंदी के प्यादे का आगा-पीछा बराबर

जिसकी आय बहुत कम हो उसका भूत भविष्य बराबर है।

सीधा घर खुदा का

अदालत जहां किसी के जाने पर कोई रोक-टोक नही।

सैया भये कोतवाल अब डर काहे का ?

चाहे जो करो।

सोटा हाथ, देह में हाँगा उसने भेटे सब कुछ माँगा

जिसकी लाठी उसकी भैंस।

सोना उछालते चले जाओ

सुव्यवस्था।

सौदा अच्छा लाभ का, राजा अच्छा दाब का

सौदा वही अच्छा जिसमें लाभ हो और राजा वही अच्छा जिसका रोब-दाब हो।

हंसा थे सो उड़ गए कागा भए दिवान

जब किसी सज्जन के स्थान पर दुर्जन का आधिपत्य हो जाय तब कहा जाता है।

हम सांप नहीं कि जियें चाट के माटी

काम अधिक लेने पर और बदले में थोडा देने पर कहा जाता है।

हाकिम के आंख नहीं कान होते हैं

हाकिम सुनी हुई बात पर विश्वास कर लेता है।

हाकिम के अगाड़ी और घोड़े के पिछाड़ी खड़ा न हो

हाकिम के आगे खड़ा होने से वह बुरा मान सकता है और घोड़ा दुलत्ती मार सकता है।

हाकिम के तीन शहना के नौ

हाकिम से अधिक नीचे के नौकर हड़प जाते है।

हाकिम के मारे और कीचड़ के फिसले का किसने बुरा माना ?

स्पष्ट है।

हाकिम दो जानने वालों में एक अनजान

वादी और प्रतिवादी ही सच्चा हाल जानते हैं।

हाकिम हारे मुंह ही मुंह मारे

जिसके हाथ मे ताकत हो उससे बहस नही करनी चाहिए।

हाकिम महकूम की लड़ाई क्या ?

अधीनस्थ अपने अफसर से कैसे लड़े ?

हरिया हाथी हाकिम चोर, दोनों के बिगरे ओर न छोर

जंगली हाथी और चोर हाकिम के उपद्रव की सीमा नही।

हाथी का जग साथी, कीड़ी पांयन पीड़ी

जबर्दस्त के सब साथी होते हैं पर गरीब का कोई नही।

हारे भी हार, जीते भी हार

मुकद्दमे मे हर ओर से हार ही होती है।

हुक्म के साथ सब कुछ मौजूद

अधिकार होने पर हर चीज सुलभ रहती है।

हुक्म निशानी बहिश्त की जो मांगे सो पाए

हुकूमत बहिश्त है, उससे सब कुछ मिल सकता है।

हुक्मे हाकिम मर्गे मफाजात

हाकिम का हुक्म आकस्मिक मृत्यु के समान है। एक मुसीबत है।

हुकूमत की घोड़ी, छह पसेरी दाना

उसके नाम पर छोटे कर्मचारी उड़ा जाते हैं।